भूगोल

जुलाई १९४१

वार्षिक मूल्य ३)

विदेश में ५)

इस प्रति का १)

सम्पादक

पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०
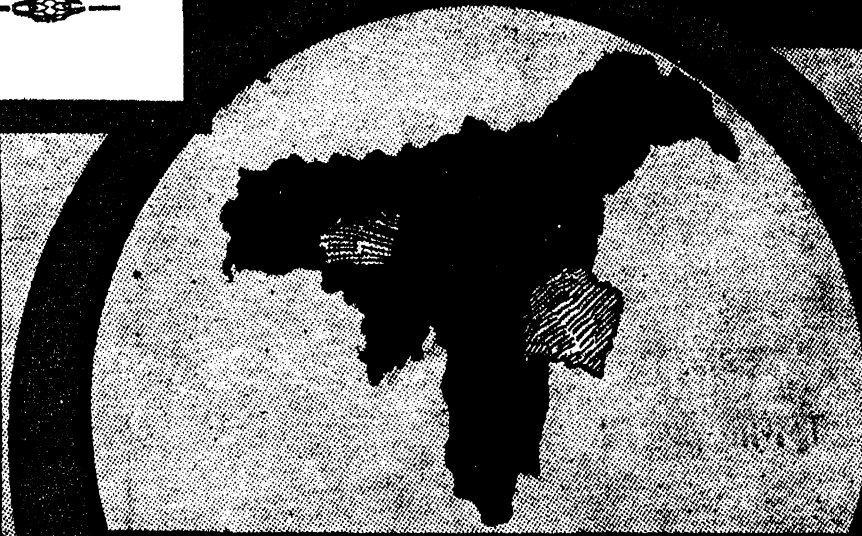
प्रकाशक 'भूगोल' कार्यालय, प्रयाग

विषय प्रवेश

उपक्रम

भारतवर्ष सर्वदा से एक परम पुनीत तथा सभ्य देश रहा है। इसकी सभ्यता अत्यन्त पुरानी है। संसार के अन्य देशके निवासी जब कि अपनी उदर-दरी की पूर्ति के लिये जंगलों में घूमा करते थे, जब कि वे दिगंबर थे जब वे भाषा के अभाव में बोलने का काम अपने इङ्गितों से लिया करते थे,जब कि गृहों के अभाव से वे वृक्षों केखोखलों तथा पर्वतों की कन्दराओं में रहते थे, उस प्राचीन काल में भी हमारा देश समृद्धि तथा सभ्यता की चरम सीमा पर पहुँचा हुआ था। आजकल के सभ्य देशों को भारत ही ने उन्हें सभ्यता का प्रथम पाठ पढ़ाया था। जब कि अन्य देशों की यह दशा थी उस समय हमारे ऋषि, महर्षि सरस्वती तथा दृषद्वती घग्घर) के किनारे बैठ कर आत्मा तथा परमात्मा के सूक्ष्म रहस्य पर विचार किया करते थे। उसी पुरातन काल में वेदों की ऋचा हमारे ऋषियों के मुख से निकलीं। उन्होंने अपनी सूक्ष्म बुद्धि के द्वारा उपनिषदों के गूढ़ रहस्यों का उद्घाटन किया। महाकवि रवीन्द्र नाथ टैगोर ने इसी भाव को अपनी सुन्दर कविता में इस प्रकार प्रकट किया है :—

> प्रथम प्रभात उदित तव गगन,
> प्रथम साम रव तव तपोवन,
> प्रथम प्रचारित तव वन भवने,
> ज्ञान, धर्म, कत काव्य काहिनी।
> आर्य भुवन मन मोहिनी।

यदि हमारे उपनिषद् और षट् दर्शन भारतीय आर्यों की आध्यात्मिक उन्नति के साक्षी हैं तो आज हरप्पा एवं मोहेञ्जोदड़ो में मिली वस्तुयें उनके लौकिक विकास को डंके की चोट बतला रही हैं।

प्राचीन भारतीयों ने कला कौशल में कितनी उन्नति की थी उसका वर्णन करना कठिन है। आज भी अजन्ता की अनुपम चित्रकारी को देख कर मन मुग्ध हो जाता है तथा उस कुशल कलाविद् की तूलिका को बरबस चूम लेने की इच्छा बलवती हो जाती है। प्राचीन भारत धन-धान्य से इतना भरा हुआ था कि लोग इसे रत्नगर्भ कहते थे। अस्तु।

यह सब लिखने का केवल इतना ही आशय है कि पाठकगण समझें कि भारत का इतिहास अन्य देशों के इतिहास की नाई नहीं है। इस देश का इतिहास, इस देश (प्रत्युत महाद्वीप) के प्रत्येक सूबे का इतिहास तथा प्रत्येक नगर का इतिहास अपना अलग विशेष महत्त्व रखता है। भारत में कोई भी ऐसा स्थान नहीं जिसका कुछ विशेष महत्त्व न हो। अतः ऐसे पवित्र, ऐतिहासिक घटनाओं से परिपूर्ण देश के किसी भी स्थान के इतिहास को जानने तथा उस स्थान के निवासियों की रहन-सहन, शिक्षा-दीक्षा, धार्मिक समाजिक तथा आर्थिक अवस्था का समझने की जिज्ञासा किसे न होगी ? आज मैं अपने पाठकों के सामने भारत के एक ऐसे ही प्रान्त का इतिहास प्रस्तुत करना चाहता हूँ जो भारतीय इतिहास में अपना विशेष स्थान रखता है। इस प्रान्त का

नाम आसाम है जो प्राचीन समय में कामरूप के नाम से प्रसिद्ध था। इस प्रान्त के विषय में कुछ लिखने के पहिले इसके प्राचीन तथा अर्वाचीन नामकरण का कारण बतला देना परमावश्यक है।

कामरूप नामकरण का कारण

दक्ष प्रजापति के यज्ञ में अपने पति शिव के प्रति अपमान को देख कर सती भस्म हो गई। शिव जी इस दुख से अभिभूत हो कर सती के शव को लेकर संसार में इधर उधर घूमने लगे। शिव जी के दुःख को कम करने के लिये विष्णु ने सती के अङ्ग के इक्यावन टुकड़े कर डाले। जहां ये टुकड़े गिरे वे स्थान अत्यन्त पवित्र माने जाने लगे। तभी से इस स्थान का एक मुख्य भाग,कामरूप नामसे पवित्र माना जाता है। जब शिव की तपस्या भङ्ग न हुई तब देवताओं ने कामदेव को भेजा। काम देव को शिव जी ने भस्मसात कर दिया। इस दुघटना से काम की स्त्री रति बड़ी दुखी हुई तथा विलाप करने लगी। अन्त में आशुतोस शिव प्रसन्न हुए तथा कहा कि जाओ कामदेव अपने इच्छित (काम) स्वरूप (रूप) में फिर प्राप्त कर लेगा। यह घटना जहाँ घटी अर्थात् कामदेव ने अपने स्वरूप को जिस देश में प्राप्त किया उसका नाम 'कामरूप' पड़ गया। कामरूप शब्द का अर्थ ही है इच्छानुसार रूपधारण।

आसाम नामकरण का कारल

आसाम नाम करण के मुख्यतः तीन कारण बतलाये जाते हैं। प्रथम कारण तो यह है कि बङ्गाल का प्राचीन नाम 'समतत' था जिसका अर्थ होता है अविषम भूमि बराबर जमीन। चूँ कि बंगाल की भूमि सम (बराबर) थी अतः उसके उत्तर-पूर्व में स्थित देश को लोगों ने 'असम' नाम रख दिया, जिसके अर्थ होते हैं विसम भूमि, खाबड़ जमीन। अर्थात् वह स्थान जो सम (बराबर) न हो। चूंकि आसाम में पहाड़ तथा नदियों के होने से धरती बराबर नहीं है अतः इसे 'असम' कहना स्वाभाविक ही था। इसी असम से बिगड़ कर 'आसाम' बना है। (२) आहोम लोगों की परंपरागत कथाओं से पता चलता है कि आसाम शब्द 'असम' शब्द से निकला हुआ है जिसका अर्थ है अतुल्य, अद्वितीय अर्थात् जिसकी बराबरी करने वाला कोई न हो। जब आहोम राजा सुकाफा ने आसाम पर चढ़ाई की तब आसाम की स्थानीय जातियों ने इस विजेता की वीरता को देख कर उनकी प्रशंसा के लिये उन्हें 'असम' कहा। चूंकि आहोम राजा 'असम' योद्धा थे अत जिस देश में उन्होंने अपनी राज्य स्थापना की उसे उन्हीं के नाम पर 'असम' कहने लगे तथा, यही बिगड़ते बिगड़ते आसाम बन गया।

(३) कुछ लोगों का कहना है कि आहोम राजा शान वंश के थे तथा इसी शान शब्द से 'आसाम' शब्द की उत्पत्ति हुई है। शान से शाम हुआ तथा अनेक परिवर्तन को प्राप्त करते हुए यह आसाम बन गया। कुछ विद्वानों का मत है कि आहोम शब्द से ही आसाम निकला है।

आसाम शब्द की व्युत्पत्ति चाहे जो कुछ हो इतना तो मानना ही पड़ेगा कि इस शब्द के निर्माण में आहोम राजाओं से कुछ न कुछ सम्बन्ध अवश्य ही होगा। चाहे यह उनके वंश (शान) से बना हो अथवा 'आहोम' से। प्राचीन हिन्दू ग्रन्थों में 'आसाम शब्द का कहीं भी पता नहीं चलता। यहाँ तक कि महाकवि कालीदास के समय तक भी यह 'कामरूप' ही के नाम से प्रसिद्ध था और उन्होंने 'तमीशः कामरूपाणां' लिख कर इसे 'कामरूप' नाम से ही स्मरण किया है। अतः आसाम शब्द पुराना नहीं है। अतएव ऐसा अनुमान किया जाता है कि इस शब्द का निर्माण किसी न किसी रूप में आहोम अथवा शान शब्द से ही सम्बद्ध है।

भारतीय इतिहास में आसाम प्रान्त की विशेषता

भारतीय इतिहास में आसाम प्रान्त अपना विशेष महत्व रखता है। इसप्रान्त के इतिहास के अभाव में भारतीय इतिहास का एक परिच्छेद अप्रकाशित ही कहा जायगा। आसाम प्रान्त के निवासियों ने भारतीय इतिहास तथा संस्कृति में जो योगदान किया है, उसका समुचित उल्लेख न करना उस प्रान्त के साथ अन्याय करना है। राजनीति के क्षेत्र में ही नहीं धर्म तथा दर्शन शास्त्र में भी इन्होंने कुछ कम काम नहीं किया है। अतएव भारतीय इतिहास में आसाम प्रान्त की क्या विशेषता है इसे यहाँ बतला देना अनुचित न होगा। (१) आसाम प्रान्त की सब से बड़ी विशेषता उस प्रान्त के निवासियों की सत्य तथा तथ्यनिरूपक ऐतिहासिक बुद्धि है। भारतीय सभ्यता तथा संस्कृति की अवहेलना करने वाले कुछ आलोचक भारतियों की ऐतिहासिक बुद्धि के अभाव का उपहास करते हैं, परन्तु जब वे आसाम के आहोम राजाओं का क्रमागत इतिहास ठीक ठीक लिखा हुआ पाते हैं, तब उनको अपनी गलती मालूम होती है। आसाम के आहोम राजाओं को अपने इतिहास का बड़ा ध्यान था। उन्होंने ऐतिहासिक पुस्तकों की रचना करवाई थी। इन पुस्तकों को "बुरञ्जी"[1] कहते हैं। जिसका अर्थ होता है "वह खजाना जो अज्ञानियों को शिक्षा दे"। इन बुरञ्जियों में आहोम राजाओं का ठीक ठीक इतिहास मिलता है तथा ये ही ग्रन्थरत्न आज आसाम के इतिहास के पुनरुद्धार में अत्यन्त सहायक हुए हैं। राजाओं के पुरोहित इन बुरञ्जियों को रखते थे तथा समय के बीतने पर घटनाओं को जोड़ते जाते थे। ये पुस्तकें ऐतिहासिक पद्धति से लिखी गई हैं। अत: आसामियों की प्रथम तथा सर्व श्रेष्ठ विशेषता उनकी इतिहास-लेखन की कला है।

(२) आसाम प्रान्त की दूसरी विशेषता इस प्रान्त का मुसलमानों के अधिकार से सर्वदा स्वतन्त्र रहना है। आसाम पर मुसलमानों के अनेक आक्रमण हुए, उनकी सेनाओं ने इस प्रान्त को पराधीन बनाने के अनेक प्रयत्न किये, परन्तु वीर आसामियों ने अपने बाहुबल से आक्रमण-कारियों को मार भगाया, जब अलाउद्दीन के सेनापति मलिक काफ़ूर ने अपनी विजयिनी सेनाओं के द्वारा सुदूर दक्षिण मदूरा नगर में भी अपना झण्डा फहरा कर कन्या कुमारी तक पहुँच गया था उस समय भी आसाम अपने निवासियों के बल से आनन्द के गीत गा रहा था। मीर जुमला आदि अनेक सेनापतियों ने आसाम पर चढ़ाई की परन्तु प्रत्येक बार उन्हें हार खानी पड़ी। एक लड़ाई में मुहम्मद सलीह मारा गया तथा अनेक आदमी कैद कर लिये गये। मीर जुमला को सेना को आसामियों ने अनेक कष्ट पहुँचाये और अन्त में वह उल्टे पांव लौटा हुआ बंगाल भागा तथा लड़ाई के कष्टों से व्यथित होकर रास्ते ही में मर गया। इस प्रकार से आहोम राजाओं ने मुसलमान आक्रमण कारियों को सदा परास्त किया तथा आसाम में इनकी दाल कभी भी नहीं गलने दी। आसाम प्रान्त की विशेषता बतलाते हुये गेट साहब लिखते हैं :—

"An other claim to notice is supplied by the circumstance that Assam was one of the few countries in India whose inhabitants beat back the tide of Moghul conquest and maintained their independence in the face of repeated attempts to subvert it."

F. A. Gait : History of Assam Intro. Page ii.

(३) आसाम की तीसरी विशेषता तान्त्रिक धर्म सम्प्रदाय की है। आसाम के गौहाटी नगर के पास नीलाचल पर्वत पर कामाख्या देवी का मन्दिर है। यह मन्दिर भारतवर्ष में अति प्राचीन काल से प्रसिद्ध है। इस मन्दिर की विशेषता यह है कि यहां से उस सम्प्रदाय का जन्म तथा परिवर्द्धन हुआ जिसे तन्त्र-सम्प्रदाय कहते हैं। प्राचीन समय में बड़े-बड़े सिद्ध यहां आते थे तथा अपने तन्त्र-शास्त्र की विद्या पूरी करते थे। जिस प्रकार बिना काशी गये दर्शन शास्त्र

---

[1] बु का अर्थ है अज्ञानी पुरतक, रञ्= शिक्षा, देना जी का अर्थ है खज़ाना।

आदि की शिक्षा पूरी नहीं समझी जाती थी, उसी प्रकार बिना कामाख्या गये तन्त्रशास्त्र की शिक्षा अधूरी समझी जाती थी। कामाख्या में पहिले बड़े-बड़े सिद्ध तन्त्र-वेत्ता रहते थे जो जिज्ञासुओं को इसकी शिक्षा दिया करते थे। आज भी शाक्त हिन्दुओं के लिये कामाख्या एक परम पुनीत स्थान है। बौद्धों ने तन्त्र-शास्त्र में जो कुछ कुशलता पाई वह हिन्दुओं से ही सीखी थी, तथा हिन्दुओं में जो तन्त्र-शास्त्र था इसका परिवर्द्धन कामाख्या ही में हुआ था। इस प्रकार हिन्दू तथा बौद्ध धर्म में तन्त्रसम्बन्धी जो कुछ बात दिखाई पड़ रही है उस सबका श्रेय कामाख्या को ही है।

आसाम प्रान्त की उपेक्षा

इन सब उपर्युक्त विशेषताओं के होते हुए भी आसाम प्रान्त की जितनी उपेक्षा हुई है उतनी किसी भी प्रान्त की नहीं। भारतीय प्राचीन पुस्तकों में भी आसाम प्रान्त का उल्लेख उतना नहीं मिलता है जितना अन्य प्रान्तों का। महाभारत में जहाँ भारत के प्रत्येक देश के राजा उपस्थित थे वहाँ आसाम से किसी भी राजा के जाने की सूचना नहीं मिलती। पुराणों में जहाँ कथाओं के नायक अन्य प्रान्त के राजा अथवा ऋषि होते हैं, वहाँ शायद ही कोई किसी कथा का नायक आसाम प्रान्त का हो। संस्कृत साहित्य में विदर्भ देश के राजा नल तथा कन्नौज के राजा हर्षवर्द्धन और सुदूर दक्षिण में स्थित वातापी नगरी का कोई राजा किसी काव्य का नायक भले ही मिल जाय, परन्तु अभागे आसाम प्रान्त का कोई भी राजा उस पद को सुशोभित करने वाला नहीं मिल सकता। इन्दुमती तथा दमयन्ती के स्वयंवर में मगध, अंग, बंग के अनेक राजा आते हैं, परन्तु आसाम के राजा का कहीं पता नहीं। बुद्ध के जन्म के पूर्व में स्थित "षोड़शमहाजनपद" की संख्या में भी आसाम का नाम नहीं आता। भारत के राजनैतिक इतिहास में मीर जुमला का आक्रमण तथा 'ट्रीटी आव यारडबू' के सम्बन्ध को छोड़ कर कहीं भी आसाम का नाम नहीं मिलता। हराटर ने अपने 'इरिडयन इम्पायर' में इस प्रान्त के इतिहास के विषय में केवल दस पंक्तियाँ लिखने की कृपा की है। गत शताब्दी में भारत की पुरातत्व सम्बन्धी चीजों की छानबीन करने वाले सर एलेक्जेण्डर कनिंघम ने सब प्रान्तों में जाने का कष्ट उठाया था। उन्होंने इस प्रान्त की किसी भी यात्रा की रिपोर्ट नहीं लिखी।

आसाम प्रान्त में प्राचीन शोध का कार्य

पहिले जो कुछ लिखा गया है उससे स्पष्ट प्रतीत होता है कि पूर्व काल से ही आसाम प्रान्त की कितनी उपेक्षा रही है। परन्तु अंगरेजों के आने के बाद से इस दशा में बहुत कुछ परिवर्तन हुआ। इन्होंने इस प्रान्त के विषय में अनेक छोटी मोटी पुस्तकें लिखीं। अनेक बुरञ्जियों का अंग्रेजी में अनुवाद करवाया तथा शिलालेख और ताम्रलेखों को पढ़कर उन्हें प्रकाशित करवाया। इन्होंने प्राचीन स्थानों की रक्षा का प्रबन्ध किया तथा अनेक प्रकार से वहाँ के इतिहास को सुरक्षित रखने का उपाय किया।

अंग्रेजी में आसाम के क्रमागत इतिहास को प्रस्तुत करने का सर्वप्रथम प्रयास रॉबिन्सन ने अपनी 'डिसक्रिप्टिव एकाउन्ट आफ आसाम' नामक पुस्तक में किया। यह पुस्तक केवल ४ पृष्ठ की थी तथा सन् १८४१ ई० में प्रकाशित हुई थी। इसके बाद आसामी भाषा में ही इस प्रान्त के इतिहास के विषय में दो पुस्तकें प्रकाशित हुईं। पहिली पुस्तक काशीनाथ तामली फूकन ने १८४४ ई० में तथा दूसरी पुस्तक राय गुणाभिराम बरुआ बहादुर ने १८८४ ई० में लिखी। यद्यपि ये पुस्तकें पूर्ण नहीं हैं, परन्तु फिर भी अच्छी हैं। ब्लाकमैन (Blochmann) साहब

के अनुसन्धानों से भी आसाम पर मुसलमानों के आक्रमण के विषय पर अत्यन्त प्रकाश पड़ा है। सर जेम्स जान्स्टन ने भारतीय सरकार के विदेशी विभाग में सुरक्षित रेकार्डों के आधार पर सन् १७९२ ई० में आसाम प्रान्त पर केप्टन वेल्श के धावा (Expedition) तथा उसके कारण की पूरी घटनाओं का वर्णन तैयार कराया था। सन् १८९४ ई० में सर चार्ल्स लायल ने आसाम के प्राचीन शोध के लिये बड़ा प्रयत्न किया तथा उन्होंने दूसरों को भी इस कार्य के लिये प्रेरित किया।

गेट के अनुपम कार्य

आसाम में प्राचीन शोध के कार्य के इतिहास में गेट साहब के आगमन से एक नवीन अध्याय का प्रारम्भ होता है। गेट साहब का पूरा नाम इ० ए० गेट (E. A. Gait) था। आसाम के इतिहास का पुनरुद्धार कर आपने अमिट कीर्ति प्राप्त की है। इतिहासाचार्य गेट साहब आजकल आसाम के इतिहास पर प्रमाण (Authority) माने जाते हैं तथा आपका अनुपम ग्रन्थ 'हिस्ट्री आव आसाम' एक मौलिक तथा उपजीव्य ग्रन्थ है। आप आसाम प्रान्त के डैरेङ्ग जिले से मंगलदई में, गत शताब्दी के अन्त में, सब डिविजनल आफिसर थे। सन् १८९४ में आसाम के तत्कालीन चीफ कमिश्नर सर चार्ल्स लायल की प्रेरणा से आपने इस प्रान्त के इतिहास के पुनरुद्धार का बीड़ा उठाया। आपने ऐतिहासिक शोध के लिये एक योजना तैयार की तथा वह मंजूर भी हो गई। अनुसन्धान का कार्य जोरों से शुरू हो गया। तेजपूर के पास एक शिलालेख मिला तथा पाँच ताम्रलेख भी प्राप्त हुए जिनमें प्राचीन राजाओं के द्वारा भूमि-दान (land grant) का वर्णन था। इन शिलालेखों तथा ताम्रलेखों में बहुत कुछ ऐतिहासिक मसाला मिला तथा जाँच करने पर पता चला कि यह उन राजाओं का है जिन्होंने ८०० ई० से ११५० ई० तक राज्य किया था। जयन्तिया में भी पाँच ताम्रलेख कुछ प्राचीन मुद्रायें तथा एक हस्तलिखित प्रति मिली। बारो भुइया तथा चुटिया आदि राजाओं के समय की भी अनेक हस्तलिखित प्रतियाँ मिलीं जिनका अंग्रेजी में अनुवाद कराया गया। गेट साहब को इस कार्य में क्रमशः सफलता मिलती गई। कुछ ही दिनों में अनेक बुरञ्जियों का पता चला। इन बुरञ्जियों से आहोम राजाओं के शासन के विषय में अनेक महत्त्व पूर्ण बातों का पता लगा। कुछ बुरञ्जियों का गेट साहब ने अंग्रेजी में अनुवाद भी कराया। कुछ भारतीय मित्रों की सहायता से इन्होंने जोगिनी तन्त्र कालिका पुराण, तथा महाभारत में से आसाम सम्बन्धी वर्णन भी खोज निकाला। आहोम भाषा में लिखी गयी बुरञ्जियों को काल के गाल से बचाने के लिये गेट साहब ने बाबू गोलापचन्द्र बरुआ नामक सज्जन को आहोम पुरोहितों से उस भाषा के सीखने का कार्य सौंपा। इन सज्जन ने तीन वर्ष के परिश्रम से इस भाषा को सीखा तथा अनेक बुरञ्जियों का अंग्रेजी में अनुवाद किया। इसके अतिरिक्त नागाँव सोलकुची, बरगाँव, गौहाटी ताम्रलेख आदि का पता गेट साहब ही ने सर्व प्रथम लगाया था। तेजपुर के निकट के शिलालेख का फोटो लेकर उसे प्रकाशित कराया। जो बात इनकी समझ में नहीं आती थी उसे वह डा० हार्नेली के यहाँ भेज देते थे। गेट साहब आहोम की शासन व्यवस्था, रहन सहन, आचार विचार आदि विषयों पर 'जरनल आफ दि रायल एशियाटिक सोसाइटी आव बंगाल' नामक पत्रिका में हमेशा लेख लिखते रहे। प्राप्त सिक्कों, शिलालेखों तथा ताम्रलेखों की नकल इसमें छपवाई तथा आसाम के इतिहास के भिन्न भिन्न कालों पर इन्होंने बीसियों लेख इसमें प्रकाशित कराये। इस प्रकार अन्त में अपनी कीर्ति को अमर करने के लिये इन्होंने १९०६ में एक अत्यन्त मौलिक तथा खोजपूर्ण पुस्तक लिखी जिसका नाम 'हिस्ट्री आव आसाम' है और इस प्रकार अपना कार्य समाप्त किया।

गेट साहब के चले जाने के बाद सरकार ने अनेक गजेटियर्स प्रकाशित कराये। आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस से सन् १९०८ ई० में इम्पीरियल गजेटियर का जो छठा भाग प्रकाशित हुआ है उसमें भी आसाम के विषय में बहुत कुछ मसाला है। इसके बाद सरकार ने B. C. Allen की अध्यक्षता में आसाम प्रान्त के प्रत्येक जिले का गजेटियर बड़े शोध के पश्चात् तैयार करवाकर प्रकाशित किया है जो बड़े ही उपयोगी हैं।

इधर कुछ वर्षों से आसाम के इतिहास प्रिय विद्वानों ने कामरूप-अनुशीलन-समिति नामक संस्था खोल रक्खी है जिसका कार्य आसाम के प्राचीन इतिहास का पता लगाना तथा अन्य प्रकार का शोध करना है। इसका प्रधान स्थान गौहाटी में है। इस संस्था के द्वारा एक त्रैमासिक पत्रिका भी प्रकाशित की जाती है। इस पत्रिका का उद्देश आसाम में प्राचीन शोध संबंधी लेखों को प्रकाशित करना है।

यह सभा भी आसाम में संस्कृत के प्रचार के लिये अच्छा कार्य कर रही है। अभी हाल ही में इस सभा ने १००० हस्तलिखित पुस्तकों की प्रदर्शिनी की थी जिनमें से कुछ कामरूप-पण्डितों की कृतियां थीं।

इसके अतिरिक्त महामहोपाध्याय पद्मनाभ भट्टाचार्य तथा के० एल० बरुआ आदि ने भी प्राचीन शोध के विषय में सराहनीय कार्य किया है। प्रथम ने 'श्री हट्टेर इतिहास' नामक विद्वता पूर्ण पुस्तक बंगला भाषा में लिखी है, तथा द्वीतीय ने 'अरली हिस्ट्री आफ कामरूप' नामक अंगरेजी में एक सुन्दर ग्रन्थ का निर्माण कियो है। अब भारतीय विद्वानों ने आसाम के प्राचीन शोध का काम अपने ऊपर ले लिया है तथा वे बड़ी तत्परता तथा साहस के साथ सफलता पूर्वक इस कार्य को कर रहे हैं।

आसाम के इतिहास की सामग्री

आसाम के इतिहास के लिये जो कुछ सामग्री उपलब्ध है उसे हम चार भागों में विभक्त कर सकते हैं। (१) बुरञ्जी, (२) ताम्रलेख, (३) शिलालेख, (४) विदेशियों के लेख।

बुरञ्जी

इन सब में सर्व प्रथम स्थान बुरञ्जी ही को प्राप्त है। यदि हमारे पास बुरञ्जियाँ न होतीं तो आसाम का इतिहास जानना कठिन हो जाता। इनमें जिन बातों का वर्णन मिलता है ठीक वही बातें ताम्रपत्रों से भी प्रमाणित होती हैं। अतः उनकी सत्यता तथा उपयोगिता में कोई भी सन्देह नहीं कर सकता।

ताम्रलेख

बुरञ्जियों के बाद दूसरा स्थान ताम्रलेखों का है। इन ताम्रलेखों की संख्या शिलालेखों से कहीं अधिक है। इन ताम्रलेखों में राजाओं के द्वारा ब्राह्मणों अथवा पुरोहितों को जमीन दान देने का वर्णन है। इस वर्णन के साथ ही साथ देने वाले राजा की वंशावली भी हुई है, तथा लेने वाले ब्राह्मण अथवा पुरोहित के विषय में भी कुछ मजेदार बातें हैं। अतः इन वर्णनों से इतिहास निर्माण में बड़ी सहायता मिलती है।

इन ताम्रपत्रों को प्रकाश में लाने का बहुत बड़ा श्रेय गेट साहब को है। इन ताम्रपत्रों के द्वारा आसाम के इतिहास का ठीक ठीक पता चलता है। प्राचीन कामरूप के राजाओं के छः ताम्रपत्र प्राप्त हुए हैं:—

(१) वनमाल का तेजपुर ताम्रपत्र

(२) बलवर्मन् का नवगाँव ताम्रपत्र

(३), (४) रत्नपाल का शौलकुची तथा वरगाँव ताम्रपत्र

(५) इन्द्रपाल का गौहाटी ताम्रलेख

(६) वैद्यदेव का बनारस ताम्रलेख

शिलालेख

शिलालेखों की संख्या कम है। तेजपुर में एक शिलालेख का पता गेट साहब ने लगाया था जो प्राचीन काल का माना जाता है।

विदेशियों के लेख

विदेशियों के लेखों से भी आसाम के इतिहास का बहुत कुछ पता चलता है। सन् ६२० ई० में ह्वानसांग इस देश में आया था। उसने जिस प्रकार भारत के अन्य प्रान्तों की यात्रा की उसी प्रकार उसने आसाम की भी की। उसने लिखा है कि उस समय उस प्रान्त का राजा कुमार भास्कर वर्मन था। हिन्दू धर्म राजधर्म था तथा बौद्धों की संख्या बहुत ही कम थी इत्यादि। मुसलमान ऐतिहासिकों ने भी

जो मीरजुमला के साथ तथा उसके पहिले आसाम पर आक्रमण करने वाले मुसलिम सेनापतियों के साथ गये थे—आसाम के विषय में बहुत कुछ लिखा है। उन्होंने वहां के निवासियों की बड़ी प्रशंसा करते लिखा है कि वे बड़े दिलेर तथा शेरदिल होते हैं। सन् १७९२ में कैप्टन वेल्श ने जो धावा आसाम पर किया था उसका विस्तृत विवरण भारतीय सरकार के विदेशी विभाग के रेकार्ड में सुरक्षित मिला है।

गत पृष्ठों में आसाम के निवासियों की विशेषता उनके इतिहास की उपेक्षा, आसाम में प्राचीन शोधका कार्य, आसाम के इतिहास की सामग्री आदि का वर्णन संक्षेप में किया गया है। इसके पठन से पाठक समझ गये होंगे कि जिन आसामियों के इतिहास, रहन-सहन आचार विचार, धर्म, नीति का वर्णन अगले पृष्ठों में किया जायेगा वे कितने वीर तथा पराक्रमी होंगे तथा उनके अर्थ, धर्म, काम का वर्णन कुछ कम मनोरंजक न होगा। अभी आसाम में शोध कार्य का केवल प्रारम्भ मात्र है। यदि घने जंगलों से समाच्छादित प्रदेश जहाँ मनुष्य की पहुँच भी असंभव है काट कर साफ कर दिये जांय तो बहुत सम्भव है कि अनेक शिलालेख, प्राचीन मठ-मन्दिर तथा इमारतें मिलें जिनसे आसाम के इतिहास पर प्रचुर प्रकाश पड़े। इतने ही अल्पकाल में तो कितनी बातों का पता लगाया है।
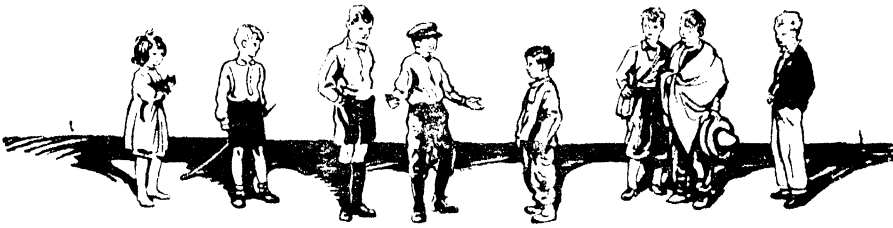
भौगोलिक अवस्था

आधुनिक सीमा और क्षेत्रफल

आसाम प्रान्त भारत का सबसे पूर्वोत्तर प्रान्त है। यह बंगाल की सीमा के पूर्व और उत्तर में स्थित है। यह अक्षांश २८° १७' और २२° १' उत्तर और देशान्तर ८९° ४५' तथा ९७° १५' पूर्व के मध्य में विद्यमान है। इस प्रान्त के उत्तर में भूटान का स्वतन्त्र राज्य, लासा सरकार के अन्तर्गत टोआङ्ग नामक भूटियों का प्रदेश, हिमालय पहाड़ियों की श्रेणी, अका, यफला, मिरी, अबोर और मिशमी नामक सीमान्त जातियों के प्रदेश, उत्तर पूर्व में मिशमी की पहाड़ियाँ, पूर्व में पटकोई की पहाड़ियाँ नागा की पहाड़ियां और मणिपूर की देशी रियासत, दक्षिण में लुशाई की पहाड़ियाँ, टिपेरा की पहाड़ियाँ और बंगाल का टिपेरा (त्रिपुरा जिला) और पश्चिम में बंगाल के मैमनसिंह और रङ्गपूर के ज़िले तथा कूच विहार की देशी रियासत है। आसाम भारत के पूर्व और उत्तर की दिशा में स्थित सीमान्त प्रान्त है। आसाम प्रान्त का वर्तमान क्षेत्रफल ६३,५०० वर्गमील है। सन् १९०१ की रिपोर्ट के अनुसार इसका क्षेत्रफल (मणिपूर की रियासत को छोड़कर) ५२,९५९ वर्गमील था। जिसमें ३१,७८९ वर्गमील मैदान था तथा २१,१७० वर्गमोल पहाड़ी प्रदेश था और मणिपूर का क्षेत्रफल ३,२८४ वर्गमील था।*

* एन एकाउट आफ दि प्राविन्स आफ आसाम एण्ड इट्स एडमिनिस्ट्रेशन (१९०१-०२) पृ० १।

प्राकृतिक विभाग

आसाम का प्रान्त तीन प्रधान प्राकृतिक विभागों में बँटा हुआ है :—

१—उत्तर में ब्रह्मपुत्र की घाटी।

२—मध्य में पार्वत्य प्रदेश जिसमें गारो, खसिया और जयन्तिया आदि की पहाड़ियाँ सम्मिलित हैं।

३—दक्षिण में सूरमा की घाटी।

इन तीनों विभागों में प्रत्येक अपना पृथक महत्व रखता है। इनका संक्षिप्त वर्णन इस प्रकार है।

ब्रह्मपुत्र की घाटी

ब्रह्मपुत्र की घाटी जिसे आसाम की घाटी भी कहते हैं एक विशाल उपजाऊ मैदान है। इसकी लम्बाई ४५० मील है तथा चौड़ाई लगभग ५० मील है। इस घाटी का पिछला हिस्सा पूर्व से पश्चिम की ओर फैला हुआ है लेकिन ऊपर का हिस्सा उत्तर-पूर्व को झुकता हुआ है। इसके उत्तर में हिमालय पर्वत की प्रधान श्रेणी हैं जिसके निम्न भाग मैदान से कहीं कहीं उठे हुये हैं और दक्षिण में बड़ा पठार अथवा पठार-समूह है जो "आसाम रेञ्ज" के नाम से प्रसिद्ध है। यह "आसाम रेञ्ज" पूर्वान्त तथा पश्चिमान्त प्रदेश में और उत्तर की ओर बहुत कुछ टूटा फूटा है। परन्तु इसका मध्य भाग जो गारो की पहाड़ियों के पूर्वीय भाग से लेकर धनसिरी नदी के जल-विभाजक (वाटर शेड) तक फैला हुआ है

बहुत ही ऊँचा प्रदेश है। इस रेञ्ज (श्रेणी) के भिन्न स्थानों में जो भिन्न भिन्न जातियाँ बसी हुई हैं वे स्थान इन्हीं जातियों के नाम से प्रसिद्ध हो गये हैं। इसमें गारो, खसिया तथा नागा आदि पहाड़ी जातियाँ बसी हुई हैं अतः इनके नाम गारो की पहाड़ी, खसिया और जयन्तिया की पहाड़ी तथा नागा की पहाड़ी है। ब्रह्मपुत्र की घाटी के दक्षिणी किनारे पर कई स्थानों में 'आसाम श्रेणी' की पहाड़ियाँ नदी के किनारे तक घुस कर चली आई हैं। नवगाँव तथा शिवसागर जिले में मीकर की पहाड़ियां घाटी में बिलकुल घुस गई हैं और गोआलपाड़ा, गोहाटी और तेजपुर स्थानों में तो इस श्रेणी की अन्य पहाड़ियां ब्रह्मपुत्र के उत्तरी तथा दक्षिणी किनारे के बिलकुल ऊपर चली आई हैं। इस घाटी का सबसे चौड़ा भाग वह है जहां यह नदी शिव सागर तथा लखीमपुर के जिलों को विभक्त करती है। इस स्थान से चालीस मील नीचे की ओर यह फिर चौड़ी हो जाती है परन्तु नवगांव जिले के निचले भाग के अन्त में खासी की पहाड़ियां फिर घाटी में घुस आती हैं। इन पहाड़ियों में से होती हुई नदी आगे चल कर गौहाटी पहुँचती है जहां पर यह पहाड़ियां घुस आने के कारण बिलकुल पतली पड़ जाती हैं। इस स्थान पर ब्रह्मपुत्र की चौड़ाई १००० गज भी नहीं है। इसके आगे गोआलपाड़ा के पहाड़ियों का प्रभाव है तथा नदी स्वच्छन्द रूप से बहती है। इसी स्थान पर मनास नदी का संगम है तथा पहाड़ियों के बीच में "आसाम का दरवाजा" (Gate of Assam) है। इस स्थान के आगे यह घाटी और अधिक विस्तृत हो जाती है और धुब्री के आगे बंगाल के बड़े डेल्टे में चली जाती है। ब्रह्मपुत्र के किनारे अनेक भागों में दलदल स्थान पाये जाते हैं जो घने घास के जंगलों से भरे पड़े हैं। इन्हीं जंगलों में कहीं कहीं तेलहन और गर्मी में होने वाले धान के खेत भी दिखाई पड़ते हैं। ब्रह्मपुत्र के तट के विशाल चौरस मैदान में स्थायी रूप से खेती होती है। यह मैदान धान के हरे हरे खेतों से सवदा आच्छादित रहता है तथा बीच बीच में बाँसों के झुरमुट तथा ताड़ और फल देने वाले वृक्षों की पंक्तियाँ दिखाई पड़ती हैं जिनमें गरीब किसानों की झोपड़ियाँ अपनी लघुता के कारण दृष्टिगोचर नहीं होतीं[१]। इस घाटी के अधिक भागों में बड़ी घनी बस्ती है क्योंकि यहाँ पैदावार अधिक है। परन्तु घाटी में जहां पहाड़ियां घुस आई हैं वहाँ खेती नहीं होती है तथा केवल जंगल ही जंगल दिखाई पड़ते हैं। फिर भी यहाँ पर यूरोपियन लोगों ने जंगलों को काटकर चाय के बगीचे और धान के खेत बना ही लिये हैं। घाटी के उपजाऊ होने के कारण यहाँ जमीन का बड़ा अभाव हो गया है और कोई भी ऐसा सुन्दर स्थान नहीं जिसमें लोग खेती न करते हों। इस घाटी का प्राकृतिक दृश्य बड़ा ही मनोरम तथा सुहावना है। घाटी के उत्तर और दक्षिण दोनों ओर सुन्दर पहाड़ियाँ दिखाई पड़ती हैं तथा हिमालय की निम्न श्रेणियों के ऊपर सफेद सफेद बर्फ बाल सूर्य की सुनहली रश्मियों से सुवर्ण के समान चमकते हुये दृष्टिगोचर होते हैं। सचमुच इस घाटी का प्राकृतिक दृश्य बड़ा ही अलौकिक, स्वर्गीय तथा मनोहर है।

सूरमा घाटी

यह घाटी आसाम के दक्षिणी भाग में स्थित तथा प्रान्त के तीन प्राकृतिक विभागों में से एक यह भी है। इस घाटी में काचार तथा सिलहट के जिले सम्मिलित हैं। इसकी लम्बाई प्रायः १२५ मील है तथा चौड़ाई ६० मील है और इसका क्षेत्रफल ७५०६ वर्गमील है। यह ब्रह्मपुत्र की घाटी से विस्तार में बहुत छोटा है क्योंकि ब्रह्मपुत्र की घाटी का क्षेत्रफल २४,२८२ वर्गमील है। यह घाटी तीन ओर से पहाड़ियों से घिरी हुई है। इसके उत्तर में गारो, खसिया और जयन्तिया तथा नागा की पहाड़ियाँ हैं; पूर्व में मणिपुर की पर्वत श्रेणियाँ तथा दक्षिण में लुशाई की पहाड़ियाँ हैं। यह घाटी ब्रह्मपुत्र की घाटी से अनेक बातों में भिन्न है। सर्वप्रथम यह उस घाटी से विस्तार में बहुत छोटी है। समुद्र की सतह से इसकी औसत ऊँचाई दूसरी घाटी की अपेक्षा बहुत

---

१. "The plain is covered with rice-fields and dotted over with clumps of bamboos, palms and fruit trees, in which are buried the houses of the cultivators."

इम्पिरियल गजेटियर आफ इण्डिया। जिल्द ६ पृ० १६।

कम है क्योंकि सिलहट में सूरमा की समुद्र की सतह से ऊँचाई केवल २२·७ फीट है जब कि गौहाटी में ब्रह्मपुत्र की ऊँचाई १४८·३६ फीट है। इसी कारण इस घाटी में बहने वाली नदियों का प्रवाह बहुत मन्द है जब कि ब्रह्मपुत्र और उसकी सहायक नदियों का प्रवाह बहुत ही वेग पूर्ण है। ब्रह्मपुत्र नदी अपने बालूदार 'चूर' से होती हुई बड़ी ही द्रुत गति तथा विशाल वेग से बहती है जिससे इसके किनारे प्रत्येक वर्ष नष्ट भ्रष्ट होते रहते हैं परन्तु सूरमा घाटी की नदियाँ धीरे धीरे बहती हुई और टेढ़ा मेढ़ी धाराओं से चलती हुई विशाल मेघना नदी में जा कर मिल जाती है। इन नदियों के किनारे (तट) प्रतिवर्ष इनके द्वारा लाई गयी मिट्टियों (Silt) से बहुत ही ऊँचे हो गये हैं और इस कारण इन स्थानों में बड़ी ही घनी आबादी है क्योंकि इस से अधिक उपजाऊ जमीन अन्यत्र उपलब्ध नहीं। कहने का तात्पर्य यह है कि सूरमा घाटी में नदियों के किनारे की जमीन सब से अधिक उपजाऊ है तथा फलस्वरूप यहाँ आबादी भी बहुत अधिक है।

जैसा कि पहिले लिखा गया है इस घाटी के उत्तर में खासी तथा जयन्तिया की पहाड़ियाँ हैं जिनके मध्य का प्लेटो जमीन से ४००० फीट ऊँचा है। सिलहट की पूर्वी सीमा के पास यह प्लेटो पीछे खिसकता हुआ पहाड़ियों के मध्य में घुस जाता है और एक नई पर्वत श्रेणी (Range) जिसे बेरेल श्रेणी (Barail Range) अथवा ग्रेट डाइक (Great Dyke) कहते हैं इस प्लेटो के स्थान पर घाटी की उत्तरी सीमा के रूप में चली आती है। हम जब पूर्व की ओर चलते हैं। तब इस श्रेणी को क्रमशः ऊँचा उठती हुई तथा ढलुवा बनती हुई पाते हैं। काचार जिले के पूर्वी सीमान्त के पास यह श्रेणी उत्तर-पूर्व की ओर ऊपर उठती है तथा नागा की पहाड़ियों से होती हुई अन्त में पटकोई की पहाड़ियों में मिल जाती है। पूर्व में यह घाटी मणिपुर की पर्वत श्रेणियों से बिलकुल घिरी हुई है। जो श्रेणियाँ उत्तर से दक्षिण को समानान्तर कतारों में फैली हुई हैं दक्षिण में भी ये श्रेणियां उपजाऊ मैदान में कुछ दूर तक फैली हैं। इसके अतिरिक्त इस ओर लुशाई की पहाड़ियाँ तथा टिपेरा की पहाड़ियाँ (Hill Tippera) वर्तमान हैं।

इस समस्त उपजाऊ मैदान में कुछ स्थानों को छोड़कर नदी की तह में छोटी छोटी पहाड़ियां जिन की ऊँचाई बहुत कम है और जो 'टीला' के नाम से पुकारी जाती हैं—घुस आई हैं[1]। जहाँ पर टीला और दक्षिणी पहाड़ियों की श्रेणी घाटी में घुसी हैं उन स्थानों को छोड़ कर घाटी का शेष भाग एक बहुत ही बड़ा डेल्टा है जिसमें मन्द गति वाली छोटी छोटी नदियों का जाल बिछा हुआ है जो कि बरसात के दिनों में तुलसीदास की "क्षुद्र नदी भरि चलि उतराई" की उक्ति को सार्थक बनाती हैं। नदियों के तट की भूमि सब से ऊँची जमीन है। इन स्थानों पर कृषकों के अनेक गांव बने दिखाई पड़ते हैं।

सिलहट जिले के पश्चिमी भाग में किसानों के गाँव बड़े सघन बसे हुए हैं परन्तु यहां पर बगीचे तथा फलवाले वृक्षों का अभाव है। यहाँ का दृश्य भी कभी सुहावना नहीं । । होता। ठीक इसके विपरीत सिलहट जिले का पूर्वी भाग तथा काचार जिले में बड़े सुन्दर प्राकृतिक दृश्य हैं जो चित्त को आकर्षित कर लेते हैं। प्रायः प्रत्येक ओर सुन्दर पहाड़ियाँ दृष्टिगोचर होती हैं। पतले पतले ताड़ वृक्षों के झुण्ड, पत्ती वाले घने बाँस के पेड़ तथा कदली-कुञ्जों में बसे हुये गाँव इन वृक्षों की अधिकता के कारण दिखाई नहीं पड़ते। भिन्न भिन्न स्थानों पर लगे हुए नरकट और हरी घासें वास्तव में प्राकृतिक दृश्य को और भी सुहावना बना देते हैं।

मध्य के पर्वतीय प्रदेश

आसाम के मध्य में कुछ ऐसे पार्वत्य प्रदेश हैं जो ब्रह्मपुत्र की घाटी तथा सूरमा की घाटी को पृथक करते हैं। इन प्रदेशों को आसाम श्रेणी (Assam Range) के नाम से पुकारते हैं। यह श्रेणी आसाम के पश्चिमान्त से ले कर पूर्वोत्तर प्रदेश के अन्त तक फैली हुई है। इस श्रेणी के अन्तर्गत गारो की पहाड़ियाँ, खसिया और जयन्तिया की पहाड़ियाँ, उत्तरी काचार की पहाड़ियाँ तथा बैरेल रेञ्ज (श्रेणी) सम्मिलित हैं। यह आसाम श्रेणी अपनी पूर्वी सीमा में पटकोई पहाड़ियों के द्वारा हिमालय की प्रधान श्रेणी

---

[1] एन एकाउन्ट आफ दि प्राविंस आफ आसाम एण्ड इट्स एडमिनिस्ट्रेशन, पृ० ४।

से जुटी हुई है तथा मणिपुर के पर्वतों के द्वारा अराकान पर्वत से मिली हुई है। यह श्रेणी पश्चिम में गारो की पहाड़ियों में अधिक ऊँची हो गई है परन्तु खासी पहाड़ों की सीमा आने के पहिले ही यह फिर कम हो जाती है। खासी तथा जयन्तिया की पहाड़ियों में सब से ऊँचा स्थान शिलाङ्ग की चोटी है जो ६४५० फीट ऊँची है। इस आसाम के प्लेटो पर जिस पर शिलाङ्ग बसा हुआ है सब स्थान बहुत ऊँचे हैं तथा किसी की ऊँचाई ६००० फीट से कम नहीं है इन स्थानों में खेती होती है तथा यहाँ आबादी भी है। और पूर्व की ओर आगे चलने पर ऊँचाई की सतह फिर नीची हो जाती है और जयन्तिया की पहाड़ियों में सब से अधिक ऊँची चोटी ५००० फीट से बड़ी नहीं है। बैरेल के उत्तर में स्थित काचार की पहाड़ियों में तो यह ऊँचाई बहुत ही कम हो जाती है। बैरेल श्रेणी खासी-जयन्तिया प्लेटो की दक्षिणी-पूर्वी सीमा से जहाँ से हरी नदी पहाड़ियों से निकलती है—प्रारम्भ होती है और अचानक बहुत ऊँची हो जाती है जतिंगा की घाटी के पास इसकी चोटियाँ ५००० से ६००० फीट तक ऊँची पाई जाती हैं। इसके पश्चात् यह श्रेणी कुछ टेढ़ी हो कर उत्तर-पूर्व की ओर चली जाती है तथा और अधिक ऊँची हो कर नागा के पहाड़ी जिला तथा मणिपुर राज्य के बीच में सीमा का काम करती है। यहाँ पर (ब्रिटिश राज्य में) यह सब से अधिक ऊँचाई को प्राप्त करता है। यह सब से ऊँचा स्थान जापवा (Japva) की चोटी है जो कि समुद्र की सतह से लगभग १०,००० फीट ऊँची है। इस स्थान के उत्तर-पूर्व में बैरेल श्रेणी कुछ भग्न हो गई है। इस स्थान की ऊँचाई ८,००० फीट से ९००० फीट तक है। जापवो की चोटी पर कभी कभी बर्फ गिरा करती है परन्तु इसके पश्चिम में कभी नहीं गिरती।

नवगांव के पूर्व में मिकिर तथा रेंगमा की पहाड़ियाँ हैं जो प्रधान श्रेणी से हट कर बिलकुल पृथक हो गई हैं। इन पहाड़ियों की चोटियाँ ४,००० फीट तक ऊँची हैं। इन पहाड़ियों के भीतरी भागों की जानकारी विशेष नहीं है। इन स्थानों में आबादी बहुत कम है तथा घने जंगल भरे पड़े हैं। लखीमपुर तथा शिवसागर के दक्षिण में स्थित पहाड़ियाँ छोटी छोटी टूटी श्रेणियों से युक्त हैं।

गारो की पहाड़ियों, खासी तथा बैरेल रेञ्ज के ढलुवे स्थानों पर घने जंगल लगे हुए हैं। खासी पहाड़ों के ऊपर तथा मध्य में प्लेटो तथा उत्तरी काचार के अधिक भागों में पहाड़ का धरातल बहुत ऊँचा नीचा है जिसमें 'पाइन' तथा 'ओक' के वृक्ष लगे हुए हैं।

आसाम प्लेटो

आसाम रेञ्ज में खासी तथा जयन्तिया वाला स्थान आसपास के सब स्थानों से ऊँचा है। इस ऊँची जमीन (पर्वत प्रदेश) को "आसाम का प्लेटो" कहते हैं। आसाम प्रान्त की वर्तमान राजधानी शिलांग इसी 'आसाम प्लेटो' पर बसा हुआ है। यह स्थान खेती के लायक है अतः आबादी भी यहां साधारणतया अच्छी है। आसाम-प्लेटो' पर वर्षा भी होती है। दक्षिण-पश्चिम की मानसून हवायें यहीं आकर टकराती हैं तथा प्रचुर वर्षा करती हैं। इसी प्लेटो के दक्षिण ढलुवे भाग पर चेरापूञ्जी बसा है जहाँ पर संसार में सब से अधिक वर्षा होती है।

ऊपर जो वर्णन किया गया है उससे स्पष्ट प्रतीत होता है कि आसाम प्रान्त तीन प्राकृतिक विभागों में बटा हुआ है। उत्तर में ब्रह्मपुत्र की घाटी दक्षिण में सूरमा की घाटी और मध्य में वे पर्वत श्रेणियाँ हैं जो इन दोनों घाटियों को विभक्त करती हैं तथा "आसामरेञ्ज" के नाम से प्रसिद्ध हैं। यह रेञ्ज आसाम के पश्चिमी भाग से लेकर पूर्व-उत्तर भाग के अन्त तक फैली हुई है तथा भिन्न भिन्न स्थानों में उसमें रहने वाली जातियों के नाम के कारण भिन्न भिन्न नामों से विख्यात है। यही आसाम के प्राकृतिक विभाग हैं।

पर्वत

सामएक पहाड़ी प्रान्त है अतः यहां पर पहाड़ों की कुछ कमी नहीं हैं। यह प्रान्त तीन ओर से पहाड़ों से घिरा हुआ है। इसके केवल पश्चिम में ही पहाड़ नहीं है। प्रान्त का मध्य भाग पहाड़ों से घिरा हुआ है। आसाम में जो पहाड़ हैं उन्हें वास्तविक दृष्टि से विचार करें तो पहाड़ (mountain) नहीं कह सकते बल्कि ये छोटी छोटी पहाड़ियाँ हैं तथा ये इसी नाम से पुकारी भी जाती हैं। इन पहाड़ियों की कुल संख्या सात है तथा इनके नाम ये हैं :—(१) गारो की पहाड़ियाँ (२) खासी और जयन्तिया की पहाड़ियाँ (३) नागा की पहाड़ियाँ (४) लुशाई की पहाड़ियाँ (५) पटकोई की पहाड़ियाँ (६) मिकिर और रेङ्गमा की पहाड़ियाँ (७) वैरेल श्रेणी। इन्हीं पहाड़ियों का संक्षिप्त वर्णन यहां किया जाता है।

(१)—गारो की पहाड़ियाँ।

यह इस जिले की प्रधान पहाड़ी-श्रेणी है तथा इसी पर इसका प्रधान स्थान तुरा (*Tura*) बसा हुआ है। यह श्रेणी उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व को जाती है। इसकी सब से बड़ी चोटी नोकरेक है जो ४,६५२ फीट ऊँची है तथा तुरा से आठ मील दक्षिण-पूर्व में स्थित है। इस स्थान से पहाड़ों की ऊँचाई कम होने लगती है सोमेश्वरी नदी के पूर्व में इसकी कैलाश नामक एक चोटी है जिसकी ऊँचाई समुद्र की सतह से ३,३७५ फीट है। खासी पहाड़ी की सीमा के पास एक तीसरी चोटी वालयाकुरम है जो २,८३१ फीट ऊँची है। तुरा वाली श्रेणी से ५ मील उत्तर में एक बहुत छोटी अरबेला नाम की पहाड़ी है जिसकी सबसे ऊँची चोटी ३,२७७ फीट ऊँची है। जिले के शेष भाग में जो पहाड़ियों की श्रेणी है वह उत्तर से दक्षिण की ओर जाती है। इस श्रेणी की अनेक चोटियाँ १५०० से लेकर २००० फीट तक ऊँची हैं। परन्तु इसकी साधारण सतह इससे कम है। इन पहाड़ियों पर घने जंगल लगे रहते हैं परन्तु जहाँ खेती के लिये जमीन बनाई गई है वहाँ केवल बांस और नरकट के जङ्गल दिखाई पड़ते हैं। पहाड़ियाँ घाटियों की ओर ढलुवा हैं। गारो लोगों का ऐसा विश्वास है कि कैलाश चोटी पर मृत मनुष्यों की आत्मायें निवास करती हैं।

(२) खासी और जयन्तिया की पहाड़ियाँ

ये इसी नाम के जिले में फैली हुई हैं। उत्तरी और पश्चिमी किनारे पर ये पहाड़ियाँ ऊँची उठी हुई श्रेणी के रूप में विद्यमान हैं। साधारणतया इनकी उँचाई २००० से लेकर ३००० फीट तक है। परन्तु इनके मध्य भाग में शिलांग का प्लेटो स्थित है जिसकी उँचाई प्रायः ६००० फीट है। शिलाङ्ग की चोटी इस में सबसे ऊँची जगह है तथा इसकी उँचाई ६,४५० फीट है। पूर्वी और पश्चिमी भाग में इस प्लेटो की उँचाई कम है। खासी जाति के अधिकांश लोग इसी प्लेटो में निवास करते हैं। इस प्रदेश का उत्तरी भाग भोई प्रदेश के नाम से प्रसिद्ध है। खासी और जयन्तिया पहाड़ियों की कुछ चोटियों की उँचाई इस प्रकार है। रेबलेङ्ग ५,६७१ फीट, लैतदेंग ६००० फीट, उ-मुन ६,२२१ फीट, मसकुइन ५,३०६ फीट और केलाङ्ग ५,६८४ फीट। इन पहाड़ियों में गर्म पानी के सोते हैं तथा अनेक कन्दरायें भी पाई जाती हैं।

(३) दक्षिण की लुशाई पहाड़ियाँ

आसाम के दक्षिणी भाग में लुशाई की पहाड़ियाँ स्थित हैं जो आसाम को वर्मा से पृथक करती हैं। ये पहाड़ियाँ प्रायः घने बाँस के जङ्गलों से घिरी हुई हैं। परन्तु इनके पूर्वी भाग में वर्षा के अभाव के कारण खुले घास से आच्छादित स्थान मिलते हैं। इन पहाड़ियों में लुशाई नाम की जाति रहती है परन्तु यहाँ आबादी बहुत ही कम है। काचार के जिले में इस पहाड़ी के आगे निकले हुये ढलुवे स्थानों में 'संरक्षित' जंगल हैं जो कि आजकल काटकर खेत बनाये जा रहे हैं। साधारणतया इन पहाड़ियों की ऊँचाई २००० फीट है परन्तु इनकी चोटियाँ ६०००

फीट तक ऊँची है। लुशाई पहाड़ियों में एक नीला पर्वत (Blue Mountain) है जिसकी ऊँचाई ७,१०० फीट है । इस जिले का पूर्वी भाग अधिक ऊँचा है। लुशाई पहाड़ियों के पास ही में स्थित चीन पहाड़ियों की कुछ चोटियाँ ८००० फीट तक ऊँची हैं।[1]

(४) नागा की पहाड़ियाँ

ये पहाड़ियाँ मणिपुर राज्य के उत्तर तथा शिवसागर जिले के पूर्व और उत्तर में फैली हुई हैं। इस में आसाम की प्रसिद्ध नागा जाति बसती है। ये पहाड़ियाँ उत्तर-दक्षिण में बहुत दूर तक फैली हुई हैं। इसकी सब से बड़ी चोटी का नाम जापवो है जो १०,००० फीट ऊँची है। यह चोटी नागा पहाड़ियों के सूदूर दक्षिण भाग में स्थित है। इसके उत्तरी-पूर्वी भाग के आसपास अनेक कोयले की खानें हैं। धनसिरी नदी यहीं से निकलती है। ये पहाड़ियाँ अन्य पहाड़ियों से विस्तार में बड़ी हैं।

(५) मिकिर और रेङ्गमा की पहाड़ियाँ

ये पहाड़ियां आसाम श्रेणी से अलग हट कर निकास (Projection) के रूप में स्थित हैं। ये दोनों शिवसागर और नवगांव के जिले में फैली हुई हैं। इन पहाड़ियों की चोटियाँ ४००० फीट तक ऊँची हैं। ये दोनों पहाड़ियाँ ब्रह्मपुत्र की घाटी में घुस आई हैं जिससे ब्रह्मपुत्र-घाटी का मैदान यहाँ बहुत ही कम हो गया है।

[1] इन पहाड़ियों की विस्तृत जानकारी के लिये देखिये आसाम डिस्ट्रिक्ट गजेटियर भाग १०।

(६) पटकोई पहाड़ियाँ

ये नागा पहाड़ियों की उत्तरी-पूर्वी सीमा पर स्थित है। ये विशेष बड़ी नहीं हैं।

(७) बैरेल श्रेणी

यह श्रेणी खासी-जयन्तिया पहाड़ियों की दक्षिणी पूर्वी सीमा से प्रारम्भ होती है। यह शीघ्र ही अचानक बहुत ऊँची हो जाती है और जतिङ्गा की घाटी में जाकर इसकी चोटियाँ ५००० फीट से लेकर ६००० फीट तक ऊँची हो जाती हैं। इसके पश्चात् यह श्रेणी कुछ टेढ़ी होकर उत्तर-पूर्व की ओर चली जाती है। तथा कुछ अधिक ऊँची होकर नागा पहाड़ी का जिला और मणिपूर राज्य के बीच में इन दोनों की सीमा का काम करती है। इस श्रेणी पर भी जङ्गल लगे हुये हैं तथा अधिक ऊँचाई के कारण कहीं कहीं बर्फ भी पड़ती है।

आसाम की पहाड़ियों में कई समान बातें हैं। ये सब प्रायः छोटी हैं तथा जापवो-चोटी को छोड़कर इनकी ऊँचाई भी साधारणतया बराबर है। इन सब पर जङ्गल लगे हुये हैं तथा प्रायः प्रत्येक पहाड़ी किसी न किसी नदी का उद्गम स्थान अवश्य ही है।

नदियाँ

यदि आसाम की नदियों का देश कहें तो इसमें कुछ अत्युक्ति नहीं होगी। इतने कम क्षेत्रफल में इतनी अधिक नदियाँ किसी भी प्रदेश में नहीं हैं।* देखिये वहां ही विशाल नदियाँ तथा छोटी छोटी शाखायें कहीं प्रबल वेग से बहती हुई तथा कहीं कलकल शब्द करती हुई दृष्टिगोचर होती हैं। सच पूछा जाय तो प्रान्त में नदियों का जाल सा बिछा हुआ है। आसाम की नदियों की कुल संख्या ६१ है जिसमें ३४ उत्तरी पहाड़ों से निकल कर बहती हैं तथा २४ नदियाँ दक्षिण की पहाड़ियों से निकलती हैं। ब्रह्मपुत्र तथा उसकी दो सहायक नदियाँ दिहाङ्ग और दिबाङ्ग इसके अतिरिक्त हैं। अतः आसाम की समस्त नदियों को उद्गम स्थान के विचार से तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है :—

(१) उत्तरी पहाड़ों से निकल कर ब्रह्मपुत्र में गिरने वाली।

(२) दक्षिणी पहाड़ियों (गारो, खसिया और

*डा० जे० पी० वाडे ऐन एकाउण्ट आफ आसाम पृ०२४ (भूगोल सम्बन्धी लेख)

जयन्तिया) से निकल कर ब्रह्मपुत्र अथवा सूरमा में गिरने वाली।

(३) सुदूर कैलाश से निकल कर आसाम में बहने वाली जैसे ब्रह्मपुत्र।

आसाम की नदियों की विशेषता यह है कि ये बहुत गहरी और चौड़ी होती हैं। अतः इनमें बड़ी बड़ी स्टीमरें व्यापार के लिये आ जा सकती हैं। प्राचीन समय में जब रेलें नहीं थीं तब प्रान्त का सारा व्यापार इन्हीं नदियों के द्वारा होता था। इसके अतिरिक्त ये विशाल नदियां इस देश को शत्रुओं के आक्रमण से बचाये रहती थीं मीर जुमला की असफलता तथा दुर्गति का सारा श्रेय इन्हीं नदियों को है। इन्हीं नदियों की अधिकता के कारण प्रान्त कुछ उपजाऊ भी हो गया है। नदियों की अधिकता के कारण सब का वर्णनकरना यहां असंभव है अतः दो चार प्रसिद्ध नदियों के वर्णन से ही संतोष करना पड़ेगा।

ब्रह्मपुत्र नदी

यह आसाम की सब से बड़ी नदी है तथा भारत की प्रधान नदियों में से यह भी एक प्रधान नदी है। यह हिन्दुओं को बड़ी पवित्र तथा पूजनीय नदी समझी जाती है। संस्कृत साहित्य में इसका वर्णन मिलता है जहाँ इसका 'नद' (नदी नहीं) के नाम से उल्लेख किया गया है। यह मानसरोवर के पास से निकलने के कारण मानस=ब्रह्म+पुत्र अर्थात् ब्रह्म का पुत्र मानी जाती है। पुत्र होने के कारण इसे नद (पुल्लिङ्ग) कहते हैं नदी (स्त्रीलिंग) नहीं। ब्रह्म का पुत्र होने से इस नदी का नाम ब्रह्मपुत्र पड़ गया। चूंकि यह नदी अति पवित्र समझी जाती है अतः इस में गोता लगाना कलिमलपुञ्ज को नाश करने वाला समझा जाता है। इस नदी में अनेक ऐसे स्थान हैं जो बड़े पवित्र समझे जाते हैं। इन्हीं स्थानों में से ब्रह्मकुण्ड भी है जहाँ पर स्नान करने के लिये प्रति वर्ष हजारों आदमी बिना मार्ग की विषमता का विचार किये जाते हैं और यहाँ स्नान कर अपने को कृतकृत्य समझते हैं। कामाख्य देवी का भारत विख्यात मन्दिर,जो शक्ति-पूजा का प्रधान स्थान है इसी पवित्र नदी के तट पर बसा हुआ है। यदि ब्रह्मपुत्र को हम आसाम की गङ्गा कहें तो कुछ भी अत्युक्ति न होगी केवल हम हिन्दू ही नहीं बल्कि हिन्दू संस्कृति से अनभिज्ञ तिब्बत देश के पहाड़ी लोग भी इस नदी को बड़ी पवित्र तथा पूजनीय समझते हैं। जिस प्रकार से स्थान विशेष से गङ्गा का नाम अलकनन्दा, गंगा और भागीरथी होता जाता है उसी प्रकार से इसका नाम भी तिब्बत में सांपू और आसाम तथा बङ्गाल में ब्रह्मपुत्र हो जाता है। प्राचीन समय में इस नदी (नद) का नाम लौहित्य था।

यह नदी मानसरोवर झील के पूर्व कैलाश पर्वत से निकलती है। यह १८०० मील लम्बी है और तिब्बत तथा उत्तरी-पूर्वी हिन्दुस्तान के विस्तृत (३,५०,००० वर्गमील) प्रदेश का पानी बहाकर लाती है। आसाम की घाटी में यह नदी ४५० मील तक ठीक पश्चिम की ओर बहती है। ब्रह्मपुत्र के मार्ग में आसाम में प्रबल वर्षा होती है और सदिया के पास इसकी घाटी समुद्रतल से ४,००० फीट ऊँची है। सूरमा नदी को अपेक्षा ब्रह्मपुत्र की औसत ऊँचाई समुद्र की सतह से अधिक है। ब्रह्मपुत्र बड़े जोरों से बहती है इस कारण सदा अपने किनारे काटती रहती है। यही कारण है कि कुछ इने गिने शहरों को छोड़ कर गङ्गा की भांति इसके किनारे अधिक शहर नहीं हैं।

ब्रह्मपुत्र नदी की अनेक सहायक नदियाँ हैं जो स्थान स्थान पर आकर इसमें मिलती रहती हैं। इन में कुछ नदियां तो उत्तर के पहाड़ से निकलती हैं तथा कुछ ब्रह्मपुत्र के दक्षिण में स्थित पहाड़ियों से निकल कर इसमें मिलती हैं। ब्रह्मपुत्र की उत्तरी सहायक नदियों में सदा बर्फ गल गल कर आती रहती है जिससे इन नदियों का प्रवाह कभी सूखने नहीं पाता। परन्तु दक्षिण की नदियां सदा बरसाती पानी पर ही अवलम्बित रहती हैं और गर्मी के दिनों में प्रायः सूख जाती हैं। ब्रह्मपुत्र की उत्तरी प्रधान सहायक नदियां दिबाङ्ग, दिहाङ्ग, सुबनसिरी, भरेली, लरनदी, और मनास हैं तथा दक्षिणी प्रधान सहायक नदियों के नाम नयी तथा पुरानी दिहिङ्ग, दिसाङ्ग, दिसोई तथा धनसिरी है। धनसिरी नदी के संगम के कुछ

नीचे ब्रह्मपुत्र नदी का कुछ जल प्रधान धारा से अलग होकर, कैलेङ्ग का नाम धारण कर नवगांव जिले से बेग से बहता हुआ जाकर गौहाटी से कुछ पहिले ही प्रधान धारा से फिर मिल जाता है। सदिया के ऊपर ब्रह्मपुत्र की धारा बहुत कुछ पतली हो जाती है।

ब्रह्मपुत्र नदी उन स्थानों के अतिरिक्त जहां पहाड़ियाँ घुस आई हैं सर्वत्र अपने बालूदार किनारे के बीच में बहती है। ये किनारे सदा गिरते रहते हैं और कभी कभी तो प्रधान धारा छः छः मील इधर उधर चली जाती है। ब्रह्मपुत्र की इस परिवर्तनशील सीमा के अन्दर किसी प्रकार की स्थाई खेती नहीं होती और न वहाँ कोई स्थाई निवास-स्थान है। यहाँ उन किसानों की केवल छोटी छोटी झोपड़ियाँ दिखाई पड़ती हैं जो इस 'चूर' जमीन पर जाड़े के मौसम में तेलहन बोते हैं। परन्तु इसके आगे काँप का सतह ऊँची हो जाती है और बालू के स्थान पर किसानों के जोते गये खेत और बस्तियाँ दिखाई पड़ती हैं। ब्रह्मपुत्र के किनारे के प्रधान नगरों के नाम ये हैं:—धुब्री-जो गोआलपाड़ा जिले का प्रधान स्थान है, गोआलपाड़ा, गौहाटी, तेजपूर, सिलघाट और विश्वनाथ। विश्वनाथ से लेकर सदिया तक की २०० मील की दूरी में एक भी शहर इसके किनारे नहीं है। इस नदी के आस पास सबसे अधिक घने बसे स्थान कामरूप का उत्तरी भाग, जोरहाट और शिवसागर है तथा सबसे कम आबाद स्थान डैरेङ्ग तेजपूर का पश्चिम भाग, नवगांव का दक्षिणी भाग तथा लखीमपूर है। यह नदी बहुत गहरी तथा चौड़ी है अतः बड़े बड़े व्यापारिक स्टीमर डिब्रूगढ़ तक जाते हैं तथा छोटे स्टीमर तो सदिया तक भी चले जाते हैं। इसकी अनेक सहायक नदियों में भी स्टीमर चलते हैं। इस प्रकार धार्मिक तथा व्यापारिक दोनों दृष्टियों से ब्रह्मपुत्र आसाम की सबसे पवित्र और उपयोगी नदी है।

सूरमा नदी

यह आसाम की दूसरी प्रसिद्ध नदी है तथा ब्रह्मपुत्र के नीचे यही प्रधान नदी है। यह आसाम के दक्षिणी भाग में बहती है तथा इसी नदी के कारण इस स्थान का नाम भी सूरमा की घाटी हो गया है। यह नदी मणिपूर के उत्तर में स्थित बैरेल श्रेणी से निकलती है तथा मणिपूर, काचार और सिलहट जिलों से होती हुई बंगाल की ओर चली जाती है। इसका दूसरा नाम बराक (नदी) भी है अतः मणिपूर राज्य में इसे बराक नदी के नाम से ही स्मरण करते हैं। इस नदी का ठीक उद्गम स्थान 'जापवो' नामक पर्वत श्रेणियों से समझना चाहिये जिसके उत्तरी किनारे पर अंगामी नागा नाम की जातियाँ बसी हुई हैं। इस स्थान से निकल कर यह दक्षिण की ओर बहती है तथा धीरे धीरे पश्चिम की ओर मुड़ती हुई मणिपूर राज्य में बहती है। ब्रिटिश राज्य की सीमा में आने के पहिले मणिपूर में इस नदी में आकर अनेक सहायक नदियाँ मिलती हैं। तिपाईमुख नामक स्थान में जहाँ मणिपूर राज्य, काचार जिला तथा लुशाई की पहाड़ियाँ एकत्र मिलती हैं। यह नदी शीघ्रता से उत्तर की ओर मुड़ जाती है और लखीपूर के आसपास भुवन की पर्वत श्रेणी से निकल कर बड़ी टेढ़ी मेढ़ी चाल से चलती हुई, पश्चिम दिशा की ओर मुड़ती हुई काचार जिले में बहने लगती है। काचार जिले की पश्चिमी सीमा के पास बदरपूर के नीचे थोड़ी दूर पर यह नदी दो शाखाओं में विभक्त हो जाती है (१) उत्तरी शाखा तथा (२) दक्षिणी शाखा। यह उत्तरी-शाखा सूरमा के नाम से विख्यात है और खासी की पहाड़ियों के नीचे से बहती हुई पश्चिम की ओर मुड़ती जाती है। यहाँ पर इसके तट पर स्थित सिलहट तथा छातक ये दो शहर प्रसिद्ध हैं। यह सुनामगंज से फिर दक्षिण की ओर बहने लगती है। सूरमा की दक्षिणी शाखा का नाम पहिले कुसी आरा है; यह दक्षिण पश्चिम की ओर बहती है और मनु नदी के संगम के पास यह दक्षिणी शाखा पुनः दो शाखाओं में विभक्त हो जाती है। इन शाखाओं में दक्षिणी शाखा सम्पूर्ण नदी का मूल नाम बराक धारण कर लेती है और नबीगंज के पश्चिम में थोड़ी दूर पर सूरमा नदी से जाकर मिल जाती है। इसकी दूसरी (उत्तरी) शाखा-जो पहिले बीबी आना तथा पश्चात् कालनी के नाम से प्रसिद्ध है-सूरमा तथा बराक के संगम के उत्तर में अबीदाबाद नामक स्थान में सूरमा नदी से मिल जाती है।

सूरमा नदी की उत्तर दिशा में बहने वाली सहा-

यक नदियाँ जोरी, जतिंगा, लुवा, हरी, पियैन, बोगा-पानी, जदुकाता और महेशकाली है और दक्षिण की सहायक नदियों के नाम सोनाई, धलेश्वरी, जुरी, मनु और खवाही आदि है। मननसिंह जिले में भैरव बाजार नामक स्थान में यह ब्रह्मपुत्र नदी से मिल जाती है और वहाँ से मेगना के नाम से प्रसिद्ध हो जाती है। बरसात के दिनों में सूरमा नदी में सिलचर तक स्टीमर जा सकते हैं परन्तु गर्मी में छाटक के आगे नहीं जा सकते हैं। बड़ी बड़ी नावें इस नदी में सिलचर के पूर्व बांसकण्डी तक चली जाती हैं। इस प्रकार यह नदी भी व्यापार के लिये बड़ी ही उपयोगी है। दिबांग और दिहांग-ये नदियां तिब्बत के पहाड़ों से निकलती हैं तथा सदिया के पास आकर ब्रह्मपुत्र नदी में मिल जाती हैं। ये नदियां बहुत बड़ी हैं अतः इनकी गिनती ब्रह्मपुत्र की प्रधान सहायक नदियों में की जाती है।

भरेली

यह नदी हिमालय पहाड़ से निकलती है तथा तेजपूर के पूर्व में ब्रह्मपुत्र से आकर मिल जाती है। मनास नदी भूटान के उत्तर में स्थित पहाड़ियों से निकलती है। यह भूटान को पार कर आसाम में गोआलपाड़ा जिले में प्रवेश करती है और जोगीघोपा के पास आकर ब्रह्मपुत्र से मिल जाती है। दिहिङ्ग नदी यह ब्रह्मपुत्र की दक्षिणी सहायक नदियों में प्रधान है। यह शिवसागर तथा लखीमपूर जिले की सीमा पर ब्रह्मपुत्र से मिल जाती है। धनसिरी-यह भी ब्रह्मपुत्र की दक्षिणी सहायक नदी है। यह मणि-पूर के उत्तर में स्थित पहाड़ियों से निकल कर शिव-सागर जिले में धनसिरीमुख के पास ब्रह्मपुत्र में मिल जाती है। इसके अतिरिक्त बोर नदी, सुबन्सिरी, दिसाङ्ग तथा दिसोई आदि भी ब्रह्मपुत्र की सहायक नदियाँ हैं परन्तु ये छोटी हैं।

सूरमा नदी की बराक तथा कुसीआरा नाम से पुकारी जाने वाली भिन्न भिन्न शाखाओं का वर्णन पहिले किया जा चुका है। बोगापानी और यदुकाता ये दोनों सूरमा की सहायक नदियाँ हैं। ये खासी और जयन्तिया की पहाड़ियों से निकलती हैं और भिन्न भिन्न स्थानों में जाकर सूरमा से मिलती हैं। महेशकाली गारो की पहाड़ियों से निकलती है। सोनाई और धलेश्वरी लुशाई की पहाड़ियों से तथा लैंगेई, जुरी और मनू नदियाँ त्रिपुरा की पहाड़ियों से निकलती हैं। ये सब नदियाँ सूरमा की सहायक नदियाँ हैं। आसाम की प्रधान प्रधान नदियाँ यही हैं।

जलवायु

आसाम की जलवायु की विशेषता यह है कि वह बहुत ही नम है। इसका कारण यह है कि यहाँ अधिक घने जङ्गल हैं तथा यहाँ के मैदानों में वर्षा का पानी सदा जमा रहता है। मैदान के पास ही ऊँची पहाड़ियाँ हैं जिसके कारण हवा ठंडी हो कर पानी बरसाती है। यही कारण है कि यहाँ साल भर तक आकाश में बादल घिरे रहते हैं जब कि भारत के अन्य प्रान्तों में विशेषतः कड़ी धूप रहा करती है। यहाँ बसन्त ऋतु में ही घनघोर वर्षा प्रारम्भ हो जाती है जब कि अन्य प्रान्तों में प्रचण्ड गर्मी पड़ा करती है। इतनी जल्दी पहिले ही वर्षा शुरु होने का कारण मानसून नहीं है बल्कि यहाँ के स्थानीय तूफान और वास्प-निर्माण (Evaporation) हैं। इन्हीं कारणों से आसाम में केवल दो ही ऋतु होते हैं (१) जाड़ा (२) बरसात। नवम्बर मास से ले कर फरवरी तक यहां जाड़ा पड़ता है और उस समय यहां की जलवायु बड़ी सुहावनी होती है। साल के किसी भी भाग में यहां अधिक गर्मी नहीं पड़ती। उपर्युक्त महीनों को छोड़ कर वर्ष के शेष आठ महीनों में यहां बरसात रहती है। इन महीनों में आकाश में सदा बादल घिरे रहते हैं तथा जाड़े के दिनों में सदा कुहरा पड़ा करता है। जलवायु की दृष्टि के विचार से आसाम प्रान्त सब ट्रापिकल रीजन (Sub-Tropical Regeon) में पड़ता है इसके सिवा अन्य स्थानीय कारणों से भी यहाँ की जलवायु का टंडा शीतोष्ण तथा आर्द्र होना स्वाभाविक ही है।

तापक्रम

यहाँ की वर्षा और हवा में अधिक नमी होने के कारण यहाँ का तापक्रम ८३ अंश फारेनहाइट से अधिक ऊँचा नहीं होता है। नमी का असर सरदी पर भी पड़ता है अतः जाड़े में भी तापक्रम ६४ अंश फारेनहाइट से कम नहीं होता। आसाम के उत्तरी-पूर्वी भाग में शिवसागर के आसपास इस प्रान्त के पश्चिम में स्थित धुब्री की अपेक्षा जाड़े का तापक्रम कुछ कम और बरसात का तापक्रम कुछ अधिक होता है। इन दोनों स्थानों की अपेक्षा सिलचर का तापक्रम जाड़े और बरसात में सदा अधिक रहता है।

हवायें

ब्रह्मपुत्र की घाटी तथा सूरमा घाटी में हवायें भिन्न भिन्न दिशाओं से बहती हैं। सूरमा की घाटी में गंगा
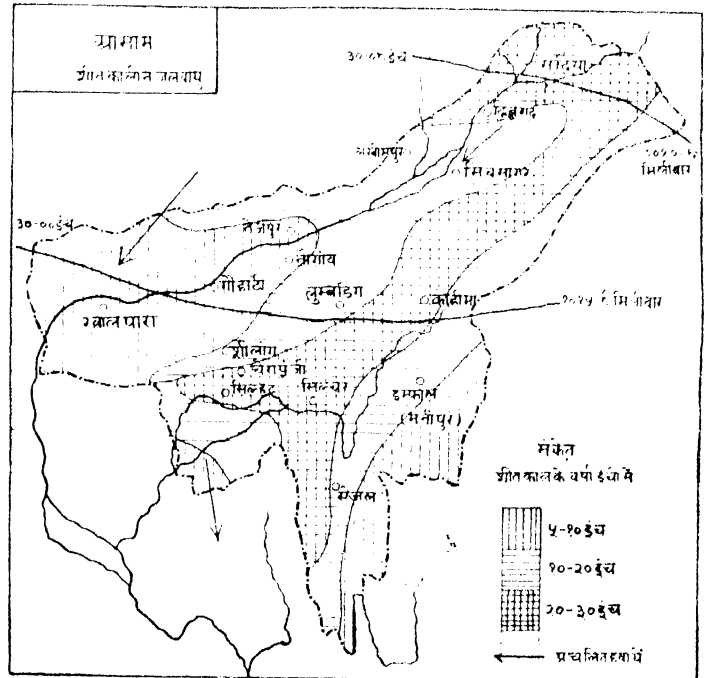
के डेल्टा के समान हवायें दक्षिण-पश्चिम से चलती हैं परन्तु अप्रैल और मई के महीनों में हवायें उत्तर पूर्व से बहती हैं। आसाम श्रेणी के पश्चिमी भागों में दक्षिणी-पश्चिमी हवा जो बंगाल की खाड़ी से उठती है बसन्त ऋतु में सदा एक ही दिशा से बहा करती है। बरसात में कभी कभी हवा की दिशा दक्षिण और दक्षिण-पूर्व तथा उत्तर की ओर हो जाती है। ब्रह्मपुत्र की घाटी में इसके विपरीत हवायें

जाड़े के दिनों में तथा बसन्त ऋतु में सदा उत्तर-पूर्व से चलती हैं परन्तु जुलाई और अगस्त में जब मानसून का ज़ोर अधिक होता है उस समय हवायें दक्षिण-पश्चिम से बहती हैं। गोआलपाड़ा के आस पास आसाम घाटी के निचले भाग में जाड़े के अधिक अंशों में हवायें उत्तर पूर्व से बहती हैं और साल के शेष भागों में हवायें सदा दक्षिण-पश्चिम से चला करती हैं। इस प्रकार से आसाम घाटी की मौसिमी हवायें दक्षिण-पश्चिम मानसून की वे शाखायें हैं जो मुड़ कर इस घाटी में चली आती हैं। सूरमा तथा ब्रह्मपुत्र घाटी में जाड़े तथा बरसात के दिनों में कभी कभी हवा बिल्कुल बन्द सी हो जाती है परन्तु यह दशा बहुत समय तक नहीं रहती।

बसन्त ऋतु में अधिकतर तूफान उठा करते हैं जिसमें हवा बड़े ज़ोरों से बहती है और बहुत अधिक पानी बरसता है। घाटियों तथा शिलाङ्ग पठार की पहाड़ियों के कारण ये तूफान प्रायः उठा करते हैं, अतः आसाम की घाटी के निचले भागों में इनका प्रकोप अधिक होता है। बरसात के अन्त में बङ्गाल की खाड़ी से प्रभंजन उठा करते हैं जिसके कारण आसाम श्रेणी के पश्चिमी भागों में और पहाड़ के आस-पास के मैदानों में अधिक पानी बरसता है।

नमी और बादल

गंगा के डेल्टा के समान ही आसाम के भिन्न भिन्न भागों में हवा में नमी पाई जाती है। परन्तु बरसात के दिनों में यहाँ पर गंगा के डेल्टा से नमी अधिक पाई जाती है। साल भर का औसत लेने पर शिवसागर की जलवायु में जितनी नमी पाई जाती है उस से अधिक नमी भारत के किसी भी मेटिओरोलाजिकल स्टेशन पर नहीं पाई जाती। इतनी अधिक मात्रा में नमी केवल दार्जिलिंग में ही पाई जाती है। शिवसागर में आकाश बादलों से सदा आच्छादित रहता है। भारत के किसी भी अन्य स्थान में इतने अधिक बादल नहीं दिखाई पड़ते। इसका कारण संभवतः जाड़ों के दिनों का घना कुहरा[1] तथा बसन्त ऋतु की अधिक वृष्टि है। ब्रह्मपुत्र घाटी की अपेक्षा सूरमा की घाटी में कुहरा कम पड़ता है तथा उतना घना भी नहीं होता। सूरमा घाटी के पूर्वी भागों में जहां सिलचर बसा है पश्चिमी भागों की अपेक्षा बहुत ही कम कुहरा पड़ता है।

वर्षा

आसाम में भिन्न भिन्न स्थानों पर जितनी वर्षा होती है उनके आँकड़े देखने से पता चलता है कि मार्च से मई तक के महीनों में ब्रह्मपुत्र और सूरमा की घाटियों में वर्षा बहुत अधिक होती है जब कि उत्तरी भारत बिल्कुल सूखा पड़ा रहता है। ब्रह्मपुत्र घाटी के बीच के भाग में अर्थात् गौहाटी, तेजपुर और नवगांव में घाटी के पश्चिमान्त और पूर्वान्त दोनों छोरों की अपेक्षा कम पानी बरसता है। सन् १९३४ ई० में नवगांव में औसत वार्षिक वर्षा ८१·२५ इंच हुई
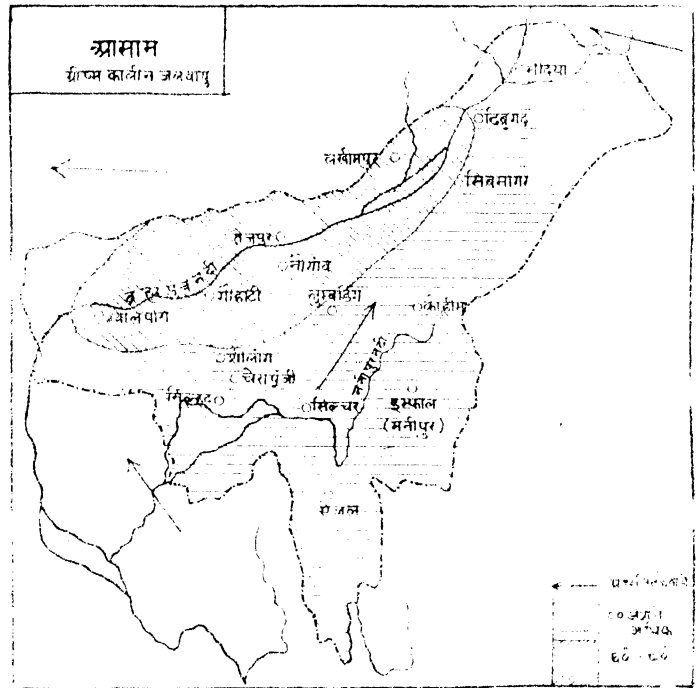
(१) घना कुहरा प्रायः बादलों की श्रेणी में गिना जा सकता है।

जब कि उसी साल गोआलपाड़ा और शिवसागर में वर्षा का वार्षिक औसत क्रमशः १०५.७६ तथा १०२.२६ इञ्च था। इसका कारण यह है कि इस (मध्यभाग) भाग के दक्षिण में शिलाङ्ग पठार का सब से ऊँचा भाग स्थित है जिसके दक्षिणी किनारे पर चेरापूंजी के पास तथा पठार के केन्द्र स्थान पर मानसूनी हवाओं का सारा पानी बरस जाता है। इसलिये जब ये हवायें आसाम घाटी के मध्य भाग में प्रवेश करती हैं तब वे सूखी रहती हैं और पानी कम बरसता है। इसके विपरीत घाटी के पश्चिमी भाग में गोआलपाड़ा तथा धुब्री के आसपास के स्थान दक्षिणी-पश्चिमी मानसून के ठीक रास्ते में पड़ते हैं अतः यहाँ पानी अधिक बरसता है। इसी तरह पूर्वी भाग (शिवसागर के आसपास) में भी बङ्गाल की खाड़ी की मानसूनी हवायें शिलाङ्ग पठार के पूर्वी भागों के कम ऊँचा होने के कारण उन्हें पार कर प्रवेश करती हैं और पश्चिमी भाग की भाँति ही यहाँ भी अधिक पानी बरसता है।

सूरमा की घाटी में आसाम घाटी की अपेक्षा बसन्त ऋतु में पानी अधिक बरसता है।

गारो की पहाड़ियों का प्रधान स्थान तुरा श्रेणी के उत्तरी भाग में बसा है। इस कारण मानसूनी हवाओं से यह स्थान सुरक्षित है और यहाँ पानी कम बरसता है। इसी तरह कोहिमा भी जावप की चोटी के ठीक उत्तरी सिरे पर बसा हुआ है अतः यह भी मानसूनी हवाओं से वंचित रहता है।

शिलाङ्ग जो चेरापूँजी से केवल ३० ही मील की दूरी पर है 'शिलाङ्ग प्लेटो' के उत्तरी किनारे पर बसा है। परन्तु इतने समीप में रहने पर भी जहाँ चेरापूँजी में संसार सब से अधिक (५०० इञ्च तक) वर्षा होती है वहाँ शिलाङ्ग में अधिक से अधिक ८० इञ्च तक वर्षा होती है। इसका कारण यह है कि शिलाङ्ग 'रेन शैडो' में है और दक्षिण में शिलाङ्ग से शिलांग पठार, १००० फीट ऊँचा खड़ा है। अतः मानसून की हवायें इस ऊँची पर्वतीय दिवाल से टकरा कर सारा पानी दक्षिण की ओर ही (जिधर चेरापूँजी है) बरसा देती हैं। अतः जब ये हवायें 'दिवाल' के उत्तरी किनारे पर उतरती हैं तब सूखी रहती हैं। इसीलिये शिलाङ्ग में पानी चेरापूँजी की अपेक्षा बहुत ही कम बरसता है। इसके विपरीत चेरापूँजी ऐसे स्थान पर बसा है जहाँ पानी बरसने के सब साधन विद्यमान हैं। ठीक मैदान के पास ही ४४५५ फीट की ऊँचाई पर चेरापूँजी स्थित है और इसके दोनों तरफ २००० फीट ऊँची पहाड़ की उतराई है। इसलिये जो दक्षिणी पश्चिमी हवा
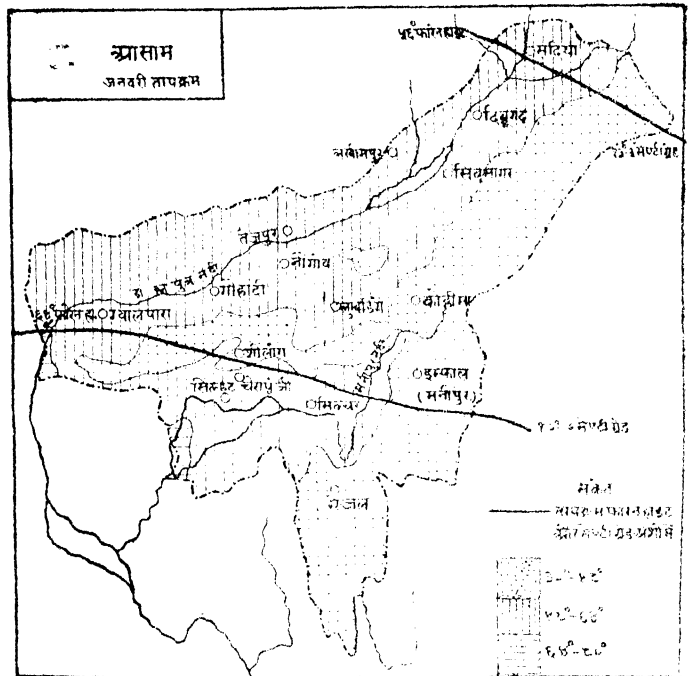
बङ्गाल की खाड़ी से उठती है वह सूरमा घाटी के पानी से डूबे हुये समतल स्थानों से होते हुये चेरापूँजी के तंग स्थान में आकर शिलाङ्ग पठार के दक्षिणी सिरे के पास पहुँचती है जहाँ पर उसे सीधे ऊपर उठना पड़ता है। इस कारण गर्मी के महीनों में इस पठार का दक्षिणी भाग भाप भरी हवाओं से घिर जाता है और इन हवाओं को ४००० फीट ऊँचा उठना पड़ता है जिस से ये हवायें बिल्कुल ठंडी होकर चेरापूँजी में प्रचुर पानी बरसा देती हैं। ऊपर जो कुछ लिखा गया है वह वर्षा की नीचे की तालिका से बिल्कुल स्पष्ट हो जायेगा।

जिला	१९३३	१९३४ (इञ्चों में)
काचार	११५·६४	१५४·३७
सिलहट	१२३·५६	१५०·५६
गोआलपाड़ा	८४·८४	१०५·५६
कामरूप	७५·१९	१००·८०
डैरेङ्ग	७०·२०	८५·०९
नवगाँव	६०·५३	८१·२५
शिवसागर	८०·८४	१०२·२६
लखीमपुर	१०७·३५	१३५·५७
सदिया फ्रान्टियर ट्रेक्ट	१३०·३६	५४·१७
शिलाङ्ग	...	८२·४४

स्वास्थ्य और पैदावार पर जलवायु का प्रभाव

आसाम में इतनी अधिक वर्षा तथा हवा में नमी और बादल के कारण कालाजार, मलेरिया अधिकतर आसाम श्रेणी के आस पास के स्थानों में फैला मिलता है। पहाड़ों से दूर खुले मैदानों में इस का प्रकोप कुछ कम रहता है। शिवसागर और डिब्रूगढ़ के मैदान तथा सिलहट का दक्षिणी भाग पहाड़ों से दूर स्थित होने के कारण स्वास्थ्य की दृष्टि से बहुत अच्छे हैं। यद्यपि बाढ़ के कारण सिलहट का मैदान पानी से डूबा रहता है फिर भी यह बहुत स्वास्थ-बर्द्धक स्थान है। पहाड़ों की जलवायु उनकी उँचाई के अनुसार अच्छी या बुरी है। शिलांग श्रेणी का बीच का पठार बहुत ही स्वास्थ्य-बर्द्धक समझा जाता है। इसके विपरीत गारो और उत्तरी कचार की पहाड़ियों के नीचे होने के कारण वहां सदा ज्वर का प्रकोप रहता है।

आसाम में बसन्त ऋतु की वर्षा तथा हवा में सदा नमी रहने के कारण यहां चावल और चाय की पैदावार अच्छी होती है। यहां पर दुर्भिक्ष पानी की कमी के कारण नहीं होता बल्कि पानी के कुअवसर में अधिक बरसने के कारण होता है बाढ़ से वहां हानि प्रायः अधिक होती है।[1]
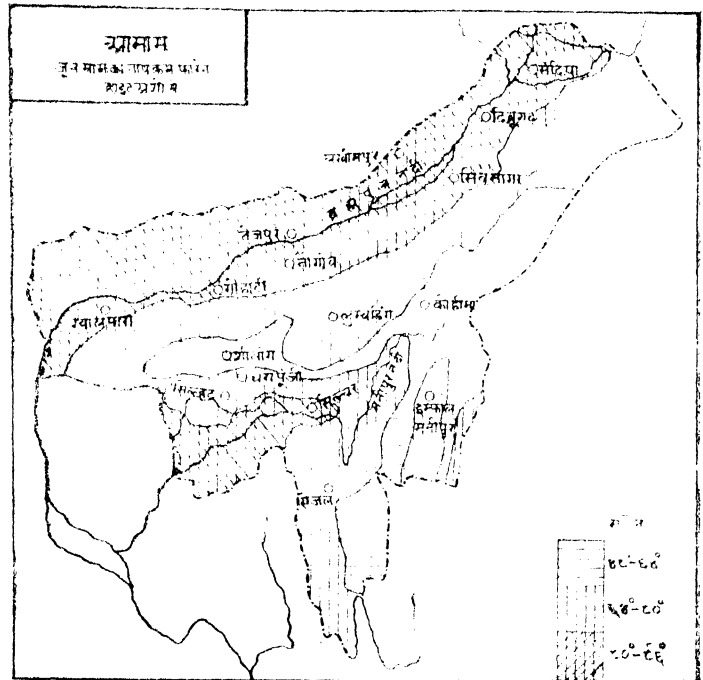
(१) एन एकाउण्ट आफ दी प्राग्रेस आफ आसाम एडमिनिस्ट्रेशन पृ० १४-२० (१९०१-०२)।
इम्पिरियल गजेटियर आफ इण्डिया भाग ६ पृ० २०-२१।

जंगल

आसाम में जंगलों की संख्या बहुत अधिक है। आसाम का कोई भी ऐसा जिला नहीं जिसमें जंगल न हो। पहाड़ी प्रान्त होने के साथ ही साथ यह जंगलों से भी युक्त है। प्रकृति देवी ने इस विषय में आसाम के ऊपर बड़ी कृपा की है। यद्यपि इन जंगलों के होने से आसाम की बढ़ती आबादी को अन्न पैदा करने के लिये खेत मिलना कठिन हो रहा है। इन से सरकार को बहुत बड़ी आमदनी है।

प्रबन्ध

इन जंगलों का प्रबन्ध करने के लिये सरकार ने एक जंगल का विभाग (फारेस्ट डिपार्टमेंट) खोल रक्खा है जो जंगल संबन्धी समस्त मामलों को देखा करता है। इस विभाग का एक प्रधान होता है तथा उनके नीचे अनेक छोटे आफिसर होते हैं जो सबार्डिनेट फारेस्ट आफिसर कहलाते हैं। प्रत्येक जिले में एक फारेस्ट आफिसर होता है जो डिपुटी-कमिश्नर की आधीनता में काम करता है। आसाम की घाटी में असंरक्षित जंगलों का प्रबन्ध सबार्डिनेट रेवेन्यू आफिसर करते हैं। इस विभाग का काम जंगली वृक्षों पर नम्बर लगाना, भिन्न भिन्न प्रकार के वृक्षों की गिनती रखना, जंगली आग से वृक्षों को बचाये रखना, काटे गये वृक्षों के ठीकेदार से रायल्टी वसूल करना तथा ठीका देना आदि है। कहने का तात्पर्य यह है कि जंगल संबन्धी जो कुछ कार्य हो सकता है वह सब इसी विभाग के द्वारा किया जाता है।

विभाग

प्रान्त में जितने जंगल हैं वे सब सरकार की सम्पत्ति हैं तथा उसी की आधीनता में हैं। ये जंगल दो भागों में विभक्त[1] हैं (१) संरक्षित (Reserved) (२) असंरक्षित (Unclassed state forests) संरक्षित जंगल वे हैं जिनमें बहुमूल्य वृक्ष पैदा होते हैं। जिन जंगलों में साल तथा नहोर आदि के वृक्ष हैं वे सब संरक्षित जंगल हैं। इसके अतिरिक्त जिन जंगलों में रबर तथा लाह के कीड़े पालने के वृक्ष हैं वे सब संरक्षित की श्रेणी में ही आते हैं। इन जंगलों का सरकार स्वयं प्रबन्ध करती है तथा जंगल के सारे व्यापार को अपने हाथों से करती है। असंरक्षित जंगलों के अन्तर्गत वे जंगल हैं जिन में बहुमूल्य वृक्ष नहीं हैं तथा कोई व्यापार की वस्तु (रबर आदि) उनसे नहीं पैदा होती। इन असंरक्षित जंगलों को सरकार खानगी आदमियों को ठीके पर दे देती है अथवा जितनी लकड़ी काटी जाती है उस पर कुछ निश्चय कर देना पड़ता है। इन जंगलों में सरकार की आज्ञा के बिना कोई आदमी लकड़ी नहीं काट सकता। सन् १९०४ ई० में संरक्षित जंगल का क्षेत्रफल ३,७७८ वर्गमील तथा 'असंरक्षित' जंगल का क्षेत्रफल १८,५०९ वर्गमील था।

(१) इम्पिरियल गज़ेटियर आफ इन्डिया जिल्द ६ पृ० ६७ 'Unclassed state forest' के लिये हिन्दी में कोई उपयुक्त शब्द न होने के कारण 'असंरक्षित' शब्द का प्रयोग यहां किया गया है। अतः सर्वत्र 'असंरक्षित' शब्द से इसी का अर्थ समझना चाहिये।

जङ्गल का विस्तार

यों तो आसाम में सर्वत्र जंगल पाये जाते हैं परन्तु आसाम घाटी के ऊपरी भाग में जिसमें लखीमपुर का पूरा जिला और शिवसागर तथा डैरंग जिले के कुछ भाग सम्मिलित हैं—जंगल अत्यन्त अधिक हैं। यदि इस प्रदेश को जंगली देश कहें तो कुछ अत्युक्ति न होगी[1]। यह स्थान घने और सदा हरे रहने वाले वृक्षों से घिरा हुआ है। इसकी तुलना में इस घाटी का मध्य तथा नीचे का भाग एक खुला हुआ मैदान है। इस विस्तृत मैदान में केवल घास ही होती है। परन्तु पहाड़ियों के आसपास ऊँचे

(१) The head of the Assam Velley, including the Lakhimpur district and part of the Sibsagar and Darrang districts, is a forest country". एन एकाउण्ट आफ दि प्राविन्स आफ आसाम एण्ड इट्स एडमिनिस्ट्रेशन (१९०१-२) पृ० ६१।

स्थानों तथा निर्जन पहाड़ियों के ऊपर जंगलों की सत्ता विद्यमान है परन्तु सूरमा की घाटी में ऐसी दशा नहीं है। यहां जंगल बहुत ही कम हैं। केवल सिलहट जिले के दक्षिणी भाग की पहाड़ियों के ऊपर जो टिपेरा तक फैली हुई हैं और दक्षिण-पूर्व दिशा की ओर लेंगई तथा सिंगला नदियों की विशाल घाटी में १०३ वर्ग मील जमीन में जंगल फैला हुआ है। काचार जिले के समस्त दक्षिणी भाग में जो लुशाई पहाड़ियों की सीमा पर हैं जंगल पाये जाते हैं। इन्हीं जंगलों से सिलहट के बहु संख्यक लोग अपनी लकड़ी की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। गारो की पहाड़ियों में भी जंगल का विस्तार कुछ कम नहीं है। काचार तथा सिलहट के जिलों में आबादी की सतत वृद्धि के कारण खेती के लिये जमीन की बड़ी कमी थी। अतः सन् १९०७ ई० में २८ वर्ग मील जंगल को काचार जिले में तथा ६७ वर्गमील जमीन में फैले जंगल को सिलहट जिले में काट कर के खेती के काम के लिये जमीन तैयार की गई। जैसा कि पहिले लिखा गया है प्रान्त के प्रत्येक जिले में जङ्गल पाले जाते हैं। सन् १९०१ ई० में इन संरक्षित जंगलों का विस्तार भिन्न भिन्न जिलों में इस प्रकार था।

जिला	संरक्षित जंगल (वर्गमील में)
काचार	८०७
सिलहट	१०३
गोआलपाड़ा	७०१
कामरूप	१४९
डैरंग	३२१
नवगांव	१४२
शिवसागर	८७६
लखीमपुर	३४०
गारो की पहाड़ी	१३४
खासी और जयन्तिया की पहाड़ियां	५१
नागा पहाड़ियां	६३

सारांश यह है कि आसाम-घाटी में जंगल बहुत ही अधिक हैं। सूरमा की घाटी में काचार जिले में जंगलों का विस्तार अधिक अवश्य है परन्तु सिलहट जिले में जङ्गल बहुत कम हैं। जैसा कि पहाड़ी प्रदेशों में जङ्गल होने की संभावना है उतने जङ्गल इन पहाड़ियों में नहीं हैं। गारो की पहाड़ी में नागा और खसिया की पहाड़ियों के जङ्गलों के योग से भी अधिक जङ्गल हैं।

वृक्षों के प्राप्ति स्थान

गोआलपाड़ा जिले में बहुमूल्यता विख्यात है। इसके अतिरिक्त ये पेड़ गारो की पहाड़ी, कामरूप, नवगाँव तथा डैरेङ्ग जिले में भी पाये जाते हैं। आसाम के जङ्गलों के प्रसिद्ध तथा कीमती वृक्ष ये हैं:—तीता सापा; जरूल, नहोर, अफ्रर, साम, गोमरी, शाम, गोमरी, खैर, सिस्सु तथा गुनसेराय। इनमें से अफ्रर और साम आसाम की घाटी में सर्वत्र पाया जाता है। नहोर का वृक्ष मिकिर की पहाड़ियों के पश्चिम ब्रह्मपुत्र की घाटी के मैदान में नहीं पैदा होता यद्यपि यह गारो और खसिया पहाड़ियों के जङ्गलों में सर्वदा बहुलता से पाया जाता है। सिस्सु मनास नदी के पूर्व में नहीं पाया जाता तथा खैर के पेड़ डैरेङ्ग जिले में उपलब्ध होते हैं। सूरमा की घाटी में जरूल,साम तथा बहोर के वृक्ष अत्यन्त प्रसिद्ध वृक्ष माने जाते हैं।

आसाम में लकड़ी का व्यापार बहुत बड़े पैमाने पर किया जाता है जिसका वर्णन उचित स्थान पर किया जायेगा। जंगलों में वृक्षों के अतिरिक्त बांस, बेंत, नरकट, घर छाने की घास तथा अनेक प्रकार के फल पैदा होते हैं। इनकी बिक्री से सरकार को बड़ा लाभ होता है। बड़े बड़े जंगल काट करके पेड़ ६-७ फुट के छोटे टुकड़े में कर दिये जाते हैं। ये वहां से नदी के किनारे लाये जाते हैं। बड़े लट्ठों को हथियां लाती हैं। नदी के किनारे पहुँचने पर नावों पर लाद कर वे बंगाल भेजे जाते हैं। इन सब प्रकारों की बिक्री तथा व्यवसाय से सरकार के फारेस्ट डिपार्टमेन्ट को खूब धन मिलता है इस विभाग के २३ वर्षों की आर्थिक व्यवस्था इस प्रकार है।

सन्	आय(रुपये)	खर्चा (रुपये)	नफा (रुपये)
१८८१-९०	२,३३,४८७	१,९९,४८८	३३,९९९
१८९१-१९००	४,२७,६१०	२,९६,५५७	१,३१,०५३
१९००-१९०१	५,६३,४००	३,४२,९६३	२,२०,४३७
१९०३-१९०४	६,७६,९४४	४,५१,८८७	२,२५,०५७

---

(१) इम्पिरियल गजेटियर आफ इण्डिया जिल्द ६ पृ० ६९।

बनस्पति

आसाम एक पहाड़ी प्रान्त है। अत: यहाँ जंगलों का विस्तार बहुत ही अधिक है। इस कारण यहाँ बनस्पति प्रचुर मात्रा में पाई जाती है। ये जंगल केवल पहाड़ी के ऊपर ही नहीं बल्कि मैदान के जिलों में भी पाये जाते हैं। आसाम में शायद ही ऐसा कोई जिला हो जहां जंगल न पाया जाता हो। अत: पहाड़ के ऊपर तथा मैदान में भी जंगलों की भरमार है। इस प्रान्त में जलवायु की अनुकूलता के कारण कुछ ऐसे पौधे पैदा होते हैं जिनका भारत के अन्य भाग में मिलना कठिन है। इसलिये यदि बनस्पतिशास्त्र की दृष्टि से देखें तो आसाम अपना बहुत बड़ा महत्व रखता है। आजकल की अनेक यूनिवर्सिटियों के "बोटानिकल म्युजियम" आसाम की बनस्पतियों से भरे पड़े हैं। यहाँ अनेक औषधि सम्बन्धी पौधे (medicinal plants) पैदा होते हैं जो अत्यन्त दुर्लभ हैं। इन पौधों से दवा तैयार की जाती है। यहाँ साल (सखुआ) बहुत अधिक परिमाण में पाया जाता है। सचमुच इस प्रान्त को यदि बनस्पति का घर कहें तो इसमें कुछ अत्युक्ति न होगी।[1]

आसाम में भिन्न भिन्न प्रकार की लकड़ी उपलब्ध होती है। अजार, साम, पिसु, साल, नहोर, सोप तथा गोहोर आदि के पेड़ सखुआ के समान टिकाऊ होते हैं और घर और पुल बनाने के काम में आते हैं। गोमारी, ओटेङ्गा, सोनाली, पोमा तथा अमारी आदि लकड़ी भी उपयोगी हैं परन्तु ये इतनी मजबूत नहीं हैं।

गोआलपाड़ा जिले में की 'हाल' नामक लकड़ी को नदी में बहा कर पूर्वी बंगाल भेजा जाता है। यह लकड़ी बहुत टिकाऊ होती है। इसके खम्भे पचासों वर्ष तक सुरक्षित रह सकते हैं। इस लकड़ी से बड़ी बड़ी व्यापारिक नावें भी तैयार की जाती हैं जिनका वजन १५० टन तक होता है। कुछ दूसरे पेड़ भी हैं जो बहुत मोटे होते हैं तथा इनका धड़ १२-१८ फीट तक मोटा होता है। नहोर का पेड़ बड़ा सुन्दर होता है। यह नुकीले रूप में ऊपर बढ़ता है। इसकी पत्तियां घनी और काली हरी होती हैं। इसका फूल सफेद होता है। खजूर के पेड़ भी बगीचों में पाये जाते हैं परन्तु इसके फल का कुछ उपयोग नहीं होता है। इमली तथा पपीता के पेड़ बगीचों में अधिक पाये जाते हैं। इन फलों को सर्वसाधारण खूब खाते हैं।

केला आसाम का बड़ा प्रसिद्ध फल है तथा प्रत्येक मनुष्य की वाटिका में पाया जाता है। यह बारहों महीने फलता है। इसके अनेक भेद हैं। माल भोग केला बड़ा अच्छा होता है। लोग इसे बड़े चाव से खाते हैं। जहजे, सम्पा, हुन्द मनोहर ये भी केले के भेद ही हैं और अच्छे होते हैं परन्तु जाति, पुर और भीम प्रकार के केले उतने अच्छे नहीं हैं। ये केले यों ही जंगल में पैदा हुआ करते हैं। आम भी बहुतायत से होता है परन्तु उतना अच्छा नहीं होता। नासपाती तथा बेर भी होते हैं। कटहल का फल तरबूज के समान बड़ा होता है और खूब फलता है। यहां के निवासी इसे बड़े चाव से खाते हैं। एक बृक्ष विशेष यहां ऐसा होता है जिसके छाल से रस्सियां बनाई जाती हैं और ये रस्सियां जंगली हाथियों को पकड़ने के काम में आती हैं।

बाँस यहाँ बहुतायत से पाया जाता है। घर बनाने में और लकड़ी के स्थान में इसका बड़ा प्रयोग किया जाता है। यह बांस बहुत मोटा होता है। इसका व्यास १२ फीट से २० फीट तक का होता है। अधिक दिन के हो जाने पर इस में फूल भी निकलने लगते हैं। बांस कई प्रकार का होता है। १—जन्थी जो छत जंगला बनाने तथा स्थान घेरने के काम में लाया जाता है। २—बलुका लम्बा तथा मजबूत होता है। इसके खम्भे बनाये जाते हैं जो बड़े टिकाऊ होते हैं। ३—कटक एक कटैला

---

[1] "The province in every part abounds with the widest and most luxuriant vegetation. It is a paradise of ferns and orchids of great variety and beauty."

श्रीमती एस० आर० वार्ड—एग्लिम्प्स आफ आसाम पृ० १५४।

बाँस है। नागा लोग इसे भाले के स्थान पर काम में लाते हैं। ४—बेजल बाँस की विशेषता यह है कि यह ५० से लेकर ७० फीट तक लम्बा होता है तथा इसमें गांठें बड़ी लम्बी लम्बी दूरी पर हुआ करती हैं। यह बिल्कुल सीधा होता है १२ इंच तक मोटा होता है।

यहाँ पर एक विशेष प्रकार का ताड़ का बृक्ष पाया जाता है जिसे अँग्रेजी में 'रैटेन' कहते हैं। यह बृक्ष लम्बा और पतला होता है तथा पास ही पास इसमें बहुत सी गांठें होती हैं। यह प्रान्त के प्रत्येक भाग में बहुतायत से नीची जमीन में पाया जाता है। इसके पत्तों की चटाइयाँ तथा छाल की रस्सियाँ बनाई जाती हैं। यह कँटीला भी होता है। इसकी पत्तियां गोली होती हैं और हैट बनाने के काम में आती हैं।

सुपारी का पेड़—यह आसाम में बहुतायत से पाया जाता है। यह प्रायः उद्यान में लगाया जाता है और ताड़ के समान बड़ा ही विशाल बृक्ष होता है। इसकी लम्बाई ४० से ५० फीट तक होती है। यह बिल्कुल सीधा तथा पतला होता है। इसके धड़ में शाखायें तथा पत्तियाँ नहीं होती हैं। एक पेड़ में २०० से ३०० तक फल गुच्छों में फला करते हैं।

यहाँ रबर का भी पेड़ बहुतायत से पाया जाता है। यह सब पेड़ों से बड़ा होता है। इसका धड़ ७४ फीट मोटा तथा इसकी ऊँचाई १०० फीट और इस की शाखाओं का क्षेत्रफल ६१० फीट होता है। रबड़ डैरेङ्ग, नवगांव तथा लखीमपुर जिलों में पाया जाता है। इससे रबर तैयार किया जाता है जो 'इण्डिया रबर' के नाम से प्रसिद्ध है। अब सरकार ने नये रबर के पेड़ भी लगाना शुरू कर दिया है। इस से आसाम को बड़ी आमदनी है।

यहां पर एक प्रकार का ऐसा बृक्ष होता है जिससे तेल निकाला जाता है। इसको हमिल्त कहते हैं। दूसरा पेड़ जिसे साचे कहते हैं ऐसा है कि उसकी छाल से कागज का काम लिया जाता है। प्राचीन समय में इसी की छाल पर पुस्तकें लिखी जाती थीं। आसामियों की प्रसिद्ध ऐतिहासिक पुस्तकें इसी की छाल पर लिखी गई हैं। भेला नामक बृक्ष के फल में एक ऐसी स्याही होती है जिससे लिखने पर कोई चीज कभी मिट नहीं सकती है। मदार तथा आसु बृक्ष की छाल का रंग लाल होता है। यहाँ भीमरुत्ती नाम का एक विचित्र पेड़ होता है जिसकी छाल से लाल रंग बनाया जाता है। इसका उपयोग होली के उत्सव में होता है। एक पेड़ यहाँ इस प्रकार का है कि उसकी छाल से मजबूत डोरा निकाला जाता है तथा उससे कम्बल तथा मछली मारने का जाल बुना जाता है। यहाँ भाँग का पौधा होता है। जूट के पौधे का यहाँ सर्वथा अभाव है। जिन बृक्षों पर रेशम के कीड़े पाले जाते हैं ऐसे पेड़ स्वतः जंगलों में झुण्ड के झुण्ड खड़े दिखाई पड़ते हैं। एरण्ड का बृक्ष भी होता है जिससे एरी नामक रेशम का कीड़ा पाला जाता है। अहकुरी के पेड़ से सुन्दर रेशम पैदा होता है। यहां जूरा नामक अंजीर का भी पेड़ होता है जिस पर लाह का कीड़ा पाला जाता है।

पशु और पक्षी

जिस प्रकार आसाम में बनस्पतियों की अधिकता है उसी प्रकार वहां पशु पक्षी भी पाये जाते हैं। पशु सृष्टि की अनेक रूपता यहां स्पष्ट रूप से प्रतीत होती है। छोटे से लेकर बड़े तक जितने पशु पक्षी भारत में उपलब्ध हैं वह प्रायः सभी आसाम में पाये जाते हैं। पक्षियों में तोता से लेकर मयूर तक तथा पशुओं में गीदड़ से लेकर हाथी तक सब प्रकार के पक्षी और पशु यहां के जंगलों को सुशोभित कर रहे हैं। यदि चीता, शेर तथा गेंडा जैसे हिंसक जीव अपनी चिग्घाड़ से मनुष्यों के हृदय में कम्पन उत्पन्न कर देते हैं तो मैदान में चरने वाली भोली भाली हिरनें अथवा ऋषियों के 'उटजद्वार' को रोधन करने वाले विचरण शील मृग किसके हृदय में विश्वास का संचार नहीं करते। यदि खूंख्वार चीता किसानों के जानवरों को लेजाकर उन्हें कष्ट प्रदान करता है तो हाथी अपने बहुमूल्य दाँत तथा हड्डी के दाम से उन्हें प्रभूत धन भी प्रदान करता है। कौवे के 'कांव' 'कांव' से जिनके कर्ण कुहरों में ज्वर उत्पन्न हो जाता है उन्हीं के श्रुति पुट मयूरों की मधुर केका ध्वनि सुन कर कभी तृप्त नहीं होते। कहने का तात्पर्य यह है कि आसाम में छोटे से लेकर बड़े तक सब प्रकार के पशु पक्षी पाये जाते हैं। यहां अनेक प्रकार के जानवर और चिड़ियां देखते ही बनती हैं। अतः हम समस्त आसाम प्रान्त को विशाल "जू" कहें तो इसमें कुछ भी अत्युक्ति न होगी।

भारत के अन्य प्रान्तों की भाँति आसाम में भी कौए बहुत पाये जाते हैं। ये 'काँव' 'काँव' करते हुये प्रान्त भर में सर्वत्र दृष्टिगोचर होते हैं। चमगादड़ भी प्रचुर मात्रा में हैं। ये रात को उड़ा करते हैं परन्तु बाज़ और गृद्धों की संख्या बहुत कम है। आसाम के जंगलों में मयूर और एक अन्य पक्षी जिसे 'फेज़ेण्ट' कहते हैं बहुत प्राप्त होते हैं। आसामी लोग मयूर को पकड़ कर बाजार में बेचते हैं। ये दो प्रकार के होते हैं। जंगली (फाउल) तित्तिर, कबूतर तथा तोता बहुत अधिक संख्या में पाये जाते हैं। जंगली हंसिन जाड़े के दिनों में मैदान में दिखाई पड़ती हैं। बत्तक तथा जलीय अंडा देने वाली मुर्गियों का भी अभाव नहीं है। बत्तक नदी तथा तालाब के किनारे बहुत पाये जाते हैं। पाश्चात्य दर्शन के प्रतिनिधि स्वरूप कौशिक महाराज भी यहां कुछ कम नहीं हैं। इनकी आवाज़ रात्रि में सर्वत्र सुनाई पड़ती है। इसके अतिरिक्त अन्य छोटे छोटे पक्षी भी यहां पाये जाते हैं।

जानवरों की भी संख्या यहाँ अधिक है। लोमड़ी घूमती फिरती सदा दिखाई पड़ती है। गीदड़ यू० पी० की भांति आसाम में भी बहुत पाया जाता है। यह अधिक रात चले जाने पर गावों के समीप में आकर बड़ी बुरी आवाज़ करता है तथा लोगों की नींद हराम किये रहता है।

आसाम के हिंसक जीवों में चीता और शेर सबसे प्रसिद्ध हैं। ये आसाम के जंगलों में बहुतायत से पाये जाते हैं शेर बहुत बड़ा खतरनाक जानवर है। यह रात को पहाड़ पर से उतर आता है तथा मैदान के जानवरों को लेकर चला जाता है। रोज ही एक घटना सुनाई पड़ती है। ये जंगलों में चरने के लिये जाने वाली गायों तथा बछड़ों को लेकर चम्पत हो जाते हैं। ये पशुओं की हिंसा से ही संतुष्ट नहीं होते बल्कि मनुष्यों का भी खून चूसते हैं। शिवसागर जिले में एक मनुष्य भक्षी शेर बारह दिन तक सड़क पर आने जाने वाले यात्रियों को मार कर खा जाता रहा। अन्त में यह एक साहसी आदमी के द्वारा मारा गया। सरकार ने इस आदमी को इस कार्य के लिये दूना पुरस्कार दिया। सरकार पहिले शेर को मारकर सिर सहित उसका खाल लाने के लिये प्रत्येक मनुष्य को २५) रुपया पुरस्कार दिया करती थी[1]। इस प्रकार धीरे धीरे शिकारियों की गोली के शिकार होने के कारण इस हिंसक जीव की संख्या घट रही है।

जंगल में जंगली भैंसें भी पाये जाते हैं। ये बड़े खतरनाक होते हैं। सांड़ बड़े भयानक तथा लम्बे

(१) श्रीमती एस० आर० वार्ड-एपिज़म्स आफ आसाम।

सींग वाले होते हैं। ब्रह्मपुत्र के किनारे ये झुण्ड के झुण्ड चरते हुये दिखाई पड़ते हैं। पालतू भैंसे चरते हुये दृष्टि गोचर होते हैं। यहाँ अनेक प्रकार के मृग होते हैं जो मैदानों में चरते हुये पाये जाते हैं। हिरण उत्तरी पहाड़ियों के पास मिलती हैं। साही नामक जानवर यहां जंगलों में पाया जाता है। इसके शरीर पर लम्बे लम्बे कांटे होते हैं जिसके द्वारा यह अपनी रक्षा करता है। यह खतरनाक होता है। आसामी लोग इसके मांस को खाते हैं। इस प्रान्त में भी भारत के अन्य प्रान्तों की भांति बन्दरें प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं परन्तु विशेषकर छोटे भूरे रंग के बन्दर अधिक होते हैं। ये बन्दर अनेक प्रकार के होते हैं। सफेद रंग का छोटा बन्दर बड़ा सुन्दर होता है। यहाँ के जंगली कुत्ते दो प्रकार के होते हैं। पहिला बड़ा होता है तथा मृगों का शिकार करता है और दूसरा आकार में छोटा होता है। ये दोनों प्रकार के जंगली कुत्ते बड़े ही शिकारी होते हैं। यहाँ जंगली बिल्लियाँ भी पाई जाती हैं जो तीन प्रकार की होती हैं। पहिली विचित्र शेर के रंग के समान रंग वाली होती है। दूसरी चीता के समान रंग वाली तथा तीसरी भूरी होती है। यहाँ के जंगली सुअर बड़े ही खतरनाक होते हैं। ये विशेषकर पहाड़ों में पाये जाते हैं। नागा जाति के लोग इनके दांत को पुरस्कार की वस्तु समझते हैं तथा वीरता के उपलक्ष में उसे दूसरे को देते हैं। सूकरी (सुअरी) सीधी सादी जानवर है। इसे कचारी मिरी तथा अन्य पहाड़ी जाति के लोग खाते हैं। काले भालू भी मिलते हैं। ये अपने खूँखारी पने के लिये प्रसिद्ध हैं। पेड़ पर चढ़ जाने पर भी इनसे बचना कठिन है। आसाम के जंगलों में गैंडा भी पाया जाता है जो भारत के अन्य प्रान्तों में दुर्लभ है। इसकी विशेषता यह है कि इसके नाक पर सींग होता है तथा इसका चमड़ा बड़ा ही मोटा होता है जिस पर साधारणतया गोली का कुछ भी असर नहीं होता है। यहाँ के खच्चर छोटे छोटे होते हैं। इन्हें आसामी लोग अपने घरों में पालते हैं। यहाँ भूटानी खच्चर भी पाये जाते हैं जो बड़े मजबूत तथा उपयोगी होते हैं। मणिपूर में भी अच्छे खच्चर होते हैं। यहाँ के सर्प बड़े विशाल भयंकर तथा विषैले होते हैं। ये जंगलों में प्रायः बाँस की जड़ों में लिपटे रहते हैं। यहाँ कोबरा जाति का सर्प विशेष रूप से पाया जाता है। यह बड़ा विषैला होता है। पाइथन जाति का सर्प बड़ा ही विशाल तथा भयंकर होता है। यह हिरण को भी निगल जाता है। यहाँ बिच्छू कम हैं। मच्छर बहुत ज्यादा हैं जिसके कारण प्रायः मलेरिया हुआ करता है। वर्षा में जोंक भी बहुत अधिक हो जाती हैं। रास्ते चलते पैरों में चिपक जाती हैं।

आसाम के जंगली जानवरों में हाथी सब से अधिक उपयोगी और बहुमूल्य है तथा प्रचुर संख्या में पाया जाता है। आसाम के जंगल समस्त भारत में अपने हाथियों के लिये प्रसिद्ध हैं। यहाँ हाथियों का बहुत बड़ा व्यापार किया जाता है। यहाँ के लोग जंगली हाथियों को फंसा कर पालतू बनाते हैं और बेंच देते हैं। जंगलों से हाथियों को फंसाने का अधिकार सब को नहीं है। सरकार के "खेदा" डिपार्टमेण्ट की ओर से जंगल ठाके पर दे दिये जाते हैं। शेष जंगल में से हाथी फंसाने के लिये प्रत्येक हाथी के पीछे १००) 'कर' के रूप में लिया जाता है। हाथी का दाँत बहुमूल्य होता है और मरने पर उसकी हड्डी भी बहुत दाम में बिकती है। इसप्रकार हाथी का व्यापार आर्थिक दृष्टि से बड़ा लाभदायक है। कुछ वर्ष पहिले समस्त प्रान्त में लगभग ४०० हाथी प्रति वर्ष फंसाये जाते थे। ये हाथी विशेषकर आसाम घाटी तथा आसाम 'रेञ्ज' में पाये जाते हैं[१]। सचमुच आसाम अपने हाथियों के लिये प्रसिद्ध है। आसाम प्रान्त में समस्त पशुओं की संख्या निम्नांकित है[२]।

गाय-बैल	२२,४९,४०३
भैंस-भैंसा	२२,९९,००३
बछड़े	१५,०८,१८९
भेड़	१२,९०९
बकरी	४,२८,९४७
घोड़े-टट्टू	१०,२००
गदहे-खच्चर	८ गदहा और ३१ खच्चर
हल	८,८१,४१२
गाड़ी	१२,१९८

(१) इम्पिरियल गजेटियर आफ इण्डिया जिल्द ६ पृ० २०। (२) राम नारायण मिश्र—भारतवर्ष का भूगोल पृ० ३७४-७५ (१९३५)।

भू-रचना

भूगर्भ वैज्ञानिकों ने आजकल भू-रचना का बड़ा अध्ययन किया। भूगर्भ-शास्त्र के द्वारा यह बतलाया जा सकता है कि कौन पर्वत अधिक पुराना और कौन नया है। कौन सी धरती प्राचीन है तथा कौन नवीन। इन शास्त्रियों ने पहाड़ों के पत्थरों के भी अनेक भेद कर डाले हैं तथा इस भेद के अनुसार वे बतला सकते हैं कि कौन पत्थर किस वस्तु से बना है तथा कितना पुराना है। बिना भू-रचना का वर्णन किये आसाम का भौगोलिक वर्णन पूरा नहीं कहा जा सकता।

आसाम श्रेणी

पूरी आसाम श्रेणी दो भागों में बाँटी जा सकती है—(१) शिलाङ्ग का पठार (२) बैरेल की श्रेणी तथा मणिपुर और नागा की पहाड़ियां जो वस्तुतः बर्मा के पहाड़ों से सम्बन्ध रखती हैं। शिलांग का पठार ग्नीस[1] चट्टानों से बना हुआ है जिसका उत्तरी किनारा टूटीफूटी पहाड़ियों के रूप में ब्रह्मपुत्र की घाटी के निचले भाग में घुस गया है। इसके मध्य भाग में ग्नीस चट्टानों के ऊपर मेटामार्फिक (Metamarphic) चट्टानों की तहें पाई जाती हैं। इस श्रेणी के केन्द्र भाग में जहां यह पठार सब से अधिक ऊँचा है। दानेदार (Granite) पत्थरों का समूह पाया जाता है। इन दानेदार पत्थरों की एक ऊँची तह बांध के समान उत्तर से दक्षिण तक चली गई है तथा यह ग्नीस तथा मेटामार्फिक[2] चट्टानों में घुसी हुई है। इस पठार के दक्षिण भाग में जहाँ ग्नीस और मेटामार्फिक चट्टानें मिलती हैं वहाँ आग्नेय (Igneous) शिलायें पृथ्वी की तह से धीरे धीरे ऊँची होने के कारण ऊपर आ गई हैं। उस स्थान को जहाँ पर ये आग्नेय शिलायें मिलती हैं 'सिलहट ट्रैप' के नाम से पुकारते हैं। मेटामार्फिक और आग्नेय शिलाओं के ठीक बीच से तथा दानेदार पत्थरों की तह के मध्य के किनारे से जल-निर्मित चट्टानों (Sedimentary rocks) की एक तह निकली हुई है जिस में जानवरों की हड्डियाँ तथा जंगली लकड़ियों के अवशिष्ट भाग (Fossiliferous strata) पत्थर के रूप में पाये जाते हैं। इस तह के दो भिन्न भिन्न खण्ड हैं जिनके नाम क्रिटेसियस (Cretacesuo) और न्युमुलिटिक (Nummulitic) हैं। ये सब श्रेणियाँ दक्षिण भाग में मिल कर एक गाँठ के रूप में बन जाती हैं और चेरापूँजी के दक्षिण में सूरमा की घाटी में बिलीन हो जाती हैं।

यह क्रिटेसियस तह 'सिलहट ट्रैप' और न्युमिलिटिक चूने के पत्थर के बीच १५०० फीट तक फैली हुई है। इसमें बालूदार पत्थर (Sand stone) और चूने का पत्थर (Line stone) पाया जाता है। इसके अतिरिक्त इस तह में काले और पीले रंग की चिकनी मिट्टी से बने हुये मुलायम पत्थर (Dark and pale shales) मिलती हैं। इसी तह के अन्दर कोयले की बहुत सी तहें मिलती हैं जिसमें माओबेहलारकर (Mao behlarkar) नामक कोयला बहुत अधिक प्रसिद्ध है।

न्युमिलिटिक तह में भी कोयला पाया जाता है लेकिन यह कोयला दूसरे प्रकार का होता है। इस कोयले के लिये चेरा और लेकाडाङ्ग की खानें अधिक प्रसिद्ध हैं।

बैरेल श्रेणी

जिस प्रकार क्रिटेसियस तह के ऊपर न्युमिलिटिक तह पाई जाती है और उसके ऊपर एक तीसरी तह पाई जाती है जिसमें बालूदार चट्टानें मिलती हैं उसी प्रकार बैरेल श्रेणी के पश्चिमी भाग आदि में भी यही तीसरी तह पाई जाती है। इसके बाद से कठोर बालूदार चट्टानें, स्लेट (slate) और शेल (shales) आदि चट्टानें शुरू होती हैं। इनके कुछ और पूर्व में अग्नेय शिलाओं की टेढ़ी मेढ़ी कतारें उत्तर से दक्षिण को गई हैं।

(१) ग्नीस (Gneiss) एक प्रकार की वह चट्टान है जिसमें बिल्लौर (Quartz) तथा अबरख (Mica) का अंश अधिक पाया जाता है।

(२) मेटामार्फिक Metamarphic) चट्टान वह है जिसका रूप पृथ्वी की अन्दर की गर्मी के कारण बदल गया है।

(१) आसाम की भू-रचना के विशेष विवरण के लिये देखिये।
(क) एन एकाउण्ट आफ दि प्राविन्स आफ आसाम एण्ड इट्स एडमिनिस्ट्रेशन पृ० ८-१२ (१०११-१९०२)
(ख) इम्पिरियल गजेटियर आफ इण्डिया भाग ६ पृष्ठ १८-१९

——

खान तथा खनिज पदार्थ

आसाम में व्यापार करने के लायक केवल चार ही खनिज पदार्थ प्राप्त होते हैं। १—कोयला, २—चूने का पत्थर, ३—प्रेट्रोलियम, ४—लोहा। कोयले की विस्तृत खानें लखीमपूर जिले के दक्षिण भाग में तथा शिव सागर जिले में हैं। ये खानें कई मीलों में फैली हुई हैं। प्रधान पांच कोयले की खानें हैं जो पूर्व से पश्चिम की ओर फैली हैं। १—माकुम, २—जैपूर, ३—नाजिरा झाञ्जी (Jhanzi) और ४—दिसाई (Disai) माकुम की खानें आसाम रेलवे और ट्रेडिङ्ग कम्पनी को सन् १८८१ ई० में पट्टे पर दी गई थी और उस समय शिवगढ़ से दिहिङ्गा के कोयले की खान तक एक रेलवे बनाई गई थी। इस कम्पनी के द्वारा पांच खानों में खोदाई का काम कराया जाता है। सन् १९०३ में इस कम्पनी में १२३८ आदमी काम करते थे। आसाम में मजदूर नहीं मिलते हैं अतः खानों में काम करने के लिये बाहर से मजदूर बुलाये जाते हैं। इन खानों से जो कोयला निकलता है उसे "इण्डिया जनरल और रिभर्स स्टीम नेविगेशन कम्पनी" अपनी स्टीमरों में जलाने के लिये खरीद लेती है और कुछ हिस्सा चाय बगान के मालिक भी खरीद लेते हैं। यह कोयला बहुत कड़ा तथा ठोस निकलता है। १९०३ ई० में इन सब कोयलरी में ३५७,००० पौंड का खर्चा लगा था। सन् १८९१ में इन खानों से १४५००० टन कोयला तथा १९०३ में २२६,००० टन कोयला निकला था। शिव सागर के दक्षिणी हिस्से में स्थित कोयले की खानों से आसाम और सिंगलो कम्पनी ने अपने इस्तेमाल के लिए बहुत सा कोयला निकाला था। प्रधान कोयले की खानें उम्ले (Umblay) रोनग्रेनगिरि (Rongrengiri) डेरेनगिरि (Darangiri) हैं।

कोयला

आसाम में आर्थिक दृष्टि से सबसे अधिक लाभ की वस्तु कोयला है। यह कोयला पूर्वी नागा की पहाड़ियों के उत्तरी पश्चिमी हिस्से में मिलता है। इस कोयले का पता सब से पहिले सन् १८२५ ई० में लगा। सन् १८४० तथा १८४५ ई० में इसकी जांच का काम एक कमेटी को सुपुर्द किया गया। सन् १८२६५ ई० में मिस्टर मेडलिकाट ने इसकी जांच की तथा १८७४-७५ और १८७६ में मिस्टर मेलेटने इन स्थानों को जाकर देखा। ये कोयले की खानें ११० मील में फैली हुई हैं। मेलेट ने पांच खानों का पता लगाया उनके नाम ये हैं। १—माकूम, २—जैपूर, ३—नाजिरा, ४—झाञ्जी, और ५—दिसोई। इन कोयले की खानों की स्थिति लखीमपूर जिले में हैं। इसके अतिरिक्त नागा की पहाड़ियों के आगे दिहिंग नदी की घाटी में तथा वर्मा के सीमान्त में भी कुछ कोयले की खानें हैं जिनका पता तो लग गया है परन्तु अच्छी तरह से खुदाई का काम आरम्भ नहीं हुआ है। इन समस्त कोयले की खानों में दिहिंग नदी के किनारे स्थित माकूम की खानें बड़ी प्रसिद्ध हैं। यहाँ पर कोयला जमीन के बहुत नीचे तक पाया जाता है तथा बड़ा ठास होता है। बहुत दिनों तक स्थान को दुर्गम होने के कारण यहाँ की खानों से कोयला निकालने का विशेष प्रबन्ध नहीं था परन्तु सन् १८८१ ई० में ये खानें "आसाम रेलवे एण्ड ट्रेडिंग कम्पनी" को दे दिया गया तथा डिब्रुगढ़ से यहाँ तक रेल जाने के कारण कोयला निकाला जाने लगा। माकूम की खान का कोयला बड़ा अच्छा होता है तथा ब्रह्मपुत्र में चलने वाली स्टीमरों के द्वारा काम में लाया जाता है। इस खान से इस प्रकार कोयला निकाला गया।

वर्ष	(कोयले का वजन सहस्र टनों में)
१८८९-९०	११८
१८९८-९६	२०७
१८९९-१९००	२४२
१९००-१९०१	२४३

नाजिरा के कोयले की खान (जो शिवसागर के दक्षिण में पहाड़ियों के बीच में है) को आसाम कम्पनी ने पट्टे पर ले रक्खा है परन्तु इसमें कोई विशेष रूप से कार्य शुरू नहीं हुआ है।

गारो तथा खसिया और जयन्तिया की पहाड़ियों

में भी कोयला मिलता है। यह कोयला दो प्रकार का है १ पुराना तथा २ नया। गारो की पहाड़ियों में जो खाने हैं उनमें ७६ मिलियन टन कोयला होने की सम्भावना थी परन्तु आधुनिक खोज से पता चला है कि इनमें ३०० मिलियन टन से कम कोयला नहीं है। यह कोयला अच्छा तथा ठोस है।

खासी की पहाड़ियों में भी दो कोयले की खानें हैं। पहिली खान मेओबेह लरखर है जो मेओपरैंग के पास है तथा दूसरी लेनग्रिन है जो यदुकाता नदी के किनारे स्थित है। पहिली खान में स्थानीय लोगों ने कोयले निकालने का काम किया है। यह कोयला भी गारो की भांति उच्च कोटि का है। मिकिर की पहाड़ियों में नम्बोर नदी के किनारे लौंगलेई नामक स्थान में भी कोयला मिलता है। यह कोयला अच्छा नहीं है। खासी पहाड़ियों के दक्षिणी भाग में अनेक कोयले की खानें हैं। सेलांग खान आजकल एक लिमिटेड कम्पनी के हाथ में है। ऐसा अन्दाज है कि इस खान में १५ मिलियन टन कोयला है। चेरापूँजी की कोयले की खानों में सम्भवतः १,३०,००० टन कोयला है।

लोह

भारत के अन्य प्रान्तों की भाँति आसाम में भी लोहा प्रचुर परिमाण में पाया जाता है परन्तु विदेशी लोहे की प्रतियोगिता के कारण इसकी विशेष उन्नति नहीं हो सकती। खासी की पहाड़ियों में लोहा उत्तम कोटि का है। आसाम राजाओं के समय में लोहा गला कर अनेक सामान तैयार किये जाते थे। अपर आसाम में भी लोहा मिलता है। यह नागा की पहाड़ियों में खानों में बलुये पत्थर से मिला हुआ पाया जाता है। दक्षिण मिकिर पहाड़ियों में लोहे की खानें प्रायः बहुत पाई जाती हैं परन्तु इन खानों से लोहा निकालने का अभी कुछ अच्छा प्रबन्ध नहीं है। जिस कम्पनी ने माकूम की कोयले की खानों का ठीका लिया है उसी ने ही इन खानों का भी ठीका लिया है। इस प्रकार से आसाम में लोहा भी प्रचुर मात्रा में पाया जाता है।

नमक

नमक के सोते अपर आसाम की कोयले की खानों के पास जैपूर के आसपास पाये जाते हैं। इन सोतों के पानी को गरम करके, खौला करके नमक निकाला जाता है। यह नमक नागा पहाड़ियों को भेजा जाता है। कचार जिले में भी नमक के सोते पाये जाते हैं हैलाकाण्डी की घाटी में स्थित बंसबरी तथा चण्डीपूर गाँव में नमक बनाने का काम अब भी किया जाता है। प्राचीन समय में यह व्यवसाय विस्तृत रूप से किया जाता था। ये सोते थोड़े से रुपये में पट्टे पर दे दिये जाते हैं। मणिपूर में भी अनेक नमक के सोते हैं। वहां भी नमक बनाया जाता है तथा इससे बड़ी आमदनी होती है।

चूना का पत्थर

कोयले के बाद प्रान्त में चूना ही खनिज पदार्थों में अधिक प्रसिद्ध है। चूने की खानें खासी और जयन्तिया की पहाड़ियों के दक्षिण ओर हैं। चूने के पत्थर (Lime Stone) गारो की पहाड़ियों में सोमेश्वरी नदी के उद्गम स्थान से लेकर जयन्तिया की पहाड़ियों में हरी नदी तक मिलते हैं। जदुकाता तथा पुनातीथ नदियों के किनारे स्थित चूने के पत्थर की खानें बड़ी प्रसिद्ध हैं। इसके अतिरिक्त द्वारा तथा शेला की खानें भी प्रसिद्ध हैं। कुल मिला कर खसिया तथा जयन्तिया की पहाड़ियों में ३४ चूने के पत्थर की खानें हैं और एक सिलहट में और एक गारो की पहाड़ियों में है। ये सब खानें सरकार के हाथों में हैं। सन् १८०१ ई० में सिलहट में शेला, सोहबर, बेरंग तथा मोलोंग इन चार खानों से सरकारी आज्ञा से चूने के पत्थर निकाले गये तथा चोगपूँजी, लेंगरिंग तथा नांगस्टोइन की खानें पट्टे पर दी गई थीं। गत तीन वर्षों में चूने तथा पत्थर का निर्यात औसत रूप से १६ लाख मन वार्षिक था। इस निर्यात से सरकार को १२,००० से लेकर २०,००० रुपया तक मिला। गोला घाट के दक्षिण में थोड़ी दूर पर धनसिरी नदी की एक सहायक नदी के तट पर से चूने के पत्थर प्रचुर परिमाण में मिलते हैं।

सोना

आसाम प्रान्त में जिन नदियों से सोना निकलता था वे ब्रह्मपुत्र से उत्तर में डैरंग तथा लखीमपूर जिले में हैं। कहा जाता है कि शिव सागर जिले की

धनसिरी दसोई तथा झाञ्जी नदियों से भी सोना निकाला जाता था। भरेली, दिकरांग तथा सुबनसिरी नदियों से सब से अधिक सोना निकलता था। आसाम राजाओं के समय में जब कि अनिवार्य मजूरी की प्रथा थी—इस व्यवसाय की बड़ी उन्नति थी। इन नदियों में से सोना निकाल कर व्यापार किया जाता था परन्तु अँग्रेजों के आने के साथ ही यह व्यापार सदा के लिये नष्ट हो गया। सन् १८८२ ई० में एक यूरोपियन साहब ने इस व्यवसाय का ठीका लिया परन्तु विशेष लाभ न होने से उसने छोड़ दिया। अब यह व्यवसाय बिलकुल नष्ट हो गया है।

पेट्रोलियम

लखीमपूर के जिले में माकूम की खानों से पेट्रोलियम निकाला जाता है। सन् १८६८ में यहाँ से तेल अधिक मात्रा में निकाला गया था परन्तु इसे साफ करने के लिये कोई प्रबन्ध नहीं था। सन् १८८२ में साफ करने का एक कारखाना (Refinery) खोला गया। सन् १८९९ ई० में आसाम आयल कम्पनी की ३१०,००० पौंड की पूँजी से स्थापना की गई और डिगबाई नामक स्थान में एक तेल साफ करने का कारखाना खोला गया। सन् १९०३ में इस कारखाने में १० यूरोपियन तथा ५०९ देशी आदमी काम करते थे। कुल मिलाकर ४२ कुयें बनाये गये। परन्तु इनमें से २२ छोड़ दिये गये। इन कुओं की गहराई ६०० से लेकर १८३३ फुट तक है। कहा जाता है कि सबसे अधिक तेल देने वाले कुयें में से ५०,००० गैलन तेल प्रति मास निकाला जाता है। यह तेल एक प्रकार का रफ (Crude) पेट्रोलियम है और इससे प्रधानतया किरासन का तेल तथा मोमबत्ती बनाई जाती है। सन् १९०३ में इससे ६२ टन मोमबत्ती तथा १२,००,००० गैलन किरासन का तेल निकाला गया था। किरासन का तेल तो सहज ही सर्वत्र बिक जाता है परन्तु मोमबत्तियाँ बिकने के लिये इंगलैंड भेजी जाती हैं। काचार के जिले में मासिमपुर में तथा बराक नदी के किनारे बदरपुर में पेट्रोलियम मिलता है। खासी पहाड़ी के दक्षिणी ढलुवे भाग पर खासीमार में सोतों से तेल निकाला जाता है।

दिहिंग नदी की बालुकाओं में प्लेटिनम पाया जाता है और खामटी की पहाड़ियों में सीसा (Lead) मिलता है। इस प्रकार से आसाम की खनिजात्मक सम्पत्ति कुछ कम नहीं है।[1]

---

1. इम्पिरियल गजेटियर आफ इण्डिया पृष्ठ ६ पृष्ठ ७२।

बनस्पति

रबर

आसाम की बहुमूल्य पैदावारों में एक रबर भी है जिसे "इण्डिया रबर" कहते हैं। यह "फिकस एलेस्टिका" नामक पेड़ से पैदा होता है। लखीमपुर, डैरेंग तथा खासी-पहाड़ी के जिले में रबर के पेड़ अब बिल्कुल समाप्त हो गये हैं। जयन्तिया की पहाड़ियों में भी इन पेड़ों की संख्या बहुत कम है। सन् १९०० ई० में रबर का दाम अधिक बढ़ जाने के कारण रबर का कर १२) से १७) हो गया था। गत आठ बर्षों से ३,०२६ मन रबर वार्षिक पैदा होता था और कर ५७१३०) देना पड़ता था। डैरेंग जिले में सन् १८९६-९७ में जंगल से रबर इकट्ठा करने का काम पुनः ठीके पर दिया जाने लगा। रबर के बृक्षों की कमी के कारण सरकार नये रबर के पेड़ कुलसी तथा चरदुआर में लगवा रही है। सन् १९०० में जो रबर विलायत भेजा गया उसका दाम २॥=)॥। प्रतिमन था। गत पाँच वर्षों में निम्नांकित रबर बाहर भेजा गया।

वर्ष	मन
१८९६-९७	४,०४७
१८९७-९८	२,८४६
१८९८-९९	३,६३७
१८९९-१९००	५,५५८
१९००-१९०१	३,५९२

लाह

आसाम के जंगलों में लाह पाई जाती है परन्तु लाह कृत्रिम उपायों से भी तैयार कराई जाती है। लाह का कीड़ा अंजीर के वृक्ष पर पाला जाता है। ये वृक्ष कामरूप तथा डैरेंग जिले के गावों में लगाये जाते हैं। प्रधानतया लाह घड़ी के आकार में बनाकर बाहर को भेजा जाता है। गत तीन वर्षों में २१,००० मन लाह बाहर भेजी गई।

रेशम

आसाम के बनस्पतियों में रेशम की भी गिनती है। यहाँ के जंगलों में शहतूत और रेंड़ के पेड़ के ऊपर भिन्न भिन्न प्रकार के रेशम के कीड़े पाले जाते हैं जो रेशम को तैयार करते हैं। यह रेशम बहुत ही सुन्दर और मजबूत होता है। इसका विस्तृत वर्णन अन्यत्र किया जा चुका है।

नारंगी और नींबू

खासी की पहाड़ियों में नारंगियाँ पैदा होती हैं और ये बाहर भेजी जाती हैं। परन्तु सिलहट में बड़ी सुन्दर तथा स्वादिष्ट नारंगियाँ प्रचुर मात्रा में पाई जाती हैं। ऊँचे पठारों पर नींबू भी अधिक संख्या में पैदा होते हैं परन्तु ये इतने अधिक नहीं होते कि बाहर भेजे जायँ। सन् १८९७ ई० के भीषण भूकम्प के कारण नारंगी तथा नींबू के बगीचों को बड़ी क्षति पहुँची परन्तु इस व्यवसाय की उन्नति के लिये फिर से प्रबन्ध हो रहा है। सन् १९०१-२ ई० में ७४,००० मन नारंगियाँ बाहर भेजी गईं।

केला

आसाम के पहाड़ों पर केले भी बहुत पैदा होते हैं। ये केले बड़े ही स्वादिष्ट और सस्ते होते हैं।

ज़मीन की व्यवस्था

प्रान्त के भिन्न भिन्न भागों में भिन्न प्रकार की जमीन की व्यवस्थायें हैं। इसके अनुसार इस प्रान्त के पांच खंड किये जा सकते हैं। (१) आसाम ठेठ (Proper), (२) गोआलपाड़ा, (३) सिलहट, (४) काचार और (५) पहाड़ी जिले।

आसाम की घाटी में गोआल पाड़ा को छोड़कर तीन तरह की व्यवस्थायें हैं (१) रैयतवारी (२) निस्फ खिराज और (३) लाखिराज। रैयतवारी व्यवस्था में रैयत (प्रजा) सरकार से एक साल या दस साल का पट्टा लेती है। पट्टे की मियाद के अन्दर ही यदि प्रजा चाहे तो जमीन के कुछ हिस्से या पूरे को छोड़ सकती है परन्तु छोड़ने के पहिले उचित समय पर सरकार को नोटिस दे देनी चाहिये। निस्फ-खिराज और लाखिराज प्राचीन आसाम राजाओं की दी हुई माफी जमीन है। इसके भी तीन भाग हो सकते हैं:—(१) देवोत्तर (२) ब्रह्मोत्तर और (३) धर्मोत्तर। निस्फ-खिराज में केवल आधा लगान देना पड़ता था। जेनरल जेन्किन्स ने इन सब जमीनों को दो हिस्सों में कर दिये। देवोत्तर जमीन को माफी कर दिया। शेष ब्रह्मोत्तर और धर्मोत्तर जमीनों को आठ आना पुरा के हिसाब से रैयत को फिर वापस दे दिया।

गोआलपाड़ा में १९ इस्तमरारी बन्दोबस्त वाली जमींदारियां हैं और ८ अस्थायी बन्दोबस्त वाली हैं। पूर्वी द्वार में चिरांग, रिफू और गुमा की जमीनें सरकार की हैं जो रैयतवारी व्यवस्था के अनुसार किसानों को दी जाती हैं।

सिलहट में जमीन व्यवस्था उपर्युक्त व्यवस्थाओं से बिलकुल भिन्न है। यहां पर पहिले जमीन की नाप हुई। उसके बाद बड़े बड़े रैयतों (मीरासदार, ताल्लुकेदार) के साथ इस्तमरारी बन्दोबस्त किया गया। इसका परिणाम यह हुआ कि सिलहट में बहुत छोटी छोटी जमींदारियाँ स्थापित हो गईं और इसका बहुत सा हिस्सा अभी तक इस्तमरारी बन्दोबस्त में नहीं है। इसलिये यहाँ लगान वसूल करने में बड़ी कठिनाई पड़ती है। सिलहट के जयन्तिया परगना में जिस जमीन का इस्तमरारी बन्दोबस्त नहीं हुआ उसे इलाम (Proclaimed land) कहते हैं।

काचार के ब्रिटिश राज्य में सम्मिलित होने पर इसकी सब जमीन सरकार की हो गई परन्तु जमीन की सारी व्यवस्था पहिले ही जैसी रही। केवल मीरासदारी व्यवस्था जिस में हर एक जाति के लोग मिल कर जंगल साफ करते थे और जिसके लिये उन्हें इजमाली पट्टा मिलता था जिसमें सब का हक बराबर था सरकार ने तोड़ दिया और सब हिस्सेदारों के साथ अलग पट्टा किया गया। काचार में कुछ माफी जमीन भी है जिसे 'बख्श' कहते हैं।

पहाड़ी जिलों में कुछ इधर उधर की जमीन की व्यवस्था नहीं है। गारो की पहाड़ियों के तीन तरफ के मैदान आसाम ठेठ की रैयतवारी व्यवस्था के अनुसार हैं। इसमें सालाना पट्टा दिया जाता है। खासी और जयन्तिया की पहाड़ियों में 'रजहली' नामक जमीन सन् १८८६ में दस आने प्रति बीघे के हिसाब से बन्दोबस्त हुई। शेष जिलों में केवल घर के ऊपर ही लगान ली जाती है। गारो, खासी और जयन्तिया तथा नागा पहाड़ियों के प्रत्येक गावों में कुछ ऐसी ज़मीन है जिसके मालिक वहीं के आदमी हैं। जमीन व्यवस्था की जो भिन्न भिन्न रिवाजें इन आदि जातियों में पाई जाती हैं वे बड़ी ही विचित्र हैं।

आसाम में मनुष्यों की आबादी बहुत कम है और इस प्रान्त के अधिकांश हिस्सों में जङ्गल अभी तक लगे हुये हैं। खेती के लिये अथवा चाय के बगीचों के लिये जङ्गलों को साफ कर जो नई जमीन बनाई जाती है उसकी लगान व्यवस्था भिन्न प्रकार की है जिसका वर्णन 'चाय के व्यवसाय' वाले परिच्छेद में किया गया है।

रेवेन्यु आफिसर

पूरा प्रान्त छोटे छोटे मण्डलों में बांट दिया गया है। एक मण्डल नियमतः ५००० एकड़ का होता है। एक मण्डल एक पटवारी के आधीन रहता है। २० या २५ मण्डलों पर एक कानूनगो रहता है। जिसका काम पटवारियों के काम का देख भाल है। इनके ऊपर सब-डिपुटी-कलक्टर नियुक्त है जिसे तहसीलदार भी कहते हैं। पूरी तहसील इस आफिसर के आधीन रहती है जिसका काम लगान की वसूली आदि है। इसके अतिरिक्त हर एक तहसील में प्रायः एक आफिसर रहता है जो बन्दोबस्ती (Settlement) का काम करता है।

भूमि और खेती

आसाम प्रान्त में दो बड़े बड़े काँप के मैदान (Alluvial plainn) हैं जो तीन तरफ से पहाड़ों से घिरे हुये हैं। यहाँ (आसाम) की मिट्टी (soil) दो भागों में बांटी जा सकती है—(१) पहाड़ी स्थानों की मिट्टी जो बरसात के कारण कटती जाती है और (२) घाटियों की मिट्टी जो पहाड़ पर की कटी हुई मिट्टी से बनती है। ब्रह्मपुत्र और सूरमा घाटी की मिट्टी की बनावट में कुछ विशेष अन्तर है जिसका कारण समुद्र की सतह से कम या अधिक ऊँचाई का होना है। आसाम घाटी में ब्रह्मपुत्र तथा अन्य नदियों की धारायें बरसात में बहुत तेज हो जाती हैं इसलिये इस घाटी में वही पदार्थ बच सकते हैं जो भारी हों। यहां की मिट्टी में बालू अधिक पाया जाता है। इसके विपरीत सूरमा घाटी की नदियां धीरे धीरे बहती हैं और जो कुछ मिट्टी वे पहाड़ से लाती हैं उसे अपने किनारे के मैदानों में बिछा देती हैं। इसलिये इस घाटी में चिकनी मिट्टी अधिक मिलती है।

चावल के लिये ऐसी मिट्टी की आवश्यकता पड़ती है जिसमें न अधिक बालू हो और न बहुत अधिक चिकनी मिट्टी हो। इसका कारण यह है कि अधिक बालू होने से पानी उसमें रुक नहीं सकता और चिकनी मिट्टी अधिक होने से मिट्टी बहुत कड़ी हो जाती है। अतः उसमें हवा तथा पानी का प्रवेश नहीं हो सकता और उसे जोतने में भी कठिनाई पड़ती है। इससे पौधे नहीं उग सकते हैं। खेती के पौधों के लिये नेत्रजन नामक पदार्थ बड़ा उपयोगी है जो वनस्पति के सड़ जाने से बनता है और यह पदार्थ आसाम की मिट्टी में बहुत पाया जाता है।

भूमि के विभाग और खेती (ब्रह्मपुत्र-घाटी)

साधारणतः ब्रह्मपुत्र के दोनों तरफ की भूमि चार भागों में बाँटी जा सकती है—

(१) पहिली प्रकार की भूमि को चपटी कहते हैं जो नदी के बिल्कुल किनारे की भूमि है। इस भूमि में बरसात के दिनों में बड़े जोरों की बाढ़ आती है और नियमतः यह भूमि घास के जंगलों से ढकी रहती है जिसे काट कर जलाये बिना खेती नहीं की जा सकती लेकिन जब बाढ़ बहुत शीघ्र नहीं शुरू होती तो आहू नामक धान की अच्छी खेती होती है। आहू मार्च या अप्रैल में बोया जाता है और जून या जुलाई में काटा जाता है। बाढ़ के बाद अक्टूबर और नवम्बर में इस जमीन में तेलहन और दलहन बो देते हैं और तीन महीने के बाद काट लेते हैं। घास के जंगल काट देने पर एक दो साल तक इसमें खेती हो सकती है क्योंकि दूसरे, तीसरे साल खेतों में नरकट लग जाते हैं तथा सात, आठ वर्ष के बाद जब घास का जंगल घना हो जाता है तो उसे काट कर फिर खेत बना लेते हैं।

(२) चपरी के बाद निचली भूमि में बाओ (Bao) नामक धान पैदा होता है जो अप्रैल और मई में बोया जाता है। कभी कभी बाओ के साथ आहू नामक धान भी बोते हैं जिसमें बाढ़ के पहिले ही एक फसल किसानों को मिल जाय। इस भूमि से पानी धीरे धीरे बाहर जाता है अतः जाड़े की फसल यहाँ नहीं हो सकती।

(३) इसके बाद जमीन कुछ ऊँची होने लगती है जहाँ बाढ़ का पानी मुश्किल से पहुँचता है। इस स्थान की मुख्य पैदावार साली नामक धान है। धान के छोटे छोटे पौधे जून और जुलाई में खेतों में रोप दिये जाते हैं और यह फसल नवम्बर और दिसम्बर में तैयार हो जाती है। साली धान दो प्रकार का होता है (१) बार (Bar) और लाही (Lahi)। बार धान में दाने अधिक होते हैं और इसके लिये पानी की अधिक आवश्यकता पड़ती है। इसलिये यह नीचे भागों में बोया जाता है। यह भूमिचक्र अधिक चौड़ा है और यहाँ स्थायी रूप से खेती होती है तथा खेती करने वाले लोगों की संख्या यहाँ अधिक है।

(४) इसके बाद पहाड़ के निकट वाली भूमि है। यहां की सतह विशेष ऊँची है और अधिकतर खेत पहाड़ी नदियों से सींचे जाते हैं। यहां साली और खरमा नामक धान पैदा होता है। यहाँ बाढ़

बिल्कुल नहीं आती परन्तु कृत्रिम सिंचाई के कारण यहां फसल कभी मारी नहीं जाती। भूमि के उपर्युक्त ये चारों विभाग घाटी के सब भागों में नहीं पाये जाते। डैरेंग, शिवसागर तथा लखीमपुर के जिलों में बाओ नामक धान नहीं होता। यद्यपि ब्रह्मपुत्र के दोनों तरफ चपरीभूमि (२) नदी के किनारे तक चली आती है। ईख गांव के पास ऊँची जमीन पर बोई जाती है।

सूरमा घाटी में खेती

सूरमा घाटी की भूमि आसाम घाटी की भूमि से बिलकुल भिन्न है। सूरमा की घाटी में चपरी भूमि नहीं होती। यहां नदियों के किनारे की भूमि बहुत ऊँची और उपजाऊ होती है। काचार और सिलहट के पूर्वी भागों की भूमि आसाम घाटी की स्थायी खेती वाली भूमि के समान है। यहां सेल (साली) और औस (आहू) अधिक पैदा होता है। सिलहट का पश्चिमी भाग बरसात के दिनों में पानी से डूबा रहता है और यह स्थान केवल आमन (Aman) नामक धान के लिये ही उपयुक्त है। सेलबुरा (Sail-bura) नामक धान बड़े बड़े हाओर में बहुत पैदा होता है। यहाँ ईख नीचे भाग में बोई जाती है और तेलहन गाँव के निकट पुरानी ऊँची भूमि में।

पहाड़ी भागों में खेती

पहाड़ी जातियां भूमि[1] प्रणाली से खेती कराती हैं। खासी की पहाड़ियों में धान सीढ़ीदार खेतों में बोया जाता है और इन खेतों की सिंचाई भी होती है। पहाड़ की ऊँची भूमि पर आलू और बाजरा आदि पैदा होता है। तन्कुल और अङ्गामी जातियों के प्रदेश में भूम प्रणाली से धान नहीं होता। इन जातियों के गाँव बड़े सुन्दर सीढ़ीदार खेतों से घिरे रहते हैं जिसकी सिंचाई सुन्दर तथा बुद्धिमत्ता से बनी हुई नालियों द्वारा होती है। आसाम में जिन भिन्न भिन्न वस्तुओं की खेती होती है उनके नाम तथा जितने स्थान में पैदा होती हैं उनका विस्तार वर्गमीलों में इस प्रकार है।

धान	६,१८८ वर्गमील
गेहूँ	१६ ,,
दाल	१५७ ,,
ईख	६३ ,,
जानवरों का चारा	५७ ,,
चाय	५२८ ,,
तम्बाकू	७ ,,
रुई	६ ,,

इस तालिका से स्पष्ट प्रतीत होता है कि आसाम में सब से अधिक खेती धान की होती है इसके बाद दूसरा नम्बर चाय का है जो भारत भर में सब से अधिक यहीं पैदा होती है।

खेती के औजार

यहां खेती के औजार बड़े पुराने ढङ्ग के हैं। लोहे के फाल लगे हुये लकड़ी के हल, हसुआ, खुरपी तथा कुदाल आदि पुराने औजारों से खेती का काम किया जाता है। ईख पेरने के लिये लकड़ी के दो कुन्दे जो एक बाँस से घुमाये जाते हैं काम में लाये जाते हैं।

पैदावार

आसाम की मुख्य पैदावार चावल, दाल, चाय, ईख, तेलहन, तीसी, आलू, नारंगी, रेंड़ी, जूट, पान, गेहूँ, ज्वार, बाजरा, कपास आदि हैं। गोआलपाड़ा के पास थोड़ी सी गेहूँ की खेती होती है। दूसरी जगह गेहूँ और जौ की खेती विदेशियों द्वारा छोटे पैमाने में की जाती है। सिलहट में तीसी अधिक बोई जाती है। बगीचों में पान और सुपारी मिरचा तथा अन्य प्रकार के मसाले बोये जाते हैं। खासी की पहाड़ियों में आलू, नारंगी और अनन्नास (Pine

(१) रामनारायण मिश्र—भारतवर्ष का भूगोल पृ० २७२-७३।

(१) किसी पहाड़ी ढाल का बन काट कर साफ कर लिया जाता है। वहां के पेड़ जला दिये जाते हैं। इसी राख वाली धरती में चावल और कपास आदि बोये जाते हैं, कुछ वर्षों के बाद जब फसलें कमजोर होने लगती हैं तो पहाड़ी लोग दूसरी जगह जा कर उसी तरह की खेती करते हैं। इस प्रकार की खेती को 'झूम प्रणाली' कहते हैं। रामनारायण मिश्र 'भारतवर्ष का भूगोल' पृ० १८०।

apples) बहुत पैदा होते हैं। सिलहट की नारंगी बहुत ही प्रसिद्ध है जो उत्तरी भारत के बाजारों में अधिकता से पाई जाती है। प्रतिवर्ष प्रायः एक लाख मन स्वादिष्ट नारंगियाँ दिसावर को भेजी जाती हैं।

खाद

गोबर और कूड़े करकट खेतों में खाद के रूप में डाले जाते हैं। चपरी भूमि में जङ्गल की राख खाद का काम करती है। बगीचों में कभी कभी खाली खाद के रूप में दी जाती है।

मजदूर

यहाँ खेती के लिये मजदूरों की बड़ी कमी है जिसके कारण यहाँ खेती में विशेष उन्नति नहीं की जा सकती। देश की जलवायु बरसात के दिनों में बहुत खराब हो जाती है जिससे लोग अधिक शारीरिक परिश्रम नहीं कर सकते। उन्हें अपने निर्वाह के लिये खेती करना ही अधिक है।

सिंचाई

सरकार के द्वारा यहाँ सिंचाई का साधन उपस्थित नहीं है और न यहाँ इसकी आवश्यकता ही है। पहाड़ी के नजदीक किसान मिल कर नाली बना लेते हैं जिससे पहाड़ी नदियों का पानी उनके खेतों तक चला आता है। सिलहट में जाड़े के दिनों में बड़े बड़े गड्ढों में रोके गये पानी के द्वारा बोरो नामक धान की खेती होती है। खासी और अङ्गामी नागामी पहाड़ी के ऊपर खेतों की सिंचाई कर लेते हैं।

आसाम में आवागमन के साधन

आसाम में आवागमन के प्रधान तीन साधन हैं। १ रेल, २ सड़क, ४ नदी। आसाम में रेलें बहुत पीछे बनीं। इसका कारण यह है कि इस स्थान के पहाड़ी होने के कारण यहां रेलें बनाना उतना सरल कार्य नहीं था जितना कि मैदान में। पहाड़ों पर सब सामान ले जाने तथा पर्वतों को काट कर रेलें निकालने के लिये बहुत रुपया तथा परिश्रम की आवश्यकता थी। अतः पहिले कोई भी कम्पनी इस कार्य को करने के लिये तयार नहीं थी। दूसरी बात यह थी कि यह कोई व्यापार का बड़ा केन्द्र भी नहीं था। जब चाय का व्यापार दिन दूना और रात चौगुना बढ़ने लगा और उसे बाहर भेजने की आवश्यकता हुई तब उसे शीघ्र प्रान्त से बाहर भेजने के लिये रेलों की आवश्यकता हुई और पहले रेलें वहीं बनाई गईं जहां चाय की उपज के केन्द्र थे। दूसरा नम्बर सड़कों का है। यों तो सड़कों की हालत पहिले कुछ अच्छी नहीं थी परन्तु अब बड़े बड़े शहरों को मिलाती हुई अच्छी सड़कें बन गई हैं जिनके कारण आवागमन सरल हो गया है। जब रेल तथा सड़कें नहीं थीं तब आवागमन का प्रधान साधन नदियां थीं। इन्हीं नदियों में नावों में बैठ कर एक स्थान से दूसरे स्थान को जा सकते थे। प्राचीन काल में आसाम का प्रमुख व्यापार भी इन्हीं नदियों के द्वारा होता था। आज भी ब्रह्मपुत्र की घाटी का व्यापार विशेष कर नदियों के द्वारा ही होता है परन्तु रेलों के खुल जाने के कारण यह व्यापार बहुत घट गया है और घटता जा रहा है।

रेलें

आसाम की सब से प्रधान रेलवे आसाम-बंगाल रेलवे है। यह चीटागांव के बन्दरगाह से शुरू होती है तथा सूरमा की घाटी के पूर्वी किनारे सिलचर तक जाती है। इसकी ही एक दूसरी शाखा आसाम घाटी के दक्षिण में गौहाटी से तिनसुकिया तक जाती है जो कि डिब्रू सदिया रेलवे पर एक स्टेशन है। नूस लाइन को सूरमा की घाटी वाली रेल से वह रेलवे की शाखा मिलती है जो दक्षिण में बदरपुर से शुरू होती है तथा उत्तर में इस लाइन पर लुमडिंग के पास मिल जाती है। इस रेलवे के बनाने का काम सन १८९१ में शुरू हुआ था और पांच वर्ष के भीतर ही ११५

मील रेलवे बन कर तयार हो गई तथा चान्दुआरा से बदरपुर तक जनता के आने जाने के लिये खोल दी गई। इस रेलवे के निर्माण में पहाड़ी प्रदेशों को काट कर बनाने में बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ा था और यह कार्य १९०४ में जाकर समाप्त हुआ। यद्यपि इस रेलवे में पहाड़ी मार्ग केवल ११० मील है परन्तु इतने ही में इसमें २४ टनल, ७ घिरे रास्ते, तथा ७४ बड़े बड़े पुल हैं। सबसे लम्बे पुल की लम्बाई ६५० फीट तथा सबसे ऊँचे पुल की नदी के सतह से ऊँचाई ११३ फीट है और अन्य स्थानों पर १०० फीट की ऊँचाई साधारणतया पहुँच गई है। इस रेलवे के निर्माण में इँजीनियरिंग की कठिनाइयों को छोड़ कर वहां पर उस ऊँचे पर्वत पर खाने पीने की सब चीजों को लाने और मोटी मोटी रेल की पटरियां ले जाने में बड़ी ही कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है। एक समय रेलवे के सामान के अलावा २५,००० कुलियों के लिये खाने पीने का सामान बड़े ही कष्ट के साथ घोड़े, हाथी तथा खच्चर की पीठ पर ले जाना पड़ा था। इस कारण पहाड़ी भागों में रेलवे के बनाने में बड़ा रुपया खर्च करना पड़ा है।

मैदानों में पुल के बनाने में बड़ी कठिनाई रही है। कमिली नदी के ऊपर जो पुल बना हुआ है उसकी लम्बाई ५०० गज है। बदरपुर के पास बराक नदी के ऊपर जो पुल बना है यद्यपि वह छोटा है तो भी उसके बनवाने में बहुत रुपया खर्च किया गया है। वह नदी की तह से ८० फीट नीचे तक गया है। मीटर गेज (छोटी लाइन) का विस्तार समस्त प्रान्त में ५७१ मील (१९०५) है और इसका निर्माण एक कम्पनी ने सरकार की आज्ञा से किया है परन्तु रेलों में अधिक रुपया सरकार का ही लगा हुआ है।

एक छोटी लाइन डिब्रूगढ़ के स्टीमर घाट से मारघेरिटा तक गई है। इसकी एक छोटी शाखा तालाप तक गई है। इसकी समस्त लम्बाई केवल ८ मील है। इस लाइन की विशेषता यह है कि यह व्यापार के लिये बड़ी ही उपयोगी है। बड़े बड़े चाय बगान इसके आस पास दृष्टि गोचर होते हैं और माकूम का कोयला तथा तेल इसी रेल के द्वारा ब्रह्मपुत्रा की घाटी तक पहुँच जाता है। यह लाइन सन् १८८५ ई० में सरकारी गारण्टी प्राप्त एक प्राइवेट कम्पनी के द्वारा मीटरगेज के तरीके पर बनाई गई थी। उस साल शिवसागर जिले में एक स्टेट रेलवे खुली जो काकिला मुख से (त्र पर) मारिनी तथा टाटावर तक जाती है। यह चाय बगान की उपज को बाहर भेजने के लिये बनाई गई थी। इसकी पूरी लम्बाई ३० मील है और २ फीट चौड़े गेज पर बनी हुई है। इसी प्रकार एक छोटी लाइन जिसका गेज २ फीट ६ इञ्च चौड़ा है तेजपूर घाट से डैरंग जिले के बालीपार तक बनाई गई थी। इसकी लम्बाई २० मील है। यह लाइन सन् १८९५ ई० में एक प्राइवेट कम्पनी के द्वारा बनाइ गई थी। १९०७ में ईस्टर्न बंगाल स्टेट रेलवे का निर्माण हुआ जो धुब्री को बङ्गाल प्रान्त के अन्य हिस्सों से मिलाती है।

सन् १८९१ में समस्त प्रान्त में केवल ११४ मील ही पर रेल की लाइन बिछी हुई थी परन्तु १९०३ में ७१५ मील रेलवे बन कर तैयार हो गई है जिसमें ६१७ मील सरकारी रेलवे है। सन १९०३ में छोटी छोटी रेलवे लाइनों के बनाने का खर्चा ९४,६९,००० रुपया था।

ईस्टर्न बंगाल रेलवे

यह लाइन पूर्वी बङ्गाल और कुछ पश्चिमी आसाम में फैली हुई है। यह लाइन उत्तर में कलकत्ते से सिलगुड़ी तक चली गई है। सिलगुड़ी से दार्जिलिंग के लिये (२ फुट चौड़ी) पहाड़ी लाइन मिलती है। यह लाइन मीटर गज है अर्थात इसकी पटरियों की बीच की दूरी ३ फुट ३ इंच है। यह उत्तर-पश्चिम में कटिहार जंक्शन पर बी० एन० डब्लू रेलवे (बङ्गाल और नार्थ वेस्टर्न रेलवे) से मिली हुई है। कटिहार से यह लाइन पूर्वी बङ्गाल के दीनाजपूर और रंगपुर जिलों को पार करती हुई आसाम के पश्चिमी भाग में गोलक गंज नामक स्थान पर प्रवेश करती है तथा गोआल पाड़ा और कामरूप के जिलों से होती हुई गौहाटी तक चली गई है। इसका अन्तिम स्टेशन अमीन गांव है जो गौहाटी के सामने ब्रह्मपुत्र के दूसरी ओर स्थित है। यह लाइन गौहाटी में आकर आसाम बंगाल रेलवे से मिल जाती है। अतः आसाम में ईस्टर्न बंगाल रेलवे गोलकगंज से अमीन गाँव तक

फैली हुई है। बंगाल और नार्थ वेस्टर्न रेलवे की एक गाड़ी जिसका नाम "इलाहाबाद-अमीन गाँव पेसेञ्जर" है इलाहाबाद से अमीन गाँव तक सीधे चली जाती है अतः संयुक्त प्रान्त और उत्तरी विहार के लोग इस गाड़ी के द्वारा गौहाटी (अमीनगाँव) तक सीधे चले जा सकते हैं।

सड़कें

प्राचीन समय में आसाम में आवागमन का समस्त काम नदियों के द्वारा ही होता था। अतएव लोगों को किसी स्थान विशेष पर जाने के लिये सड़कों की आवश्यकता नहीं होती थी। अतः सन् १८६५ में इतने अधिक समय तक ब्रह्मपुत्रा की समस्त घाटी में एक लम्बी सड़क के बनवाने का विचार हुआ। यह सड़क पूर्वी अन्त सदिया से प्रारम्भ हो कर धुब्री तक आती है जहाँ पर स्टीमर से इसका सम्बन्ध है और गोआलपारा तथा उत्तरी बङ्गाल के सड़कों से मिल जाती है। गौहाटी से शिलाङ्ग तक बड़ी सुन्दर पक्की सड़क गई है। शिलाङ्ग से चेरापूञ्जी, थेरिया घाट तथा कम्पनीगंज तक सड़क गई है। सिलहट से काचार तक सड़क है। काचार से एक बड़ा रास्ता मनीपुर को गया है तथा वहां से गाड़ी के लायक सड़क कोहिमा, दीमापुर और गोला घाट होते हुये ब्रह्मपुत्रा तक गई है। ब्रह्मपुत्र के उत्तरी किनारे से भी एक बड़ी सड़क गई है परन्तु इस पर अधिक लोग नहीं चलते। ट्रन्क सड़कों के अतिरिक्त निम्नलिखित सड़कें भी अच्छी तथा बड़ी हैं। तुरा (गारो पहाड़ी) से ब्रह्मपुत्र तक की सड़क। गौहाटी के पास से दरैङ्गा तक (भूटान पहाड़ी के नीचे तक) रङ्गामाटी घाट से मंगलदेई सबडिवीजन के उत्तर तक शिवसागर से लेकर दिमागमुख तक (ब्रह्मपुत्रा के पास) सिलहट से फेंचुगंज और वहां से कुलउरा रेलवे स्टेशन तक सिलचर से हैकाकागडी की घाटी के ऊपर तक। सन् १८९०-१ ई० में २९३ मील सड़क भारत सरकार की, २,११९ मील सड़क प्रान्तीय सरकार की तथा ३,०९५ मील सड़क लोकल बोर्डों की ओर से (अनेक धन से) बनी हुई थी तथा इन सड़कों के बनाने का खर्चा ४,७०,००० रु० था। सन् १९०३-४ में १,६३५ मील सड़क प्रान्तीय सरकार की तथा ४८३ मील सड़क लोकल बोर्डों की ओर से बनाई गई थीं इन सड़कों के बनाने का खर्चा ८,८७,००० रुपया था। आसाम में पक्की सड़कों के बनवाने में व्यय बहुत अधिक पड़ता है। इसका कारण यह है कि मजदूर सस्ते नहीं मिलते तथा सामान भी सुलभ नहीं है। सन् १९०३-४ में केवल १४४ मील ही पक्की मेटल्ड) सड़क थी। इन सड़कों पर दस दस मील के फासले पर इन्सपेक्शन बंगाल बने हुए हैं। इन सड़कों के किनारे पर छायादार पेड़ नहीं लगे हैं।

नदियाँ

अब भी आसाम में आवागमन का प्रधान साधन प्रायः नदियाँ ही हैं। ब्रह्मपुत्रा बहुत बड़ी नदी है अतः बड़े बड़े स्टीमर डिब्रूगढ़ के पास तक चले आते हैं। इस प्रकार से ब्रह्मपुत्र की घाटी का अधिक व्यापार इसी विशाल नदी के द्वारा होता है। सूरमा की घाटी में नदियों का जाल सा बिछा हुआ है। वर्षा ऋतु में सिलहट जिले का पश्चिमी हिस्सा जलमय हो जाता है। इन दिनों में "इण्डिया जेनेरल स्टीम नेविगेशन कम्पनी" "रिभर्स स्टीम नेविगेशन कम्पनी" की स्टीमरें दोनों घाटी की नदियों में चलती हैं। ग्वालन्दो से डिब्रूगढ़ तक रोजाना स्टीमरें चलती हैं। सूरमा की घाटी में वर्षा ऋतु में बड़ी बड़ी स्टीमरें सिलचर तक पहुँच जाती हैं। धुब्री और गौहाटी के आर पार पहुँचाने के लिये स्टीमरें हैं। इसके अलावा ये नावें एक ही लम्बे काठ को खोखला कर बनाई जाती हैं। कहीं कहीं पर नदियों पर पुल भी बने हुये हैं। इस प्रकार से इस प्रान्त में बहुत सा व्यापार तथा आवागमन नदियों के द्वारा भी होता है।

प्राकृतिक प्रकोप

संसार में दुःख और सुख एक साथ ही रहते हैं। जिस वस्तु से सुख होता है उसी से कभी दुःख भी होता है। जो प्राकृतिक चीजें हिय को हुलसाती हैं और आँखों को आनन्द देती हैं उन्हीं को देख कर कभी हृदय जल भी जाता है। आसाम के विषय में भी ठीक यही दशा है। इस प्रान्त में अनेक प्राकृतिक आपत्तियां हैं जिनका शिकार लोगों को सर्वदा होना पड़ता है। इन आपत्तियों में बाढ़, दुर्भिक्ष, भूकम्प, कालाजार और शीतला आदि के रोग प्रधान हैं। जिन आसाम की नदियों के द्वारा यह प्रान्त सरसब्ज तथा उपजाऊ बना हुआ है उनके कारण प्रतापी मुगल सम्राट भी आसाम की स्वतंत्रता का अपहरण नहीं कर सके। उन्हीं नदियों के कारण यह प्रान्त बाढ़ और दुर्भिक्ष का घर बना हुआ है। कालाजार जैसी भयानक बीमारी का कारण यहां की दलदली मच्छरों से भरी भूमि है। जिन पर्वतों के कारण आसाम की प्राकृतिक शोभा संसार में अलौकिक है उन्हीं के कारण यहां प्रायः भूचाल आया करता है। पहाड़ों पर लोग जंगलों में रहने वाले हिंसक पशुओं से जान माल की सदा क्षति होती रहती है। मनुष्यों ने कुछ आपत्तियां स्वयम् मोल ली हैं जैसे अफीम खाना और शराब पीना। संक्षेप में आसाम में सदा कोई न कोई प्राकृतिक आपत्तियां आती ही रहती हैं जिनसे लोगों को सदा कष्ट होता है तथा उनके जान माल की सदा क्षति होती है।

कालाज़ार

यह आसाम की सबसे बड़ी तथा भयानक बीमारी है। यह बीमारी जिस मनुष्य को हो जाती है उसे जल्दी छोड़ती नहीं तथा वह घुल घुल कर बुरी तरह से मर जाता है। जैसे बंगाल में मलेरिया का प्रकोप अधिक होता है उसी प्रकार से आसाम में कालाजार लोगों को बड़ा सताता है। यह आसाम की एक खास बीमारी है जो विशेष कर उसी प्रान्त में पाई जाती है। इस बीमारी का पता कब से लगा तथा डाक्टरों की इस बीमारी के विषय में क्या राय है उसे यहां दे देना अनुचित नहीं होगा।

सबसे पहिले आसाम सेनिटरी रिपोर्ट में इस बीमारी का वर्णन मिलता है। उसमें यह लिखा गया था कि एक विषैली मलेरिया का उग्ररूप और छुतही बीमारी है। सन् १८८४ ई० में गोआलपाड़ा के सिविल सार्जन ने छुतहापन के सिद्धान्त का खण्डन किया तथा बतलाया कि यह मलेरिया ज्वर का ही स्थानीय नाम है। सन् १८८९—९० ई० में सर्जन केप्टन गाइलस नामक एक विशेषतः कालाजार बेरी बेरी के कारणों के अनुसन्धान के लिये नियुक्त किये गये और उन्होंने यह खोज की कि मेपानो केवल (Anchylostomiasis) के दूसरे नाम मात्र हैं। परन्तु गाइलस (Giles) के इस सिद्धान्त का कुछ ही दिनों में मेजर डावसन (Dobson) ने खण्डन कर दिया। सन् १८९६ ई० में केप्टन रोजर्स (Rogers) इस रोग का अनुसन्धान करने के लिये स्पेशल ड्युटी पर नियुक्त किया गया। बहुत खोज करने के बाद रोजर्स इसी सिद्धान्त पर पहुँचा कि कालाजार मलेरिया ज्वर का ही एक उग्र प्रकार है तथा यह छुतही बीमारी है जो कि रोगी के शरीर से स्वस्थ्य पुरुष के शरीर में प्रवेश कर सकती है। आसाम के स्थानीय डाक्टरों ने भी इसी बात का समर्थन किया और यह बात सिद्ध हो गई कि कालाजार से बिलकुल भिन्न है। मैनसन (Manson) की मच्छर के सिद्धान्त (Mosquito theory) से कि मच्छर के द्वारा ही मलेरिया का रोग फैलाया जाता है, वैज्ञानिक संसार में अद्भुत परिवर्तन हो गया है। मेजर रास (Ross) ने जिन्होंने सन् १८९६ ई० में मलेरिया के फैलने के कारण का अनुसन्धान किया था। रोजर्स के इसी सिद्धान्त की पुष्टि किया कि कालाजार एक प्रकार का मलेरिया ज्वर है। कालाजार की उत्पत्ति कैसे हुई और यह कहां से आया यह विषय अभी संशयास्पद है। केप्टन रोजर्स का कथन है कि कालाजार रंगपूर से जहां मलेरिया ज्वर बहुत होता है आया है परन्तु यह बात केवल कल्पना ही है। सन् १८८८ ई० में कामरूप के जिले में इस भयंकर

बीमारी का प्रवेश हुआ तथा शीघ्र ही इससे अनेक आदमी मरने लगे। कामरूप के बारपेता सब डिविजन में इस रोग से बहुत आदमियों की मृत्यु हुई। यह बड़े दुःख का विषय है कि इस भयंकर बीमारी ने आसाम में अपना अड्डा जमा लिया है तथा इससे आसाम का पिण्ड छूटने के लक्षण अभी शीघ्र नहीं दिखाई पड़ते। ईश्वर करे यह बीमारी इस प्रान्त से जितना ही शीघ्र भाग जाय उतना ही अच्छा हो।

शीतला

शीतला का प्रकोप महापुरुषिया सम्प्रदाय वाले लोगों पर अधिक होता है क्योंकि ये लोग अपने धार्मिक विश्वासों के कारण टीका नहीं लगवाते अतः बारपेता में जो कि इनका प्रधान स्थान है इस रोग के कारण लोगों की मृत्यु बहुत अधिक हुआ करती है। साधारण ज्वर के कारण भी लोगों की मृत्यु प्रायः हुआ करती है।

हैजा का भी प्रकोप आसाम में पाया जाता है। सन् १८९७ ई० में इस रोग से कामरूप जिले में बहुत से लोगों की मृत्यु हो गई। डिप्थेरिया (Diphtheria) साधारणतया अधिक जोरों से नहीं होता। इसके अतिरिक्त और भी अनेक बीमारियां होती रहती हैं जिनसे आदमी मरा करते हैं।

प्रभंजन

आसाम में समय समय पर बड़े जोरों की आंधियाँ आया करती हैं जिन्हें संस्कृत में प्रभञ्जन कहते हैं। ये प्रभञ्जन प्रायः बसन्त के दिनों में आया करते हैं। यद्यपि ये बड़े भयानक होते हैं परन्तु जान माल का खतरा विशेष नहीं रहता। सन् १८०० ई० में गारो की पहाड़ियों में दो प्रभञ्जन आये जो बड़े ही भयानक तथा खतरनाक थे। इन प्रभञ्जनों के कारण ४४ मनुष्यों की मृत्यु हुई तथा जो कुछ वस्तुएँ इनके रास्ते में पड़ीं उन सब को इन्होंने नष्ट भ्रष्ट कर दिया। इसके बाद भी कई बार जोरों की आंधियाँ आती रहीं। सन् १९३६ के जून मास में फिर एक प्रभञ्जन आसाम के पश्चिमान्त भाग में आया। इसके कारण धुब्री के घर नष्ट हो गये। सरकारी अफसरों के कितने बँगले गिर पड़े तथा कितने बगीचे उजड़ गये। कुशल केवल इतना ही था कि इससे मनुष्यों की जान नहीं गई। इस प्रकार आसाम में प्रभञ्जन प्रायः आया ही करते हैं जिनसे लोगों को हानि होती है।

भूकम्प

आसाम में भूकम्प सदा आया ही करते हैं। पर्वतों की गोद में बसे होने के कारण यह पार्वत्य प्रान्त भूकम्प का घर सा हो गया है। यहां भूकम्प कई शताब्दियों से आते रहे हैं। सन् १६०७ ई० में एक प्रचण्ड भूकम्प आया था जिसके कारण पहाड़ियाँ भी फट गईं तथा जमीन में धँस गईं। सन् १८३७ ई० में मैकाश साहब ने लिखा है कि आज से २० वर्ष पहिले एक ऐसा विनाशकारी भूचाल आया जिससे गोआलपाड़ा जिले में स्थित एक गाँव बिलकुल नष्ट होकर पृथ्वी में घुस गया और उसकी जगह पर पानी का झरना हो गया। सन् १८६९ तथा १८८२ ई० में सिलचर में भूकम्प के अनेक धक्के मालूम पड़े और सन् १८७५ ई० के भूचाल से शिलांग तथा गौहाटी के अनेक घरों को नुकसान पहुँचा परन्तु इन सब भूकम्पों से प्रचण्ड तथा प्रलयकारी भूकम्प अभी होना बाकी था और यह ऐतिहासिक भूकम्प १२ जून सन् १८९७ ई० को हुआ। इससे आसाम का बड़ा ही नुकसान हुआ। शिलांग शहर नष्ट भ्रष्ट हो कर भूमिसात् हो गया और स्त्री और पुरुष कई दिनों तक भीषण वर्षा की बौछारें खाते रहे। गौहाटी तथा सिलहट के सारे पक्के मकान चकनाचूर हो गये और गोआलपाड़ा, नवगांव और डैरंग जिले में महती क्षति हुई। इस प्रलयकारी भूकम्प से १५४० मनुष्यों की मृत्यु हुई। बहुत से आदमी नदियों में डूब गये तथा पहाड़ों के बीच में पिस गये। पक्की सड़कें तथा पुल बिलकुल नष्ट हो गये और नदियों के बहाव में परिवर्तन हो गया। गिरी हुई सरकारी इमारतों के बनवाने में ३५ लाख रुपया खर्च करना पड़ा तथा अन्य लोगों की व्यक्तिगत कितनी क्षति पहुँची इसका अन्दाजा लगाना भी असंभव है।

बाढ़ और दुर्भिक्ष

आसाम में नदियां बहुत हैं और वे गहरी और चौड़ी हैं। नदियां सब पहाड़ी हैं अतः बरसात के

दिनों में उनमें एकाएक बाढ़ आ जाया करती है। इसी कारण से आसाम की बाढ़ से ही कष्ट होता है। इस प्रान्त में अनावृष्टि से जितना कष्ट नहीं होता उतना अतिवृष्टि से होता है। ब्रह्मपुत्र तथा सूरमा नदियों में प्रायः भयंकर बाढ़ आया करती है। सन् १५८१ ई० में आसाम की नदियों में सहसा बड़े जोर की बाढ़ आ गई जिससे लोगों को बड़ा ही भीषण कष्ट हुआ। सरकार के द्वारा प्रबन्ध किये जाने पर भी सारी आबादी का एक-तिहाई भाग अन्न न मिलने के कारण भूखों मर गया। ब्रह्मपुत्र की घाटी में तथा सिलहट के जिले में प्रायः बाढ़ बहुत आया करती है। इधर कुछ ही वर्ष हुये कि सिलहट में बाढ़ आई थी। सन् १९३६ ई० के जून मास में सूरमा नदी तथा इसकी शाखाओं में भयंकर बाढ़ आई थी। लोगों को इससे बड़ा कष्ट हुआ। सारी खड़ी फसल नष्ट हो गई। लोगों ने भाग कर रेलवे बान्धों पर शरण ली[1]। कितने पुल और सड़कें नष्ट हो गईं। रेलवे अफसरों के परिवार को नावों और माल-गाड़ियों में शरण लेनी पड़ी।

दुर्भिक्ष

बाढ़ के अधिक आने से आसाम में दुर्भिक्ष पड़ा ही करता है। अधिक वर्षा होने से खाने को अन्न नहीं मिलता। सन् १५८१ ई० में भी भीषण बाढ़ के कारण बहुत बड़ा दुर्भिक्ष पड़ा जिसमें सारे प्रान्त के एक तिहाई आदमी दुर्भिक्ष के कारण मर गये। इसके बाद भी कई बार दुर्भिक्ष आये परन्तु इधर कुछ वर्षों से दुर्भिक्ष का आना बन्द है।

१—अमृत बाजार पत्रिका (ता० ४-६-३६) पृष्ठ १०।

आसाम का प्राचीन भूगोल

भारतवर्ष का प्राचीन भूगोल धीरे धीरे कराल काल के गाल में चला जा रहा है। प्राचीन स्थानों का नाम नये नामों ने लिया है। वैशाली की जगह पर बसाढ़ तथा तक्षशिला के स्थान पर टैक्सिला ही सुनने में आते हैं। कुछ स्थानों के नाम में तो इतना अधिक परिवर्तन हो गया है कि उनके प्राचीन नाम का अन्दाजा लगाना भी कठिन है। आसाम प्रान्त के प्राचीन स्थानों के कुछ नाम तो बिलकुल बदल गये हैं तथा कुछ स्थानों की स्मृति किसी न किसी रूप में आज भी बनी हुई है।

आसाम प्रान्त का प्राचीन नाम कामरूप था। प्राचीन ग्रन्थों में इस प्रान्त का उल्लेख इसी नाम से ही प्रसिद्ध था। कालिदास ने अपने रघुवंश में इस प्रान्त का स्मरण कामरूप के नाम से किया है[1]। सम्राट समुद्रगुप्त के सुप्रसिद्ध प्रशस्तिकार हरिसेण ने इस 'भारतीय नेपोलियन' की दिग्विजय-यात्रा का वर्णन करते हुये प्रत्यन्त नृपतियों के कामरूप के भी राजा का उल्लेख किया है[1]। इसके अतिरिक्त इस प्रान्त में राज्य करने वाले वरमेन्ट राजवंश के राजाओं के प्राप्त शिलालेखों में भी इसका नाम 'कामरूप' ही मिलता है[2]। इन सब प्रमाणों से पता चलता है कि इस प्रान्त का प्राचीन नाम कामरूप था।

कामरूप की राजधानी का नाम प्राग्ज्योतिस अथवा प्राग्ज्योतिसपुर था। कालिदास के समय में यह नगर प्राग्ज्योतिसपुर के नाम से प्रसिद्ध था। आपने इसी नाम से इस शहर का उल्लेख किया है[3]। प्राचीन समय में इस शहर की बड़ी प्रसिद्धि थी। नरक तथा भगदत्त नामक विख्यात राजाओं की यही नगरी राजधानी थी। वर्तमान ब्रह्मपुत्र नदी का प्राचीन नाम लौहित्य था। कालिदास ने लिखा है कि जब सम्राट समुद्रगुप्त ने लौहित्य को पार किया तब

१—तमीशः कामरूपाणामत्याखण्डलविक्रमम्।—४ सर्ग

१—समुद्र गुप्त का प्रयाग वाला स्तम्भलेख।

२—पद्मनाथ भट्टाचार्य—कामरूप शासनावली।

३—चकम्पे तीर्ण लौहित्ये तस्मिन्प्राग्ज्योतिषेश्वरः।

—रघुवंश ४ सर्ग।

प्रागज्योतिष का राजा काँप उठा[1]। आजकल भी इसे कुछ लोग लोहित के नाम से पुकारते हैं। इस प्रकार यह अपने प्राचीन नाम को किसी न किसी रूप में अब भी बनाये हुये है। बर्तमान गारो की पहाड़ियों को प्राचीन समय में मन्दाचल के नाम से पुकारते थे[2]। कह नहीं सकते कि यह मन्दाचल वही था जिसमें इन्द्र के वज्र के डर से समुद्र में शरण ली थी अन्यथा अन्य कोई आसाम के ऊपरी भाग—जो अपर आसाम कहलाता है—का प्राचीन नाम सौमार था। प्राचीन ग्रन्थों में भी यही नाम पाया जाता है। आधुनिक तेजपूर—जो डैरेङ्ग जिले का प्रधान स्थान है। पहिले शोणितपूर के नाम से प्रसिद्ध था। कहा जाता है कि सती के अंग के इक्कावन अंशों में से एक अंग जंघा यहीं गिरा था। इसी प्रान्त में कुण्डिन-पुर नामक एक स्थान भी था। जो विर्स के राजा की राजधानी थी। आसाम की बर्तमान कुन्डिल नदी इस नाम की ओर संकेत करते हुये आज भी इसकी स्मृति को बनाये हुये है[1]।

१—वही ... ...।

२—नगेन्द्र नाथ बसु—सोशल हिस्ट्री आफ कामरूप जिल्द २।

१—आसाम के प्राचीन भूगोल का इससे कुछ अधिक पता नहीं चलता।

राजनैतिक विभाग

सरकार ने शासन प्रबन्ध की सुविधा के लिये भारतवर्ष के अन्य प्रान्तों की भांति इस प्रान्त को भी अनेक विभागों में विभाजित कर दिया है। ये विभाग तीन प्रकार के हैं—(१) कमिश्नरी, (२) जिला, (३) तहसील। यदि गांव को भी इस विभाग में जोड़ लें तो इनकी संख्या चार हो जायगी। गांव भी सरकार के द्वारा किये गये राजनैतिक विभाग का एक अंग है क्योंकि शासन प्रबन्ध का यही सबसे छोटा हिस्सा (unit) समझा जाता है। आसाम प्रान्त में २ कमिश्नरी, १२ जिले तथा २६ तहसीलें हैं। प्रयेक तहसील के अन्दर कुछ गांव हैं जिनकी निश्चित संख्या बतलाना कठिन है। कारण यह है कि आसामी गांव एकत्र नहीं बसते बल्कि बिखरे बसे रहते हैं। आसाम की पहिली कमिश्नरी ब्रह्मपुत्र-घाटी कमिश्नरी तथा दूसरी सूरमा घाटी कमिश्नरी है प्रत्येक कमिश्नरी में कमिश्नर रहता है जो सारी कमिश्नरी का प्रबन्ध करता है। प्रधान स्थान गोहाटी है। इसके अन्तर्गत छः जिले हैं जिनके नाम ये हैं:—गोआलपाड़ा, कामरूप, डैरेङ्ग, नवगांव, शिवसागर और लखीमपुर। सूरमा घाटी कमिश्नरी में काचार और सिलहट नाम के दो जिले हैं। इनके अतिरिक्त चार पहाड़ी जिले हैं जिनके नाम ये हैं (१) गारो की पहाड़ियां (२) खासी जयन्तिया की पहाड़ियां (३) नागा की पहाड़ियां (४) लुशाई की पहाड़ियां। यहां पर प्रत्येक जिले के प्रधान स्थान का नाम इसकी तहसीलों की संख्या तथा प्रत्येक तहसील का क्षेत्रफल दिया जाता है।

जिले का नाम	प्रधान स्थान	तहसीलें	क्षेत्रफल (वर्गमील में)
सूरमा घाटी कमिश्नरी			
१—काचार	सिलचर	सिलचर	१,६४९
		हैलकाण्डी	४१४
		उत्तरी काचार	१,७०६
१—सिलहट	सिलहट	उत्तरी सिलहट	८६४
		करीम गंज	१,०६६
		दक्षिणी सिलहट	१,०६४
		हबीगंज	९९९
		सुनामगंज	१,४५०
ब्रह्मपुत्र घाटी कमिश्नरी			
१—गोआलपाड़ा	धुब्री	धुब्री	२,९५९
		गोआलपाड़ा	१,००२
२—कामरूप	गौहाटी	गौहाटी	२,५८४
		बारपेता	१,२७४
३—दरेङ्ग	तेजपुर	तेजपुर	२,१७३
		मंगलदेई	१,२४५
४—नवगांव	नवगांव	× × ×	३,८४३
५—शिवसागर	शिवसागर	शिवसागर	१,१६२
		जोरहट	८१९
		गोलघाट	३,०१५
६—लखीमपुर	डिब्रूगढ़	डिब्रूगढ़	३,०३३
		उत्तरी लखीमपुर	१,१७४
पहाड़ी जिले			
१—गारो की पहाड़ियां	तुरा	× × ×	३,१४०
२—खासी और जयन्तिया की पहाड़ियां,	शिलाङ्ग	शिलाङ्ग	३,९४१
		जोवई	२,०८६
३—नागा की पहाड़ियाँ	कोहिमा	कोहिमा	२,३३७
		वोखा	७३३
		मोकोकचाङ्ग	
४—लुशाई की पहाड़ियाँ	ऐजल	ऐजल	४ ७०१
		लुङ्गलेह	२,५२६

जन-संख्या[1]

आसाम में अनेक जिले पहाड़ी हैं, वे दुर्गम हैं, और इन पहाड़ी जिलों में स्थित गांव एक दूसरे से बहुत दूर पर बसे हुये हैं। अतएव आसाम में जन-गणना का काम बड़ा ही कठिन है। पहिले जो जन-गणना ली गई थी उसमें इन सब कठिनाइयों के कारण संतोष जनक परिणाम नहीं हुआ था परन्तु सन् १९३१ में जो जन-गणना हुई है वह अधिक अंशों में ठीक है तथा बड़े परिश्रम से तैयार की गई है। आसाम में दूसरी कठिनाई यह है कि यहां सीमान्त में रहने वाली कुछ जातियां भी हैं जिनका निवास स्थान कोई निश्चित स्थान नहीं है वे एक जगह से दूसरी जगह को सदा घूमा करते हैं। अतः गणना का कार्य इन सब कारणों से कठिन हो गया है।

आसाम क्षेत्रफल में उतना ही बड़ा है जितना कि इंगलैंड और वेल्स परन्तु क्षेत्रफल में समान होते हुए भी आसाम की आबादी इँगलैंड के चतुर्थांश से भी कम है। इसका कारण यह है कि आसाम के अधिकांश जिले पर्वतीय हैं जहां आबादी स्वभावतः कम हुआ करती है। मैदान वाले जिलों में भी ऊसर धरती की अधिकता होने के कारण यथेष्ट आबादी नहीं पाई जाती। यही कारण है कि आसाम जैसे विख्यात प्रान्त की आबादी आजकल ८० लाख से अधिक नहीं है।

आसाम के प्रत्येक जिलों का क्षेत्रफल तथा उसकी आबादी की सघनता इस प्रकार है।

जिला	क्षेत्रफल वर्गमीलों में	जन-संख्या वर्गमीलों में
कछार	२,०६३	२०१
सिलहट	५,४४२	४१२
गोआलपाड़ा	३,९६१	११७
कामरूप	३,८५८	१५३
दरेङ्ग	३,४१८	९९
नवागांव	३,८४३	६८
शिवसागर	४,९९६	१२०
लखीमपूर	४,२०७	८८
लुशाई पहाड़ियां	७,२२७	११
उत्तरी कछार	१,७०६	२४
नागा पहाड़ियां	३,०७०	३३
खासी और जयन्तिया पहाड़ियां	६,०२७	३४
गारो पहाड़ियां	३,१४०	४४
मनीपूर	३,२८४	८७

ऊपर के आँकड़े को देखने से स्पष्ट पता लग जाता है कि लुशाई की पहाड़ियों में आबादी सब से कम है। क्षेत्रफल की दृष्टि से यह जिला आसाम के सब जिलों से बड़ा है। इसका क्षेत्रफल ७,२२७ वर्गमील है परन्तु आबादी सब जिलों से कम है अर्थात् प्रति वर्गमील में केवल ११ ही है।

खासी और जयन्तिया की पहाड़ियों में भी आबादी बहुत कम है। आसाम का सब से अधिक घना बसा हुआ जिला सिलहट है। यहां आबादी की सघनता प्रति वर्गमील ४१२ है। आबादी की अधिकता की दृष्टि से कछार जिले का नम्बर दूसरा है। जन-गणना के हिसाब से प्रत्येक घर की औसत आबादी ४·६ थी। यह संख्या गोआलपाड़ा जिले में बढ़कर ५·३ हो जाती है और नागा पहाड़ियों में घट कर ३·३ रह जाती है।

आसाम में मनीपूर को छोड़कर, शहर की आबादी समस्त आबादी का १·९ प्रतिशत है इसका कारण यह है कि आसाम में बड़े बड़े व्यवसायों की कमी के कारण वहाँ बड़े शहर नहीं हैं। यहां चाय का जो बड़ा व्यवसाय होता है उससे शहर की आबादी बढ़ने के विरुद्ध घटती ही जाती है। आसाम का सब से बड़ा शहर सिलहट है इसके बाद गौहाटी का नम्बर आता है। आसाम प्रान्त के उन मुख्य शहरों की आबादी के आँकड़े यहाँ दिये जाते हैं जिनकी जन-संख्या ६,००० से अधिक है।

१.—यहां पर जो आकड़े हैं वे सब १९०१ ई० की जन-संख्या-गणना से दिये गये हैं। सन् १९३१ ई० की जन-संख्या-गणना की रिपोर्ट बहुत परिश्रम करने पर भी नहीं मिल सकी।

सिलहट	१३,८६३	बारपेता	८,७४७
गौहाटी	११,६६१	शिलॉंग	८,३८४
डिब्रूगढ़	११,२२७	गाआलपाड़ा	६,२८७
सिलचर	६,२५६		

आसाम प्रान्त में सब मिला कर २७,३२६ गाँव हैं जिनकी औसत आबादी प्रति गाँव २६६ मनुष्य हैं। ५६ प्रतिशत मनुष्य ऐसे गांवों में रहते हैं जिनकी आबादी ५०० मनुष्यों से भी कम है।

आसाम प्रान्त की आबादी सदा घटती बढ़ती रहती है। इसका कारण जन्म मृत्यु के अतिरिक्त सुदूर प्रान्तों से उन कुलियों का आना है जो सदा चाय बगान में आकर काम किया करते हैं। नीचे जो आँकड़े दिये जा रहे हैं उनमें गत दस वर्षों में जिले की आबादी में जितनी घटती या बढ़ती हुई है वह स्पष्ट दिखलाई गई है। बढ़ती का चिन्ह धन (+) है तथा घटती का ऋण —।

जिला		जन-संख्या		प्रतिशत
कछार	+	४७,२३६	+	१२·८
सिलहट	+	८७,२५५	+	४·०
गोआलपाड़ा	+	६,२७६	+	२·०
कामरूप	—	४५,०६२	+	७·१
डैरेङ्ग	+	२६,८७३	+	६·७
नवागांव	—	८६,१४७	—	२४·८
शिवसागर	+	११७,३१०	+	२४·४
लखीमपूर	+	११७,३४३	+	४६·१
उत्तरी कछार	+	२१,८७१	+	११५·४
नागा पहाड़ियां	+	५,७६५	+	५·६
खासी और जयन्तिया पहाड़ियां	—	४,३४६	—	२·१
गारो पहाड़ियां	—	१६,७०४	—	१३·७

आसाम की आबादी में बाहर से आये हुये कुलियों का बड़ा भारी भाग है। आजकल समस्त कुलियों की संख्या दस लाख के लगभग है। इस प्रकार आसाम की आबादी का आठवाँ हिस्सा केवल बाहर के कुली ही हैं। परन्तु संतोष का विषय यह है कि आसाम की जन संख्या क्रमशः बढ़ती जा रही है।

जातियाँ

आसाम की आबादी में बाहर से आये हुये कुलियों का बड़ा भारी भाग है। आजकल समस्त कुलियों की संख्या दस लाख के लगभग है। इस प्रकार आसाम की आबादी का आठवां हिस्सा केवल बाहर के कुली ही हैं परन्तु संतोष का विषय यह है कि आसाम की जन-संख्या क्रमशः बढ़ती जा रही है।

आसाम में जातियों की बड़ी बहुलता है। जितना इस प्रान्त में भिन्न भिन्न जाति के लोग पाये जाते हैं उतना और किसी प्रान्त में नहीं। अतः इस प्रान्त को यदि 'जातियों का अजायबघर' कहें तो कुछ अत्युक्ति नहीं है। आसाम में भिन्न भिन्न जाति (caste) ही के लोग नहीं मिलते बल्कि भिन्न भिन्न वंश (Race) के भी लोग विद्यमान हैं। आसाम में जो आहोम लोग आये थे वे शान वंश के थे और उनका सम्बन्ध तिब्बतो-बर्मन वंश में था। गारो, खासी, जयन्तिया तथा लुशाई आदि पहाड़ी जिलों में ऐसी जातियाँ मिलती हैं जो अभी तक आधुनिक सभ्यता का प्रथम पाठ भी नहीं पढ़ सकी हैं। अङ्गामी, नागा और गारो जाति के लोग इसी कोटि में आते हैं। इसके अतिरिक्त आसाम के सामान्त प्रदेश में मीरी, अभोर, मिशमी, खामटी, सिङ्गफो, अका और दफला आदि अनेक ऐसी जातियाँ निवास करती हैं जिनका रहन-सहन, खान-पान तथा स्वभाव अपनी विशेषताओं से युक्त है[1]। यहाँ के चाय बगानों में काम करने के लिये बिहार तथा यू० पी० के अनेक जाति के लोग यहाँ आते हैं जिनमें गोंड़, कमकर, तुरहा और नाई प्रधान हैं। इन कुलियों के अलावा आसाम की बरुआ, बरदोलाई, फूकन आदि उपाधि वाली जातियाँ और हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि इस प्रान्त में नाना प्रकार की जातियों का बृहद् समुदाय उपस्थित है। इन सब जातियों के विस्तृत वर्णन में एक स्वतंत्र ग्रन्थ रचा जा सकता है अतः स्थानाभाव से इनका इतना ही वर्णन यहाँ पर्याप्त है।

१—विस्तृत वर्णन के लिये देखिये "सीमान्त और पार्वत्य जातियां"।

व्यापार तथा उद्योग-धन्धे

आसाम में व्यवसाय

आसाम में व्यवसाय की कुछ विशेष उन्नति नहीं है। आहोम राजाओं के समय में भिन्न भिन्न कार्य को करने के लिये भिन्न भिन्न आदमी नियुक्त थे परन्तु उनके बाद इन लोगों ने अपना पेशा छोड़ कर खेती करना प्रारम्भ कर दिया इसलिये वहां पर एक खास पेशे को करने वाले किसी जाति विशेष का मिलना कठिन है। पहिले जो कुछ व्यवसाय था अब वह नष्ट होता चला जाता है क्योंकि घर की बनी हुई वस्तु की अपेक्षा बाहर की बनी फैशनेबुल चीजों को लोग अधिक पसन्द करने लगे हैं। आसाम का प्रधान व्यवसाय वहां की बुनाई, रेशम के कीड़ों को पालना, मिट्टी के बर्तन, धातु की बना हुई चीजें, चटाई बनाना, लाह तयार करना और मछली मारना है। इनका संक्षेप में यहां वर्णन किया जाता है।

बुनाई

आसाम में सूत के कपड़े बुनने का कार्य आज भी वहाँ के निवासियों में ब्रह्मपुत्र घाटी में प्रचुर प्रमाण में पाया है। यह वहाँ का सब से अधिक प्रचलित व्यवसाय है। यह कार्य अधिकतर स्त्रियों के द्वारा ही किया जाता है। प्रायः प्रत्येक घर में करघा (Loom) मिलेगा जिसके द्वारा इस बुनाई का कार्य किया जाता है परन्तु इससे जो कपड़ा तयार होता है उसकी संख्या अधिक नहीं होती। वह केवल उसी परिवार के लोगों के लिये काफी होता है। बुनाई लड़कियों की शिक्षा का एक बहुत बड़ा अंग समझी जाती है। इस कला से युक्त लड़की बड़ी गुणवती समझी जाती है। धनी घरों की स्त्रियों में घर के बुने हुए कपड़े का प्रयोग घटता जाता है। वे विदेश के सुन्दर कपड़े पहनने लग गई हैं।

सूरमा की घाटी में बुनाई का कार्य कभी भी गृह व्यवसाय (Home Industry) नहीं था। यहाँ बुनाई का पेशा करने वाली एक अलग जाति हो जाती थी जो इसका कार्य करती थी लेकिन आजकल इन पेशा करने वालों ने भी खेती की समता में इस व्यवसाय को छोड़ दिया है। कामरूप जिले में यह व्यवसाय अब भी अच्छी तरह से चल रहा है परन्तु इससे अधिक प्रमाण में कपड़े तैयार नहीं होते हैं। इन करघों के द्वारा जो कपड़ा तैयार होता है उनमें शाल भी है जो बहुत ही सुन्दर तैयार होता है और बड़ी कीमत का होता है।

रेशम और उसके कीड़े का पालना

आसाम की घाटी में एक विशेष प्रकार का व्यवसाय रेशम के कीड़ों को पालना और उससे रेशम उत्पन्न करना है। ये कीड़े चार प्रकार के होते हैं। १—छोटे पाट (Pat) कीड़े, २—बड़े पाट कीड़े, ये दोनों प्रकार के कीड़े एक बारीक सफेद सूत को तैयार करते हैं। ३—मूगा (Muga) कीड़े, ये प्रधानतया सूम (Sum) वृक्ष के ऊपर पाले जाते हैं और

पीले रंग के रेशम का सूत पैदा करते हैं परन्तु यदि यही चाप (Chapa) वृक्ष के ऊपर पाले जायँ तो सफेद सूत को पैदा करते हैं। ४—एरी (Eri) कोड़े, चूंकि ये रेंड (एरण्ड) वृक्ष के ऊपर पाले जाते हैं अतएव इनका ऐसा नाम पड़ गया है। ये एरण्ड वृक्ष के अतिरिक्त दूसरे वृक्षों पर भी पाले जाते हैं। पाट रेशम से जो कपड़ा तैयार किया जाता है। वह बड़ा ही सुन्दर और विलास की वस्तु समझी जाती है। यह अधिक मात्रा में मिलता भी नहीं है। परन्तु मूगा रेशम का प्रयोग सर्व साधारण भी करते हैं। इसे पहाड़ी जिलों में भेजते भी हैं।

परन्तु रेशम के कोड़े पालने का यह व्यवसाय बहुत बड़े व्यापारिक ढंग पर नहीं होता। कुछ देहात के आदमी इसे एक छोटे से पैमाने पर पालते हैं और उस से जो कुछ रेशम का सूत तयार होता है उसे या तो अपने घर की स्त्रियों के प्रयोग के लिये रख लेते हैं अथवा बाजार या मेले में जाकर बेंच देते हैं। अपर आसाम में रेशम का व्यवसाय कुछ अधिक नहीं है परन्तु पश्चिमी जिलों की कतिपय जातियां जमीन का लगान चुकाने के लिये एरी रेशम को मोहियों के हाथ बेंच देते हैं। ये रेशम मारवाड़ियों के हाथ भी बेचते हैं जो उसे कलकत्ता भेज देते हैं। ब्राह्मण गणक और कलिता जातियां एरी रेशम के कोड़े को नहीं पालतीं। ये इसे निषिद्ध समझती हैं। यह व्यवसाय अधिकतर गारो, मिकिर और कचारी जातियों के हाथ में है। कामरूप जिले में इस व्यवसाय का प्रधान स्थान बरदुआर, चयगाँव पाटन गांव तथा तामुलपुर और बरमा तहसील हैं। आज कल शिक्षित लोग भी इस व्यवसाय की ओर झुके हुये हैं। मूँग तथा एरी कपड़े इतने मजबूत व टिकाऊ होते हैं कि यदि इन्हें तेल से दूर रक्खा जाय तो फटने का नाम ही नहीं लेते। ये कपड़े केले के छार से धोये जाते हैं। अच्छे साबुन से अगर खुद धो लिये जाँय तो भी कोई विशेष हानि नहीं होती।

जवाहिरात के काम

यद्यपि आसाम में जवाहिरात के काम कुछ उतने अच्छे नहीं होते परन्तु तो भी बरपेटा में सुवर्ण जटित मुक्ता मालायें विशेष प्रकार की बनाई जाती हैं और कला से पूर्ण होती हैं। खासी जाति की स्त्रियाँ हाथ में कड़ा तथा गले में मालायें बहुत पहिनती हैं। इस व्यवसाय का विशेष प्रचार नहीं है। इसे बहुत ही कम आदमी करते हैं। इस पेशे को करने वाले आदमियों को जीविका का साधन दूसरी भी वस्तुएँ हैं।
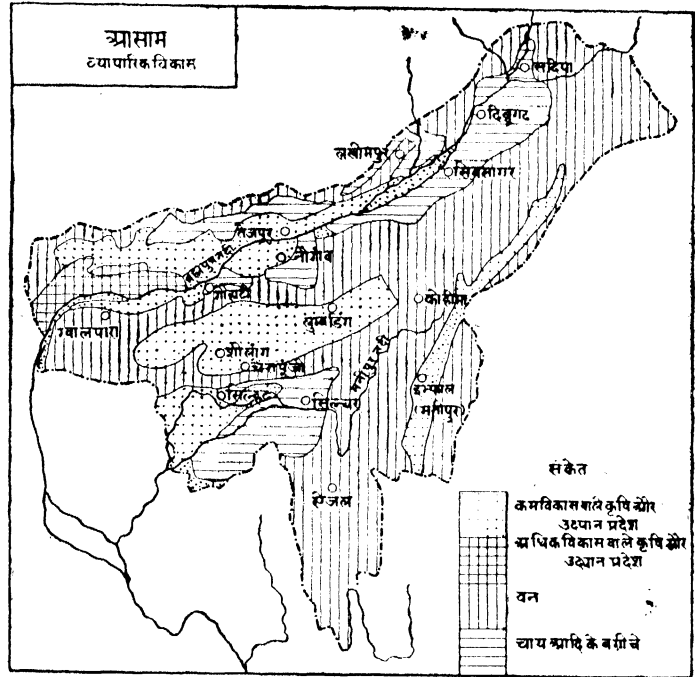
पीतल धातु की बनी हुई चीजें

अन्य प्रकार की बनी हुई वस्तुओं में पीतल, लोहे के सामान तथा बेल मेटल (Bell metal) के सामान हैं। इस प्रकार के जो कुछ भी सामान बनते हैं उनमें विशेष कारीगरी नहीं रहती। ये सामान इतनी अधिक संख्या में नहीं बनते कि स्थानीय आवश्यकता की पूर्ति कर सकें। अतः बंगाल से यहां सामान भेजा जाता है पीतल के जो सामान बनते हैं उन्हें पीतल के पतले चद्दरों को पीट पीटकर तैयार किया जाता

है। यह व्यापार प्रधानतया आसाम की घाटी में मोरियों (जो कि एक प्रकार के पतित मुसलमान माने जाते हैं) के हाथ में है। आसाम के राजाओं के समय में मिश्रित लोहे को गला कर उसमें से अच्छा लोहा निकालने का बहुत बड़ा व्यापार होता था। यद्यपि यह व्यापार प्रायः नष्ट हो गया है फिर भी आजकल भी खासी जाति के लोग मिश्रित लोहा गलाकर उसमें से शुद्ध लोहे को निकाल कर अपने खेती के हथियारों को बनाते हैं। यहां जो लोहार के काम को करने वाले हैं वे प्रायः दूसरे प्रान्तों से आये हुये हैं और वे अन्य स्थान से आये हुये लोहे के द्वारा हथौड़ा, घड़ा, हसिया, खुरपी आदि सामान तयार करते हैं। कामरूप जिले में पीतल के बरतन बनाने के केन्द्र हाजो तथा गौहाटी हैं।

यों तो प्रान्त के प्रायः प्रत्येक जिले में चटाई बनाने का काम होता है परन्तु सिलहट और कछार के जिले में यह व्यवसाय विशेष रूप से होता है। मुर्दा बेंत की चटाइयां बालगंज, जूरी, तेघरी, कालीगंज तथा सिलहट और कचार जिले के अन्य गाँवों में बनती हैं। बाँस तथा नल की बनी हुई चटाइयाँ करीमगंज तथा सुनामगंज तहसील में पाई जाती हैं। हैं। लगभग २,५०० परिवार बेंत की चटाई बनाने में तथा २,००० परिवार बाँस और नल की चटाइयाँ बनाने में लगे रहते हैं। इन परिवारों का यही पेशा है। सुनामगञ्ज तहसील से बाँस तथा नल की चटाइयाँ प्रचुर मात्रा में बंगाल को भेजी जाती हैं। आसामी चटाइयों की विशेषता यह है कि ये बड़ा सुन्दर चिकनी तथा मजबूत होती हैं।

मिट्टी के बर्तन

आसाम में जो कुम्हार मिट्टी के बर्तन बनाते हैं। वे कलिता तथा नमशूद्र जाति के आदमी हैं। ये मिट्टी के बर्तन बनाकर ही अपनी जीविका उपार्जन करते हैं। इनमें से अधिक आदमी अब खेती का काम भी करने लगे हैं। स्त्रियाँ भी इस कार्य में पुरुषों की बड़ी सहायता करती हैं। मिट्टी के जो बर्तन बनाये जाते हैं उनमें भोजन बनाने के बर्तन, घड़े, टिअट आदि प्रधान हैं। गौहाटी के कुम्हारों के द्वारा फूल रखने के गमले अच्छे बनाये जाते हैं। इस व्यापार से जो लाभ होता है वह बहुत थोड़ा है। धीरे धीरे इन मिट्टी के बर्तनों के स्थान धातु के बर्तन ग्रहण कर रहे हैं। ये बर्तन बंगाल से आते हैं और इनका प्रचार क्रमशः बढ़ रहा है। कामरूप जिले में इस व्यवसाय का केन्द्र पारू, रानी, बेलतला आदि स्थान हैं।

चटाई बुनने का काम

ये चटाइयां बाँस, बेंत, नल और सोल की बनाई जाती हैं। बाँस की चटाइयाँ गौहाटी तथा बाजली तहसील में बनाई जाती हैं। छोटे छोटे गाँवों में भी ये चटाइयाँ बनाई जाती हैं। सिलहट के जिले में भी इन चटाइयों के बनाने का काम होता है। यहाँ पर नल के बक्स, कुर्सी, टेबुल और पत्तों के छाते आदि बनाये जाते हैं। लाह की चूड़ियाँ, लड़कों के खिलौने आदि का निर्माण किया जाता है।

इधर सरसों के तेल और चीनी के व्यवसाय की ओर भी अधिक ध्यान आकर्षित हुआ है। इस दिशा में बहुत अधिक उन्नति हुई है। सन् १९०५ ई० में गौहाटी में दो मिलें काम कर रही थीं जिनमें से तीन टन तेल प्रति दिन निकलता था। चीनी के कारखाने से गुड़ से चीनी बनाने का काम होता है। सिलहट के जिले में नावों के बनाने का भी काम होता है। आसाम की घाटी में पेड़ के धड़ को खोखला करके नाव बनाने का काम किया जाता है। हाथी के दांत तथा लकड़ी में नक्काशी बनाने का कार्य अब लुप्त-प्राय हो गया है। लकड़ी में नक्काशी करने वाले प्रायः बढ़ई होते हैं। हाथी दाँत में काम किये हुए सामान जोरहाट, बरपेट तथा सिलहट में पाये जाते हैं। लखीमपूर जिले के लेड़ो नामक स्थान में लकड़ी चीरने की मिल, ईख और मिट्टी के बर्तन के कारखाने हैं। ये सब कारखाने योरुपियनों के हैं। सन् १९०२ में कुल मिलाकर ग्यारह मीलें थीं जिनमें १,२०५ आदमी काम करते थे। इन मिलों में विशेपकर चाय के बक्स तैयार किये जाते हैं जो सेमल की लकड़ी में बनाये जाते हैं। यद्यपि इसकी माँग बहुत है परन्तु कलकत्ते से सुन्दर बक्सों के बन कर आ जाने के कारण क्रमशः इसका व्यापार मन्द पड़ गया है। सन् १९०२ में १४९ आदमी मिट्टी के बर्तन बनाने के काम को करते थे।

मछली मारना

कामरूप के जिले में मछली मारने का व्यापार बड़ा चढ़ा बढ़ा है। सन् १९०५ ई० में नदियल तथा नमशूद्र जाति के २१,००० आदमी थे जिनका पेशा मछली मार कर बेचना था। इसके अतिरिक्त कितने आदमी ऐसे हैं जो जाल से मछली पकड़ कर अपनी जीविका निर्वाह करते हैं। कितनी नदियों तथा झीलों में मछली मारने का ठीका सरकार के द्वारा दिया जाता है। ये मछलियाँ बंगाल भी भेजी जाती हैं।

कांसे का काम

कामरूप जिले के बरपेटा तहसील के सरथेबारी गाँव के रहने वाले लोग कांसे का काम अधिक करते हैं। ये लोग धनी महाजनों के यहां नौकरी करते हैं और उनके आदेशानुसार कांसे का बर्तन बनाते हैं। इनकी मजदूरी छः रुपये से लेकर आठ रुपये मासिक से अधिक नहीं होती। इनमें से कुछ आदमी अपर आसाम में चले जाते हैं और वहाँ स्वतन्त्र पेशा कर अधिक रुपया कमाते हैं। इन लोगों के अतिरिक्त खरीलपुर, लखीपुर तथा कचार जिले के गावों के कुछ आदमी भी इस काम को करते हैं। मणिपुर के लोग इस काम में विशेष दक्ष हैं।

हाथी दांत के काम

कामरूप जिले के बरपेटा तहसील में हाथी दांत पर काम करने वाले कारीगर मिलते हैं परन्तु इनकी संख्या बहुत थोड़ी है। ये चूड़ी, बटन, कंघी तथा कलम के होल्डर आदि को बनाते हैं। ये सामान वहीं पर बेचे जाते हैं। एक कारीगर इस काम से १५) तक प्रति मास कमा लेता है परन्तु हाथी दांत के काम की वस्तुओं की मांग अधिक नहीं है वह साल भर तक काम नहीं करता है। ये निर्मित वस्तुयें कारीगरी तथा पालिश में उतनी अच्छी नहीं होती जितनी की दिल्ली की। यदि कारीगरों ने इस कार्य में अधिक उन्नति नहीं की तो सम्भव है कि यह व्यवसाय सर्वदा के लिये नष्ट हो जाय।

लोहे का व्यवसाय

प्रान्त में छोटे बड़े सब मिल कर लगभग २,००० लोहे के कारखाने हैं जिनमें दाव, छुरी, छुरा, कुल्हाड़ी, कुदाली तथा हल जोतने के औजार बनाये जाते हैं। लोहे के हथियार बनाने का सबसे प्रसिद्ध स्थान सिलहट जिले में राजनगर नामक गांव है। इस व्यवसाय की भी दशा आजकल अच्छी नहीं है।

साबुन का व्यवसाय

प्रान्त भर में कुल मिला कर प्रायः तीस साबुन बनाने के कारखाने हैं जिनमें अधिकतर कपड़ा धोने का साबुन बनाया जाता है। ये कारखाने डैरेङ्ग, काम-

एक अबोर स्त्री कम्बल बिन रही है

रूप, नवगांव, शिवसागर, कचार, तथा डिब्रूगढ़ जिलों में हैं। ये प्रायः कस्बों में है तथा वहीं पर सारा सामान को बेचते हैं। बाहरी व्यापारियों की प्रतियोगिता के कारण इस व्यवसाय का टिकना कठिन है।

स्टील लोहे के ट्रन्क बनाना

प्रान्त में लोहे के ट्रन्क बनाने के प्रायः चालीस कारखाने हैं जो सिलहट, करीमगंज मौलवी बाजार, सिलचर, गोहाटी, तेजपुर, डुबरी, नवगाँव, जोरहाट, गोलघाट, शिबसागर तथा डिब्रूगढ़ में हैं। इनके

मालिक तथा इनमें काम करने वाले आदमी प्रायः बाहर के रहने वाले हैं।

बेंत की टोकरी तथा अन्य वस्तुएँ

यह काम प्रायः प्रत्येक जिले में किया जाता है परन्तु इसके प्रधान स्थान सिलहट, कचार और डिब्रूगढ़ हैं। सिलहट तथा गौहाटी जेल में भी यह बनाया जाता है। डिब्रूगढ़ के मारवाड़ी तथा सूरमा की घाटी के लोग इस व्यवसाय को अधिक संख्या

नागा लड़की ईंधन ला रही है

में करते हैं। बेंत की टोकरियां चाय बगानों में पत्तियां रखने के काम में लाई जाती हैं। ये टोकरियां स्थानीय बाजारों में भी प्रचुर मात्रा में बिकती हैं। सिलचर में अनेक दूकानों में बेंत की कुर्सियां आदि भी बनाई जाती हैं। इस कार्य को करने वाली प्रधान कम्पनी "मेसर्स विश्वास एण्ड कम्पनी" है। इस कम्पनी को बहुत ज्यादा आर्डर मिलते हैं। इस व्यवसाय की दशा अच्छी है।

छाता बनाना

छाता बनाने के लिये प्रान्त में गौहाटी, तेजपूर, शिलांग, सिलहट, करीमगंज, सिलचर तथा दूसरे स्थानों में दूकानें हैं। बेंत तथा बांस के छाते के डंडे सिलहट के श्रीमंगल, नीलाम बाजार, समसेर नगर आदि स्थानों से तथा बंगाल के कोमिल्ला जिले से लाया जाता है। छाते बनाने के लिये अन्य आवश्यक चीजें कलकत्ते से मँगाई जाती हैं। छाते की दूकानें व्यापार में मन्दी होने पर भी अच्छी तरह से चलती हैं।

जूते के कारखाने

जूते बनाने के लिये गौहाटी में दो, सिलहट में एक, हबीबगंज में एक और सिलचर में पाँच छोटे छोटे कारखाने हैं। इन कारखानों में बनाया हुआ चमड़ा प्रान्त के बाहर के स्थानों से मँगाया जाता है। यहाँ पर उस चमड़े से बूट तथा अन्य प्रकार के जूते तैयार किये जाते हैं।

बढ़ई के काम के कारखाने

प्रान्त में बढ़ई के काम के अनेक कारखाने हैं। गवर्नमेन्ट के टेक्निकल स्कूलों में पास विद्यार्थी भी इस कार्य को कर रहे हैं।

सोने तथा चाँदी के काम

इस काम के करने वाले आदमी प्रान्त भर में सर्वत्र पाये जाते हैं। पहले तो साधारण तौर से स्थानीय गहनों को बनाते थे जो भद्दे तथा पालिश से रहित होते थे। परन्तु आजकल इस कार्य को अधिक सुन्दरता से करने वाले आदमी बाहर से आ जाने के कारण इस व्यवसाय में भी उन्नति हुई है। शहर के रहने वाली स्त्रियों में प्रायः नवीन ढंग के गहनों का ही व्यवहार होने लग गया है।

कंघी बनाना

कंघी बनाने के लिये सिलहट, करीमगञ्ज, हबीबगञ्ज तथा मौलवी बाजार में प्रायः दस दूकानें हैं। इस काम को करने वाले आदमी ढाका के हैं। व्यवसाय बिलकुल मन्दा है।

खिलौने

सिलहट के आसपास के स्थानों में लाह से

पालिश किये हुये लकड़ी के खिलौने बनते हैं। इस व्यवसाय में सौ से अधिक आदमी काम करते हैं परन्तु इन वस्तुओं को बेचने के लिये उचित सुविधा न मिलने के कारण यह काम मन्दा पड़ रहा है।

कपड़ा सीने की दूकानें

प्रान्त भर में सब मिलाकर लगभग २,००० दूकानें कपड़ा सीने की हैं और प्राइवेट घरों में लगभग ५,००० कपड़ा सीने की मशीनें इस काम के लिये रक्खी गई हैं।

चीनी का व्यवसाय

प्रान्त में हाल ही में कुछ छोटी छोटी चीनी की फैक्टरियां खोली गई हैं। हैबर गाँव में (जिला नवगाँव) गुड़ से चीनी बनाने की एक छोटी सी फैक्टरी है। फैक्टरी में जो चीनी तैयार की जाती है वह भूरी होती है। अभी यह व्यवसाय प्रारम्भिक रूप में ही है।

लकड़ी चीरने के कारखाने

प्रान्त में लकड़ी चीरने की अनेक मिलें हैं। सिलहट जिले में गङ्गा नामक स्थान में "सूरमा भैली सा मिल्स" नामक लकड़ी चीरने की मिलें हैं जिसमें रोज लगभग १२५ आदमी काम करते हैं। ये मिलें अच्छी तरह से काम कर रही हैं।

चावल तथा तेल की मिलें

प्रान्त में सब मिलाकर चावल तथा तेल की इकतीस से भी अधिक मिलें अधिकतर लखीमपुर, शिव, सागर, डैरेङ्ग तथा कामरूप जिलों में हैं। वह व्यापार प्रधानतया मारवाड़ियों के हाथ में है। अब एक सिलचर में तथा दूसरी सिलहट में छोटी तेल की मिलें खोली गई हैं जिनमें बिजली की शक्ति से काम होता है। ये मिलें आसामी लोगों की ही हैं। धनाभाव के कारण इन मिलों में अभी अधिक लाभ नहीं है। इसके अतिरिक्त प्रान्त भर में ३,००० से लेकर ४,००० तक कोल्हू हैं जिनमें तेल पेरने का काम किया जाता है। अभी भी गांवों तथा पहाड़ी जगहों के रहने वाले पुराने ढङ्ग से तेल निकाल लेते हैं।

अब तक जो वर्णन किया गया वह कुटीर शिल्प का है। आसाम में कौन कौन सा व्यवसाय कहाँ और किस प्रकार होता है और उसकी दशा क्या है इसका वर्णन अभी किया गया है। अगले पृष्ठों में इस बात का वर्णन किया जावेगा कि सरकार ने कुटीर शिल्प की उन्नति तथा प्रचार के लिये कौन सा प्रयत्न किया है। सरकार ने इन व्यवसायों की शिक्षा देने के लिये जो स्कूल खोल रक्खे हैं उनका विवरण 'शिक्षा' वाले अध्याय के अन्तर्गत किया गया है। प्राइवेट व्यवसायिक स्कूलों का वर्णन भी वहाँ ही मिलेगा।

हाथ के करघे की बुनाई का प्रचार

हाथ की बुनाई के प्रचार के लिये सरकार ने बड़ा प्रयत्न किया है। सारे प्रान्त में इस प्रचार के निमित्त अनेक घूमने की पार्टियां जिन्हें डिमान्स्टेशन पार्टी कहते हैं बनी हुई हैं जो गांवों में जा जा करके लोगों को सुन्दर रीति से बुनने का तरीका सिखाती हैं और लोगों को इस विषय की शिक्षा भी देती हैं। ये लोग नये ढङ्ग से भी जनता को काम करना बतलाते हैं। ऐसी पार्टियां लोअर तथा पर आसाम दोनों में हैं। सिलहट में भी एक पार्टी ऐसी ही है जो गांवों में ऐसा प्रचार करती है।

रेशम के कीड़े पालने का प्रचार

सरकार ने रेशम के कीड़े पालने के लिये भी बड़ा उद्योग किया है। सरकार की ओर से तीताबर तथा शिलाङ्ग में कीड़े पालने के लिये बड़ा प्रबन्ध है और ये इस कार्य के लिये प्रधान स्थान हैं। तीताबर में ७० बीघा जमीन इस काम के लिये रक्खी गई है इस विस्तृत जमीन में वे पौधे लगाये जाते हैं जिनको रेशम के कीड़े खाते हैं। इन कीड़ों से जो रेशम तयार होता है वह बेचा जाता है। रेशम के कीड़ों को पालने का काम मार्च के अंत से शुरू होता है और अक्टूबर के अन्तिम सप्ताह में प्रायः समाप्त हो जाता है। बुनाई के प्रचार की भाँति ही कीड़े पालने के प्रचार के लिये भी अनेक पार्टियां बनी हुई हैं जो गांवों में जाकर इसका प्रचार करती हैं[१]।

१—इस प्रचार के विषय में अधिक विवरण के लिये देखिये रिपोर्ट आफ दि डिपार्टमेन्ट आफ इन्डस्ट्रीज़, आसाम फार दि इयर १९३४-३५ पृष्ठ १०-१७।

दि गवर्नमेन्ट इम्पिरियम एण्ड जनरल स्टोर्स गौहाटी

यह गौहाटी में एक सरकारी संस्था है। इसका काम सब प्रकार के सामान का रखना है। हाथ के करघे से काम करने वालों को यहाँ से बुनने के सब औजार मिल सकते हैं। शिल्प कुटीर के द्वारा तैयार की गई वस्तुओं को नुमाइशों में प्रदर्शित करने के लिये यह इम्पीरियम एजेन्सी का काम करता है। यह उन वस्तुओं को बिकवाने का भी प्रबन्ध करता है। यह अन्य प्रान्त वालों को आसामी शिल्प का नमूना भी भेजता है। यह भाड़े पर करघा तथा अन्य आवश्यक वस्तुयें भी दिया करता है। इस प्रकार से इस इम्पोरियम के द्वारा कुटीर शिल्प को बहुत बड़ा प्रोत्साहन मिल रहा है। इस शिल्प के प्रचार में यह बहुत बड़ी सहायता कर रहा है।

आर्थिक सहायता

सरकार समय समय पर व्यवसायिक शिक्षालयों को सहायता दिया करती है और जनता को रुपये उधार दिये जाते हैं जिससे वे कुटीर शिल्प को जीवित रख सकें। सन् १९३४-३५ में रेशम के कीड़ों को पालने के ढङ्ग में सुधार करने के लिये सरकार ने १४६) उधार दिया। इसके अतिरिक्त अनेक व्यवसायिक शिक्षालयों को भी सरकारी सहायता २,००० रुपये।की मिली। सरकार ने हाथ के करघे से बुनाई के विशेष प्रचार तथा उन्नति के लिये एक पंच वर्षीय योजना तैयार की है। इस योजना के प्रथम वर्ष के लिये सरकार ने १७,०००) देना मंजूर किया है। इसी प्रकार से रेशम के कीड़ों को पालने के व्यवसाय के लिये भी रोगमुक्त बीजों की पैदावार के प्रचार के लिये २१,५५०) रु० देना मंजूर किया है। इस प्रकार सरकार कुटीर शिल्प को बड़ा प्रोत्साहन दे रही है।

व्यापार करने वाली जातियां

प्रान्त में जो जातियाँ व्यापार करती हैं ये दोनों घाटियों में एक ही नहीं हैं प्रत्युत भिन्न भिन्न हैं। आसाम घाटी में तेलहन को प्रान्त में बाहरी भागों में भेजने का व्यापार उन व्यापारियों के हाथ में है जो कामरूप जिले के रहने वाले हैं। परन्तु प्रान्त का अवशेष निर्यात् का व्यापार तथा आयात का समस्त व्यापार मारवाड़ियों के हाथ में है। ये अपनी व्यापारिक बुद्धि के कारण समस्त आसाम घाटी में व्यापार के लिये छाये हुये हैं। आसाम घाटी का समस्त व्यापार इन्हीं मारवाड़ियों के हाथ में है। इनकी दूकानें केवल बड़े शहरों में ही नहीं परन्तु छोटे से छोटे चाय बगान, पहाड़ी प्रदेशों को आने जाने वाले रास्तों तथा छोटी छोटी बस्तियों के पास भी पाई जाती हैं।

परन्तु सूरमा की घाटी में कुछ दूसरी ही दशा है। यहां पर आसाम घाटी की तुलना में कम मारवाड़ी हैं परन्तु उनकी सत्ता का लोप नहीं है। यहाँ के स्थानीय लोग भी व्यापार करते हैं और ढाका के व्यापारियों ने अपना अड्डा यहाँ जमा लिया है। पहाड़ी प्रदेशों में पहाड़ी जातियाँ आपस में ही व्यापार करती हैं परन्तु आवश्यकता पड़ने पर मैदान में आकर भी अपने पहाड़ी माल बेचती हैं। आसाम का अधिकांश व्यापार मारवाड़ियों के हाथों में है और शेष व्यापार ढाका के बनियों के कब्जे में है परन्तु आसामियों का हाथ प्रान्त के व्यापार में बहुत ही कम है।

आसाम का व्यापार

आसाम का व्यापार प्रधानतया दो दिशाओं में होता है पहिला बंगाल प्रान्त के साथ तथा दूसरा इस प्रान्त की सीमान्त जातियों के साथ। बंगाल तथा आसाम के बीच में जो व्यापार होता है वह प्रायः नदियों के द्वारा ही होता है। रेलों के बनने के पहिले तो नदियां ही व्यापार की एक मात्र साधन थीं परन्तु रेलों के प्रान्त के हृदय तक में बन जाने के कारण नदी द्वारा व्यापार कुछ कम हो गया है। फिर भी ब्रह्मपुत्र तथा सूरमा नदी में नावें तथा स्टीमर माल से लदे दिखाई देते हैं। नदी में व्यापार नाव तथा स्टीमर द्वारा किया जाता है। ब्रह्मपुत्र नदी में मेल स्टीमर प्रतिदिन डिब्रूगढ़ तथा ग्वालन्दों के बीच में चला करते हैं तथा सूरमा नदी में ग्वालन्दा तथा सिलचर के बीच में चलते हैं।

आसाम के बाहरी व्यापार का अधिक अंश मणिपूर स्टेट तथा टिपेरा से होता है। प्रान्त का प्रधान तथा बहुमूल्य आयात रबर, लकड़ी, बांस तथा धान है और प्रधान निर्यात रुई, सूत, रेशम, सुपारी तथा अन्य छोटी छोटी वस्तुएँ हैं।

चाय के व्यवसाय का इतिहास

चाय के पौधे का पता लगाना

जिस प्रकार से प्राचीन भारतीयों में सोमरस पीने की प्रथा थी उसी प्रकार आजकल चाय पीने की है। यदि चाय को हम आधुनिक भारतीयों का सोमरस कहें तो इसमें कुछ अत्युक्ति न होगी। आज चाय का प्रचार कहाँ नहीं है। बड़े बड़े विशाल नगरों के फैशनेबुल रिस्टोरां से लेकर साधारण कस्बे की एक छोटी दूकान तक चाय की स्थिति पाई जाती है। यदि आजकल के अप-टू-डेट जैन्टिलमैन इसे फैशन के लिये पीते हैं तो साधारण कुली अपनी बुभुक्षा की शान्ति के लिये चाय का एक प्याला अपनी हलक के नीचे अवश्य ही उतार लेता है। इसे अमीर तथा गरीब बड़े ही चाव से पीते हैं। आसाम किसी अन्य वस्तु के लिये भले ही प्रसिद्ध न हो परन्तु वहाँ पर चाय पैदा होती है इस बात को एक साधारण भूगोल पढ़ने वाला बच्चा भी जानता है। वह इसी लिये आसाम की प्रसिद्धि जानता है। इस चाय (जो कि आजकल का सोम रस है) का इतिहास भी कुछ कम मनोरजंक नहीं है। अतः उसे देना यहाँ अनुचित न होगा।

चाय के पौधे का सर्व प्रथय पता लगाने वाले रावर्ट ब्रूस साहब हैं। इन्होंने ही सब से पहिले इस बात का पता लगाया कि चाय के पौधे ब्रह्मपुत्र की घाटी में बहुतायत से पैदा होते हैं। ये महाशय राजा पुरन्दर सिंह के एजेन्ट थे। सन् १८२३ ई० में किसी व्यापारिक कार्य से गढ़गाँव (Garhgaon) गये थे। वहाँ पर एक व्यक्ति ने इन्हें इस पौधे के होने की सूचना दी तथा इन पौधों के नमूने भी ला देने की प्रतिज्ञा की। अगले वर्ष कुछ चाय के पौधे के बीज सी० ए० ब्रूस (जो कि रावर्ट ब्रूस के भाई थे और बर्मीज लड़ाई को दबाने के लिये आसाम गये थे) को दी गई। इन्होंने इसे डेविड स्काट को दिया। इन महाशय ने इन पौधों को कलकत्ता बोटेनिकल गार्डेन्स के सुपरिन्टेन्डेन्ट के पास परीक्षा के लिये भेज दिया। इन्होंने परीक्षा कर यह घोषणा की कि ये पौधे उसी वंश के हैं जिस वंश के चीन के चाय के पौधे।

इसके पश्चात् १८३२ ई० तक इस कार्य में कुछ विशेष उन्नति नहीं हुई। सन् १८ २ में केप्टन जेकिन्स की नियुक्ति इस कार्य के लिये हुई कि वे इस बात का पता लगावें कि आसाम में किस वस्तु का व्यापार चल सकता है। सी० ए० ब्रूस ने चाय के व्यापार के लिये जोर दिया। फिर क्या था। सात आदमियों की एक चाय-कमेटी बनाई गई जिसके प्रधान कलकत्ते के बोटेनिकल गार्डेन्स के सुपरिन्डेन्डेन्ट डा० वेलिश (Wallich) साहब बनाये गये और मन्त्री मिस्टर गोर्डन।

चाय के पौदे का सर्व प्रथम पता किसने लगाया इस पर कुछ लोगों में मतभेद है। कुछ लोगों का कहना है कि इसका पता लेफ्टिनेन्ट चार्लटन (Charlton) लगाया परन्तु सच पूछा जाय तो इसका श्रेय ब्रूस-भ्राताओं को ही है।

चाय बनाने का प्रथम प्रयास

पौधे के प्रथम पता लगाने के उपलक्ष में सी० ए० ब्रूस गवर्नमेन्ट टी फारेस्ट्स के सुपरिन्टेन्डेन्ट नियुक्त किये गये। मिस्टर गोर्डन चीन देश को गये और
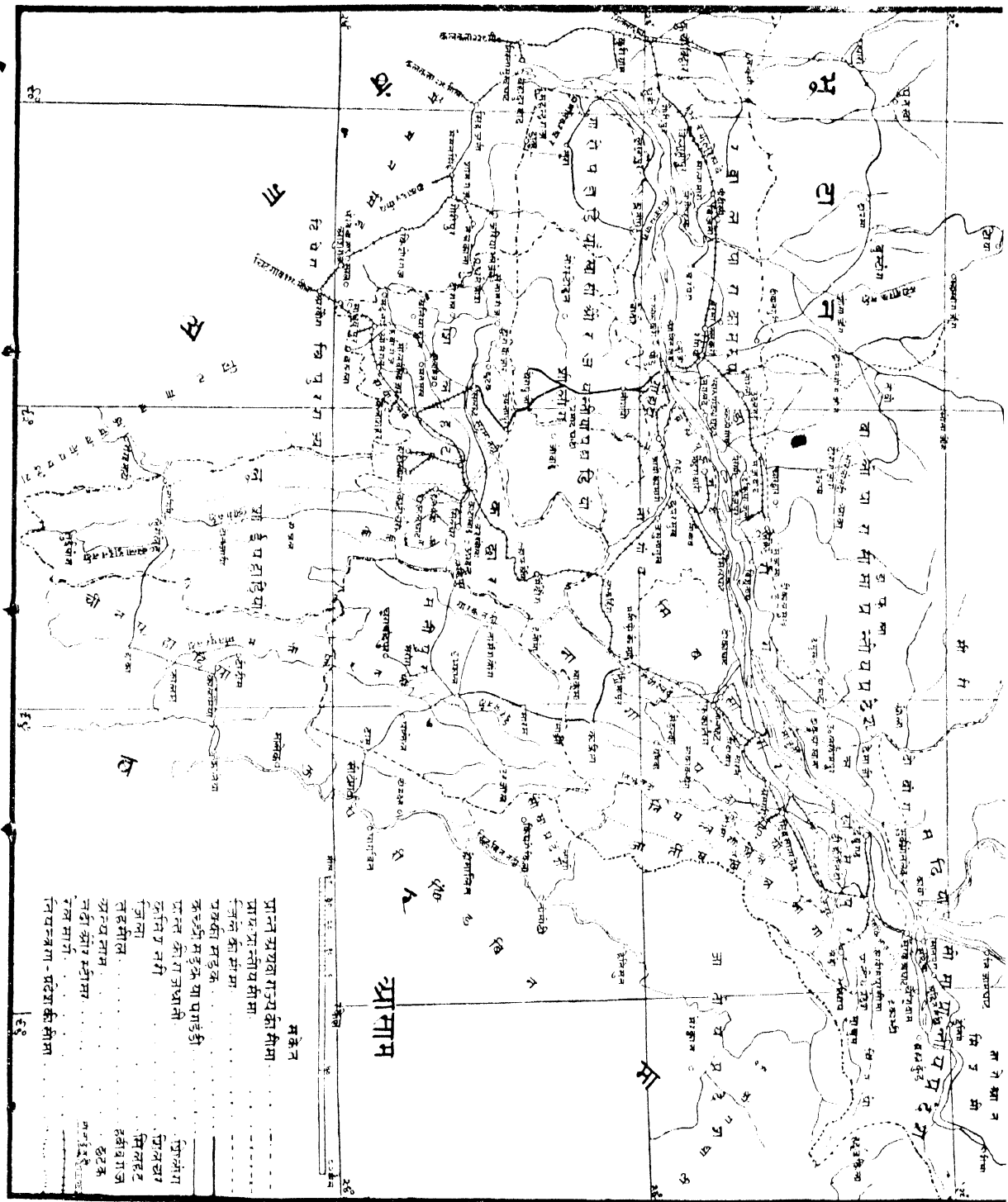
बहुत से चाय उत्पन्न करने की कला में निपुण कारीगरों और वहाँ के चाय के बीजों को चीन से यहाँ लाये। चीन से लाये गये इन कारीगरों की सहायता से आसाम में चाय बोई गई और तैयार होने पर सन् १८३७ ई० में कुछ चाय विलायत भी भेजी गई। वहाँ के लोगों ने इस देशी आसामी चाय को बहुत पसन्द किया।

चाय के व्यवसाय का इतिहास

पहिले पहल स्वयं सरकार ने चाय की खेती करना उचित समझा। अतएव सर्व प्रथम चाय की खेती के लिये ब्रह्मपुत्र तथा कुन्दिल इन दोनों नदियों का संगम ही उचित स्थान समझा गया परन्तु यहां पर जमीन के अच्छी न होने से पैदावार अच्छी न रही। अतः सरकार ने सन् १८४० ई० में इसे आसाम कम्पनी के हाथ बेच दिया। पहिले तो कम्पनी को इस कार्य में घाटा सहना पड़ा परन्तु सन् १८५९ ई० से इस कार्य में लाभ होने लगा। सन् १८५९ में इस कम्पनी ने ४,००० एकड़ जमीन में इस पौधे की खेती की तथा ७ ०,००० पौंड चाय पैदा हुई। सन् १८५५ ई० में और भी अनेक चाय कम्पनियां कचार तथा सिलहट जिले में खुल गईं।

आसाम कम्पनी के अधिक लाभ को देखकर अनेक लोगों ने धड़ाधड़ चाय की कम्पनी खोलना प्रारम्भ कर दिया। इस प्रकार से अनेकों कम्पनियों के हो जाने से इसका काम कुछ मन्द सा पड़ गया। यह हालत सन १८६९ ई० तक बनी रही परन्तु लोगों को फिर उत्साह मिला। सन् १८७२ ई० में २७,००० एकड़ जमीन में ब्रह्मपुत्र की घाटी में चाय की खेती की गई, २३,००० एकड़ कचार तथा १००० एकड़ जमीन में सिलहट में खेती हुई। सन् १८७८ ई० में २८½ मिलियन[1] पाउण्ड[2], सन् १८८५ में ५३½ मिलियन पाउण्ड और सन् १९०१ में ब्रह्मपुत्र की घाटी में ७२ मिलियन पाउन्ड चाय पैदा हुई तथा सूरमा की घाटी में ६२ मिलियन पाउण्ड चाय हुई। इस साल ३३८,१८६ एकड़[3] जमीन में चाय की खेती हुई। इस कार्य में कई करोड़ की पूँजी लगी है।

१—मिलियन १०,००,००० (दस लाख) का होता है।
२—एक पाउण्ड आध सेर का होता है।
३—एक एकड़ लगभग ३ बीघे का होता है।

सन् १८९६ में विलायत में जो चाय भेजी जाती थी उसका ६६ प्रतिशत चीन देश से आता था, ४ प्रतिशत भारत से। परन्तु १९०३ ई० में ५९ प्रतिशत आसाम से चाय जाने लगी, ३१ प्रतिशत लंका से और केवल १० प्रतिशत चीन से। इससे पता चलता है कि आसाम की चाय का प्रचार कितना अधिक बढ़ गया है और इसकी खपत वहाँ कितनी अधिक है।

पहिले चाय हाथों से ही तैयार की जाती थी। इससे समय भी अधिक लगता था खर्च भी अधिक होता था और अच्छी भी नहीं होने पाता था परन्तु आजकल चाय के तैयार करने का सारा कार्य मशीन के द्वारा किया जाता है जिससे रास्ते में अच्छी चाय तैयार मिल जाती है।

चाय के दाम में कमी

पहिले समय में आसाम की चाय की कीमत बहुत अधिक थी। सन् १८३९ में एक पाउण्ड अथवा आध सेर चाय की कीमत आठ शिलिङ्ग अथवा ६ रुपये के लगभग थी परन्तु उस समय से हमेशा चाय की कीमत गिरती ही रही है।

१८७८ में	१ पौण्ड चाय की कीमत			१ शिलिङ्ग ५ पेन्स
१८८२	१	...	...	१ शिलिङ्ग
१८८६	१	...	...	९½ पेन्स
१९०३	१	...	...	८½ पेन्स
				६½ पेन्स

चाय के दाम में इस प्रकार की कमी (सूरमा की घाटी चाय) का कारण मशीन के द्वारा इसका तैयार करना जिसमें खर्चा बहुत ही कम पड़ता है। इस दाम की कमी के कारण विलायत में चाय की बड़ी खपत होने लगी। विलायत में चाय की खपत के कुछ आँकड़े नीचे दिये जाते हैं।

सन् १८६६	१ मिलियन पौंड
१९०२	२३½ मिलियन पौंड

चाय की खेती के लिये जमीन मिलने के नियम

चाय की खेती को प्रोत्साहन देने के लिये सरकार ने व्यवसायियों के साथ बहुत ही सुभीते की शर्तें मंजूर कीं। आज से सौ बरस पहिले इस शर्त के पहिले नियम बने। ४५ वर्ष के लिये १०० एकड़ से लेकर

१०,००० एकड़ तक को जमीन पट्टे पर देने का सरकार ने निश्चय किया। साथ ही साथ जमीन के ऊपर यदि नरकट लगा हो अथवा जंगल खड़ा हो तो ५ वर्ष से लेकर २० वर्ष तक की जमीन का लगान माफ था। उसके अनन्तर जमीन के ३/४ भाग पर कुछ लगान देना पड़ता था जो कि १८) प्रति एकड़ तक हो सकता था। इसी तरह के कुछ और नियम भी इस समय बने। सन् १८५४ ई० में इन नियमों में सन्शोधन किया गया। पट्टे का समय ९९ वर्ष तक बढ़ा दिया गया तथा लगान की दर घटा कर छः आना प्रति एकड़ कर दी गई। सात वर्ष के बाद सन् १८६१ ई० में इस लगान नियम में संशोधन किया गया जिसके अनुसार २॥) से लेकर ५) तक प्रति एकड़ जमीन बेची जाने लगी। २० वर्ष के पुराने पट्टों को अधिकार था कि वे नये नियम में चले आवें। एक साल के बाद जमीन २॥) प्रति एकड़ पर नीलाम की जाने लगी जो कि १८७४ ई० में बढ़ा कर ८) कर दिया गया। दो वर्ष के बाद १८७६ ई० में फिर भी पुराने नियम को हटाकर नये नियम चलाये गये। अब पट्टा ३० वर्ष के लिये दिया जाने लगा और जमीन का दाम घटाकर प्रति एकड़ १) कर दिया गया। सन् १९०६ ई० तक यही नियम रहे। परन्तु जहां पर बसने की जमीन कम है वहां पर इन नियमों के अनुसार जमीन नहीं मिलता। ऐसी जगहों में साधारण किसानों को जिस नियम के अनुसार जमीन मिलती है उसी नियम के अनुसार चाय बगान वालों को भी जमीन मिलती है। १९०२ ई० में ६,२०,५५८ एकड़ विशेष नियम के अनुसार तथा २,३७,६९९ एकड़ जमीन साधारण नियम के अनुसार चाय वालों को मिली।

मज़दूरी के नियम तथा कुली

आसाम में जमीन की अधिकता के कारण कोई भी आदमी अपना स्वतन्त्र खेती का पेशा छोड़कर चाय बगाने के कुलियों का परतन्त्र पेशा स्वीकर करना नहीं चाहता। अतः आसाम में कुलियों की सर्वदा से कमी रही है। इस बात को दृष्टि में रख कर आसाम कम्पनी ने सन् १८५३ ई० से ही आसाम के चाय बगान में काम करने के लिये बंगाल से कुलियों को भेजना प्रारम्भ किया था। इस कार्य को सुचारु रूप से चलाने के लिये सरकार को कानून बनाने की आवश्यकता पड़ी। सन् १८६३ ई० के बाद से बहुत से कानून इस कुली प्रथा के सम्बन्ध में बनते चले आये हैं। इन कानूनों से चाय बगान के कुलियों तथा स्वामियों - दोनों का लाभ हुआ है। सन् १९०८ में एक्ट ६ मजदूरी कानून (Labour Law) का लागू था। चाय बगान में काम करने वाले कुलियों में छोटा नागपूर के निवासी अधिक कार्य कुशल सिद्ध होते हैं। अब तो बिहार तथा यू० पी० के पूर्वी जिलों (बलिया, गाजीपूर, आजमगढ़, जौनपुर, गोरखपूर) के हजारों कुली इन बगानों में जाकर काम करते हैं। सन् १९०१ ई० में इन बगानों में काम करने वाले कुलियों की संख्या ६,००,००० (छः लाख) थी। तब से इनकी संख्या दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ती रही है। आजकल इनकी संख्या कई लाख तक पहुँची हुई है।

इण्डियन टी एसोसियेशन

चाय के व्यापार को प्रोत्साहन देने तथा इस विषय में खोज आदि करने के लिये कलकत्ते में एक कम्पनी स्थापित की गई है जिसे 'इण्डियन टी एसोसियेशन' कहते हैं। यह बहुत बड़ी कम्पनी है और चाय के प्रचार के लिये सदा प्रयत्न करती है। यह कम्पनी चाय की पैदावार आदि का विस्तृत विवरण अपने पास रखती है।

चाय के खेतों का क्षेत्रफल चायबगान तथा कुलियों की संख्या

सन् १९३४ ई० के अन्त में चाय बगानों की संख्या १,०४६ थी परन्तु गत वर्ष इनकी संख्या केवल ९९९ थी। इन में से केवल ३३६ बगीचे ही भारतीयों के हाथ में हैं। शेष बगीचों के मालिक अँग्रेज लोग हैं। सन् १९३४ ई० में गोआलपाड़ा और सिलहट जिलों में एक तथा लखीमपुर जिले में तीन नये बगीचे खोले गये। डिपुटी कमिश्नर की रिपोर्ट से पता चलता है कि शिवसागर जिले में चालीस नये बगीचे खोले गये।

जिन स्थानों में चाय की खेती की गई। उनका इस वर्ष का क्षेत्रफल ४,३१,७८२ एकड़ था और गत

वर्ष का क्षेत्रफल ४,३०,४१७ एकड़ था। प्रत्येक जिले में चाय के खेत अधिक होते गये परन्तु इसके नवगांव जिले में चाय के खेत कुछ कम हो गये। जितने चाय के खेत में से चाय की पत्तियां चुनी गईं उसका क्षेत्रफल इस वर्ष ४,०८,८६० एकड़ था और गत वर्ष ४,०६,९६३ एकड़ था अर्थात् जितने स्थान में चाय की खेती की गई थी उसमें ९४·७ प्रतिशत स्थान में से चाय की पत्तियां चुनी गईं। यह प्रतिशत पिछले साल ९४·४ था। भारतियों के हाथ में केवल ५३,४९२ एकड़ चाय की खेती थी।

चाय की खेती से सम्बन्ध रखने वाले कुल खेतों का पूर्ण क्षेत्र फल इस वर्ष १६९१,०५६ एकड़ था और गत वर्ष १,६५,६०८२ एकड़ था। इनमें से केवल २६ प्रतिशत एकड़ में वास्तव में चाय की खेती हुई। भारतीय चाय के मालिकों के पास केवल २,३७,८०६ एकड़ जमीन थी।[1]

कुलियों की संख्या

इस साल चाय बगान में काम करने वाले कुलियों की दैनिक औसत संख्या ५,४०,४१३ थी और गत साल यह संख्या ५,१०१६७ थी। इस साल स्थायी कुलियों की संख्या ४७९२१० थी। स्थायी अन्य प्रान्त के कुलियों की संख्या २८०२३ थी और स्थायी अन्य प्रान्त के कुलियों की संख्या ३२१८० थी। गत साल यह संख्या क्रम से इस प्रकार थी ४,६००३४ २६२१६ और ३०९१७। चाय के खेतों के दिन पर दिन बढ़ने के कारण कुलियों की भी संख्या बढ़ रही है। इस साल प्रत्येक कुली के ७६ एकड़ चाय के बगीचों में काम हुआ जब कि १९३३ '७८ एकड़ बगीचों में काम हुआ था और पिछले सालों की अपेक्षा कुलियों को मजदूरी अधिक मिली क्योंकि विगत साल में चाय की कीमत क्रमशः बढ़ती गई।

कितनी चाय पैदा हुई

इस वर्ष प्रान्त भर में काली चाय २३२३१६४२६ पौंड तथा हरी चाय ५१८,९९२ पौंड पैदा हुई। जब कि गत वर्ष में यह पैदावार क्रमशः २१८,४५६१४७ पौंड तथा ८८४९७९ पौंड थी। अर्थात् सब मिला कर इस साल १३,४९४,२९२ पौंड चाय अधिक पैदा हुई। चाय के पैदावार में यह बृद्धि कामरूप को छोड़कर प्रत्येक जिले में हुई तथा इस अधिकता का कारण अनुकूल मौसिम का होना है। हरी चाय सिलहट के कुछ बगीचों में तथा कचार के तीन बगीचों में तैयार की गई थी। इस वर्ष हरी चाय की पैदावार ८,८४,९७९ पौंड से घट कर ५१८९९२ पौंड हो गई अर्थात् ३६५९८७ पौंड की कमी हो गई[1]।

चाय का दाम

कलकत्ते के 'इण्डियन टी एसोसियेशन' के सेक्रेटरी ने चाय का वर्तमान भाव लंडन और कलकत्ते में जो बतलाया है वह इस प्रकार है। लंडन में १९३४ में चाय की कीमत प्रति पौंड १ शिलिङ्ग थी तथा १९३५ में यह कीमत सवा शिलिङ्ग के लगभग थी। सन् १९३४ में कलकत्ते में आध सेर चाय की कीमत आठ आना चार पाई थी और सन् १९३५ में सात आना आठ पाई थी। इस प्रकार चाय की कीमत घटती जा रही है।

चाय की खेती

चाय की खेती पहाड़ी ढलुवे स्थान पर हुआ करती है। चाय के पौधे को अधिक पानी की आवश्यकता अवश्य होती है परन्तु वह पानी उसकी जड़ में जमना नहीं चाहिये। चाय का जंगली पौधा दस से तीस फीट तक ऊँचा होता है और इसके नीचे हिस्से का विस्तार पन्द्रह से चौबीस इंच तक होता है। चाय के खेतों में यह पौधा काट छांट कर लगभग तीस इञ्च ऊँचा रक्खा जाता है। चाय की पत्तियों को बहुधा स्त्रियां और छोटे छोटे बालक चुनते हैं। ये लोग अपनी पीठ पर टोकरी लिये रहते हैं जिसमें पत्तियां रखते हैं। प्रत्येक स्त्री से आठ सेर और बालक से चार सेर पत्ती चुनने की आशा की जाती है।

---

१ यहां पर जो आंकड़े दिये गये हैं वे सब 'रिपोर्ट ऑन टी कल्चर इन आसाम फार दि इयर १९३४" से लिये गये हैं। इस साल का अर्थ सन् १९३४ ई० समझना चाहिये।

१—रिपोर्ट ऑन टी कल्चर इन आसाम फार दी इयर १९३४ पृ० १—२।

कुछ लोग इससे भी अधिक कार्य करते हैं। जब नई युवतियों तथा बालकों का झुण्ड खेतों में चाय चुनने लगता है तब उस समय का दृश्य बड़ा ही सुन्दर होता है। जिस जिले में चले जाइये उसी जिले में हरे हरे चाय के खेत यात्री के मन को मोह लेते हैं। जहाँ देखिये वहीं प्रकृति हरी भरी दिखाई पड़ती है। सचमुच ही यह मनोरम दृश्य कभी भुलाया नहीं जा सकता।

चाय तैयार करने का ढंग

चाय की केवल कोमल पत्तियां ही तोड़ी जाती हैं तोड़ने के बाद चाय की पत्तियां चटाई के ऊपर रात्रि के समय बिखेर दी जाती हैं। यदि हवा के ठंढक के कारण रात को वे सूख नहीं पातीं तो प्रातःकाल धूप में भी सुखाने के लिये डाल दी जाती हैं। इसके बाद पत्तियां दबा कर गोल कर दी जाती हैं। यह काम बहुत दिनों तक हाथ के ही द्वारा होता था परन्तु आजकल किन्मण्ड और जैक्सन साहब के द्वारा आविष्कृत मशीन के द्वारा होता है। मशीन से दबाने पर उनमें से एक रस निकलता है जिसके सूख जाने पर पत्तियां काली भूरी हो जाती हैं और उनमें से एक प्रकार की उग्र गन्ध आने लगती है। पश्चात् इन पत्तियों को कड़ाहियों में रख कर आग में सुखाते हैं। इसमें बड़ी सावधानी रखनी पड़ती है। ऐसा न हो कि पत्तियां जल जायँ। इसके बाद पत्तियां और उसका चूर्ण अलग कर दिया जाता है और दोनों पैकटों में बन्द कर दिये जाते हैं जिससे वे बाहर भेजे जा सकें। यह बनाने का प्रकार काली चाय का है जो आसाम में अधिकता से पैदा होती है। हरी चाय का प्रकार इससे भिन्न है।

चाय के व्यवसाय से आसाम को लाभ

सच पूछा जाय तो चाय के व्यवसाय से आसाम प्रान्त को कुछ विशेष लाभ नहीं है। पहिले जो आंकड़े दिये गये हैं उन से स्पष्ट प्रतीत होता है कि आसाम में जितने चाय बगान हैं उन में से केवल तिहाई ही भारतीयों के अधिकार में हैं और जमीन भी उनके हाथ में थोड़ी ही है। चाय के व्यापार का बहुत अधिक लाभ उन विदेशी कम्पनियों को मिल रहा है जिन्होंने लगभग सौ वर्ष से प्रान्त में अपना अड्डा जमा रक्खा है। चाय बगानों में जो कुली काम करते हैं उनमें से अधिकांश उस प्रान्त के बाहर के रहने वाले हैं। भारतीय चाय के मालिकों में बहुत ही कम आसामी हैं। इस प्रकार से पूँजीपतियों तथा कुलियों में आसामियों की संख्या बहुत ही कम है। उनकी जमीन की पैदावार से दूसरे देश तथा दूसरे प्रान्त के आदमी लाभ उठा रहे हैं। हां, चाय के कारण प्रान्त में कुछ सड़कें और रेलें अवश्य खुल गई हैं। पर चाय के कारण आसामी लोगों की आर्थिक स्थिति में विशेष उन्नति नहीं हुई है।

आसाम की पार्वत्य तथा सीमान्त जातियाँ

आसाम के उत्तर में विशाल हिमालय पहाड़ इसके मध्य में गारो, खसिया, जयन्तिया तथा नागा की पहाड़ियाँ और दक्षिण में लुशाई पहाड़ियाँ हैं। इन पहाड़ों में अनेक प्रकार की पहाड़ी जातियाँ रहती हैं जो अनार्य हैं और जिनके घरों तक आधुनिक सभ्यता का प्रकाश अभी तक नहीं पहुँचा है। ऐसी जातियों में खसिया तथा नागा आदि का नाम प्रसिद्ध है। दूसरी जातियां वह हैं जो आसाम की सीमा पर रहती हैं और यदि उन्हें सीमान्त जातियाँ (Frontier Tribes) कहें तो अधिक उपयुक्त होगा। ये जातियाँ दो भागों में विभक्त की जा सकती हैं। पहिली आसाम तथा बर्मा की सीमा की बीच में रहने वाली तथा भूसटी आसाम और तिब्बत की सीमा में निवास करने वाली हैं। मिशमी, सिङ्गफो, खामटी आदि जातियाँ पहिली श्रेणी में आती हैं तथा दूसरी में अका, दफला, मिरी और अबोर आदि।

ये पर्वतीय तथा सीमान्त जातियाँ स्वतंत्र हैं। पहिले ये अंग्रेजी सीमा में आकर बड़ा उत्पात मचाया करती थीं परन्तु हमारी सरकार बहादुर ने इन्हें साम, दाम, दण्ड और भेद की नीति से अपने वश में कर लिया है तथा इन्हें अपना मित्र बना लिया है। अँग्रेजी सरकार इनके भीतरी प्रबन्ध में दखल नहीं देती। इन जातियों में इनका एक सरदार हुआ करता है जो शासन किया करता है। इन जातियों में प्रत्येक की भाषा भिन्न है तथा रीति रिवाजों में भी बहुत कुछ अन्तर है। इन्हीं भिन्न भिन्न जातियों का संक्षिप्त विवरण अगले पृष्ठों में दिया जायेगा।

इन सब पर्वतीय तथा सीमान्त जातियों की संख्या मिलकर बारह हैं तथा इनके नाम ये हैं :—

१—गारो, २—खसिया, ३—मिकीर, ४—नागा, ५—सिङ्गफो, ६—खामटी, ७—मिशमी, ८—अबोर, ९—मिरी, १०—दफला, ११—अका, १२—भुटिया।

इन जातियों में से कुछ तो पर्वतीय जातियाँ हैं और कुछ सीमान्त। यहाँ पर सर्व प्रथम दक्षिण की पर्वतीय जातियों का, तत्पश्चात् पूर्व, उत्तर-पूर्व की सीमान्त जातियों का तथा अन्त में आसाम के उत्तर में निवास करने वाली सीमान्त जातियों का वर्णन किया जावेगा। इस क्रम के अनुसार पहिले गारो की पहाड़ियों पर रहने वाली जातियों का संक्षिप्त विवरण यहां प्रस्तुत किया जाता है।

१—गारो जाति

गारो की पहाड़ियाँ गोआलपाड़ा जिले के दक्षिण में स्थित हैं। इन्हीं पहाड़ियों में गारो नामक जाति रहती है। आजकल इसकी संख्या एक लाख से भी अधिक है। सन् १८७२ ई० तक इसका केवल थोड़ा सा ही हिस्सा अंग्रेजी सरकार के अधिकार में था[1]। इसके बाद सरकार ने एक चढ़ाई की और सारे देश को अपने अधीन कर लिया। इस जाति का मुखिया एक सरदार हुआ करता है जो इस जाति के समस्त राजनैतिक मामलों पर विचार करता है और फैसला किया करता है। यह जाति जंगली तथा अशिक्षित है। इसकी भाषा बड़ी सुन्दर है। इनके शरीर का गठन सुडौल है। ये बड़े कार्य निपुण हैं और धान और रुई की खेती करते हैं। गारो स्त्री, पुरुष गठरी को पीठ पर रख कर, उसे रस्सी में बांध सिर से टेक कर नीचे मैदान में सामान बेचने के लिये जाते हैं। इनका

१—श्री मती एस० आर० वार्ड—ए ग्लिम्प्स आव आसाम पृ० १७२।

हथियार भाला और तलवार है। ये लड़ाई में ढाल का भी प्रयोग करते हैं। ये शिकारी नहीं हैं परन्तु कभी कभी हाथियों को फंसाया करते हैं। ये खूब धूम्रपान करते हैं और चावल की शराब भी पीते हैं। इनके घर बांस के बने होते हैं। सबसे आश्चर्य की बात यह है कि इन्हें दूध पीने से बड़ी घृणा है। ये बाल नहीं कटाते और सिर पर चूड़ा बांधा करते हैं। माता तथा पिता के द्वारा ही इनका विवाह सम्बन्ध तय किया जाता है। इस अवसर पर पुरोहित मन्त्र पढ़ता है और एक मुर्गा और मुर्गी का बलिदान किया जाता है। इनके नाचने का ढंग विचित्र है। दस, बीस आदमी मिलकर एक दूसरे को कमर पकड़ कर नाचते हैं। विवाहित पुरुष माता पिता को बिलकुल छोड़ देता है। दामाद ससुर के मर जाने पर अपनी सास से विवाह कर लेता है और इस प्रकार अपने ससुर के धन का उत्तराधिकारी बन जाता है। गारो स्त्री सारे परिवार की स्वामिनी होती है। उसे पूर्ण स्वतंत्रता होती है। गारो जाति मूर्तिपूजक नहीं है परन्तु ये ईश्वर में विश्वास रखते हैं। ये भूत प्रेत की सत्ता में भी विश्वास रखते हैं और अपने मृतक को तीन दिन घर में रखकर जलाया करते हैं।

२—खसिया

खसिया जाति खसिया की पहाड़ियों में रहती है जो गारो की पहाड़ियों से लेकर पूर्व मणिपूर तक फैली हुई हैं। इन पहाड़ियों के उत्तर में कामरूप तथा नवगांव का जिला, पश्चिम में गारो की पहाड़ियां, दक्षिण में सिलहट और पूर्व में मणिपूर राज्य है। इसका प्रधान स्थान शिलाङ्ग है। खसिया जाति के लोग बड़े मेहनती, शान्त स्वभाव तथा प्रायः शुद्धाचरण के होते हैं। ये सदा प्रसन्न चित्त रहते हैं। जब तक कोई इनकी स्वतंत्रता में बाधा नहीं डालता है तब तक ये नहीं बोलते। इसी कारण इन्होंने सन् १८३० तथा १८६२ ई० में विद्रोह किया था। खासी स्त्रियां बड़ी ही सुन्दर और आकर्षक होती हैं। खसिया लोग अशिक्षित हैं परन्तु शिक्षा की ओर इनकी अभिरुचि है। पहाड़ी नदियों पर पुल बांधने में ये बड़े दक्ष हैं। इनके धार्मिक विचार वही हैं जो गारो जाति के हैं। इनका विवाह सम्बन्ध माता, पिता के द्वारा तय नहीं किया जाता परन्तु वर और कन्या स्वयं विवाह ठीक करते हैं। ये मृतक को जलाने के पूर्व उसे बाक्स में कई दिनों तक बन्द रखते हैं और मृतक ले जाते समय जलूस में वंशी बजाते हैं। कचारी—यह कचार जिले में रहने वाली एक छोटी जाति है। ये शान्त, मिहनती तथा कष्टसहिष्णु हैं। चाय बगान में काम करते हैं। इनकी अपनी भाषा अलग है जिसमें आठ से आगे गिनने के लिये कोई गिनती ही नहीं है। इनके यहाँ भी पिशाच विवाह की प्रथा है। इनकी स्त्रियाँ बड़ा काम करती हैं

३—मिकिर

यह जाति नवगांव जिले में इसके दक्षिणी और पश्चिमी भाग में रहती है। इसकी संख्या लगभग ४००० है। ये हिन्दूधर्म में दीक्षित हो गये हैं और ईश्वर में पूर्ण विश्वास रखते हैं। मिशनरियों के द्वारा इनमें शिक्षा का प्रचार हो रहा है। इनके यहां वर ही कन्या को चुन लेता है। वर कन्या के घर एक दो वर्ष तक रहता है। यह हर्ष की बात है कि इनके यहां बहु विवाह की आज्ञा नहीं है[1]। ये बड़े मिहनती हैं परन्तु बड़े शराबी भी हैं। खेतों में रुई और चावल पैदा करते हैं। मिकिर स्त्रियां बड़ी मिहनती होती हैं और मैदान में लकड़ी लेकर बेचने को आती हैं। यही इनका पेशा है।

राजनैतिक

४—नागा

यह जाति आसाम की समस्त जातियों में सब से प्रसिद्ध जाति है। यह नागा की पहाड़ियों में रहता हैं। इन नागा पहाड़ियों के उत्तर में लखीमपूर का जिला। पश्चिम में नवगांव तथा शिवसागर के जिले दक्षिण में मणिपूर राज्य और पूर्व में बर्मा की पर्वत श्रेणियां हैं। पहिले अँग्रेजी सरकार से नागा जाति को बड़ा झगड़ा था। ये लोग अँग्रेजी सीमा में आकर बड़ी लूट मार मचाया करते थे। सन् १८५७ ई० तक सरकार ने इन पर कम से कम दस चढ़ाइयाँ

---

[1] श्रीमती एस० आर० वाई ए० ग्लिम्प्स आफ आसाम पृ० १८२।

आसाम के नागा लोग

(Expedition) की। सन १८७५ ई० में एक सर्वे पार्टी के अफसर को इन लोगों ने मार डाला। सन् १८७८ ई० में एक दूसरी पार्टी भेजी गई परन्तु उस की भी यही दशा हुई। सन १८८० ई० में सरकार से फिर एक बहुत बड़ी चढ़ाई में नागा लोग हार गये और उन्होंने सरकार की आधीनता स्वीकार कर ली। फलस्वरूप नागा की पहाड़ियों में स्थित कोहिमा नामक स्थान में एक नया ब्रिटिश स्टेशन खोला गया। इस समय ब्रिटिश सरकार इनके भीतरी मामलों में हस्तक्षेप नहीं करती है। नागा पहाड़ियों का डिपुटी कमिश्नर इनकी राजनैतिक निगरानी किया करता है[1]। यह वार्षिक दौरा किया करता है और भिन्न भिन्न जातियों में होने वाले झगड़ों का निपटारा करता है।

नागा जाति अनेक टुकड़ियों में जैसे अङ्गामा, रेङ्गामा और सेमा आदि—विभक्त है। हर एक टुकड़ी का एक सरदार होता है जिसकी आज्ञा सब मानते हैं[1]। सरदार का पद पैत्रिक नहीं है बल्कि चुनाव से निश्चित किया जाता है। सरदार झगड़ा तय करता है।

सामाजिक

नागा जाति के लोग शान्त प्रकृति के हैं। ये रुइ और अन्य पर्वतीय उपजों का व्यापार करते हैं। इनका हथियार भाला और तलवार है परन्तु अङ्गामी जाति के इण्डो-चाइनीज वंश के हैं। इनके शरीर का गठन सुन्दर और नाक चपटी होती है। ये बड़े बहादुर होते हैं और वीरता का बैज (चिह्न) अपनी छाती पर पहिनते हैं। शत्रु के जीतने के उपलक्ष में

१ एन० एकाउन्ट आफ दि प्राविन्स आफ आसाम एण्ड इट्स एडमिनिस्ट्रेशन पृ० १२४।

१ श्रीमती एस० आर० वार्ड ए गिलम्प्स आफ आसाम पृ० १८४।

ये अपनी सारी देह में गोदना भी गोदवाते हैं[1]। इनकी स्त्रियाँ चुस्त कुर्तियाँ पहिनती हैं। नागा लोग अपनी जान हाथों पर लिये फिरते हैं। अफगानों की भांति जान लेना या देना इनके बायें हाथ का खेल है।

अङ्गामी नागा जो कि नागा जाति ही का एक भेद है बड़े गरीब हैं। ये मृतक पशु तक का भी मांस भक्षण करते हैं। ये अफीम भी खाते हैं। इन का स्वभाव गन्दा है। शराब मांग कर पिया करते हैं। इनका धर्म भूत प्रेतों से अत्यन्त डरना है।

५—सिङ्गफो

यह जाति दिहिङ्ग तथा तेङ्गपानी नदी के किनारे तथा "लखीमपुर फ्रान्टियर ट्रैक्ट" के पूर्व में रहती है। इस जाति के लोग उस जाति से सम्बन्ध रखते हैं जो पटकोई की पहाड़ी और चिन्दविन नदी के बीच में रहती है। बर्मीज लोगों से अधिक सम्बन्ध होने के कारण इनका यह नाम पड़ा क्योंकि बर्मी भाषा में सिङ्गफो' का अर्थ आदमी होता है। सन् १७९३ में गौरीनाथ सिंह के समय में ये आसाम में आये। ये बर्मीज लोगों के साथ शिवसागर पर चढ़ाई किया करते थे। सन् १८३९ ई० में खामटी लोगों के साथ इन्होंने सदिया पर चढ़ाई कर दी। फलस्वरूप ब्रिटिश सरकार ने इन पर चढ़ाई कर इन्हें अपने आधीन कर लिया। सन् १८८२ ई० से सदिया में एक असिस्टेंट पोलिटिकल आफिसर की नियुक्ति हुई।

खामटी लोगों की सभ्यता से ये बड़े प्रभावित हुए। इनमें से कुछ आदमी बौद्ध भी हैं। इनके शरीर का गठन सुन्दर है। ये मंगोलियन जाति के हैं, अर्धसभ्य तथा मिहनती हैं। सिङ्गफो पुरुष भी गोदना गोदाते हैं और स्त्रियाँ अपने पूरे पैर में गोदना गोदाती हैं। इनकी भाषा बर्मीज लोगों की भांति है। इन्हें एक ईश्वर में विश्वास है। ये भूत प्रेत की भी पूजा करते हैं।

६—खामटी

ये सिगफो जाति के उत्तर में और "लखीमपूर फ्रान्टियर ट्रैक्ट" के उत्तर और "सदिया फ्रान्टियर ट्रैक्ट के" दक्षिण में हैं। ये उसी वंश के हैं जिस वंश के आहोम थे। ये पूर्णतया बुद्धावलम्बी हैं। सन् १९०१ में इनकी संख्या १,९७५ थी। ये समस्त पर्वतीय तथा सीमान्त जातियों में सब से अधिक सभ्य और शिक्षित हैं। १६ वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में सदिया में निवास करते थे। आसाम से बर्मीज लोगों के भाग जाने पर सदिया के खामटी गोसाईं ने ब्रिटिश सरकार से सन्धि कर आधीनता स्वीकार कर ली। तब से सदिया में पोलिटिकल एजेण्ट रक्खा जाने लगा। सन् १८३९ ई० में खामटी लोगों ने सदिया में विद्रोह किया और पोलिटिकल एजेण्ट कार्नल ह्वाइट की हत्या कर डाली। पश्चात् सरकार ने विद्रोह को दबा दिया। ये बर्मीज लोगों की भांति वस्त्र पहिनते हैं। स्त्रियाँ नेक स्वभाव की होती हैं। ये कपड़ा बुनती तथा उसे रंगती हैं।

७—मिशमी

यह जाति ब्रह्मपुत्र की घाटी के उत्तर-पूर्व कोने में दिवांग नदी से लेकर ब्रह्मकुण्ड तक रहती है। ये छोटी छोटी तीन जातियों में विभक्त हैं। सन् १८९९ में बेबेजिया मिशमी ने खामटी ब्रिटिश प्रजा पर चढ़ाई कर दी थी। परन्तु दिगारू मिशमी बड़ी शान्त प्रकृति के हैं। यह ब्रह्मकुण्ड तक यात्रियों को ले जाने के लिये पथ प्रदर्शक का काम करते हैं। सन् १८५४ ई० में मिशमी लोगों ने क्रिक नामक एक फ्रेंच मिशनरी की हत्या कर डाली थी। सन् १८५५ ई० में सरकार ने इसका बदला चुकाने के लिये चढ़ाई कर दी और इन्हें दबा दिया।

मिशमी लोगों का सब से बड़ा गुण यह है कि ये बड़े व्यापारी हैं। ये सदिया से लेकर डिब्रूगढ़ तक व्यापार करते हैं। ये पहाड़ से जड़ी, बूटी तथा कस्तूरी लाकर डिब्रूगढ़ आदि में बेचते हैं। इनका पहाड़ी स्थान बड़ा सुन्दर है। ये जानवरों को चराने का भी काम करते हैं तथा इस कार्य के लिये साँड़ रखते हैं। इनके घर बहुत बड़े होते हैं; कोई कोई तो १३० फीट तक लम्बे होते हैं। ये मुर्दे को कब्र के पास मृत व्यक्ति का समस्त सामान लाकर गाड़ देते हैं। पुरुष तथा स्त्री दोनों लम्बे बाल रखते हैं तथा दोनों धूम्रपान करते हैं। स्त्रियाँ कपड़ा बुनने में निपुण हैं।

---

१ श्रीमती एस० आर० वार्ड—ए ग्लिम्प्स आफ आसाम पृ० १८६।

एक छोटी नाव पर अपने देश की कुछ पैदावार लिये अबोर पुरुष।

८—अबोर

यह जाति मिरी जाति के पूर्व में दिवाङ्ग नदी तक फैली हुई है तथा 'सदिया फ्रान्टियर ट्रैक्ट' के उत्तर में रहती है। ये दो भागों में विभक्त हैं। पहिले सदिया तथा डिब्रूगढ़ पर बड़ा धावा बोलते थे। अत: सन् १८५८ ई० में सरकार ने इनपर चढ़ाई कर दी परन्तु सफलता न मिली। सन् १८५९ में दूसरी चढ़ाई की गई परन्तु कुछ भी परिणाम न हुआ। अन्त में १८६२ ई० की चढ़ाई में हार कर इन्हें सरकार से सन्धि करनी पड़ी। सन् १८६६ ई० में समस्त भिन्न भिन्न फिरकों को सरकार ने अपने आधीन कर लिया परन्तु सरकार इन्हें वार्षिक भत्ता देती है। ये मंगोलियन वंश के हैं। ये लम्बे तथा मजबूत होते हैं और इनका रंग ताम्बे के रंग का है। विशेष बात यह है कि इनमें बहु विवाह की प्रथा नहीं है। ये स्त्रियों का आदर करते हैं। वर कन्या के द्वारा ही विवाह तय कर लिया जाता है। ये भी गोदना गोदाते थे और एक विशेष वृक्ष की छाल पहिनते थे।

९—मिरी

ये दफला जाति के ऊपर तथा 'बालिपुर फ्रान्टियर ट्रैक्ट' के उत्तर में रहते हैं। इनका स्वभाव शान्त है। सन् १९०१ ई० में इनकी संख्या ४६,७२० थी। सरकार लोभ दिखा कर इन्हें अपने वश में रखती है और उत्तरी-लखीमपूर खजाने से इन्हें रुपया, नमक तथा शराब भत्ता के रूप में मिलता है। ये कुशल तथा निडर मल्लाह हैं और सदा नदी के किनारे रहते हैं। ये अपनी भाषा तथा आसामी भाषा दोनों जानते हैं इसीलिये इनका नाम मिरी पड़ गया जिसका अर्थ द्विभाषिया होता है। ये आसामी

गोसाइयों के चेले हैं। ये मांस-भक्षण करते हैं तथा शराब भी पीते हैं। इनकी लड़कियाँ नाच कर लोगों को रिझाती हैं और इस प्रकार पैसे कमाती हैं। मिरी स्त्रियां आज्ञाकारिणी होती हैं। इनका पहिनावा विचित्र होता है। वन देवता को बलिदान देना ही इनका धर्म है परन्तु ये ईश्वर तथा स्वर्ग में भी विश्वास रखते हैं।

१०—दफला

ये अका जाति के उत्तर तथा 'बालिपूर फ्रान्टियर ट्रैक्ट' के उत्तर में रहते हैं। दफला जाति के लोग सन् १८३७ ई० के पहिले ब्रिटिश सीमा पर बड़ी चढ़ाई करते थे परन्तु इस साल से सरकार ने इनको पेन्शन देना निश्चय किया अतः धावा कम हो गया। सन् १८७२-७३ ई० में इन्होंने फिर उपद्रव करना शुरू किया। सरकार ने सन् १८७४-७५ ई० में इन पर चढ़ाई कर इन्हें परास्त कर दिया। तब से ये शान्त हैं तथा मित्रता का बर्ताव रखते हैं।

मिरी लोग कद के छोटे तथा मंगोलियन लोगों की तरह होते हैं। इनके गाँव बड़े होते हैं। ये गाय और भैंस अधिक संख्या में रखते हैं। ये ईश्वर में विश्वास रखते हैं परन्तु भूतप्रेत पूजते हैं तथा बलि चढ़ाते हैं। बहु विवाह की प्रथा है। स्त्रियाँ भी अनेक पुरुषों से एक साथ विवाह कर सकती हैं।

११—अका

यह जाति डैरेङ्ग जिले के सुदूर उत्तर में और 'बालिपूर फ्रान्टियर ट्रैक्ट' के दक्षिण में निवास करती है। यह जाति दो भागों में विभक्त है। इन लोगों को भी सरकार की ओर से वार्षिक भत्ता मिलता है। इनका एक सरदार बड़ा उत्पाती था जो ब्रिटिश सीमा पर सदा धावा करता था। सन् १८२९ ई० में सरकार ने उसे पकड़ कर गौहाटी जेल में ठूस दिया। कुछ वर्षों के बाद छोड़ दिये जाने पर वह फिर उत्पात करने लगा। अन्त में सरकार से हार कर उसे सन् १८४२ ई० में आत्म समर्पण करना पड़ा। सरकार ने उसे ५००) की पेन्शन नियत कर दी। तब से यह जाति सदा मित्रता का बर्ताव रखती है।

१२—भुटिया

भुटिया जाति के लोग भूटान देश में रहते हैं। इन्हें भुटिया अथवा भोटिया भी कहते हैं। भूटान गोआलपाड़ा तथा कामरूप जिले की उत्तरी सीमा है। यह एक स्वतन्त्र देश है परन्तु भूटान का राजा ब्रिटिश की आधीनता को स्वीकार करता है। जब आसाम सरकार के हाथ में आया तब कामरूप जिले का कुछ हिस्सा भूटान-राजा के हाथ में था। सन् १८४१ ई० में सरकार ने राजा को १०,०००) रुपया वार्षिक देकर उन स्थानों को उनसे ले लिया। सन् १८६४ ई० में भूटान-युद्ध के कारण यह रुपया देना बन्द कर दिया गया। इसी समय सरकार ने दिवनगिरि का किला भी अपने कब्जे में कर लिया।

भोटिया एक बड़ी बहादुर जाति है। ये कद में बड़े लम्बे चौड़े तथा विशाल होते हैं। इनके शरीर की गठन बड़ी सुन्दर होती है। इनका पेशा व्यापार करना तथा खेतों में जानवर चराना है। जाड़े के दिनों में ये कामरूप के उत्तरी भाग में तथा पश्चिमी डैरेङ्ग में व्यापार करने के लिये आते हैं। ये मिर्चा और नमक बेचने के लिये लाते हैं और न लेने पर गाँव वालों पर अत्याचार करते हैं अतः सरकार ने सब द्वारों पर सेना का प्रबन्ध कर रक्खा है। ये बुद्ध धर्मावलम्बी हैं।

इन जातियों की कुछ सामान्य विशेषतायें

पहिले पर्वतीय तथा सीमान्त जातियों का जो वर्णन किया गया है उसमें उनके इतिहास, रहन-सहन, पेशा, भाषा तथा धर्म का संक्षिप्त विवरण दिया है। प्रत्येक जाति में कुछ अपनी विशेषता होते हुये भी बहुत सी बातें ऐसी हैं जो प्रायः सब में सामान्य हैं।

ये समस्त जातियां अशिक्षित, असभ्य अथवा अर्धसभ्य हैं। आधुनिक सभ्यता की रोशनी इनके यहाँ तक अभी नहीं पहुँची है। इन सब की राजनैतिक स्थिति प्रायः एक सी ही है। सब घरेलू मामलों में पूर्णतया स्वतन्त्र हैं परन्तु बाहरी मामलों में अँग्रेजी सरकार की आज्ञा माननी पड़ती है। सब को सरकार से कुछ न कुछ भत्ता मिलता है। इनके रीति, रिवाज भी प्रायः एक से ही हैं। बहु विवाह की प्रथा प्रायः सब जातियों में है तथा वर, कन्या ही स्वतः अपना विवाह तय कर लेते हैं। सब जातियां मांस भक्षण करती तथा शराब पीती हैं। गोदना गोदाने की प्रथा सर्वत्र है। सब में पर्दे का अत्यन्त

अबोर लोगों का एक आदर्श गाँव

अभाव है। ये सब जातियाँ मिहनती और मजबूत हैं। इन सब का धर्म भूतादि की पूजना तथा बलिदान चढ़ाना है। कोई भी मूर्ति की पूजा नहीं करते परन्तु एक ईश्वर में सब विश्वास रखते हैं।[१]

पार्वत्य भाषायें

पहले जिन पर्वतीय तथा सीमान्त जातियों का वर्णन किया गया है उनकी भाषाओं के विषय में कुछ लिखे बिना यह अध्याय अधूरा ही रह जायेगा।

इन समस्त पर्वतीय जातियों में सामाजिक तथा धार्मिक समानता होते हुए भी इन सब की भाषा पृथक् पृथक् है। एक जाति की भाषा दूसरी जाति से बिल्कुल भिन्न है। जाति की तो कथा दूर रहे, एक ही जाति में जो अनेक उपजातियाँ हैं उनकी भी भाषा आपस में बिल्कुल भिन्न भिन्न है। उदाहरण के लिये नागा जाति को ले लीजिये। इस जाति में प्रधानतया तीन उपजातियां हैं जिनके नाम अङ्गामी नागा, रेङ्गामी नागा तथा सेमा नागा है। नागा लोगों की एक भाषा तो है ही, इसके अतिरिक्त प्रत्येक उपजाति को एक अपनी भाषा अलग है अर्थात् अङ्गामी नागा, रेङ्गामी नागा तथा सेमा नागा—इन तीनों की भाषायें भिन्न भिन्न हैं। इस प्रकार से आसाम प्रान्त लोगों की भिन्नता की दृष्टि से नहीं तो भाषा की विषमता की दृष्टि से तो भाषा का अजायबघर अवश्य ही है। ये जातियाँ अपने घर में अपनी ही भाषा का प्रयोग करती हैं परन्तु जब ये व्यापार के लिये मैदान में आती हैं तब आसामी भाषा का व्यवहार करती हैं।

इन भाषाओं का अध्ययन तथा प्रचार

ये समस्त भाषायें तिब्बती-बर्मन् भाषा परिवार से संबंध रखती हैं। सर जार्ज ग्रियर्सन ने इन भाषाओं के उद्धार के लिये बड़ा भगीरथ प्रयत्न किया है। यह तो सर्व विदित ही है कि जब सन् १८२६ में आसाम के ऊपर ब्रिटिश सरकार ने कब्जा किया तभी से अपने धर्म के प्रचार के लिये ईसाई मिशनरियों ने इन असभ्य, पार्वत्य जातियों के बीच में अपना डेरा डाल दिया और उस विश्वशान्ति के दूत का शान्तिमय, सुखद सन्देश इन जातियों को सुनाने लगे। अपने धर्म के प्रचार के अतिरिक्त इन मिशनरी-महोदयों ने एक बहुत बड़ा कार्य किया और यह कार्य इन भाषाओं का अध्ययन तथा प्रकाश में लाना है। मिशनरियों ने इन भाषाओं में बाइबिल का अनुवाद करने की गरज से इन्हें सीखा तथा इन विभिन्न भाषाओं के कोश, व्याकरण आदि तैयार किये। इन्होंने अनेक पाठ्यपुस्तकें रचना विधि की किताबें तथा 'गाइड' तैयार किया। इस प्रकार से धर्म प्रचार की दृष्टि को छोड़कर, भाषा विज्ञान की दृष्टि से इनके कार्यों का जितनी मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की जाय उतनी ही थोड़ी है। इन पुस्तकों को लिख कर इन्होंने भाषा विज्ञान का कितना उपकार किया है इसका वर्णन करना कठिन है। यहां पर इनके रचित पुस्तकों की एक सूची दी जाती है जिससे स्पष्ट पता चल सकता है कि इन धर्म के दूतों ने कितने परिश्रम से विभिन्न भाषाओं के लिये क्या काम किया है।

ग्रन्थ नाम	लेखक नाम	विषय
१—डिक्शनरी आफ अबोर-मिरी लैंग्वेज़	हरबर्ट लारेन	यह कोश की पुस्तक है।
२—आहोम-आसामीज इंग्लिश डिक्शनरी	गोपाल चन्द्र बरुआ	यह भी कोश है।
३—ग्रामर आफ दी अङ्गामी नागा लैंग्वेज़	आर० बी० मैककाब	यह व्याकरण का ग्रन्थ है।
४—बेङ्गाली-गारो डिक्शनरी	एम० रैमसे	यह कोश की पुस्तक है।
५—कचारी फर्स्ट रीडर	,,	कचारी भाषा की पुस्तक है।
६—ग्रामर आफ दी दफला लैंग्वेज़	आर० सी० हेमिल्टन	यह व्याकरण की पुस्तक है।
७—ग्रामर आफ दी देवरी-चुटिया लैंग्वेज़	डब्लू० बी० ब्राउन	... ...
८—ग्रामर आफ दी खामटी लैंग्वेज़[१]	एफ० जे० नीधम	यह खामटी भाषा का व्याकरण है।

१—ये सब पुस्तकें आसाम सरकार द्वारा प्रकाशित की गई हैं तथा आसाम गवर्नमेन्ट बुकडिपो शिलाङ्ग से मिल सकती हैं।

प्रसिद्ध स्थान

आसाम में बहुत बड़े बड़े शहरों की अधिकता नहीं है। शिलांग तथा गौहाटी को छोड़ कर अन्य कोई शहर नहीं है जो भारत के दूसरे शहरों की समता में आ सके। चूँकि आसाम का प्रधान व्यापार चाय है और यह खेतों में पैदा होता है, अतः बड़े बड़े व्यापारिक केन्द्र प्रान्त में नहीं बन सके। फिर भी आसाम में कुछ ऐसे स्थान हैं जो अपना विशेष महत्व रखते हैं। इन स्थानों को हम तीन भागों में विभक्त कर सकते हैं—१—धार्मिक, २—राजनैतिक और ऐतिहासिक तथा ३—व्यापारिक। प्रान्त में भारत-प्रसिद्ध केवल एक ही धार्मिक स्थान है और वह है कामाख्या। इसके अतिरिक्त भी अनेक स्थान हैं जो अपना स्थानीय महत्व रखते हैं। राजनैतिक स्थानों में उनकी गिनती है जहां पहिले प्राचीन राजवंशों की राजधानी थी अथवा वर्तमान काल में ब्रिटिश सरकार के प्रधान स्थान हैं। ऐतिहासिक तथा पुरातत्व सम्बन्धी वे स्थान हैं जो कामरूप जिले में पाये जाते हैं तथा जो प्राचीन राजाओं की स्मृति को अपने भग्नावशेषों द्वारा आज भी बनाये गये हैं। व्यापारिक स्थानों के अन्तर्गत वे स्थान आते हैं जहाँ पर किसी प्रकार का व्यापार होता है अथवा व्यापार सम्बन्धी चीजें कोयला, लोहा और पेट्रोलियम आदि निकलती हैं। इसके अतिरिक्त भी कितने छोटे छोटे स्थान हैं जो किसी न किसी विषय के लिये प्रसिद्ध हैं परन्तु उन सब के वर्णन के लिये यहाँ स्थान नहीं है। यहां पर उपर्युक्त स्थानों का वर्णन क्रमानुसार किया जायेगा। सदिया से पूरब और उत्तर की तरफ करीब ६० मील की दूरी पर परशुराम कुण्ड है जहां होकर हर साल दूर दूर से हजारों यात्री स्नानार्थ आते हैं।

धार्मिक

आसाम के मन्दिर

आसाम प्रान्त में मन्दिरों की संख्या कुछ कम नहीं है केवल कामरूप के जिले में २३ मन्दिरों की स्थिति है जिन्हें पूर्व राजाओं के द्वारा माफी जमीन मिली है। केवल गौहाटी ही शहर को ले लीजिये। यहाँ मन्दिरों की संख्या बहुत ही अधिक है इसीलिये गौहाटी को मन्दिरों की नगरी 'सिटी आव टेम्पुलस' भी कहते हैं। नीलाचल पर्वत पर मन्दिरों की श्रेणी देख कर किस यात्री का चित्त चलायमान नहीं हो जाता? परन्तु ये मन्दिर आहोम राजा रुद्रसिंह तथा शिवसिंह की हिन्दू धर्म के प्रति दृढ़भक्ति के ज्वलन्त प्रमाण हैं तथा राजाओं के द्वारा बनवाये गये हैं। अतः इनमें बहुत से मन्दिर अठारहवीं शताब्दी से अधिक प्राचीन नहीं है।

कामाख्या देवी का मन्दिर

आसाम का सबसे प्राचीन तथा सबसे प्रसिद्ध मन्दिर कामाख्या देवी का है। इसकी कीर्ति केवल प्रान्त भर में ही सीमित नहीं है बल्कि समस्त भारत इसे परम पुनीत मन्दिर मानता है। यह मन्दिर गौहाटी शहर के पास नीलाचल पर्वत पर स्थित है कहा जाता है कि दक्षप्रजापति के यज्ञ में भस्म हुई सती के शव को लेकर जब शंकर चले तब उनके शोक को कम करने के लिये विष्णु ने सती के शव के ५१ टुकड़े कर डाले। जहां जहाँ ये टुकड़े गिरे वे वे स्थान अत्यन्त पवित्र माने गये। कामाख्या में सती का जनन अंग गिरा। अतः इस स्थान को बड़ा पवित्र मानते हैं। तब से यह क्षेत्र परम पूज्यनीय समझा जाता है।

कहा जाता है कि महाभारत के समय में नरकासुर ने यहां एक मन्दिर बनवाया था। इसके पश्चात् वह मन्दिर भी नष्ट हो गया। तथा सब बातें लुप्त सी हो गईं। सर्वप्रथम कोच राजा विश्वसिंह ने इस पवित्र स्थान को फिर से ढूँढ निकाला तथा उसने एक मन्दिर बनवा दिया। परन्तु शीघ्र ही यह मन्दिर काला पहाड़ नामक प्रसिद्ध दुराचारी और आततायी के हाथों नष्ट हो गया। सन् १५६५ ई० में कोच राजा नर नारायण ने पुनः इसका उद्धार किया। वर्तमान मन्दिर की नींव का भाग जो कि कटे हुये पर्वत के बड़े बड़े टुकड़ों से बना हुआ है। नर नारायण के ही समय का है। परन्तु ऊपर का मन्दिर भाग उतना प्राचीन नहीं है। मन्दिर सुन्दर तथा दर्शनीय है। प्राचीन काल में यह मन्दिर तान्त्रिक सम्प्रदाय का एक बहुत बड़ा केन्द्र समझा जाता था। यहां पर इस सम्प्रदाय की बड़ी उन्नति हुई। बड़े बड़े विद्वान तन्त्रशास्त्र सीखने तथा सिद्धि के लिये यहाँ आते थे पारंगत होकर लौटते थे। आजकल भी इस मन्दिर में दर्शनार्थियों की संख्या कुछ कम नहीं रहती। ये यात्री भारत के प्रत्येक भाग से आते हैं तथा अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हैं। इस स्थान पर कुमारी भोजन का बड़ा माहात्म्य माना जाता है।

नीलाचल पर्वत की शोभा

नीलाचल पर्वत की शोभा निराली है। इस पर चढ़ने का रास्ता ढालुआ है तथा असंख्य यात्रियों के पद घर्षण से यह स्थान चिकना हो गया है। पर्वतों के किनारे चट्टानों से युक्त हैं और कहीं कहीं ढालुआ भी है। पर्वत के ऊपर से नीचे का दृश्य बड़ा ही सुहावना मालूम होता है। विशाल काय ब्रह्मपुत्र इसका पाद प्रक्षालन करता है। दक्षिण तरफ खासी पहाड़ियाँ हैं और उत्तर की ओर सुनहले धान के खेत मन को मुग्ध कर लेते हैं।[1]

हाजो का मन्दिर

यह मन्दिर हिन्दू तथा बौद्धों दोनों के लिये बड़े आदर की वस्तु है। वह हाजो के पास एक पहाड़ी के ऊपर स्थित है। कहा जाता है कि डबो ऋषि ने इसका निर्माण कराया था तथा कोच राजा रघुराय ने सन् १५८३ ई० में इसको फिर से सुधारा। इस मन्दिर में विष्णु की नृसिंहावतार की प्रतिमा स्थापित है। भुटिया लोग उसे गलती से बुद्ध की प्रतिमा समझ कर पूजा करते हैं। मन्दिर की बाहरी दीवालों में अनेक प्रकार का नक्काशी की गई है। इस मन्दिर के लिये १२,००० एकड़ भूमि माफी में दी गई है। यहां पर देवताओं को अपनी नृत्य कला से प्रसन्न करने के लिये नर्तकियां भी रक्खी गई हैं। इस प्रकार की नर्तकियों का प्रबन्ध आसाम के अन्य किसी मन्दिर में नहीं पाया जाता है।

१—इस स्थान का बड़ा सुन्दर और रोचक वर्णन एलेन साहब ने इन शब्दों में किया है :—

"But, though lacking in interest to the archæologist, Kamakhya should be visited by every lover of the pictursque. A paved canseway, which tradition says was constructed by Narak thousands of years ago, streches from the trunk road to the spur on which the temple stands. The path is steep, and the rocks have been worn to a slippery smoothness by the feet of generations of pilgrims. The sides of the hill are rocky......At either end it passes through an archway of five masonary, and here and there the rocks along the side have been hewn into samblance of quaint Hindu Gods. From the submit of the hill there is a magnificent view of the surrounding country. Its feet are washed by the mighty Brahmaputra, whose Channel at this point is shut in by rocks on either hand. To the south there are the tumbled masses of the Khasi Hills rising out of the alluvium as cliffs rise out of the sea, the flat and fertile valleys with which they are interested forming a striking contrast to their precipitions and jungle covered sides. On the north are fields of golden rice and yellow mustard, groves of palms and feathry bamboos surrounded and inclosed by rocky hills while far away in the distance are blue ranges of Bhutan and snowy peaks beyond."

आसाम डिस्ट्रिक्ट गज़ेटियर, कामरूप।

अन्य मन्दिर

कामरूप में और अनेक मन्दिर पाये जाते हैं। गौहाटी स्वयं इन मन्दिरों की दिव्य विभूति से कुछ कम वैभव शाली नहीं है। तीन मन्दिर गौहाटी के पास की पहाड़ी के पश्चिम में हैं जिनकी अवस्था आज कल अच्छी नहीं है। ये जीर्ण शीर्ण हो गये हैं। दूसरा मन्दिर उमानन्द का है जो ब्रह्मपुत्र के बीच में स्थित टापू में है। ब्रह्मपुत्र के उत्तरी किनारे पर अश्व क्रान्त का मन्दिर है जो ढालुवे पहाड़ पर स्थित है। गौहाटी के आस पास में ही उग्रतारा तथा छत्रकर का मन्दिर है यद्यपि इनका गुम्बज छोटा है परन्तु इनकी दिवालें बड़ी मजबूत हैं तथा आठ से नौ फुट तक मोटी हैं। गौहाटी के अत्यन्त समीप में नवग्रह का मन्दिर अत्यन्त रमणीक बना हुआ है। इसमें सूर्य, चन्द्रमा तथा अन्य सातों ग्रहों की प्रतिमा रक्खी हुई है। प्रत्येक ग्रह यानि पीठ तथा लिङ्ग के रूप में दिखलाया गया है। इस पर पुष्पादि चढाये जाते हैं। गौहाटी से ७ मील दक्षिण वशिष्ट जी का मन्दिर है। यद्यपि इसकी इमारत जीर्ण शीर्ण दशा में है परन्तु इसकी स्थिति बड़ी ही मनोमोहिनी प्रकृति के बीच में है। यह मन्दिर सन् १७५१ ई० में वशिष्ठ ऋषि ने इस स्थान में बनवाया था। कहते हैं कि कुछ दिनों तक वशिष्ट ऋषि ने इस स्थान पर निवास किया था। गौहाटी के पास रुद्रेश्वर नाम का एक मन्दिर है जिसे रुद्रसिंह के लड़के शिवसिंह ने अपने गौहाटी पूज्यनीय पिता की स्मृति में (जिनका स्वर्गवास गौहाटी में सन् १७१४ ई० में हुआ था) बनवाया था। इस प्रकार से सैकड़ों रमणीय मन्दिर समस्त आसाम प्रान्त में बिखरे पड़े हैं तथा अपने निर्माणकर्ता की उज्वल कीर्ति को आज भी सुरक्षित रक्खे हुये हैं। आज भी इन मन्दिरों को देख कर किसका मन आनन्द सागर में गोते नहीं लगाने लगता ?

बरपेता

यह कामरूप जिले में एक छोटा सा शहर है। सन् १८८६ ई० में इस शहर में म्युनिसिपलिटी की स्थापना हुई थी। शहर का क्षेत्रफल १·३७ वर्गमील है। प्राय: १५ मील लम्बी सड़क म्युनिसिपलिटी के अन्तर्गत है परन्तु इनमें से एक भी पक्की नहीं है। बरपेता सुप्रसिद्ध वैष्णव सुधारक शंकरदेव के द्वारा संस्थापित महान् महापुरुषिया सत्र का प्रधान स्थान होने के कारण बड़ा ही प्रसिद्ध है। जिस स्थान पर सत्र स्थित है वह स्थान बड़ा ही पवित्र माना जाता है। यहाँ पर इस मत के मानने वाले साधु, महात्मा अपनी अपनी कुटिया में आनन्द से जीवन बिताते हैं। महापुरुषिया सम्प्रदाय के विषय में अन्यत्र विस्तृत विवेचन किया गया है। सन् १८९५ ई० में शीतला देवी का प्रकोप इस स्थान पर हुआ। यह प्रकोप बड़ा भयङ्कर था। केवल इसी बीमारी से प्रति मील ३६ आदमी मर गये। इससे इसकी आबादी बहुत कम हो गई। सन् १८९७ ई० के भीषण भूकम्प से तो इसका बहुत हिस्सा बर्सात के दिनों में भी पानी के अन्दर चला जाता है। यह सब डिवीजन आफिसर का प्रधान स्थान है। अस्पताल, कोर्ट, पुलिस स्टेशन और हाई स्कूल प्रधान बिल्डिंगें हैं। यहाँ चावल, दाल और सरसों का प्रधान व्यापार होता है तथा नाव बनाना और मिट्टी के सुन्दर सुन्दर सामान बनाना यहाँ का मुख्य व्यवसाय है।

शिव सागर

यह शिवसागर जिले का प्रधान स्थान है। शिवसागर का अर्थ है शिव का समुद्र। चूँकि इस जिले में शिव जी का एक बहुत बड़ा मन्दिर तथा वृहद्काय तालाब है। सम्भवत: इसी कारण से इस जिले का नाम शिवसागर पड़ गया। सन् १८८१ ई० में इसकी जन-संख्या ५,००० थी। इस शहर का क्षेत्रफल ७ वर्गमील है। यह एक बहुत ही सुन्दर तथा स्वास्थ्यप्रद स्थान है। इस शहर में सब से बड़ी आकर्षक वस्तु यहां का विशालकाय तालाब है जो कि दो वर्ग मील में फैला हुआ है। यह बहुत ही सुन्दर तथा रमणीय तालाब है। इसका निर्माण आहोम राज शिवसिंह के द्वारा हुआ था। इस तालाब के एक किनारे शिव जी के तीन सुन्दर मन्दिर हैं। इन मन्दिरों के बीच वाला मन्दिर सबसे ऊँचा है। काशी के भगवान विश्व-नाथ के मन्दिर की भांति ही इस मन्दिर का ऊपरी

भाग भी सुवर्ण के मोटे पत्तर से आच्छादित है। इसकी ऊँचाई २०० फुट है। यह बहुत दूर से ही दिखाई पड़ता है तथा बड़ा सुहावना मालूम होता है इस मन्दिर में बन्दूक की गोलियों के छिद्र आज भी दृष्टि गोचर होते हैं। इससे ज्ञात होता है कि प्राचीन समय में इसके सोने को लूटने के लिये अन्य राजाओं ने इस पर चढ़ाई की थी। मन्दिर के निचले भाग में भिन्न भिन्न हिन्दू देवताओं की मूर्तियां प्रस्तराङ्कित हैं। इसमें अविछिन्न रूप से दीपक जला करता है। यहां के लोगों का विश्वास है कि इस तालाब में सुनहले कछुवे भी हैं। लोग नाव द्वारा इस तालाब में विहार भी करते हैं। इसमें स्नान करना तथा कपड़ा धोना मना है। यह मन्दिर बड़ा पवित्र माना जाता है तथा लोग बड़ी संख्या में यहाँ पूजा करने आते हैं।

ब्रह्मकुण्ड

यह स्थान लखीमपूर जिले के उत्तर-पूर्व में है। यह हिमालय पहाड़ के एक तङ्ग पहाड़ी स्थान में गोलाकार रूप में बना हुआ है। यहां पर एक बहुत बड़ा कुण्ड है जिसे ब्रह्मकुण्ड कहते हैं। चूंकि ब्रह्मपुत्र को ब्रह्मा का पुत्र कहते हैं अतः इस नदी के द्वारा बनाये कुण्ड को ब्रम्हकुण्ड कहना स्वाभाविक है। यहीं से ब्रम्हपुत्र नदी अपने दक्षिणी मार्ग को छोड़कर दक्षिण-पश्चिम की ओर अपना मार्ग बनाती है। यह कुण्ड बड़ा पवित्र माना जाता है। यहाँ तक पहुँचने का मार्ग बीहड़ तथा दुर्गम होने पर भी प्रतिवर्ष हजारों आदमी इस कुण्ड में स्नान करने के लिये आते हैं।

देवदुबी

यह स्थान लखीमपूर जिले में ही है। यह एक अंधकारमय गहरा सोता है। बीच में इसकी गहराई का कुछ अन्दाजा नहीं लगता। यहीं से देवङ्ग नदी नागा की पहाड़ियों को छोड़ती हैं। यहाँ जाने के लिये भी रास्ता बड़ा कठिन तथा दुर्गम है। इस सोते में स्नान करना बड़ा पुण्यमय माना जाता है। लाखों आदमी प्रतिवर्ष इस सोते में स्नान करके पाप से मुक्त होने के लिये आते हैं।

तेजपूर

कहा जाता है कि सती के भिन्न भिन्न अंग कटकर जिन इक्कावन स्थानों पर गिरे उनमें दो स्थान आसाम में ही हैं। पहिला स्थान तो निर्विवाद कामाख्या है। कुछ लोगों का कहना है कि उनका दूसरा अंग (जंघा) तेजपूर में गिरा जो डैरेंग जिले का प्रधान स्थान है। इसी कारण से इस स्थान को भी पवित्र मानते हैं।

राजनैतिक

शिलाङ्ग

आसाम प्रान्त के राजनैतिक महत्व रखने वाले स्थानों में शिलाङ्ग का नाम सर्व प्रथम है। यों तो गौहाटी का राजनैतिक महत्व प्राचीन समय में बहुत था। परन्तु शिलाङ्ग के कारण आज उसका वह महत्व नहीं है। वर्तमान समय में गौहाटी कामरूप जिले का केवल प्रधान स्थान रह गया है। शिलाङ्ग आजकल आसाम प्रान्त की राजधानी है। सन् १८६४ ई० में जिले का केवल प्रधान स्थान था परन्तु सन् १८७४ ई० का प्रधान स्थान बनाया गया। शिलाङ्ग खसिया की पहाड़ियों में बसा हुआ है। इसकी चोटी ६००० फुट से भी ऊँची है। समुद्र की सतह से इसकी ऊँचाई ५००० फुट है। शहर का क्षेत्रफल ४$\frac{3}{4}$ वर्ग मील है। इस शहर में अच्छी म्युनिसिपलिटी है जो शहर में सफाई पानी तथा बिजली की रोशनी का प्रबन्ध करती है। पर्वत मालाओं की गोद में बसे होने के कारण शिलाङ्ग की शोभा अपूर्व है। कहीं मनोरम झरने जोरों की आवाज करते हुये झर रहे हैं तो कहीं नाना प्रकार की सदा हरी हरी बनस्पतियां मन को लुभाये लेती हैं। यहाँ का प्राकृतिक दृश्य अपूर्व तथा स्वर्गीय हैं। जलवायु सुन्दर और स्वास्थ्यप्रद है। प्रान्त का प्रधान स्थान होने से गवर्नर यहीं रहता है तथा प्रान्तीय कौन्सिल यहीं होती है। इसी स्थान में प्रान्तीय सिक्रेटरियट तथा अन्य सरकारी दफ्तर हैं। इस स्थान तक रेल नहीं गई है। गौहाटी से यहाँ तक बिल्कुल पक्की सड़क बनी हुई है अतः मोटर द्वारा यहां आसानी से जा सकते हैं। इसकी अपूर्व प्राकृतिक शोभा तथा राजनैतिक महत्व ने सचमुच ही इसे 'आसाम का स्वर्ग' बना दिया है।

गौहाटी

गौहाटी (गोआ = हथी = सुपारी के पेड़ों से घिरा हुआ ऊँचा स्थान) विशाल ब्रह्मपुत्र नदी के बायें किनारे पर २६°११ उ० ९१°४५ पू० में अब स्थित है। बंगाल से सदिया तक जो ट्रङ्क रोड जाती है। उसी के किनारे यह बसा हुआ है। आसाम बंगाल रेलवे तथा ईस्टर्न बंगाल रेलवे दोनों से यहां आसानी से पहुँचा जा सकता है। यह प्रान्त भर में सबसे प्रसिद्ध शहर है। शिलाङ्ग की प्रसिद्धि केवल इसीलिये है कि वह सरकार का प्रधान स्थान है। शिक्षा व्यवसाय आवागमन का साधन, प्राकृतिक सौंदर्य तथा धार्मिक स्थान आदि अनेक दृष्टियों से गौहाटी की समता रखने वाला दूसरा शहर आसाम में नहीं है। कामख्या देवी के भारत विख्यात मन्दिर ने तो मानों सोने में सुगन्ध का कार्य किया है। प्राचीन राजा भगदत्त की राजधानी यही प्राग्ज्योतिषपूर (आजकल का गौहाटी) थी संस्कृत साहित्य में यदि आसाम के किसी शहर का नाम मिलता है तो इसी प्राग्ज्योतिषपूर का। गौहाटी प्राचीन काल से ही अनेक राजवंशों की राजधानी रही है। आज भी इसके आस पास जो भग्नावशेष दृष्टि गोचर होते हैं। वे इसकी प्राचीनता तथा महत्ता को आज भी डंके की चोट पर बतला रहे हैं। जब रघु ने आसाम प्रान्त पर चढ़ाई की थी तब यहीं के राजा ने रघु के पाद पद्मों की पूजा की थी तथा मद चुवाने वाले मदमाते हाथियों को रघु को उपहार में दिया था। इस घटना का वर्णन महाकवि कालिदास ने रघुवंश में इन शब्दों में बड़ी सुन्दर रीति से किया है :—

> चकम्पे तीर्ण लौहित्ये, तस्मिन्प्राग्ज्योतिषेश्वरः।
> तद्गजालानतां प्राप्तैः, सह कालागुरुद्रुमैः ।४।८१
> न प्रसेहे स रुद्धार्कमधारा वर्षदुर्दिनम्,
> रथवर्त्मरजोऽप्यस्य, कुत एव पताकिनीम् ।४।८२
> तमीशः कामरूपाणामत्याखण्डलविक्रमम्,
> भेजे भिन्नकटैर्नागैरन्यानुपरुरोध यैः ।।४।८३
> कामरूपेश्वरस्तस्य हेमपीठाधिदेवताम्,
> रत्नपुष्पोपहारेण छायामानर्च पादयोः ।।४।८४

इस प्रकार प्राचीनता की दृष्टि से देखें तो गौहाटी आसाम का सबसे प्राचीन स्थान सिद्ध होता है। जैसा कि पहले लिखा गया है कि यह स्थान प्राचीन काल से ही अनेक राजवंशों की राजधानी रही है। कोच राजाओं के समय में कोच राजों का राज्य अलग हो जाने पर गौहाटी ही उन राजाओं का प्रधान स्थान था। आहोम राजाओं के समय में तो गौहाटी अपनी प्रसिद्धि की चरम सीमा पर पहुँची हुई थी और यहाँ पर एक आहोम राजा का गवर्नर सर्वदा रहता था। गौहाटी ही आसाम जीतने की कुञ्जी समझी जाती थी इसलिये मुसलमानों के आसाम पर जब जब आक्रमण हुए हैं तब तब उन्होंने गौहाटी ही लेने का प्रयत्न किया। मुसलमानों के अधिकार हो जाने पर गौहाटी में एक गवर्नर रहा करता था। जब अंग्रेजों ने आसाम को जीता तब कुछ वर्षों तक इनकी भी राजधानी गौहाटी ही रही परन्तु इस स्थान को अस्वास्थ्यकारक समझ कर राजधानी शिलाङ्ग बदल दी गई। सन् १९२६ ई० में कांग्रेस ने भी आसाम में गौहाटी को अपने अधिवेशन के लिये उपयुक्त समझा तथा यहीं अधिवेशन हुआ।

यदि धार्मिक दृष्टि से देखें तो गौहाटी का महत्व अलौकिक है। कामाख्या देवी का यह पवित्र स्थान होने के कारण सर्वदा के लिये अमर हो गया। शक्ति सम्प्रदाय वालों के लिये विशेषकर तथा सब हिन्दुओं के लिये साधारण तौर पर कामाख्या एक तीर्थस्थान माना जाता है। शाक्त सम्प्रदाय के इतिहास में गौहाटी का एक प्रसिद्ध स्थान है क्योंकि इसी स्थान पर इस सम्प्रदाय का परिवर्धन तथा परिपोषण हुआ। कमाख्या देवी के इस भारत-विख्यात मन्दिर के अतिरिक्त गौहाटी में आहोम राजाओं के बनवाये अनेक मन्दिर अब भी विद्यमान हैं जो उनकी हिन्दू धर्म प्रियता के ज्वलन्त प्रमाण है। रुद्रेश्वर मन्दिर, गौहाटी के पास का नवग्रहमन्दिर तथा ब्रह्मपुत्रा के बीच में स्थित वशिष्ठ ऋषि का मन्दिर आदि बीसियों मन्दिर गौहाटी की शोभा आज बढ़ा रहे हैं तथा इसके धार्मिक केन्द्रस्थान होने की बात को बतला रहे हैं। सचमुच इसी ही कारण से गौहाटी को 'ए सिटी आव टेम्पुलस' मन्दिरों का नगर कहते हैं।

शिक्षा की दृष्टि से भी गौहाटी आसाम में सबसे आगे निकला हुआ है। यदि गौहाटी को आसाम का मस्तिष्क कहें तो इसमें कुछ अत्युक्ति न होगी।

आसाम की जो कुछ विशेषतायें हैं वह आपको गौहाटी में दृष्टि गोचर होंगी। गौहाटी का 'काटेन कालेज' तथा अनेक स्कूल बहुत दिनों से इस प्रान्त में शिक्षा का प्रचार कर रहा है। यहीं पर 'कामरूप-अनुशीलन-समिति' है जो आसाम में प्राचीन शोध का कार्य बड़े उत्साह तथा सफलता से कर रही है। इस प्रकार शिक्षा की दृष्टि से भी इसका महत्व अधिक है।

व्यापार की दृष्टि से भी गौहाटी को केन्द्र कह सकते हैं। ब्रह्मपुत्रा की घाटी में जो कुछ व्यापार होता है वह यहीं से होकर जाता है। बंगाल से जो कुछ माल आसाम में आता है वह गौहाटी होकर ही जाता है। स्वयं गौहाटी में मिट्टी के बर्तन, चटाई आदि बहुत अच्छी बनती हैं। ए० बी० आर० तथा ई० बी० आर० दोनों के मिलने का यह स्थान है अतः व्यापार का केन्द्र होना स्वाभाविक है। यह स्टीमर सर्विस का भी स्टेशन है अतः नावों के द्वारा भी यहां आना-जाना हो सकता है।

यदि प्राकृतिक सौन्दर्य की दृष्टि से गौहाटी का विचार करें तो इसकी छटा निराली दिखलाई पड़ती है। विशाल ब्रह्मपुत्रा दासी की भांति सर्वदा इसका पाद प्रक्षालन किया करती है तथा ऊँचे ऊँचे गिरि शिखर जो प्रायः बर्फ से ढके रहते हैं मानों इसके सिर पर श्वेत छत्र धारण किये रहते हैं। गौहाटी के पास स्थित नीलाचल पर्वत की अनूठी छटा का वर्णन विस्तृत रूप में अन्यत्र किया गया है अतः उसे यहाँ दुहराना उचित नहीं है परन्तु गौहाटी का प्राकृतिक दृश्य अनोखा है, अद्वितीय है तथा स्वर्गीय है। मिस्टर एलेन ने मानों शब्दाभाव के कारण ही गौहाटी की शोभा का वर्णन केवल दो ही शब्दों में समाप्त कर दिया है। वे लिखते हैं कि

"The situation of Gauhati is extremely picturesque."

इस प्रकार राजनैतिक, धार्मिक, आर्थिक, शिक्षा-सम्बन्धी तथा प्राकृतिक दृश्य सम्बन्धी अनेक दृष्टियों से गौहाटी का स्थान आसाम में अनुपम तथा अद्वितीय है। इसके समान दूसरा शहर आसाम में नहीं है। यदि इसके लिये "एकोहं द्वितीयो नास्ति" का उपयोग कुछ देर के लिये कर सकें तो कुछ भी अनुचित नहीं होगा।

गौहाटी शहर

गौहाटी के आस पास जो प्राचीन भग्नावशेष मिलते हैं उस से अनुमान किया जाता है कि प्राचीन समय में यह शहर ब्रह्मपुत्र के दोनों किनारों पर बसा हुआ था। कहा जाता है कि ब्रह्मपुत्र के उत्तर में जो शहर था उसे कोच राजा परीक्षित ने सोलहवीं शताब्दी के अन्त में बसाया था। मीर जुमला के आक्रमण के समय गौहाटी शहर ब्रह्मपुत्र के उत्तर तरफ बसा हुआ था। परन्तु धीरे धीरे इसकी महत्ता का ह्रास होता गया। सन् १८०९ में बुकानन हेमिल्टन ने इसे अति साधारण स्थान (very poor place) कहा है। सन् १८२६ ई० से १८७४ ई० तक जब कि यह बंगाल से हटा कर एक अलग प्रान्त बनाया गौहाटी ही स्थानीय सरकार का प्रधान स्थान था। यह अब भी कमिश्नर और आसाम घाटी के जिलों के जज का प्रधान स्थान है। सन् १८९७ में इसके इतिहास में एक बहुत बड़ी दुर्घटना हुई। वह उस साल का प्रलयकारी भूकम्प है। इस भीषण भूकम्प ने सारे गौहाटी शहर को भूमिसात् कर दिया। गवर्नमेन्ट ने बड़े खर्चे तथा परिश्रम से इसे फिर से बसाया।

अँग्रेजों ने गौहाटी के जलवायु की बड़ी निन्दा की है। उनकी इसी निन्दा के कारण प्रान्तीय राजधानी यहाँ से उठाकर शिलांग कर दी गई। गौहाटी की जलवायु बड़ी ही अच्छी है। शहर में पानी का कल (पाइप) लग जाने और मोरी (drainage) का समुचित प्रबन्ध हो जाने के कारण गन्दगी दूर हो गई है और स्थान अधिक स्वास्थ्यप्रद हो गया है।

गौहाटी में सर्वप्रथम सन् १८७८ ई० में म्युनिसिपलिटी की स्थापना हुई। इस शहर का क्षेत्रफल २·५५ वर्गमील है। १४ मील सड़क म्युनिसिपलिटी के अन्तर्गत है जिसमें ९½ मील सड़क बिलकुल पक्की है। यहाँ की म्युनिसिपलिटी अच्छी तरह से काम कर रही है। म्युनिसिपलिटी ने शहर में पानी देने के सुविधा के लिये पाइप लगवाया है। यह पानी

ब्रह्मपुत्र से लिया जाता है। इस प्रकार यहाँ दिन दूनो रात चौगुनी उन्नति हो रही है।

गौहाटी के दर्शनीय स्थान

यहां की 'कामरूप-अनुसन्धान-समिति एक बड़ी संस्था है और दर्शनीय स्थान है। इस संस्था ने प्राचीन शोध का कार्य बड़े उत्साह के साथ प्रारम्भ किया है तथा कामरूप के प्राचीन इतिहास का बड़ा उद्धार कर रहा है। यहाँ का काटन कालेज एक प्राचीन कालेज है तथा शिक्षा प्रचार में बड़ी सहायता कर रहा है।

तेजपूर

यह डैरेङ्ग जिले का प्रधान स्थान है और ब्रह्मपुत्र के उत्तरा किनारे पर बसा हुआ है। यहां सुन्दर तालाब और झीलें हैं। यहां का बाजार बड़ा सुन्दर है। इस स्थान के दक्षिण-पश्चिम में वर्ष भर में एक बहुत बड़ा मेला लगता है जिसमें भूटान के घोड़े बिकने के लिये यहां आते हैं। इसी स्थान में चाय का सुप्रसिद्ध आविष्कारक चार्ल्स ब्रूस रहता था। तेजपूर का धार्मिक महत्व भी है।

जोरहाट

यह स्थान शिवसागर जिले में है और शिवसागर शहर से ३५ मील दक्षिण-पूर्व में है। अँग्रेजों के आने के पहिले यह प्राचीन बंश का प्रधान स्थान था और वे यहीं रहते थे। प्राचीन राजाओं के वंशज अब भी यहां निवास करते हैं। १८५७ ई० में प्राचीन राजवंश के एक राजकुमार ने विद्रोह किया था परन्तु सरकार ने अन्त में उस विद्रोह को दबा दिया।

डुबरी

यह गोआलपाड़ा जिले का प्रधान स्थान है और ई० बी० रेलवे का एक प्रधान स्टेशन है। इसे यदि आसाम का द्वार कहें तो कुछ अत्युक्ति न होगी क्योंकि उत्तरी भारत से आसाम जाने के लिये सब से नजदीक रास्ता इसी से हो कर जाता है। कलकत्ते से भी यहां शीघ्र ही पहुँच सकते हैं। यह ब्रह्मपुत्र के उत्तरी किनारे पर बसा हुआ है। कलकत्ते से आने जाने वाली स्टीमरों का यह स्टेशन भी है। ब्रह्मपुत्र में इस स्थान पर एक घाट भी है जिसे 'डुबरी घाट' कहते हैं। यहाँ अफसरों के रहने के लिये सुन्दर बँगले बने हुये हैं।

कामरूप जिले में पुरातत्व सम्बन्धी स्थान

बर-नगर नामक स्थान जो कि कोच राजा बलि नारायण और परीक्षित को राजधानी थी बारपेता से आठ मील उत्तर में है। यह स्थान कोच राजाओं की राजधानी होने के कारण अपना बड़ा ऐतिहासिक महत्त्व रखता है। यह परिवर्तन शील समय के कारण आज जंगली वृक्षों से घिरा हुआ है। परन्तु आज भी फल वाले वृक्षों, तालाब और आदमियों के रहने के लिये निर्मित घरों के कारण इस स्थान का कुछ अन्दाजा लगाया जा सकता है।

कोच राजा नर नारायण ने एक बहुत बड़ी और पक्की सड़क बनवाई। इस सुप्रसिद्ध सड़क का नाम "गोहाइन कमला अली" है। यह उत्तरी कामरूप से मङ्गलदई तक जाती है।

रङ्गिया तहसील में बेटना नामक स्थान के पास वैदरगढ़ नामक एक प्रसिद्ध किला है। यह वर्गाकार है तथा जिन दीवालों से यह घिरा हुआ है उनमें प्रत्येक की लम्बाई चार मील है। इतना विशाल किला साधारणतया देखने में नहीं आता।

खरिजा बेलबरी नामक गांव में भी एक छोटा सा किला है जो फेनगुआगढ़ के नाम से प्रसिद्ध है। यह किला वैदरगढ़ किले से दस मील आगे है।

कमलापुर डाक बंगले से तीन मील की दूरी पर सिल सिन्दुर घोप नामक गांव में सन् १८९७ ई० के भूकम्प के पहिले एक पत्थर का पुल था। यह विशाल पुल १४६ फीट लम्बा था। इसके सब पाये ठोस पत्थर के बने हुये थे और रास्ता भी पत्थर का था। नदी के सूख जाने पर भी यह पुल बना रहा परन्तु अब यह बिलकुल नष्टप्राय हो गया है।

गौहाटी के पास, ब्रह्मपुत्र के किनारे स्थित शुक्लेश्वर मन्दिर के नीचे पहाड़ी पत्थरों के ऊपर बड़ी ही सुन्दर रीति से नक्काशी का काम किया गया है। इसमें विष्णु की मूर्ति बनी हुई है। इस मूर्ति के दक्षिण में सूर्य और गणेश हैं और दाहिनी ओर दुर्गा की मूर्ति है। कामाख्या पहाड़ी के पश्चिम ओर में पत्थर की अनेक मूर्तियाँ, लिङ्ग और मन्दिर पत्थर को काट कर बनाये गये हैं। डैरेङ्ग जिले के तेजपूर नामक स्थान में प्राचीन राजाओं के अनेक शिलालेख मिले हैं।

खासी पहाड़ी

खासी की पहाड़ियों में यद्यपि पुरातत्व सम्बन्धी कोई विशेष वस्तु नहीं मिलती फिर भी कुछ चीजें हैं जो दृष्टि को आकर्षित कर लेती हैं। खासी लोगों ने मृत पुरुषों की स्मृति में अनेक विशालकाय पत्थर (monolith) गाड़ रक्खा है। ये पत्थर एक ही विशाल पत्थर के बने हुए हैं और इस जिले के स्थानों में सर्वत्र पाये जाते हैं। ये प्रायः पंक्तियों में रक्खे जाते हैं। इनमें बीच का पत्थर सब से बड़ा होता है। इनमें से कुछ पत्थरों की लम्बाई चौड़ाई बहुत ही बड़ी होती है। एक स्थान पर एक पत्थर की ऊँचाई २६ फीट ६ इंच, चौड़ाई ६ फीट ६ इंच और मोटाई २ फीट ३ इंच है। ये पत्थर प्रायः रास्तों के नजदीक रक्खे जाते हैं।[1]

चेरापूँजी में ठोस पत्थर के कुछ ऐसे प्लेट फार्म बने हुए हैं जिन पर चेरा स्टेट के राजघराने के लोग जलाये जाते थे[2]। इसके अतिरिक्त और भी अनेक स्थान पुरातत्त्व संबंधी महत्त्व के हैं जो काल के फेर से पृथ्वी के गर्भ में अभी तक पड़े हैं।

व्यापारिक

गोआलपाड़ा

यह इसी नाम के जिले में एक साधारण कस्बा है। डुबरी के प्रधान शहर हो जाने के कारण यह अब उजाड़ सा हो गया है। यह व्यापारिक स्थान है। यहां नावों तथा स्टीमरों के द्वारा तेलहन, सूखा मिर्चा और लाह का व्यापार होता है।

नवगाँव

यह नवगांव जिले का प्रधान स्थान है। यहाँ का जलवायु अत्यन्त गर्म है। यहां सुपारी, पान, ईख, चावल तथा रेशम बहुत पैदा होता है। तथा इसका बड़ा व्यापार होता है। इस स्थान में चाय के बगीचे बहुत हैं अतः व्यापार की चीजों में चाय भी मुख्य हैं।

डिब्रूगढ़

यह लखीमपूर जिले का प्रधान स्थान है यह स्टीमरों का अन्तिम स्टेशन है और आसाम के प्रधान शहरों में से एक है। यह एक व्यापारिक स्थान है। यहां भी चाय बहुत अधिक पैदा होती है। अतः चाय बगानों की बड़ी अधिकता है। जिनमें उत्तरी भारत के कुली जाकर काम करते हैं। यह ब्रह्मपुत्र के किनारे बसा हुआ है तथा रेल का अंतिम स्टेशन है।

सदिया

यह आसाम की सुदूर उत्तर-पूर्वी सीमा पर ब्रह्मपुत्र के किनारे बसा हुआ है यह 'सदिया-फ्रांटियर ट्रेक्ट' का प्रधान स्थान है। अँग्रेजी राज्य के पहिले पहाड़ी जातियाँ यहां आकर बड़ा उत्पात मचाती थीं परन्तु अब यह दशा नहीं है।

चेरापूँजी

यह खसिया पहाड़ी में बसा हुआ है तथा शिलांग के दक्षिण में स्थित है। समुद्र की सतह से यहां की ऊँचाई ४,४५५ फुट है। इस स्थान को प्रसिद्धि इसलिये है कि यहां पर संसार में सब से अधिक वर्षा होती है। कभी कभी साल में ५०० इंच तक पानी बरसता है। अनेक झरने और सोते होने के कारण स्थान बड़ा ही रमणीय है।

माकूम

यह स्थान लखीमपूर जिले में है। यहां पर कोयले की बहुत बड़ी खानें हैं। जिनमें से उत्तम कोटि का कोयला निकाला जाता है। यहां कोयला उत्तमता में ब्रिटिश कोयले से टक्कर लेता है। यहाँ के सोतों से पेट्रोलियम भी निकाला जाता है। यह स्थान एक छोटा सा कस्बा है। केवल कोयलों की खान होने के कारण ही यह प्रसिद्ध है।

डिगबोई

यह भी एक छोटा सा कस्बा है। यह अपने तेल के सोतों के लिये प्रसिद्ध है। यहाँ पर तेल के अनेक बड़े बड़े सोते हैं जिनसे तेल निकाला जाता है इस कार्य को सुचारु रूप से करने के लिये अनेक मशीनरी काम किया करती हैं।

कोहिमा

यह नागा पहाड़ियों में एक प्रधान स्थान है। यहां पर एक व्यवसायिक स्कूल है जिसे 'फुलर टेक्निकल स्कूल' कहते हैं।

१—आसाम डिस्ट्रिक्ट गजेटियर भाग १० (दि खासी एण्ड जयन्तिया हिल्स, दि गारो हिल्स एण्ड दी लुशाई हिल्स) पृ० ४३-४४। २—वही।

राजनैतिक इतिहास

भूमिका

हिन्दुओं के महाभारत, पुराण तथा तन्त्र साहित्य में आसाम का नाम बहुधा मिलता है। प्राचीन काल में इस प्रान्त का नाम 'कामरूप' था और इन ग्रन्थों में इसका इसी नाम से उल्लेख किया गया है। प्राचीन समय में 'कामरूप' की सीमा समय समय पर बदलती रही है। महाभारत के समय में यह देश दक्षिण में बंगाल की खाड़ी तक फैला हुआ था और इसकी पश्चिमी सीमा करतोया नदी थी। कालिका पुराण में कहा गया है कि गौहाटी के समीप में स्थित कामाख्या का मन्दिर 'कामरूप' के मध्य में था। विष्णु पुराण में ऐसा लिखा मिलता है कि इस कामाख्या देवी के मन्दिर के चारों ओर यह देश सौ योजन (४०० मील) में फैला हुआ था। योगिनी तन्त्र में ऐसा वर्णन मिलता है कि 'कामरूप' का विस्तार बड़ा था इसके पश्चिम में करतोया नदी, पूर्व में दिक्करङ्ग, उत्तर में काञ्चन और गिरिकन्या का पर्वत तथा दक्षिण में ब्रह्मपुत्र और लक्ष्मी नदियों का संगम था अर्थात् साधारणतया तत्कालीन कामरूप के अन्तर्गत आजकल के ब्रह्मपुत्र की घाटी, भूटान, रङ्गपूर तथा कूचविहार के प्रदेश सम्मिलित थे। इसी ग्रन्थ में यह भी लिखा मिलता है कि तत्कालीन 'कामरूप, कामपीठ, रत्नपीठ, सुवर्णपीठ तथा सौमारपीठ'—इन चार पीठों में विभक्त था। महाकवि कालीदास के रघुवंश में भी इस देश का नामोल्लेख मिलता है। जब राजा रघु ने दिग्विजय के प्रसङ्ग में लौहित्य (आधुनिक ब्रह्मपुत्र) नदी को पार कर लिया, तब 'कामरूप' का राजा डरा और भेंट स्वरूप उसने उन्हें बहुत से हाथी दिये[1]।

नरक तथा भगदत्त

आसाम के प्राचीन इतिहास का कुछ ठीक ठीक पता नहीं चलता। न तो उस इतिहास को जानने की कोई अन्य साधन ही है। जो कुछ तत्कालीन इतिहास उपलब्ध है वह दन्तकथाओं, किस्से, कहानियों के मोटे आवरण में ढका हुआ है। इन दन्तकथाओं में कितना ऐतिहासिक अंश है, यह कहना इस समय बड़ा कठिन है। इतनी शताब्दियों के पश्चात् उनमें से सत्य का अंश निकालना कुछ हँसी खेल नहीं है। अतः आसाम के प्राचीन इतिहास के विषय में किसी क्रमबद्ध इतिहास के अभाव में इन दन्तकथाओं पर ही अवलम्बित होना पड़ता है तथा उन्हीं के सहारे उस समय का इतिहास तैयार करना पड़ता है।

आसाम की उन प्राचीन दन्तकथाओं से पता चलता है कि 'कामरूप' का प्रथम राजा 'नरक' था। उसने प्राग्ज्योतिषपुर (आधुनिक गौहाटी) को अपनी राजधानी बनाई तथा अनेक ब्राह्मणों को कामाख्या के पास बसाया। तन्त्र-शास्त्र तथा पुराणों में इस नरक राजा के विषय में अनेक कहानियाँ मिलती हैं। यह बहुत ही धार्मिक राजा था इसके बाद इसका

१—तमीशः कामरूपानामत्याखालदिक्रमम्।
भेजे भिन्नकरैर्नागैरन्यारूपकरोध यैः॥ रघुवंश ४।८३

लड़का भगदत्त जो कि नरक के चार लड़कों में सबसे बड़ा था गद्दी पर बैठा। यह भगदत्त बड़ा प्रसिद्ध राजा था। इसका वर्णन महाभारत में बहुधा पाया जाता है। महाभारत के सभा पर्व में ऐसा लिखा मिलता है कि अर्जुन ने प्राग्ज्योतिषपुर पर चढ़ाई की। भगदत्त ने अपने सैनिकों के साथ अर्जुन का मुकाबिला किया, परन्तु आठ दिन की लड़ाई के बाद वह हार गया। अन्त में महाभारत की लड़ाई में उसने दुर्योधन की सहायता की तथा रणक्षेत्र में अर्जुन के हाथों मारा गया।

वर्मन् राजवंश

जैसा कि पहिले लिखा जा चुका है कामरूप का सबसे प्राचीन राजा नरक था तथा उसका लड़का भगदत्त एक प्रतापशाली नरेश था जिसने महाभारत की लड़ाई में भी भाग लिया था। राजा भास्कर वर्मन् के निधनपूर ताम्र पत्र के अनुसार भगदत्त के एक प्रतापशाली नरेश था जिसने महाभारत की लड़ाई में भी भाग लिया था। राजा भास्कर वर्मन् के निधनपुर ताम्रपत्र के अनुसार भगदत्त के पश्चात् तीन हजार वर्ष के विशाल अन्तर में उसी वंश के राजा राज्य करते थे। जिनका कुछ ठीक विश्वासनीय इतिवृत्त उपलब्ध नहीं है।

ईसा की चौथी शताब्दी के प्रथम भाग में हम कामरूप में एक शक्तिशाली राजवंश का प्रादुर्भाव पाते हैं। यह प्रसिद्ध राजवंश कामरूप के **वर्मन् राजवंश** के नाम से विख्यात है। इस वंश का सर्व प्रथम राजा पुष्य वर्मन् था जो कि महामहोपाध्याय पद्मनाथ भट्टाचार्य[1] के मत के अनुसार ईसा की चौथी शताब्दी के प्रथम भाग में प्रादुर्भूत हुआ था। सम्भवतः यह राजा गुप्त राजा चन्द्रगुप्त प्रथम का समकालीन था। पुष्प वर्मन् के पुत्र का नाम समुद्र वर्मन् था। निधनपुर वाले ताम्र लेख में इसकी उपमा पंचम समुद्र से दी गई है।[2] इसके राज्य में

1—कामरूप शासनावली पृष्ठ २८ फुटनोट ६

2—डा० आर० जी० बसाक हिस्ट्री आफ नार्थ इस्टर्न इण्डिया पृष्ठ २११।

किसी प्रकार की अशान्ति नहीं थी। यह प्रभूत धन सम्पन्न राजा था। कालिदास ने रघुवंश में[1] रघु के जिस आक्रमण का कामरूप के ऊपर वर्णन किया है उसे यदि हम समुद्रगुप्त का आक्रमण मान लें तो सम्भवतः वह आक्रमण इसी समुद्र वर्मन् के समय में हुआ था जैसा कि कालिदास ने लिखा है उसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि इस राजा ने उस प्रबल गुप्त सम्राट को उपहार में अमूल्य हाथी प्रदान करके उसे संतुष्ट कर दिया।[2] इस प्रकार से इसने अपने राज्य को गुप्त साम्राज्य में मिलाये जानेसे बचा लिया अपनी स्वतंत्रता सुरक्षित रक्खी।

समुद्र वर्मन् के उत्तराधिकारी का नाम बल वर्मन् था। इसके पास बड़ी शक्तिशाली सेना थी जिससे वह शत्रुओं को सदा युद्ध में परेशान किये रहता था। इसके बाद इसका लड़का कल्याण वर्मन् राजा हुआ। यह सब प्रकार के दुर्गुणों से मुक्त था। दूसरे राजा का नाम गणपति (वर्मन्) था। यह बड़ा धार्मिक राजा था तथा अपने दान के लिये प्रसिद्ध था इसका जन्म संसार में शान्तिस्थापना के लिये हुआ था। इसके पश्चात् महेन्द्र वर्मन् राजा हुआ। यह यज्ञ यज्ञादिक का बहुत बड़ा पक्षपाती था (यज्ञ विधीनामास्वदम्) इसका पुत्र नारायण वर्मन् राजा हुआ। यह राजा अपने सेना तथा राजनीति विषयक ज्ञान के लिये प्रसिद्ध था। यह एक सुयोग्य शासक था। इसने अपने राज्य में शान्ति की स्थापना की। इसका सुयोग्य पुत्र महाभूत वर्मन् हुआ जो कि भूतिवर्मन् के नाम से अधिक प्रसिद्ध है। यह शिव का बहुत बड़ा उपासक था। इसके राज्य की सबसे महत्वपूर्ण घटना यह है कि उसने कामरूप के राज्य को जो कि अब तक गुप्त सम्राटों की अधीनता में था बन्धन मुक्त कर दिया तथा इसे बिलकुल स्वतंत्र राष्ट्र बनाया।

इसने अपने प्रचण्ड तेज तथा पराक्रमी बाहुओं के

1—चकम्पे तीर्ण लौहित्ये तस्मिन प्राग्ज्योतिषेश्वरः।
रघुवंश चतुर्थ सर्गः

2—तमीशः कामरूपाणामत्याखण्डल विक्रमम्।
भेजे भिन्नकटैः नागैरन्यानुपरुरोध यैः॥ रघुवंश ४-८३

बल से अनेक राजाओं को अपनी अधीनता में कर लिया। इसका समय छठीं शताब्दी का प्रारम्भ है। भूति वर्मन् के पश्चात् इसका लड़का चन्द्रमुख वर्मन् राजा था। यह बड़ा गुणी तथा कला-कोविद था और अपनी प्रजाओं के अन्धकार को इसने चूर किया। इसका उत्तराधिकारी स्थित वर्मन हुआ। यह बड़ा भाग्यशाली था। इसका कोष सदा धन से भरा रहता था। पश्चात् इसका पुत्र सुस्थित वर्मन् (उपनाम श्री मृगाङ्क) राजा का मालिक हुआ। यह महाराजाधिराज की महत्वपूर्ण उपाधि धारण करता था। पश्चात् के गुप्त नरेश महासेन गुप्त ने इनके ऊपर चढ़ाई कर दी। तथा उसने विजय प्राप्त की। सुस्थित वर्मन् इस युद्ध में पराजित हो गया। सुस्थित वर्मन् के दो पुत्र थे बड़े का नाम सुपरिष्ठित था तथा छोटे का नाम कुमार भास्कर वर्मन् था। भास्कर वर्मन् कुमार के नाम से अधिक प्रसिद्ध था। बाण ने अपने हर्ष चरित में इसे 'कुमार राज लिखा है। भास्कर वर्मन् के जेठे भाई सुप्रतिष्ठित वर्मन् ने कभी राज्य किया या नहीं इसमें सन्देह ही है। निधनपुर ताम्र लेख से पता चलता है कि इसका धन दूसरे का भलाई के लिये था (यस्योन्नतिः परार्था) यह सम्भव है कि इसने कुछ दिनों तक राज्य किया हो परन्तु इनके पश्चात् अपने छोटे भाई की योग्यता देखकर राज्य का परित्याग कर दिया हो। अनेक प्रबल प्रमाणों के बल पर अन्त में यह कहा जा सकता है कि अल्प काल के लिये सुप्रतिष्ठत वर्मन् ने राज्य किया इसके पश्चात् इसके छोटे भाई सुप्रसिद्ध भास्कर वर्मन् ने राज्य किया।

कुमार भास्कर वर्मन्

भास्कर वर्मन् वर्मन् राजवंश का सबसे बड़ा तथा सबसे प्रसिद्ध राजा था। वर्मन् राजवंश में राजा कोई हुआ ही नहीं। इसने अपनी राजनीति निपुणता कूट नीतिज्ञता तथा "अजयं संगतम्" केवल सना समस्त कामरूप ही पर अपनी विजय वैजयन्ती फहराई, थी प्रत्युत प्रचण्ड पराक्रमी, हिन्दू धर्म के प्रबल पक्षपाती, गौड़ाधिप शशाङ्क के कर्णसुवर्ण नामक प्रदेश भाग को भी हस्तगत कर लिया था। यह अपने समय का बड़ा ही दूरदर्शी तथा चलता पुर्जा राजा था। उसने अपने राज्य का बिस्तार इतना अधिक कर लिया था कि इसकी मृत्यु के बाद कोई भी राजा इसे सुरक्षित न रख सका। पराक्रमी शशाङ्क के पंजे से कामरूप के राज्य को बचाना भास्कर वर्मन् की ही बुद्धि का काम था।

भास्कर वर्मन् के जीवन की प्रधान घटना उसकी थानेश्वर के नरेश महाराज हर्ष वर्धन से मैत्री करनी है। शशाङ्क ने कन्नौज पर चढ़ाई करके हर्षवर्धन के बड़े भाई राजवर्धन को मार डाला था। तथा उसने राज्यश्री के पति मौखरी राजा ग्रहवर्मन् को भी युद्ध में परास्त कर दिया था। इधर शशाङ्क ने मालवा के राजा से मैत्री भी कर ली थी। ऐसे अवसर का उपयोग करना भास्कर वर्मन् ने उचित समझा। उसे स्वयं शशाङ्क के द्वारा कामरूप पर आक्रमण करने का डर था। ऐसी दशा में हर्षवर्धन को अपना सहधर्मी समझकर उसने थानेश्वर के नरेश से मैत्री करने का प्रस्ताव एक दूत के द्वारा भेजा। मैत्री का प्रस्ताव पाकर हर्ष बड़ा प्रसन्न हुआ तथा स्वयं भास्कर वर्मन् से मिलने की इच्छा प्रगट की। तदनुसार भास्कर वर्मन् हर्ष से स्वयं मिला तथा उससे मैत्री कर ली। डा० बसाक का मत है कि सम्भवतः हर्ष ने भास्कर वर्मन् के साथ शशाङ्क पर दूसरी बार चढ़ाई की तथा शशाङ्क को हरा दिया। फलस्वरूप हर्षवर्धन ने भास्कर वर्मन् के राज्य काल में ही सुप्रसिद्ध चीनी यात्री हवेनशाङ्ग कामरूप में आया था। उसने इस देश का जो वर्णन किया है वह आगे दिया जायगा।

चरित्र

भास्कर वर्मन् का हृदय उदार था। यद्यपि वह कट्टर ब्राह्मण धर्मावलम्बी था फिर भी अन्य धर्म की बातें बड़ी उदारता से सुनता था। वह बड़ा सहनशील था। वह स्वयं शैव था और अपनी प्रजाओं पर भी बड़ा प्रभाव रखता था। वह वर्ण तथा आश्रम की रक्षा के लिये सदा तत्पर रहता था। वह दान में शिवि तथा प्रज्ञा में बृहस्पति था।[1]

१—डा० आर० जी० बसाक—हिस्ट्री आव नार्थ-ईस्टर्न इण्डिया पृष्ठ २३२।

वर्मन् राजवंश में कितने राजाओं ने राज्य किया तथा उनका राज्य काल किस शताब्दी में था इसका ब्यौरा इस प्रकार है :—

सातवीं शताब्दी में कामरूप की अवस्था

कुमार भास्कर वर्मन् के समय में चीन का सुप्रसिद्ध बौद्ध यात्री ह्वेनसाङ्ग कामरूप में आया था। इसने तत्कालीन कामरूप की सामाजिक तथा धार्मिक अवस्था का बड़ा ही सुन्दर वर्णन अपने यात्रा विवरण में किया है। यह चीनी यात्री भास्कर वर्मन् के विशेष आग्रह और निमन्त्रण पर कामरूप में आया था। यह ६३०-४५ ई० तक भारत के भिन्न-भिन्न भागों में भ्रमण करता रहा। भास्कर वर्मन् के दरबार में इसका बड़ा स्वागत हुआ। इसने भास्कर वर्मन् को ब्राह्मण जाति का होना लिखा है जो उसकी सरासर भूल है। इसके अतिरिक्त इसने जो विवरण लिखा है उससे पता चलता है कि प्रजा कितनी धार्मिक और सच्ची थी और उस समय किस धर्म की प्रधानता थी। ह्वेनसाङ्ग का निम्नांकित विवरण अनेक दृष्टियों से बड़ा ही महत्त्व-पूर्ण है।

"कामरूप का देश १०,००० ली (१५०० मील) में फैला हुआ है तथा राजधानी ३० ली में फैली है। जमीन उपजाऊ है। नियमपूर्वक खेती होती है। नदियों का पानी शहरों से होकर बहता है। यहां के निवासी नाटे क़द के है और उनका रंग काला, पीला है। मनुष्यों का रहन सहन सादा है और वे बड़े ईमानदार हैं। उनकी भाषा मध्य भारत की भाषा से भिन्न है। जलवायु शीतोष्ण है। मनुष्यों की स्मरण शक्ति तीक्ष्ण है और वे विद्या व्यसनी हैं। लोग मूर्तियों की पूजा करते हैं तथा देवताओं को बलिदान चढ़ाते हैं। बुद्ध धर्म में इनका विश्वास नहीं है और इन्होंने एक भी संघाराम नहीं बनवाया है। देश में देव मन्दिरों की प्रचुरता है। राजा ब्रह्मण जाति का है और उसका नाम कुमार भास्कर वर्मन् है। यद्यपि राजा बुद्ध धर्म में विश्वास नहीं रखता तथापि वह श्रमणों का आदर करता है।"

शालस्तम्भ का राजवंश

परम प्रतापी भास्कर वर्मन् की मृत्यु के बाद कामरूप में विद्रोह मच गया। उस वंश का कोई भी राजा ऐसा शक्तिशाली नहीं था जो राज्य-भार को सँभाल सके। अतः इस वंश का सर्वदा के लिये नाश हो गया और इसके स्थान पर एक म्लेच्छ राजवंश स्थापित हुआ। इस नये राजवंश का सम्भवतः सब से पहिला राजा शालस्तम्भ था, जिसने सातवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में राज्य किया।[1] इस राजवश की राजधानी हरूप्पेश्वर थी जो लौहित्य नदी के किनारे बसी हुई थी। इस वंश ने लगभग तीन शताब्दी तक राज्य किया तथा इसका अन्तिम राजा त्यागसिंह था। शालस्तम्भ के बाद उसके लड़के विजय ने राज्य किया। तत्पश्चात् क्रमशः पालक, कुमार और बज्रदत्त ने शासन किया। इस वंश के राजाओं ने ८५० ई० तक राज्य किया। हर्जर वर्मन् के एक शिला लेख से पता लगता है कि बज्रदत्त के बाद कामरूप में हर्ष (प्राकृत रूप हरीश) नामक राजा शासन कर रहा था। यह राजा बड़ा ही उदार-चेता, धार्मिक और सुयोग्य शासक था। यह अपनी प्रजा को पुत्र के समान समझता था और किसी भी प्रकार का अत्याचार नहीं करता। कामरूप के इस पराक्रमी राजा ने उत्तर-पूर्वी भारत के अन्य देशों को भी जीत लिया था। नैपाल के राजा जयदेव द्वितीय के एक शिलालेख से पता चलता है कि इस राजा ने गौड़, उड़, कलिंग और कोशल आदि देशों को अपनी (हाथियों की) सेना से पराजित कर दिया था। इसने उपर्युक्त नैपाल-राजा से अपनी लड़की राज्यमती का विवाह कर दिया। यह निश्चित रूप से नहीं जाना जा सकता कि हर्ष ने जिन देशों को जीता था उन्हें अपने साम्राज्य में सम्मिलित भी किया अथवा नहीं।

प्रलम्भ का राजवंश

(८५०–१०००)

शालस्तम्भ के बाद प्रलम्भ राजवंश राज्य करने लगा जिसका पहिला राजा प्रलम्भ था। ऐसा अनुमान किया जाता है कि उसने ८५० ई० के आस-पास शासन की बागडोर अपने हाथ में ली। इस राजवंश के तीन लेख मिलते हैं। यह कहना कठिन है कि श्री हरीश के मरते ही प्रलम्भ ने राज्य ले लिया अथवा बाद में। प्रलम्भ ने पूर्व राजवंश के उत्तराधिकारी लोगों को मार भगाया। इसकी स्त्री का नाम जीवादा था। प्रलम्भ के लड़के का नाम हरज्जर तथा इसके पुत्र का नाम वनमाल था। वनमाल शिव का बहुत बड़ा उपासक था। इसने बहुत दिनों तक राज्य किया। इसके राज्य का विस्तार समुद्र तक फैला हुआ था। वनमाल का लड़का जयमाल हुआ। यह धार्मिक प्रवृत्ति का राजा था। जब इसका पुत्र वीरवाहु शासन करने के योग्य हुआ तब इसने स्वतः राज्य छोड़ दिया। बल वर्मन् वीरवाहु का लड़का था।

पाल राजवंश

१००० ई० के लगभग तत्कालीन शासक त्याग सिंह था। इसके कोई लड़का न था। अतः इसकी मृत्यु के पश्चात लोगों ने ब्रह्मपाल को राजा बनाया। इसने कुलदेवी नामक एक स्त्री से विवाह किया। यह शान्त प्रकृति का राजा था। जब इसका लड़का रत्नपाल सयाना हुआ तब इसने स्वयं राज्य छोड़ दिया। रत्नपाल बड़ा बहादुर तथा वीर शासक था। रत्नपाल की मृत्यु के बाद उसका नाती इन्द्रपाल गद्दी पर बैठा। सन् ११३२ ई० में तिष्यदेव को जो कि उस समय प्राग्ज्योतिष का राजा था कुमारपाल से विद्रोह करने के कारण वैद्यदेव ने परास्त किया और युद्ध में मार डाला। इन पाल राजाओं की राजधानी दुर्जय ।

कोच राजा

पाल वंश की समाप्ति के बाद आसाम में कोच राजाओं का राज्य हुआ। इन कोच राजाओं का आदि पुरुष हरिया मण्डल था जो कि गोआलपारा जिले के चिकनग्राम का रहने वाला था। इसने जो कि एक अत्यन्त साधारण स्थिति का आदमी था— अपनी वीरता तथा प्रभाव से आस पास के राजाओं को परास्त कर दिया और कुछ ही दिनों में एक

१—डा० आर० जी० बसाक—हिस्ट्री आफ नार्थ ईस्टर्न इण्डिया, पृ० २३८।

इसने अपने लिये साम्राज्य स्थापित कर लिया। इसके साम्राज्य की पश्चिमी सीमा करतोया नदी और पूर्वी बर नदी थी। यह १५१५ ई० में राजा हुआ। हरिया मण्डल ने हिन्दू धर्म को स्वीकार कर लिया तथा इसके दो लड़के विसु और सिसु ने क्रमशः विश्वसिंह और शिवसिंह की उपाधि धारण की। ये लोग अपने को क्षत्रिय मानने लगे।

विश्व सिंह

(१५०१-१५४० ई०)

विश्वसिंह कोच साम्राज्य की स्थापना करने वाला माना जाता है। यह बड़ा ही प्रतापी तथा हिन्दू धर्म की रक्षा करने वाला था। यह दुर्गा तथा शिव का परम उपासक था। इसने ब्राह्मणों तथा ज्योतिषियों को दान दिया और इसने कामाख्या की पूजा का पुनरुद्धार किया। नीलाचल पर्वत पर इनके मन्दिर का पुनर्निमाण कराया और कन्नौज से अनेक ब्राह्मणों को बुलाकर वहां बसाया।

इसने चिकनग्राम से अपनी राजधानी को हटा कर कूच-विहार ले आया। इसने अपने साम्राज्य का संगठन किया। राज्य की मनुष्य-गणना भी करवाई। विश्वसिंह के दो लड़के थे मल्लदेव और शुक्लध्वज। इसकी मृत्यु सन् १५४० ई० में हुई।

नर नारायण

(१५३४–८४)

विश्वसिंह की मृत्यु के बाद उसका लड़का मल्ल देव गद्दी पर बैठा। इसने नर नारायण का नाम धारण किया। यह कोच राजाओं में सब से प्रसिद्ध राजा था। इसके समय में कोच साम्राज्य अपनी उन्नति की पराकाष्ठा पर पहुँच गया था। इसने अपने भाई शुक्लध्वज को जिस के सिलराय (Silarai) भी कहते हैं—प्रधान सेनापति बनाया। नर नारायण को शीघ्र आहोम राजाओं से घनघोर लड़ाई लड़नी पड़ी। कई बार इसकी सेना हार गई परन्तु फिर अन्त में यह विजयी कचारियों से भी युद्ध किया और मनीपुर के राजा को अपने आधीन कर लिया। यह इतना बड़ा प्रतापी राजा था कि जयन्तिया, तिपैरा और सिलहट के राजाओं को भी उसने परास्त कर दिया। नरनारायण का हृदय विशाल था और चरित्र उच्च था। यह अपने भाई को बड़ा मानता था। इसने कामाख्या के मन्दिर का पुनर्निर्माण कराया जिसे मुसलमान आक्रमण का काला पहाड़ १५५३ ई० में विध्वंस कर दिया था। नर नारायण का राज्य-काल वैष्णव धर्म में सुधार के लिये—जिसे शंकर देव ने चलाया था—प्रसिद्ध है। इसने अनेक विद्वानों को ग्रन्थ रचना के लिये प्रोत्साहित किया। इसने अच्छी अच्छी सड़कें बनवाईं। इसकी मृत्यु सन् १५८४ ई० में हुई।

लक्ष्मी नारायण और रघु देव

रघुदेव शुक्लध्वज सिंह का लड़का था। अतः इस प्रकार वह नर नारायण का भतीजा था। शुक्लध्वज सिंह ने अपनी मृत्यु के समय अपने इस पुत्र को नर नारायण की शरण में रख दिया था। परन्तु पिता की मृत्यु के बाद रघुदेव अपने चाचा नर नारायण से विद्रोह करने लगा। अतः राज्य में किसी प्रकार की गड़बड़ी न हो इसलिये नर नारायण ने अपने साम्राज्य के दो टुकड़े कर डाले (१) कुच बिहार का राज्य अपने लड़के लक्ष्मी नारायण के हाथ में सौंप दिया और कुच हाओ का राज्य अपने भतीजे रघुदेव को दे दिया।

रघुदेव

रघुदेव साधारण कोटि का राजा था। न तो उस में अपने पिता की भांति सेनापति के गुण थे और न पितृव्य के समान विशाल हृदयता तथा चरित्र की विशुद्धता थी। कुछ दिनों बाद ईशा खाँ नामक एक मुसलमान सरदार से इसकी लड़ाई छिड़ी और वह परास्त हुआ। रघुदेव ने हाजो के हयग्रीव मन्दिर का पुनर्निर्माण कराया जिसे काला पहाड़ ने नष्ट भ्रष्ट कर दिया था। सन् १५९३ ई० में रघुदेव की मृत्यु हो गई।

परीक्षित

यह रघुदेव का पुत्र था। अपने पिता ही की भांति इसने भी लक्ष्मी नारायण की अधीनता स्वीकार करने से इन्कार कर दिया। लक्ष्मी नारायण और

परीक्षित में बड़ी घनघोर लड़ाई हुई और अन्त में परीक्षित पकड़ा गया और बुरी तरह से मारा गया।

बलिनारायण

यह कोच राजवंश का अन्तिम राजा था। यह परिक्षित का भाई था। यह बड़ा कमज़ोर राजा था। इसकी मृत्यु के साथ ही कोच राजवंश का सदा के लिये नाश हो गया।

मुसलमानों के आक्रमण

यह कहना अनुचित होगा कि आसाम पर मुसलमानों का आक्रमण हुआ ही नहीं। इन्होंने आसाम पर अनेक शताब्दियों तक आक्रमण किया। परन्तु यह कथन एक निश्चित सत्य है कि आसाम पर मुसलमानों की दाल नहीं गलने पाई और उस प्रान्त में इनके पैर कभी नहीं जम सके। कई बार तो इन्होंने गौहाटी तक आक्रमण करने का साहस ही नहीं किया बल्कि उसे अपने कब्जे में भी कर लिया परन्तु कुछ ही दिनों के बाद इन्हें उल्टे पाँव वहाँ से लौटना पड़ा और भागते भागते जान बचाना भी मुश्किल हो गई। आसामियों ने कभी भी अपने प्रान्त इनके स्थायी अधिकार में नहीं आने दिया और इसे सदा स्वतंत्र रक्खा। आसाम प्रान्त पर मुसलमानों के आक्रमण एक ही समय में नहीं हुये बल्कि ये अनेक शताब्दियों तक क्रमशः होते चले आये। इनके इन आक्रमणों का वर्णन १२वीं से १७वीं अर्थात् पांच शताब्दियों के विस्तृत काल में बिखरा पड़ा हुआ है। यदि इन आक्रमणों का यथास्थान वर्णन किया जाय तो शृंखला टूटी सी जान पड़ती है अतः इस स्थान पर मुसलमानों के समस्त परन्तु प्रधान और प्रसिद्ध आक्रमणों का एकत्र वर्णन किया जाता है जिससे शृंखला टूटी न जान पड़े और रस भंग न हो।

मुहम्मद बख्तियार खिलजी

(११९८ ई०)

सन् ११९८ ई० में मुहम्मद बख्तियार खिलजी ने बंगाल के अन्तिम सेन राजा लखमनिया को परास्त किया। ततपश्चात् उसने आसाम पर चढ़ाई कर दी। उसी समय कामरूप के राजा 'कामेश्वर' मुकाबिला के लिये तैयार हुआ। बख्तियार ने भागकर एक मन्दिर में शरण ली। परन्तु वहाँ भी उसकी जान नहीं बची। वहां से भागा। वहाँ से उसने अपनी सेना के साथ जल्दी में एक नदी को पार करना चाहा। नदी में पुल न होने से उसकी सेना के अधिक आदमी डूब कर मर गये। बख्तियार किसी प्रकार बच गया। वह भागा सो फिर लौट कर नहीं आया।

गयासुद्दीन

यह ईसा की तेरहवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में बंगाल का गवर्नर था। कहा जाता है कि इसने सदिया तक आक्रमण किया था। परन्तु अन्त में परास्त होकर गौर को भाग गया। यह घटना सन् १२२७ ई० के लगभग की है।

तुगरिल खाँ

दूसरा आक्रमण तुगरिल खाँ का था जो १२७८ में हुआ था। कुछ समय तक तो उसे सफलता मिली परन्तु अन्त में कामरूप के राजा के द्वारा वह मार डाला गया।

मुहम्मद शाह

सन् १३३७ ई० में मुहम्मद शाह ने अपने एक लाख घुड़सवारों को आसाम पर आक्रमण करने के लिये भेजा। परन्तु समस्त सेना नष्ट हो गई और कुछ भी शेष न बची।

हुसेन शाह

कामतापुर में कामता राजवंश राज्य करता था। यहाँ के राजा खेन (Khen) कहलाते थे। नीलाम्बर इस वंश का अन्तिम राजा था। हुसेन शाह ने सन् १४९८ ई० में इस राजा को परास्त कर दिया। हुसेन शाह ने कामतापुर को जीत लिया। उसने अपने लड़के को शासन करने के लिये वहाँ छोड़ दिया। लड़के ने आहोम राजाओं से बरबस लड़ाई ठान ली और हार कर भाग गया। इस प्रकार कामतापुर से मुसलमानी अधिकार सदा के लिये जाता रहा।

शेख अलाउद्दीन फतेहपुरी इस्लाम खाँ की मृत्यु और सैयद हकीम का आक्रमण

शेख अलाउद्दीन फतेहपुरी इस्लाम खाँ बङ्गाल का गवर्नर था। इसकी मृत्यु के बाद शेख कासिम बंगाल का गवर्नर नियुक्त किया गया। मुकर्रम खाँ जो परीक्षित से छीने गये राज्य का गवर्नर था शेख कासिम से लड़ बैठा। फल स्वरूप शेख कासिम उसे दबाने और अहोम राज्य पर आक्रमण करने के लिये सैयद हकीम को भेजा। आहोम लोगों ने इस मुसलमान आक्रमणकारी का घनघोर विरोध किया मुसलमानों और आहोम लोगों में बहुत दिनों तक घनघोर लड़ाई होती रही। अन्त में जब दोनों दल लड़ते लड़ते थक गये तब उन्होंने सन्धि कर लेना ही उचित समझा। परन्तु आहोम लोगों ने फिर लड़ने की ठानी और इस लड़ाई में मुसलमानों को परास्त कर दिया और उन्हें आसाम प्रान्त से खदेड़ दिया। यह घटना १६१५ ई० के आस पास की है।

पुनः मुसलमानों का आक्रमण
(१६३८ ई०)

सन् १६३८ ई० में मुसलमानों की सेना कुच बिहार के राजा प्राण नारायण के साथ आहोम राज्य पर फिर चढ़ाई करने के लिये आ गई। आहोमों ने फिर इन शत्रुओं का बड़ी ही वीरता के साथ मुकाबिला किया। अन्त में दोनों दलों में सन्धि हो गई और दोनों दलों के राज्य के लिये एक निश्चित सीमा कायम कर दी गई।

मीर जुमला का आक्रमण
(१६६२ ई०)

सन् १६५८ ई० में मुगल बादशाह शाहजहाँ बीमार पड़ा। अतः उसके समस्त साम्राज्य में शान्ति सी मचने लगी। आहोम राजा जयध्वज सिंह ने भी इस अराजकता से लाभ उठाना निश्चय किया और उसने गौहाटी पर (जो कि इस समय मुसलमानों के अधिकार में था) आक्रमण कर दिया। गौहाटी की मुसलिम फौज जो कि वहाँ के शासन के लिये नियुक्त किया गया था भाग खड़ी हुई। जयध्वजसिंह ने गौहाटी पर चढ़ाई कर उसे जीत लिया और अपने राज्य में मिला लिया। ब्रह्मपुत्रा की घाटी में शेष जो स्थान मुसलमानों के कब्जे में थे उन पर भी जयध्वज सिंह का अधिकार हो गया। इस प्रकार उसने समस्त ब्रह्मपुत्रा की घाटी में अपना आधिपत्य जमा लिया। विजय लक्ष्मी को प्रसन्न देख कर ढाका तक के स्थानों को लूटने लगा। जब मीर जुमला बंगाल का गवर्नर हुआ तब जयध्वज सिंह ने उसके पास एक दूत भेजा तथा उससे यह कहला दिया कि जितने राज्य उसने छीन लिया है वह सब लौटाने के लिये तैयार है। मीर जुमला ने रसीद खाँ को इस कार्य के लिये भेजा परन्तु इसी बीच में रसीद खाँ और आहोम राजा से कुछ अनबन हो गई। जयध्वज खाँ ने रसीद खाँ को अपनी सेना वापस ले जाने की आज्ञा दी। यह सब समाचार जब मीर जुमला के पास पहुँचा तब उसने शीघ्र ही आसाम पर सन् १६६२ ई० में चढ़ाई कर दी तथा अनेक किलों को जीत लिया। दोनों में घनघोर लड़ाई होने लगी। पहिले मीर जुमला की विजय होती गई। उसने शीघ्र गौहाटी पर आक्रमण कर दिया और उस पर अपना कब्जा कर लिया। लड़ाई केवल एक ही स्थान पर नहीं हो रही थी। सिमलगढ़ का किला मुसलमानों ने ले लिया। बड़ी घमासान लड़ाई के बाद जयध्वज सिंह भाग खड़ा हुआ और मुसलमानों ने गढ़गाँव पर अपना अधिकार जमा लिया। इस प्रकार मीर जुमला ने जयध्वज के राज्य का बहुत सा हिस्सा जीत लिया। इतने ही समय वर्षा ऋतु आ गई। मीर जुमला ने वर्षा ऋतु यहीं बिताने का निश्चय किया। परन्तु बरसात के आने पर इन्हें बड़ा ही कष्ट हुआ। आवागमन का साधन सर्वथा नष्ट हो गया। इसी बीच आहोम लोगों ने इन पर हमले करना शुरू कर दिया। गजपुर में आहोमों ने धावा किया और वहाँ की मुसलमानी फौज को नष्ट कर दिया। सरन्दाज खाँ उस स्थान को लेने के लिये भेजा गया परन्तु जहाज न मिल सकने के कारण नहीं जा सका। आहोमों ने गढ़गाँव पर भी जोरदार आक्रमण करना प्रारम्भ कर दिया। मीर जुमला बरसात के कारण यों ही अनेक कष्टों से घिरा हुआ था यह आक्रमण देख और भी घबड़ाया। अन्त में मीरजुमला और जयध्वज सिंह के बीच में सन् १६६३ में सन्धि हो गई। सन्धि के बाद

मीर जुमला ने बंगाल लौटने के लिये अपनी सेना को आज्ञा दी। रास्ते में मीर जुमला बीमार पड़ गया और बीमारी और लड़ाई की थकान के कारण ढाका पहुँचने के पहिले ही मर गया। आसाम पर जितने भी मुसलिम आक्रमण हुए उनमें मीर जुमला का आक्रमण बड़ा ही प्रसिद्ध है।

सैयद फिरोज खाँ

(१६६७ ई०)

सन् १६६७ ई० में सैयद फिरोज खाँ जो कि रशीद खाँ के बाद गौहाटी का थानेदार नियुक्त किया गया था—ने आहोम राजा के पास एक कड़ी चिट्ठी भेजी जिसमें पहिली लड़ाई के खर्च का बकाया रुपया चुकाने को लिखा था। पत्र पाने पर तत्कालीन आहोम राजा चक्रध्वज सिंह ने लड़ने की ठानी। लड़ाई शुरू हो गई। चक्रध्वज सिंह ने मुसलमानों के हाथ से गौहाटी छीन ली। फिरोज खाँ के हारने की खबर जब औरंगजेब के पास पहुँची तब उसने राजा राम की अध्यक्षता में एक सेना भेजी। अन्त में सन् १६७१ ई० में राजा राम सिंह ने गहरी हार खाई और चक्रध्वज सिंह ने कामरूप को अपने राज्य में मिला लिया। फिर मुसलमानों ने कभी आहोम राज्य पर आक्रमण करने के लिये सिर नहीं उठाया।

उपसंहार

आहोम राज्य पर मुसलमानों के कई शताब्दियों तक आक्रमण होते रहे परन्तु वीर, विजयी आहोम राजाओं ने कभी भी मुसलमामों के वहां पैर नहीं जमने दिये। मुसमलान कभी भी आसाम को अपने कब्जे में नहीं ला सके। जब जब भी इन्हों ने चढ़ाई की तब तब इनकी बड़ी बुरी गति हुई और इन्हें सर्वदा हार खानी पड़ी। मुसलमानों का आक्रमण सदा असफल रहा और कभी भी इनकी दाल नहीं गलने पाई। अतः मुसलमानों को भारत के अन्य प्रान्तों में जो विजय प्राप्त हुई थी वह आसाम में आहोमों की वीरता के कारण कभी कभी नहीं प्राप्त हो सकी।

आहोम राजवंश

तेरहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में आसाम में एक ऐसी घटना हुई जिसका प्रभाव आसाम के इतिहास पर गहरा पड़ा। इस घटना से आसाम के इतिहास में बड़ा ही परिवर्तन हो गया। यह घटना आहोम लोगों का आगमन है। आहोम लोग इरावदी की ऊपर की घाटी में स्थित पाङ्ग (Pong) साम्राज्य में रहने वाली शान (Shan) जाति के थे। ये हिन्दू नहीं थे। पाङ्ग साम्राज्य में गद्दी के लिये उत्तराधिकार के कारण झगड़ा हो जाने से इन आहोमों का एक पूर्व पुरुष कुछ साथियों के साथ वहाँ से चल पड़ा तथा ईसा की तेरहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में इसने पटकाई (Patkai) पर्वतमाला को पार करके वर्तमान शिवसागर तथा लखीमपूर जिले के दक्षिणी प्रदेश में अपना अड्डा जमाया। पटकाई पर्वत की अधित्यका में मोरान (Moran) तथा बोर्हिस (Borhis) जातियों ने अपना अधिकार उस समय जमा लिया था। आहोमों के इस मुखिया पूर्व पुरुष ने उन लोगों को परास्त कर दिया तथा उनसे विवाह संबंध स्थापित कर उनको अपने में मिला लिया। पाठक इस आहोम पूर्व पुरुष का नाम जानने के लिये अवश्य ही उत्सुक होंगे अतः इसका नाम अधिक तक में नहीं छिपा सकता। आहोमों के इस पूर्व पुरुष का नाम सुकाफा था। आसाम प्रान्त में यही आहोम साम्राज्य की नींव डालने वाला माना जाता है। इसने शिवसागर जिले के गढ़गांव (Garhgaon) में अपनी राजधानी बनाई। आहोम लोगों का राज्य पहिले बहुत ही छोटा था। कुछ ही दिनों में ये अपने आस पास चढ़ाई करने लगे और सफलता पाकर इनका उत्साह बढ़ता गया तथा अन्य राज्य जीत कर शक्तिशाली बनने लगे। कुछ वर्षों बाद इन्होंने आसाम राजनीति में दखल देना प्रारम्भ कर दिया तथा अपनी वीरता, चतुरता, राजनीति-पटुता तथा उदार चरित्रता के कारण कुछ ही वर्षों में समस्त कामरूप के राजा बन बैठे इन्होंने १३वीं शताब्दी से लेकर १९वीं शताब्दी अर्थात् पूरी छः शताब्दी तक आसाम में शासन किया। इस दीर्घ काल में आहोम राजाओं ने ऐसे ऐसे अलौकिक कार्य किये जो आसाम के इतिहास में सर्वदा के लिये अजर अमर रहेगा। आसाम के इतिहास में आहोम राजवंश अपना विशेष महत्व रखता है। जिस प्रकार हिन्दू भारत के इतिहास से गुप्त साम्राज्य को निकाल देने से कुछ भी शेष नहीं रह

जाता है उसी प्रकार आसाम के इतिहास से आहोम राजवंश का समय निकाल देने से कुछ भी नहीं रह जाता। आसाम का इतिहास आहोम साम्राज्य का इतिहास है तथा आहोम साम्राज्य का इतिहास आसाम का इतिहास है। आहोम राजाओं की जो गहरी छाप आसाम के इतिहास पर पड़ी है वह सर्वदा के लिये अमिट है। इन्हीं आहोम राजाओं के काल में इन्हीं की शीतल छत्र छाया में आसाम अपनी सम्पत्ति तथा वैभव की पराकाष्ठा पर पहुँचा हुआ था। आहोम राजाओं ने आसाम की सभ्यता तथा संस्कृति के लिये कौन कौन से कार्य किये इसका वर्णन आगे किया जायेगा। इन छः शताब्दियों के दीर्घकाल में आहोम साम्राज्य में अनेक राजा हुए। उन सब का यहाँ वर्णन करना कठिन ही नहीं है वल्कि असंभव है। अतः अगले पृष्ठों में उन्हीं आहोम राजाओं का अति संक्षेप में वर्णन किया जायेगा जो अत्यन्त प्रसिद्ध थे तथा जिनके समय में कोई प्रसिद्ध ऐतिहासिक घटना हुई।

सुकाफा

(१२२८–१२६८)

यह आहोम-साम्राज्य का सब से पहिला राजा था। तेरहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में आसाम आया और अपने बाहुबल से आहोम राज्य की नींव डाली। इसने मोरान तथा बोराहिस जातियों को परास्त किया। यह बड़ा ही बहादुर तथा सूरमा राजा था। इसकी मृत्यु १२६८ ई० में हुई। इसके बाद आहोम साम्राज्य में अनेक छोटे छोटे राजा हुए।

सुदाङ्फा

(१३९७–१४०७)

ब्राह्मण के घर में पाले पोसे जाने के कारण इस राजा को 'ब्राह्मण-युवराज' कहते हैं। इसने अपनी राजधानी दिहिङ्ग नदी के किनारे चरगुआ में बनाई। इसी के राज्य काल से ब्राह्मणों का प्रभाव आहोमों में फैलने लगा।

सुहुङ्मुङ् अथवा दिहिङ्गिया राजा

(१४९७–१५३९)

इसके समय में भी ब्राह्मणों का प्रभाव बढ़ रहा था। उनके प्रभाव का इसी से पता चलता है कि इसने 'स्वर्ग नारायण' ऐसा हिन्दू नाम धारण किया। इसने चुतिपा राजा धीर नारायण को परास्त किया और समस्त चुतिपा राज्य को अपने राज्य में मिला लिया। कचारी के राजा से भी इसकी लड़ाई हुई। इसी के समय में मुसलमानों का सर्व प्रथम आक्रमण हुआ जिसका आहोम इतिहास में वर्णन मिलता है। अन्त में यह राजा मार डाला गया।

गदाधर सिंह[1]

(१६८१–१६९६)

यह एक प्रतापी राजा था। दिहिङ्गिया राजा के समय से ही मुसलमान चढ़ाई करने लगे थे। इसने सबसे पहिले यह काम किया कि मुसलमानों से गौहाटी छीन ली। इसके समय में राज्य में अनेक षड्यन्त्र रचे गये परन्तु सब को इसने दबा दिया। इसने मीरी तथा नाग जातियों पर भी चढ़ाई की। जब कि यह गद्दी पर बैठा था उस समय राज्य में राजा की प्रधानता नहीं रह गई थी इसने अपनी शक्ति से राजा की प्रधानता स्थापित की। यह शाक्त सम्प्रदाय का बहुत बड़ा संरक्षक था। इसकी संरक्षता में मयूर द्वीप पर गौहाटी के दूसरी ओर उमानन्द मन्दिर का निर्माण हुआ। इसने अनेक ब्राह्मणों तथा हिन्दू मन्दिरों को दान दिया। इसने जनता के उपकार के लिये भी अनेक चीजें बनवाई। कई सड़कें, दो पुल बनवाये तथा अनेक तालाब खुदवाये।

रुद्र सिंह

(१६९६-१७१४)

यह आहोम साम्राज्य का सबसे बड़ा तथा प्रताप शाली राजा था। इसके समय में आहोम साम्राज्य अपनी उन्नति तथा वैभव की चरम सीमा पर पहुँच गया था। यह बड़ा ही पराक्रमी तथा सूरमा राजा था। इसके राज्य काल की प्रधान घटना कचारी

१—आहोम राजाओं पर हिन्दू धर्म का ज्यों ज्यों प्रभाव बढ़ने लगा त्यों त्यों वे हिन्दू नाम को अपनाने लगे। ये अपना दो नाम रखते थे। पहिला आहोम नाम रखते थे दूसरा हिन्दू नाम। परन्तु गदाधर सिंह के समय से इनका हिन्दू नाम ही प्रसिद्ध हो चला तथा ये इतिहास अपने हिन्दू नाम से ही अधिक प्रसिद्ध हैं।

तथा जयन्तिया राजाओं से युद्ध है। यह केवल सेनापति ही नहीं था। यद्यपि यह बहुत पढ़ा लिखा आदमी नहीं था तिस पर भी इसकी स्मरण शक्ति बड़ी तीक्ष्ण तथा बुद्धि पैनी थी। इसने रङ्गपुर में एक अलग शहर बसाया। इसने अनेक मन्दिरों तथा तालाबों का निर्माण कराया। जयसागर तथा रङ्गनाथ के तालाब तथा मन्दिर इसकी हिन्दू धर्म के प्रति उदारता का आज भी ज्वलन्त प्रमाण दे रहे हैं। इसके जीवन की सबसे प्रधान बात यह है कि यह पहला राजा था जिसने हिन्दू धर्म को राज धर्म (State-religion) स्वीकार किया। इसके पहिले के राजाओं की भी प्रवृत्ति हिन्दू धर्म की ओर थी परन्तु किसी ने प्रत्यक्षतः इसे राज धर्म नहीं स्वीकार किया था। इसने ब्राह्मणों को दान दिये। उनके लिये स्कूल स्थापित किये तथा कितने ही ब्राह्मण बालकों को शिक्षा के लिये विद्या के केन्द्रों में पढ़ने के लिये बाहर भेजा। हिन्दूधर्म के प्रति इसकी बड़ी श्रद्धा थी। अपनी वृद्धावस्था में इसने कृष्णराम भट्टाचार्य को बङ्गाल से बुलवाया तथा उनसे धर्म की दीक्षा ली।। इसकी वीरता के सामने सब पहाड़ी जातियां सिर झुकाये रहती थीं। इसने विदेशी राजाओं के पास अपना दूत भेज कर उनसे सम्बन्ध स्थापित करने की चेष्टा की। इसी के समय में गदाधर सिंह के द्वारा प्रारम्भ किये गये सर्वे समाप्त हुआ। इसके पाँच लड़के थे शिव सिंह, प्रमत्त सिंह, राजेश्वर सिंह और लक्ष्मी सिंह, वरजना गोहादन। इस प्रकार कीर्ति तथा वैभव से युक्त यह राजा १७१४ ई० को स्वर्गवासी हुआ।

शिवसिंह

(१७१४–१७४४)

यह भी पिता का पदानुगामी था। इसकी सहायता से हिन्दू धर्म की और भी उन्नति हुई। इसने हिन्दू धर्म की अनेक रीति रिवाजों को अपनाया। गौरी सागर और शिवसागर के पास के तालाब और मन्दिर इसकी उदारता के प्रमाण हैं।

प्रमत्तसिंह

(१७४४–१७५१)

सन् १७४५ ई० में इसने एक सर्वे कराया और इसी वर्ष में जन-संख्या-गणना हुई। इसने गढ़गांव में नयी नयी इमारतें बनवायीं और रङ्गपूर में जानवरों की लड़ाई के लिये एक शाला बनवायी इसने गौहाटी में रुद्रेश्वर और शुक्रेश्वर नाम के दो मन्दिरों का निर्माण कराया।

राजेश्वर सिंह

(१७५१–१७६९)

इसके समय में देश में बड़ी शान्ति थी। प्रजा पर किसी प्रकार का बाह्य आक्रमण से कष्ट नहीं हुआ। प्रजा समृद्ध और सुखी थी। राजा स्वयं पक्का हिन्दू था। इसने भी ब्राह्मणों को बड़ा दान दिया और अनेक मन्दिरों का निर्माण कराया। इसने मिकिर लोगों को परास्त किया। वर्मीज लोगों ने मणिपूर के राजा को हरा दिया था अतः जयसिंह की सहायता के लिये प्रार्थना करने पर इसने वर्मीजों को भगाने के लिये सेना भेजी और वर्मीजों को मार भगाया। यह भी अपने समय का प्रतापी राजा था। परन्तु इसके समय से आहाम लोगों की वह पूर्व वीरता और शक्ति क्षीण होने लगी थी।

लक्ष्मी सिंह

(१७६९–१७८०)

यह रुद्रसिंह का सबसे छोटा लड़का था। यह ५३ वर्ष की अवस्था में गद्दी पर बैठा। इसके राज्य की सबसे प्रधान घटना मोआमेरियों का विद्रोह है। मोआमेरिया एक सम्प्रदाय का नाम है। मोआमेरिया के महन्त का लक्ष्मी सिंह के प्रधान मन्त्री ने बड़ा ही अपमान किया था। इस प्रकार उन लोगों ने इस अपमान का बदला चुकाने के लिये मोरान जाति की सहायता से बड़ा भारी विद्रोह खड़ा कर दिया। लक्ष्मी सिंह को राज्य छोड़ कर भागना पड़ा। उसके भाग जाने पर विद्रोहियों का सरदार रामाकान्त राजा घोषित कर दिया गया। परन्तु लक्ष्मी सिंह ने अपने सरदारों की सहायता से उन पर फिर आक्रमण किया और उन्हें मार भगाया। इस प्रकार इसने पुनः राज्य प्राप्त किया। फिर भी समय समय पर मोआमेरियाँ विद्रोह करते ही रहे परन्तु उन सब को लक्ष्मी सिंह ने कुचल डाला। इसने भी

बहुत से तालाब और मन्दिर बनवाये। प्रसिद्ध और महान् रुद्रसागर तालाब इसी का बनवाया हुआ है।

गौरीनाथ सिंह

(१७८०–१७९५)

इसके समय में पुनः मोआमेरिया विद्रोह शुरू हुआ। गौरीनाथ इस विद्रोह के डर के मारे गौहाटी भाग गया। परन्तु इसके प्रधान मन्त्री पूर्णानन्द ने विद्रोहियों से मोर्चा लिया। बहुत दिनों तक दोनों दलों में लड़ाई होती रही। मणिपुर के राजा ने भी इसमें भाग लिया। विद्रोहियों को अपनी शक्ति से दबाने में असमर्थ पाकर गौरीनाथ सिंह ने लार्ड कार्नवालिस से सहायता मांगी। उसने केप्टन वेल्श को राजा की सहायता के लिये भेजा जिसने विद्रोहियों को मार भगाया, गौहाटी को जीत कर गौरीनाथ को दिया और देश में शान्ति स्थापना की। इस विद्रोह से जनता को बड़ा कष्ट पहुँचा था अतः वेल्श के इस कार्य से लोगों को बड़ी शान्ति मिली। गौरीनाथ बड़ा कमजोर तथा दब्बू राजा था। उसमें राज्य करने की शक्ति नहीं थी।

कमलेश्वर सिंह

(१७९५–१८१०)

इसका राज्य एक गृह-कलह के लिये प्रसिद्ध है। हरदत्त बरुआ नामक एक प्रसिद्ध चौधरी का राजा के किसी आफिसर ने बड़ा अपमान किया। इस अपमान के लिये उसने विद्रोह की तैयारी कर दी और गौहाटी पर कब्जा कर लिया परन्तु राजा के सिपाहियों के आने पर जंगल में भागा और पकड़ा जाकर मार डाला गया। इस प्रकार शान्ति स्थापना हुई।

चन्द्रकान्त सिंह

(१८१०–१८१८)

इस राजा के समय में गृहकलह बहुत बड़ा हो गया बड़ी लड़ाई हुई तथा प्रजा को बड़ा कष्ट हुआ। इसके समय वर फूकन मर गया तथा इसके स्थान पर वदन चन्द्र नाम का एक आदमी चुना गया। राजा के प्रधान मन्त्री से इसकी नहीं पटती थी क्योंकि प्रधान मन्त्री ने इसे अपने पद से हटा देना चाहा। इतने पर वदन चन्द्र गौहाटी छोड़कर कलकत्ता भाग गया। इसने ब्रिटिश सरकार से सहायता माँगी, परन्तु वहाँ से सहायता न मिली। यह कलकत्ते में बरमा राजा के एजेन्ट की सहायता से वह बरमा के राजा के पास गया और सहायता मांगी। उन्होंने सहायता देना स्वीकार कर लिया। अतः वर्मीज लोगों की सेना ने पटकाई पर्वत माला पार करते हुये आसाम पर चढ़ाई कर दी, जोरहाट पर कब्जा कर लिया और वदन चन्द्र को गौहाटी के वायसराय का पद दिला दिया।

इस लड़ाई झगड़े से प्रजा बड़ी दुःखी थी। इसी बीच में प्रधान मन्त्री ने षड़यंत्र कर वदनचन्द्र को मरवा डाला। इधर उसने चन्द्रकान्त सिंह को भी गद्दी से उतारने का निश्चय किया क्योंकि चन्द्रकान्त सिंह ने वर्मीज आक्रमण के समय इस प्रधान मन्त्री की सहायता नहीं की थी। प्रधान मन्त्री राजेश्वर के प्रपौत्र ब्रजनाथ को राजा बनाना चाहता था परन्तु वह विकलांग था अतः उसका लड़का पुरन्दर सिंह राजा हुआ। चन्द्रकान्त डर कर रंगपुर भाग गया।

इधर वदन चन्द्र के मित्रों और संबंधियों ने उसके कत्ल का समाचार वर्मा के राजा के पास पहुँचा दिया तब राजा ने एक सेना सन् १८१९ ई० में पुनः आसाम पर आक्रमण करने के लिये भेजी। अहोम लोगों ने वर्मीजों का मुकाबिला किया परन्तु वे हार गये। पुरन्दर सिंह डर कर गौहाटी भाग गया और चन्द्रकान्त सिंह ने वर्मीजों से सन्धि कर ली। इसके फल स्वरूप उन्होंने चन्द्रकान्त को फिर राजा बना दिया।

वर्मीजरूल अथवा शासन

यद्यपि चन्द्रकान्त राजा था परन्तु वास्तव शासन वर्मीज लोगों के हाथ में था। वर्मीज सेना ने प्रधान मन्त्री को पकड़ना चाहा परन्तु उसका कुछ पता नहीं चला। इधर चन्द्रकान्त ने वर्मीजों की बढ़ती शक्ति देखकर अपनी जान बचाने के लिये भाग खड़ा हुआ और ब्रिटिश राज्य में चला आया। चन्द्रकान्त ने वर्मीजों को आसाम से निकाल देने का बड़ा प्रयत्न किया परन्तु वह विफल रहा। इधर पुरन्दर सिंह भी (जो भाग कर रंगपुर जिले में ठहरा हुआ था) वर्मीजों को आसाम से खदेड़ने का बड़ा प्रयत्न

किया। परन्तु उसे भी इस कार्य बिल्कुल सफलता न मिली। इस प्रकार आसाम वर्मीजों के हाथ में चला गया।

ट्रिटी आव याण्डवू
(१८२६)

इस प्रकार अपनी विजय के मदमाते बर्मीज फूले नहीं समाते थे। उन्होंने बंगाल की ओर ब्रिटिश सीमा पर चढ़ाई कर दी और कचार पर (जो अंग्रेजों द्वारा सुरक्षित था) धावा बोल दिया। अब अंग्रेजों के लिये चुपचाप बैठना बड़ा कठिन था। लड़ाई छिड़ी, अन्त में रंगपुर के पास वर्मीज लोगों को हार खानी पड़ी और आखिरकार उन्हें वह अपमान जनक संधि स्वीकार करनी पड़ी (१८२६ में) जिसे इतिहास में ट्रिटी आव याण्डवू कहते हैं। इसके अनुसार वर्मीजों को आसाम प्रान्त अंग्रेजों के हाथ दे देना पड़ा और तब से यह उन्हीं के कब्जे में हैं।

अँग्रेज़ों के अधिकार में आने के पहिले आसाम की अवस्था

अँग्रेजों के हाथ में आने के पहिले आसाम की हालत बड़ी बुरी थी। वर्मीज लोगों के राज्य काल में धन का नाश तो हो ही रहा था जीवन भी खतरे से खाली नहीं था। बर्मीज लोगों ने आक्रमण के समय में आग लगा दी और कितने स्थानों को लूट लिया। मन्दिरों को तोड़ कर नष्ट भ्रष्ट कर दिया। वे युवा, वृद्ध सब के साथ बड़ी सख्ती का बर्ताव करते थे और सभी को नाना प्रकार के कष्ट देते थे। स्त्रियों के लिये अपनी सतीत्व-रक्षा कठिन थी। मेजर जी बटलर ने "ट्रेवेल्स एण्ड एडवेन्चर्स इन दि प्राविन्स आफ आसाम" नामक अपनी पुस्तक में वर्मीजों के अत्याचार का बड़ा रोमाञ्चकारी वर्णन किया है। उनका कहना है कि बर्मीज लोगों को जिस किसी पर सन्देह होता, नाक कान काट लेते हैं। वे और भी अनेक घृणित अत्याचार करते थे जिसका वर्णन करना कठिन है। दुःख का अन्त यहीं तक नहीं था बल्कि देशी डाकू आदमी वर्मीज का वेश बनाकर घूमा करते थे और लोगों को तरह तरह का कष्ट पहुँचाते थे। कुछ लोग इनके डर से पहाड़ों में जाकर छिप गये और कुछ लोग मणिपुर भाग गये। सर्वत्र अशान्ति मची हुई थी और सर्वत्र प्रजा कष्ट से समय बिता रही थी। इत्यादि।

ऊपर जो विवरण प्रस्तुत किया गया है उससे स्पष्ट प्रतीत होता है कि वर्मीज लोगों के समय में आसाम की क्या दुर्दशा थी और प्रजा को कितना कष्ट हो रहा था। ऐसे ही समय में अँग्रेजों का अधिकार आसाम पर हुआ। इन्होंने अपने बाहुबल से देश में शान्ति स्थापित की और प्रजा के कष्टों का निवारण किया।

आहोम शासन प्रणाली तथा संस्कृति

उत्तराधिकार के नियम

आहोम शासन काल के प्रारम्भिक समय में साधारण नियम यही था कि पिता के बाद पुत्र गद्दी पर बैठता था। परन्तु पीछे समय में इस नियम में सख्ती से शिथिलता आ गई। कभी कभी पुत्र के स्थान दिवंगत राजा के पुत्र बारी बारी से गद्दी पर बैठने लगे। राजा रुद्रसिंह के चार बेटे थे। इन्होंने बारी बारी से शासन किया। कभी कभी ऐसा भी होता था कि बेटे के स्थान उसका चचेरा भाई गद्दी पर बैठा दिया जाता था। जब किसी राजा को गद्दी पर से बलात हटा दिया जाता था वैसी हालत में अवश्य ही कोई दूर का सम्बधी राजगद्दी पर आसन जमाता था।

राजा और उसकी समिति

राजा राज्य का सब से बड़ा अधिकारी माना जाता था। प्रत्येक विषय में उसी के पास अपील आती थी। राजा तीन बड़े बड़े कौन्सिलरों की सहायता लेकर राज करता था। यद्यपि राजा सर्व शक्तिमान था तथापि इन कौन्सिलरों की अनुमति के बिना उसकी नियुक्ति पक्की नहीं समझी जाती थी। साधारण नियम यह था कि राजा बलवान हुआ तो कौन्सिलरों को दबाता था और यदि कमजोर हुआ तो इन्हीं के वश में रहना पड़ता था। राज परिवार के आदमी ही राजा हो सकते थे।

गोहाइन

जो राजा के तीन कौन्सिलर रहते थे उन्हें गोहाइन कहते थे। ये तीन थे (१) बर गोहाइन, (२) बुरहा गोहाइन, (३) बरपात्र गोहाइन। जिस प्रकार राजा एक ही वंश ही अथवा जाति का आदमी होता था उसी प्रकार से गोहाइन भी एक ही जाति से चुने जाते थे। यह जाति इसी के लिये सुरक्षित थी। ये तीनों गोहाइन राजा के सब से बड़े आफिसर थे और प्रत्येक गम्भीर विषयों पर सलाह दिया करते थे। यदि आजकल के शब्दों में इन्हें 'कैबिनेट' कहें तो कोई अत्युक्ति न होगी। इनको इस कार्य के लिये बड़ी जमीन मिलती थी जिसके ये सर्वेसर्वा समझे जाते थे।

बार बरुआ

यह भी राज्य का एक बड़ा आफिसर समझा जाता था। यह लगान वसूलता था, न्याय करता था और सेनाओं का कमाण्डर भी होता था। यह १४,००० पेक के ऊपर अधिकार रखता था।

बार फूकन

बार फूकन भी राज्य का बहुत बड़ा अफसर था। यह वाइसराय का कार्य करता था और कोलिया बार से लेकर गोलयारा तक राज्य-शासन का प्रबन्ध करता था। इसका प्रधान स्थान गौहाटी था। यह बार बरुआ से बड़ा आफिसर समझा जाता था। इसकी आज्ञा के बाद शायद ही अपील होती थी और यदि होती थी तो केवल राजा के पास ही होती थी।

अन्य स्थानीय गवर्नर

चूँकि आहोम साम्राज्य अधिक विस्तृत था अतः स्थान स्थान पर स्थानीय गवर्नर नियुक्त कर दिये गये थे और सोलाल गोहाइन नवांगांव का। अन्य स्थानों पर जहां के राजा आहोमों को आधीनता स्वीकार कर लेते थे वे ही आहोम राजा की ओर से गवर्नर बना दिये जाते थे। इसके अतिरिक्त और साधारण राजकीय आफिसर थे जो छोटे छोटे कार्यों पर नियुक्त कर दिये गये थे।

फूकन

छोटे छोटे आफिसरों से फूकन का स्थान कुछ ऊँचा समझा जाता था। फूकन तथा बरुआ पद के सूचक हैं। इनमें से छः फूकन बार बरुआ की कौंसिल में रहते थे और कार्य करते थे। शेष भिन्न भिन्न कार्यों को करने के लिये नियुक्त थे।

बरुआ

फूकन की श्रेणी से कुछ घट कर बरुआ की श्रेणी थी। इनकी संख्या बीस या इससे भी अधिक हुआ करती थी। इनका काम राजा की सवारी की, कारीगरों के काम की, टकसाल की देखभाल करना और राज परिवार में औषधि तथा उपचार का प्रबन्ध करना था।

पेक की प्रथा

आहोम राज्य में बेगारी की प्रथा का बड़ा प्रचार था। निम्न श्रेणी के लोगों को 'गोत' में विभाजित कर दिया गया था। प्रत्येक 'गोत' में तीन या चार आदमी होते थे जिसे 'पेक' कहते हैं। प्रत्येक 'पेक' को राजा के यहाँ बेगारी करनी पड़ती थी। जब वह राजा के यहाँ बेगारी करने के लिये आता था तब उसके भरण पोषण का प्रबन्ध उसके शेष 'गोत' वाले करते थे। इन पेकों का समुचित प्रबन्ध किया गया था। बीस पेक के बाद एक बार (Bore) होता था, सौ के बाद सैकिया, हजार के बाद हजारिका, तीन हजार के बाद राज खोआ तथा छः हजार के बाद फूकन हुआ करता था। इस प्रकार से राजा के पास बेगार काम करने के लिये बहुत मिल जाते थे। इस प्रथा से पेकों को कष्ट तो बहुत होता था परन्तु राज्य को लाभ होता था। बड़े बड़े तालाब तथा मन्दिर इनकी सहायता से बन जाते थे। आज आसाम में जो बड़े बड़े विशालकाय तालाब दीख पड़ते हैं वह सब पेकों के परिश्रम के ही फल हैं। दूसरा लाभ इस प्रथा से यह हुआ कि इन लोगों को राजाओं को कुछ कर नहीं देना पड़ता था। केवल मजदूरी कर देने ही से राजा का सब कर अदा हो जाता था। प्रत्येक पेक अपनी सेवाओं के फल स्वरूप तीन एकड़ जमीन इनाम में पाता था। उसको घर तथा बगीचे के लिये भी जमीन दी जाती थी। इस प्रकार इस प्रथा से लाभ ही हुआ।

कानून तथा न्याय

दिवानी मामलों में हिन्दू कानून के अनुसार फैसला होता था। यह फैसला ब्राह्मण किया करते थे। फौजदारी मामलों में बड़ी कड़ी सजा दी जाती थी। कितने आदमियों को मृत्यु दण्ड मिलता था और कितने हो के नाक और कान काट लिये जाते थे। अधिक अपराधियों की आखें निकलवा ली जाती थीं। और भी अनेक प्रकार की यन्त्रणायें देकर अपराधी का अन्त होता था। उच्च अधिकारियों का अपमान करने के लिये बड़ी कठिन यातनायें दी जाती थीं। साधारण साधारण अपराधों में भी कठिन दण्ड दिये जाते थे। न्याय के सबसे बड़े अधिकारी गोहाइन थे।

सामाजिक दशा

दासता की प्रथा

आहोम काल में आसाम में दासता की प्रथा भी थी। राज्य के बड़े अधिकारी अपनी निज की जमींदारी में इन्हीं दासों से काम लिया करते थे। ये दास अपने स्वामी की इच्छा के गुलाम थे। इन दासों का क्रय विक्रय भी हुआ करता था। इनकी दशा बड़ी ही बुरी थी। डेविडस्कार ने केवल कामरूप से १२,००० गुलामों को बन्धन मुक्त किया था।

ऊँच नीच का भेद

समाज में ऊँच नीच का भेद भाव भरा हुआ था। राजा और बड़े अफसरों को छोड़ कर कोई जूता नहीं पहिन सकता था, छाता नहीं लगा सकता था और पालकी पर नहीं चढ़ सकता था। नीच जाति के लोग चद्दर को अपने दाहिने कन्धे पर नहीं रख सकते थे। बल्कि बायें कन्धे पर मोड़ कर ले जा सकते थे। साधारण जाति के लोग अच्छे और पक्के मकान नहीं बना सकते थे।

रहन-सहन

यद्यपि आहोम राज्य-काल में देश अपनी उन्नति की चरम सीमा पर पहुँचा था और वैभव और धन-धान्य से युक्त था, तो भी आहोम लोगों की रहन-सहन बड़ी सीधी सादी थी। उनके जीवन में विलासिता का कहीं नाम निशान भी नहीं था। लोगों के मकान छोटे मोटे होते थे। पक्के मकान की संख्या अधिक नहीं थी। राजा अपने राज्य में समय समय पर सफर किया करते थे। मछली मारने, शिकार करने और जंगली हाथियों को मारने में ये बड़ी दिलचस्पी लेते थे। राज्याभिषेक अथवा राजकीय विवाह के अवसर पर बड़ा ही उत्सव मनाया जाता था और प्रजा कई दिनों तक आमोद प्रमोद में डूबी रहती थी। इन अवसरों पर लोगों को बड़ी दावतें दी जाती थीं और मधुर संगीत से लोगों का मनोरंजन किया जाता था। यद्यपि लोगों का जीवन सादा था परन्तु राजमहलों में विलास की सामग्री कम न थी। मीर जुमला के आक्रमण के समय में आये हुये मुसलमान ऐतिहासिक ने गरगांव (Gargaon) में स्थित राजा के महल की निम्नलिखित शब्दों में बड़ी प्रशंसा की है। इस महल को बनाने में १२,००० मजदूर काम में लगाये थे।

"The arnaments and curiosities with which the whole wood work of the house was filled defy all description. Now here in the whole inhabited world would you find a house equal to it in strength, ornamention and pictures."[१]

स्त्रियों का स्थान

आहोम समाज में स्त्रियों का बड़ा ऊँचा स्थान था। बर्मीज लोगों की भांति आहोम लोग भी स्त्रियों को बड़े आदर तथा सन्मान की दृष्टि से देखते थे। स्त्रियों में परदे की प्रथा बिलकुल नहीं थी। वे राज्य कार्य में भी बड़ी कुशल और जनता के कार्यों में बड़ा भाग लिया करती थीं। सत्रहवीं शताब्दी के मध्यकाल में दो स्त्रियों ने तो शासन की बागडोर को बिल्कुल अपने हाथों में ले लिया और राज्य करने लगीं। शिव सिंह ने तो अपनी स्त्रियों को राज्य काज का सब भार दे दिया था। राजा गौरीनाथ सदैव अपनी माता की सम्मति से राज्य किया करता था।

हिन्दू धर्म के प्रति आदर भाव

आहोम राजा हिन्दू धर्म के प्रति बड़ी आदर-बुद्धि रक्खा करते थे। राजा रुद्र सिंह तो हिन्दू धर्म

१—आसाम डिस्ट्रिक्ट गजेटियर—कामरूप, पृ० ४६।

का कट्टर पक्षपाती एवं प्रतिष्ठायक था। इसने ही सर्वप्रथम हिन्दू धर्म को स्वीकार कर लिया और एक ब्राह्मण गुरु से दीक्षा ली। इसने ब्राह्मणों और मन्दिरों को बहुत बड़ा दान दिया। रुद्र सिंह ने कामाख्या देवी के मन्दिर का जीर्णोद्धार कर शाक्त सम्प्रदाय को पनपने का अवसर प्रदान किया।

ब्राह्मणों के लड़कों को दूर दूर विद्या के केन्द्रों में शिक्षा ग्रहण करने के लिये भेजा। आसाम में शाक्त-सम्प्रदाय के प्रोत्साहन में आहोम राजाओं का कुछ कम हाथ नहीं था।

अंग्रेजों के शासन का प्रारम्भ

सन् १८२६ ई० में अँग्रेजों तथा बर्मीजों के बीच में 'ट्रिटी आव याण्डवू' की संधि हुई। इस संधि के अनुसार बर्मीजों को आसाम पर से अपना अधिकार हटाना पड़ा और इसे अंग्रेजों के हाथों में सौंपना पड़ा। सन् १८२६ में इस प्रकार सारा आसाम प्रान्त अँग्रेजों के अधिकार में आ गया। अब प्रश्न यह था कि समस्त प्रान्त पर कम्पनी ही शासन करे अथवा इसे वहाँ के स्थानीय राजाओं (Native Princes) को सौंप दिया जाय। अन्त में यही निश्चय हुआ कि आसाम प्रान्त का कुछ हिस्सा कम्पनी अपने शासन के अन्दर रक्खे और कुछ भाग वहाँ के स्थानीय राजाओं को दे दे। इस निश्चय के अनुसार मनीपुर का राज्य गम्भीर सिंह को (जिसने बर्मीजों को आसाम से भगाने में बड़ी सहायता पहुँचाई थी) दे दिया गया। राम सिंह जयन्तिया पहाड़ियों और सूरमा घाटी के उत्तरी किनारे के प्रदेशों का राजा बनाया गया। गोविन्दचन्द्र को पुनः कचर (Cachar) का राजा घोषित किया गया। सदिया और कटक का राज्य भी देशी राजाओं को सौंप दिया गया। अब शेष बच गई थी ब्रह्मपुत्र की घाटी। उसे ब्रिटिश सरकार ने अपने ही शासन में रखना उचित समझा। अँग्रेजों ने विचारे पुरन्दर सिंह का भी ध्यान रक्खा तथा उसे अपर आसाम (लखीमपुर और शिवसागर के जिले) का राजा इस शर्त पर बना दिया कि वह उन्हें ५०,००० रु० सालाना लगान के रूप में दिया करेगा। इस प्रकार से समस्त आसाम प्रान्त का उचित प्रबन्ध अंग्रेजों ने कर दिया।

ब्रह्मपुत्र घाटी का शासन-प्रबन्ध

इस शासन-प्रबन्ध को सुचारु रूप से करने के लिये डेविड स्काट गवर्नर जनरल का एजेन्ट नियुक्त किया गया। स्काट को इस कार्य में सहायता देने के लिये सन् १८२८ ई० में कालोनल कूपर की नियुक्ति हुई। शासन की सुविधा के लिये ब्रह्मपुत्र की घाटी चार जिलों (गोलपारा, कामरूप, डैरेंग एवं नवागांव) में विभक्त कर दी गई। साधारण फौजदारी के मुकदमों का फैसला ग्रामीण पंचायत ही कर दिया करती थी, परन्तु जो संगीन मामले होते थे उसे असिस्टेन्ट कमिश्नर फैसला कर देता था। लगान वसूली के नियम में परिवर्तन करना उचित नहीं समझा गया तथा पहिले ही जैसा चलता रहा। अँग्रेजों के आने जाने की सुविधा के लिये अनेक सड़कों का निर्माण हुआ, नदियों में स्टीमरों के चलने का प्रबन्ध किया गया तथा क्रमशः रेलों के चलाने का प्रबन्ध भी हुआ।

देशी राज्य को अँग्रेज़ी राज्य में मिलाना

गोविन्द चन्द्र जो अँग्रेजों के द्वारा कचर का राजा बनाया गया कमजोर आदमी था। वह राज्य भार संभालने में समर्थ नहीं था। अतः अंग्रेजों ने सन् १८३२ ई० में उसके राज्य को अंग्रेजी राज्य में मिला लिया। जयन्तिया का राजा बार बार नवागांव की सीमा पर आक्रमण कर रहा था। अंग्रेजों के मना करने पर भी उसने जब एक भी न सुनी, तब उन्होंने उसे परास्त कर जयन्तिया को अपने राज्य में मिला लिया। सदिया तथा मटक प्रान्त का भी प्रबन्ध ठीक न होने से अंग्रेजों ने इसे भी अपने राज्य में सम्मिलित कर लिया।

पुरन्दर सिंह का अंत

एक दो साल तक पुरन्दर सिंह ने अपने वादे के रुपये पूरा नहीं चुकाये। दूसरी बात यह थी कि इसका शासन बहुत ही असफल था। अतएव सन् १८३८ ई० में अँग्रेजों ने इसे सदा के लिये गद्दी से उतार इसके राज्य को ब्रिटिश राज्य में सम्मिलित कर लिया। यह अपर आसाम का प्रान्त दो जिलों में विभक्त कर दिया गया जो आजकल शिव सागर

और लखीमपूर के नाम से प्रसिद्ध है। अंग्रेजों ने क्रमशः नागा, लुशाई और गैरो की पहाड़ियों को जीत लिया और इन्हें भी अपने राज्य में मिला लिया।

सीमा प्रान्त की जातियों से सम्बन्ध

आसाम प्रान्त की सीमा पर अनेक जातियाँ निवास करती हैं। इनमें से भुटिया, अक, दफल, मीरिस, अबोर, मिशमि, खामटी, मिङ्गफो और नाग प्रसिद्ध हैं। सन् १८६४-६६ में अंग्रेजों और भोटियों से लड़ाई हुई। अंत में सीमान्त जातियों को परास्त करके अंग्रेजों ने इनके साथ संधि करली।

सन् १८५७ का विद्रोह

इस विद्रोह की लहर आसाम में नहीं पहुँची। ब्रह्मपुत्रा की घाटी में सैनिकों ने सर उठाना चाहा परन्तु अंग्रेजों ने उन्हें शीघ्र दबा दिया।

जयन्तिया विद्रोह

(१८६०-६२)

मिस्टर एलेन ने जो बोर्ड आव रेवेन्यू के एक सदस्य थे, जयन्तिया लोगों को शान्ति प्रदान के शुल्करूप में 'हाउस टैक्स' सन् १८६० ई० में लगाना निश्चित किया। इस पर वहां के लोग विद्रोह के लिये तैयार हो गये। उन्होंने बड़ा ही उपद्रव किया और बड़ी ही कठिनाई के बाद उनका दमन किया गया।

आसाम का शासन प्रबन्ध

सन् १८५३ ई० में ब्रह्मपुत्रा की घाटी का सुप्रबन्ध और सुशासन करने के लिये एक कमिश्नर की नियुक्ति और उसकी सहायता के लिये एक असिस्टेन्ट अथवा डिपुटी कमिश्नर रक्खा गया। इन दोनों का प्रधान स्थान गौहाटी ही था। इसके बाद एक प्रिन्सिपल असिस्टेण्ट, तीन जूनियर असिस्टेन्ट और आठ सब असिस्टेण्ट रक्खे गये। इसके अतिरिक्त न्याय वितरण के लिये एक प्रधान सदर अमीन, छः सदर अमीन तथा सत्रह मुन्सिफ रक्खे गये। सन् १८६१ ई० में इन आफिसरों के नाम में थोड़ा परिवर्तन कर दिया गया। कुछ समय तक कचहरी की भाषा आसामी रही परन्तु वह बदल कर बंगाली कर दी गई। सन् १८६० ई० में फौजदारी तथा दिवानी के जितने भी कानून हैं, वे सब आसाम पर भी लागू कर दिये गये। सन् १८६२ ई० से इण्डियन पिनल कोड की धारायें भी आसाम पर लागू हो गईं। परन्तु ये सब नियम पहाड़ी जातियों पर लागू नहीं किये गये।

आसाम का पृथक प्रान्त के रूप में बनना

सन् १८७४ ई० में आसाम प्रान्त के इतिहास में एक विशेष घटना हुई। अब तक बंगाल के शासन के साथ ही आसाम का भी शासन प्रबन्ध होता था परन्तु आसाम को सम्मिलित कर लेने पर बंगाल प्रान्त बहुत बड़ा हो गया और शासन-प्रबन्ध में बड़ी कठिनाई उपस्थित हुई। बंगाल के तत्कालीन शासनकर्त्ता सर जार्ज कैम्पबेल ने इसकी सूचना (आसाम को अलग करने की) भारत सरकार को दी। सरकार ने मंजूरी दे दी। अतः सन् १८७४ ई० में आसाम एक अलग सूबा बना दिया गया और इसका शासन अधिकार चीफ कमिश्नर के हाथ में सुपुर्द किया गया। कालोनल आर० एच० की लीकेज सर्व प्रथम चीफ कमिश्नर बनाये गये और उन्होंने इस पद पर १८७४-७८ तक योग्यता पूर्वक काम किया। चीफ कमिश्नर की सहायता के लिये डिपुटी और असिस्टेन्ट कमिश्नरों की नियुक्ति हुई।

सन् १८९७ ई० का भीषण भूकम्प

सन् १८९७ ई० का भीषण तथा प्रलयकारी भूकम्प आसाम के इतिहास में सर्वदा के लिये स्मरणीय रहेगा। यद्यपि आसाम में सन् १६६३, १७५१ ई० में अनेक भूकम्प आये परन्तु यह भूकम्प सबसे बड़ा था। इसने आसाम में प्रलयकारी दृश्य उपस्थित कर दिया। इसमें लगभग १५०० आदमी मर गये। गौहाटी शहर नष्ट तथा बिल्कुल चौपट हो गया। आलीशान इमारतें तथा मन्दिर नष्ट हो गये। बारपेता शहर सर्वदा के लिये रहने के अयोग्य हो गया। रेलवे लाइनें टूट गईं तथा सड़कें नष्ट भ्रष्ट हो गयीं। यह भूकम्प करीब आधे घंटे तक होता रहा।

"ईस्टर्न बंगाल तथा आसाम" का निर्माण

सन् १९०५ ई० में लार्ड कर्जन ने बंग भंग करने

का निश्चय कर लिया। उनका कहना था कि बंगाल का प्रान्त बहुत बड़ा है अतः इसके कुछ पूर्वी जिले को हटाकर आसाम में मिला दिये जांय और 'ईस्टर्न बंगाल और आसाम' का एक नया सूबा बनाया जाय जिसमें शासन प्रबन्ध में सुविधा हो सके। इस योजना में बंगालियों की बढ़ती हुई संघ-शक्ति को कुचल डालने का अभिप्राय छिपा हुआ था। बंगालियों ने इस प्रस्ताव का बड़ा ही बिरोध किया परन्तु लार्ड कर्जन ने उनकी एक न सुनी और सन् १९०५ ई० में बंगाल के पूर्वी जिलों—ढाका, चिटागांव तथा राजशाही कमिश्नरियों के जिलों को आसाम में मिला कर 'इस्टर्न बंगाल और आसाम' का नया प्रान्त बना दिया तथा इसका शासन प्रबन्ध एक लेपिटनेन्ट गवर्नर के हाथ में कर दिया। इसी समय में इस प्रान्त में लेजिस्लेटिव कौन्सिल की भी स्थापना की गई।

बंगभंग का निराकरण

इस बंग-भंग के विरोध में बंगालियों ने क्या क्या किया, यह बात सब को विदित है। अन्त में सन् १९११ ई० में सम्राट पञ्चम जार्ज भारत आये। दिल्ली में उनका दरबार हुआ। उसी दरबार में १२ दिसम्बर सन् १९११ को उन्होंने यह घोषणा की कि जो बंगभंग किया गया था वह हमेशा के लिये रद्द कर दिया जाता है। फल स्वरूप आसाम प्रान्त में बंगाल के जो पूर्वी जिले मिलाये गये थे वे निकाल लिये गये तथा 'इस्टर्न बंगाल और आसाम' का नाम हटा कर पुनः 'आसाम' हो गया।

आसाम में शासन सुधार

सन् १९०९ ई० में मिन्टो-मार्ले सुधार की बदौलत आसाम प्रान्त चीफ कमिश्नर की अवस्था से हटा कर लेपिटनेन्ट गवर्नर के दरजे का प्रान्त बना दिया गया और एक लेजिस्लेटिव कौन्सिल की भी स्थापना हो गई। सन् १९१९ में माण्टेगू-चेम्सफोर्ड सुधार के अनुसार यह प्रान्त गवर्नर के दरजे का प्रान्त बना दिया गया और इस समय वहाँ गवर्नर ही शासन करता है। अतः अब आसाम प्रान्त दूसरे प्रान्तों के समान हो गया है और वहाँ शासन व्यवस्था ऐसी ही है जैसे दूसरे प्रान्तों की है।

मणिपूर राज्य का इतिहास

मणिपूर आसाम प्रान्त के सबसे पूर्वी प्रदेश में स्थित है। यह आसाम की एकमात्र स्वतन्त्र रियासत है। भारत की देशी रियासतों बड़ौदा, बीकानेर आदि से जो सम्बन्ध भारत सरकार का है वही सम्बन्ध इस रियासत से भी है। मणिपूर का राजा भारत सरकार की अधीनता को स्वीकार करता है और संधि के अनुसार उसे अपने राज्य में एक पोलिटिकल एजेन्ट रखना पड़ता है जो कि ब्रिटिश सरकार का प्रतिनिधि है। इस अफसर की पूरी उपाधि "पोलिटिकल एजेन्ट और सुपरिन्टेन्डेन्ट आफ स्टेट है।" वर्तमान महाराजाधिराज का नाम हिज़ हाइनेस सर चूड़ चन्द सिंह के० सी० एस० आई०, सी० बी० ई० है। इनकी अवस्था ४९ वर्ष की है। ये जाति के क्षत्रिय हैं।

सीमा तथा क्षेत्रफल

मणिपूर के पूर्व में वर्मा, उत्तर में नागा की पहाड़ियां पश्चिम में कचार का जिला तथा दक्षिण में लुशाई की पहाड़ियाँ स्थित हैं। यह प्रायः पूर्णतया एक पर्वतीय प्रदेश है किन्तु इसके मध्य में मणिपूर की घाटी है। इसका क्षेत्रफल ३,२८४ वर्ग मील है और इसकी जनसंख्या सन् १९०१ ई० की जन-गणना के अनुसार २८४,४६५ थी। इनमें से १०३,३०७ आदमी तो भूतादि पूजक जातियों के थे और शेष हिन्दू थे जो कि मणिपूर की घाटी के निवासी थे। सन् १९३१ की गणना के अनुसार इस राज्य की आबादी ४४५,६०६ है।

इतिहास

सर्व प्रथम मणिपूर राज्य का पता हमें पाङ्ग (Pong) के शान राज्य के सहकारी राज्य के रूप में लगता है। सन् १७१४ ई० में नागा जाति का एक आदमी जिसका नाम पम्हेबा था मणिपूर का राजा बन बैठा[1]। कुछ दिनों बाद यह हिन्दू धर्म में दीक्षित हो गया और इसने गरीब नवाज़ की उपाधि धारण की। प्रजा ने धर्म के विषय में इस राजा का अक्षरशः

१—एन एकाउन्ट आफ दि प्राविन्स आफ आसाम एण्ड इट्स एडमिनिस्ट्रेशन, पृ० १३१।

पालन किया। गरीब नवाज़ ने चालीस वर्ष तक राज्य किया। इसके समय में वर्मीज लोग सदा राज्य पर चढ़ाई करते थे। अन्त में सन् १८१९ में वर्मीज लोगों ने राज्य पर कब्जा कर लिया। मणिपूर रियासत के तीन राजकुमार-मारजित, चौरजित तथा गम्भीर सिंह हिम्मत हार कर कचार भाग गये। सन् १८२४ ई० में जब कि ब्रिटिश सरकार ने वर्मीज लोगों के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया तब उसने गम्भीरसिंह को रुपया और सेना देकर मणिपूर राज्य को वर्मीजों से छीन कर पुनः हस्तगत करने के लिये प्रोत्साहित किया। गम्भीर सिंह ने चढ़ाई कर दी और उसे सफलता मिल गई। उसने कुबो की घाटी को भी मणिपूर में मिला लिया इस प्रकार से गम्भीर सिंह को राज्य मिल जाने पर सरकार ने उसके प्रबन्ध के लिये दो अंग्रेजी अफसरों को नियुक्ति की। सन् १८३३ में सरकार ने मणिपूर राज्य में कुछ और हिस्सा जोड़ दिया। सन् १८३६ ई० में गम्भीर सिंह की मृत्यु हो गई। चूँकि गम्भीर सिंह को मृत्यु के समय उसके पुत्र चन्द्रकीर्ति सिंह की अवस्था केवल एक वर्ष की थी अतः सुन्दर रूप से शासन को चलाने के लिये उसके मन्त्री नर सिंह और गरीब नवाज़ के प्रपौत्र की अध्यक्षता में एक रेजेन्सी कायम की गई। इसी साल में सरकार ने कुबो की घाटी को मणिपूर के राज्य से निकाल कर ब्रह्मदेश में मिला दिया तथा इस कमी की पूर्ति के लिये मणिपूर-नरेश को ५००) देना स्वीकार किया परन्तु सन् १८३५ ई० में ही यह सहायता बन्द कर दी गई और सरकार ने मणिपूर राज्य में अपना पोलिटिकल एजेण्ट रख दिया।

सन् १८४४ ई० में गम्भीर सिंह की स्त्री रानी दीवगर ने रेजेन्ट नर सिंह को विष देने का प्रयत्न किया परन्तु उसका यह दुःप्रयत्न असफल रहा और वह अपने पुत्र चन्द्रकीर्ति सिंह के साथ देश छोड़ कर भाग गई। इसके पश्चात् नरसिंह ने स्वयं राजा होने की घोषणा कर दी और अपनी मृत्यु के समय तक (१८५० ई०) शान्ति पूर्वक राज्य किया। उसके बाद उसका भाई देवेन्द्रसिंह राजा हुआ। परन्तु इसने केवल तीन महीने तक राज्य किया। नरसिंह के तीन पुत्रों की सहायता से चन्द्रकीर्तिसिंह ने देवेन्द्रसिंह को मार भगाया और स्वयं मणिपूर का राजा बन बैठा। कुछ दिनों तक राज्य में बड़ी अशान्ति रही परन्तु सन् १८५१ ई० में सरकार ने चन्द्रकीर्ति सिंह को राजा स्वीकार कर लिया और सब प्रकार से उसको सहायता का बचन दिया। सन् १८५१, ५२, ५६, ६२ आदि वर्षों में भिन्न भिन्न व्यक्तियों ने चन्द्रकीर्ति सिंह पर हमला किया परन्तु सब को मुँह की खानी पड़ी।

सन् १८७९ ई० में नागा युद्ध में चन्द्रकीर्तिसिंह ने ब्रिटिश सरकार की बड़ी सहायता की और अपनी अगाध स्वामिभक्ति का परिचय दिया। फलस्वरूप सरकार ने इन्हें के० सी० आई० की उपाधि से विभूषित किया। सन् १८८६ ई० में चन्द्रकीर्तिसिंह की मृत्यु हो गई। इनकी मृत्यु के पश्चात् नरसिंह के सब से बड़े लड़के ने राज्य प्राप्ति के लिये उपद्रव करना प्रारम्भ किया परन्तु वह शीघ्र ही दबा दिया गया।

सन् १८९१ में इस राज्य में बहुत बड़ा विप्लव मचा। सन् १८०५ ई० में तत्कालीन राजा महाराज सूरचन्द्र सिंह को उसके छोटे दो भाइयों ने तकेन्द्र-जित नामक सेनापति की प्रेरणा से राजमहल से भगा दिया। राजा राज्य छोड़ कर ब्रिटिश राज में चला आया। सरकार ने बहुत सोच समझ कर युवराज कुमार को राजा बनाना निश्चय किया। इस प्रस्ताव को कार्यरूप में परिणत करने के लिये तत्का-लीन चीफ कमिश्नर क्विन्टन मणिपूर गये। परन्तु वे छलपूर्वक अपने अनेक प्रसिद्ध अफसरों के साथ मार डाले गये। अन्त में उस दुष्ट सेनापति को भी फाँसी की सजा हुई।

ऐसी विषम अवस्था में सरकार ने एक दूसरे राजवंश के कुमार को राजा बनाया। यह नवयुवक राजा का नाम चूड़चन्द्र था। यह छः वर्ष तक शिक्षा पाने के लिये अजमेर भेजा गया और इसकी नाबा-लिग अवस्था में पोलिटिकल एजेन्ट राज्य का प्रबन्ध करता रहा। एजेन्ट ने न्याय का अच्छा प्रबन्ध किया। बेगारी की प्रथा का अन्त किया तथा जमीन के लगान में भी अनेक प्रकार के सुधार किये। बालिग होने पर कुमार चूड़ चन्द्र को राज्य का समस्त भार

सौंप दिया गया और आजकल यही मणिपूर के राजा हैं जो योग्यतापूर्वक शासन का कार्य कर रहे हैं।[1]

मणिपूर राज्य की राजधानी इम्फल है जो राज्य के केन्द्र में स्थित है। इम्फल तक जाने के लिये रेल का रास्ता नहीं है। पक्की तथा कच्ची सड़कें बनी हुई हैं जिनके द्वारा बैलगाड़ी में बैठकर जा सकते हैं। राज्य में तीन तहसीलें हैं।

जमीन का लगान

सन् १९३४-३५ साल में बकाया सहित जमीन का कुल लगान ११,८१,०६० रुपया था जिसमें केवल ४,१९,४२५ रुपया वसूल हो सका, ८३४६० रु० माफ कर दिया गया तथा ६,७८,२०५ रुपया बकाया पड़ा रहा। गत साल में पहाड़ी जातियों से "हाउस टैक्स" (गृह शुल्क) के रूप में १,०२,५९४ रुपया वसूल किया गया तथा इस वर्ष ८३,४९२ रु० मिला।

३१ मार्च १९३५ तक राज्य की समस्त आय ८,२९,३३५ रु० थी। गत साल की आमदनी ७,११,०७७ रु० थी। इस साल कुल खर्चा ७,०९,५६५ रु० था तथा गत साल ७,९७,०१४ रु० था। राज्य ने सरकार से ६ प्रतिशत की ब्याज से ९९,००० रु० कर्जा लिया है।

राज्य में चावल, चनेरा, तरकारी, ईख, गेहूँ, सरसों, तम्बाकू, आलू, मिरचा, रुई तथा दाल की पैदावार होती है। रेशम, रुई, पीतल, कांसा आदि, सरसों का तेल, हाथी दाँत का काम, जवाहिरात का काम तथा चमड़े का व्यवसाय होता है। राज्य की खानों से लोहा, चूने के पत्थर और ताँबा निकला जाता है।

राज्य में सोलह औषधालय हैं जिनमें दवा बांटने का अच्छा प्रबन्ध है। घाटी में दो हाई स्कूल, दो मिडिल इङ्गलिश स्कूल, तीन अपर प्राइमरी स्कूल तथा ८५ लोअर प्राइमरी स्कूल हैं। राज्य की ओर से शिक्षा में कुल खर्चा घाटी में ५०,९५० तथा पहाड़ी स्थानों में १८,२९६ रु० सन् १९३४-३५ में किया गया। इस प्रकार मणिपूर राज्य सर्वाङ्गीण उन्नति कर रहा है[2]।

---

१ एन एकाउन्ट आफ दि प्राविन्स आफ आसाम एन्ड इट्स एडमिनिस्ट्रेशन पृ० १३६-१४३।

२—रिपोर्ट आन दि एडमिनिस्ट्रेशन आफ आसाम फार दि इयर १९३४-३५, पृष्ठ २-३।

(गेट साहब की 'ए हिस्ट्री आफ कामरूप' के अनुसार)

प्राचीन कामरूप के राजाओं का तिथिक्रम

राजा का नाम	संभाव्य काल
भास्कर वर्मन्	६३० ई०

शालस्तम्भ का वंश

शाल स्तम्भ	६६४ ई०
विग्रह स्तम्भ	६८० ई०
पालक स्तम्भ	६९६ ई०
विजय स्तम्भ	७१२ ई०
श्री हरीश	७४० (७८०)

प्रलम्भ का राजवंश

प्रलम्भ	८०० ई०
हरजर	८१८ ई०
वनमाल	८३६ ई०
जयमाल	८५० ई०
वीर वाहु	८६६ ई०
वल वर्मन्	८८२ ई०
त्याग सिंह	९१० ई०

पाल राजवंश

ब्रह्म पाल	१००० ई०
रत्नपाल	१०१६ ई०
इन्द्रपाल	१०४८ ई०

कोच राजा

	विश्वसिंह	१५०९-१५३४
कूचविहार में	नरनारायण	१५३४-१५८४
	लक्ष्मीनारायण	१५८४-१६२२
कोच हाजों में शासन	रघुराय या देव	१५८१-१५९३
	परीक्षित	१५९३-१६१४
	बलिनारायण	१६१४-१६३७
	महेन्द्र नारायण	१६३७-१६४३
	चन्द्र नारायण	१६४३-१६६०
	सूर्य नारायण	१६६०-१६८२
	इन्द्र नारायण	१६८२-१७२५

आहोम राजाओं का राज्य काल

नाम	उपनाम	राज्य काल
सुकाफा		१२२८ ई० से १२६८ ई० तक
सुतेउफा		१२६८—१२८१
सुविनफा		१२८१—१२९३
सुखाङ्फा		१२९३—१३३२
सुखरौंङ्फा		१३३२—१३६४
सुतुफा		१३६४—१३७६
...		१३७६—१३८०
त्याओखामति		१३८०—१३८९
...		१४८९—१३९७
सुदाङ्फा		१३९७—१४०७
सुजाङ्फा		१४०७—१४२२
सुफाक्फा		१४२२—१४३९
सुनेनफा		१४३९—१४८८
सुहेनफा		१४८८—१४९३
सुपिम्फा		१४९३—१४९७
सुहुङ्मुङ्	या दिहिङ्गिया राजा	१४९७—१५३९
सुक्लेन्मुङ्	या गढ़गाय राजा	१५३९—१५५२
सुखाम्फा	या खोरा राजा	१५५२—१६०३
सुसेन्फा	या बुरहा राजा या प्रतापसिंह	१६०३—१६४१
सुराम्फा	या भगा राजा	१६४१—१६४४
सुतिन्फा	या नरिया राजा	१६४४—१६४८
सुतामला	या जयध्वजसिंह	१६४८—१६६३
सुपुङ्मुङ्	या चक्रध्वजसिंह	१६६३—१६७०
सुन्यातफा	या उदयादित्यसिंह	१६७०—१६७३
सुक्राम्फा	या रामध्वजसिंह	१६७३—१६७५
सुहुङ्		१६७५— ...
गोबर		१६७५— ...
सुजिन्फा		१६७५—१६७७
सुदैफा		१६७७—१६७९
सुलिकफा	या लरा राजा	१६७९—१६८१
सुपात्फा	या गदाधरसिंह	१६८१—१६९६
सुखरुङ्फा	या रुद्रसिंह	१६९६—१७१४
सुताम्फा	या शिवसिंह	१७१४—१७४४
सुनेन्फा	या प्रमत्तसिंह	१७४४—१७५१
सुराम्फा	या राजेश्वरसिंह	१७५१—१७६९
सुन्योफा	या लक्ष्मीसिंह	१७६९—१७८०
सुहितपाङ्फा	या गौरीनाथ सिंह	१७८०—१७९५
सुक्लिन्फा	या कमलेश्वर सिंह	१७९५—१८१०
सुदिन्फा	या चन्द्रकान्त सिंह	१८१०—१८१८
	पुरन्दर सिंह	१८१८—१८१९
	योगेश्वर सिंह	१८१९— ...
	वर्मीज़ लोगों का शासन	१८१९—१८२६
	अंग्रेजों का अधिकार	१८२६
	(अपर आसाम में) पुरन्दर सिंह	१८३२—१८३८
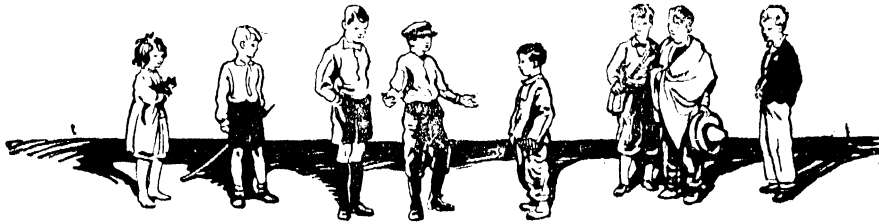
आसाम की धार्मिक अवस्था

आसाम में प्रधानतया चार धर्म पाये जाते हैं। (१) हिन्दू धर्म, (२) इस्लाम, (३) भूत पूजा, (४) इसाई धर्म। इन सब में हिन्दू धर्म के अनुयायियों की संख्या सब से अधिक है। आसाम में इस्लाम धर्म का भी प्रचार है तथा इसके मानने वाले सूरमा की घाटी में विशेषतः सिलहट जिले में पाये जाते हैं। भूतपूजा करने वालों की संख्या भी कुछ कम नहीं है। ये लोग भूत प्रेत की सत्ता में विश्वास रखते हैं और उन्हीं की पूजा करते हैं। आसाम में इसाइयों की संख्या कम है परन्तु यह दिन दूना रात चौगुनी बढ़ती जा रही है।

हिन्दू-धर्म

१६०१ की मनुष्य गणना के हिसाब से आसाम में ६९ प्रतिशत हिन्दू २१ प्रतिशत भूतादि पूजक और ९ प्रतिशत मुसलमान थे। इससे स्पष्ट प्रतीत है कि हिन्दुओं की संख्या तीन चौथाई के आस पास है। हिन्दू धर्म के विशेषतया तीन सम्प्रदायों का यहां प्रचार है। शाक्त, वैष्णव और शैव सम्प्रदाय। शाक्त सम्प्रदाय वाले भगवती दुर्गा के उपासक हैं। इनका प्रधान मन्दिर कामाख्या देवी का है। शक्ति के उपासक भगवती को अपना आराध्य देवता मानते हैं और उनकी पूजा में विरत रहते हैं। प्राचीन समय में आसाम में शाक्तों की संख्या बहुत अधिक थी परन्तु १९०१ की जन-गणना के अनुसार समस्त हिन्दुओं में शाक्तों की संख्या दो प्रतिशत से अधिक नहीं पाई गई। शाक्त लोग देवी के आगे बलिदान करना धार्मिक कार्य समझते हैं परन्तु आजकल बहुत ही कम बलिदान होता है। शैव लोगों की संख्या भी बहुत ही कम है। १९०१ के अनुसार समस्त प्रान्त में केवल ५७२ आदमियों ने ही अपना धर्म शैव स्वीकार किया था।

वैष्णव धर्म

आसाम में वैष्णव धर्म का बड़ा ही प्रचार है। १९०१ की गणना के अनुसार ९८ प्रतिशत लोगों ने अपना धर्म वैष्णव स्वीकार किया था। आजकल वैष्णवों की संख्या अधिक है तथा इनके अनेक मन्दिर और मठ पाये जाते हैं।

शङ्कर देव तथा महापुरुषिया सम्प्रदाय

आसाम में वैष्णव धर्म के इस प्रचुर प्रचार का समस्त श्रेय श्री शंकर देव को है। शाक्तों की पूजा-विधि तथा बलिदान को देखकर इनका हृदय विचलित हो उठा। बङ्गाल में चैतन्य महाप्रभु के सात्विक उपदेशों ने शंकर देव के चित्त को मोहित कर लिया। इन्होंने एक नये सम्प्रदाय को चलाया जिसे महापुरुषिया सम्प्रदाय कहते हैं। शंकर देव के भक्त उन्हें महापुरुष समझते हैं। अतः उनके द्वारा चलाये गये सम्प्रदाय को महापुरुषिया सम्प्रदाय कहते हैं।

महापुरुषिया सम्प्रदाय के सिद्धान्त

महापुरुषिया सम्प्रदाय वाले मूर्ति पूजा नहीं करते तथा बलिदान चढ़ाने की प्रथा को बहुत बुरा मानते हैं। ये मांस खाना निषिद्ध समझते हैं तथा चेचक में टीका लगाने की प्रथा (वैक्सिनेशन) के बड़े विरोधी हैं। इस धर्म में जात-पांत का कुछ भी विचार नहीं है। नीच से नीच पुरुष भी इसका सदस्य हो सकता है। यही कारण है कि महापुरुषिया सम्प्रदाय के अनुयायी अधिकतर नीच जाति के ही लोग हैं। ये लोग मन्त्र, स्तोत्र तथा प्रार्थनाओं के द्वारा

ईश्वर की पूजा करते हैं। शंकरदेव शाकाहारी थे परन्तु उनके नीच जाति वाले अनुयायी शिकार में मारे गये जन्तु को खा लेते हैं। ये पालतू जानवरों का मांस नहीं खाते हैं। ये सदाचार को अच्छा समझते हैं और इनके प्रसिद्ध सूत्रों में ब्रह्मचर्य पालन पर बड़ा जोर दिया जाता है। महापुरुषिया सम्प्रदाय का सबसे बड़ा केन्द्र बारपेटा में है जहाँ इस सम्प्रदाय के महन्त तथा भक्त बड़ी अधिक संख्या में रहते हैं। इन सत्रों में ब्रह्मचर्य का पालन करना आवश्यक है। शङ्कर देव के प्रधान शिष्य का नाम माधव देव था।

अन्य उप-सम्प्रदायों की उत्पत्ति

शङ्करदेव की मृत्यु के बाद वैष्णव धर्म में अन्य उप-सम्प्रदायों की उत्पत्ति होने लगी। परन्तु वास्तव में ये सम्प्रदाय शङ्कर देव के सम्प्रदाय ही की शाखायें थीं। शङ्कर देव के दो अनुयायी दामोदर देव तथा हरिदेव ने दो सम्प्रदायों का प्रवर्तन किया जिन्हें उन्हीं स्थापना करने वालों के नाम पर दामोदरिया तथा हरिदेव पन्थी सम्प्रदाय कहते हैं। इन सम्प्रदायों तथा शङ्कर देव के महापुरुषिया सम्प्रदाय में अन्तर केवल इतना ही था कि ये लोग जाति को विशेष महत्व देते थे तथा मूर्ति पूजा को भी कुछ हद तक मानते थे। तीसरे सम्प्रदाय के प्रवर्तक गोपाल देव माने जाते हैं परन्तु इनके तथा शङ्कर देव के सम्प्रदाय में कुछ भी अन्तर नहीं था। क्रमशः इस पन्थ के मानने वाले ने देव दामोदर के उपदेशों को स्वीकार कर लिया।

बमुनिया सम्प्रदाय

यह सम्प्रदाय भी वैष्णव धर्म का एक अंग ही है परन्तु महापुरुषिया सम्प्रदाय के इसकी सत्ता बिलकुल भिन्न है। इस सम्प्रदाय का प्रवर्तक माधवदेव माने जाते हैं। माधवदेव गोपाल देव के शिष्य थे। एक दिन दोनों नाव पर बैठ कर कहीं जा रहे थे कि बड़ी आँधी आई। इस पर माधवदेव ने अपने गुरु गोपाल देव की रक्षा के लिये वरुण को प्रार्थना की। इस पर गोपालदेव ने उसे मूर्ति पूजक समझ कर नाव से ढकेल दिया। माधवदेव किसी प्रकार तैरते हुये किनारे पहुँचे तथा उन्होंने अपने गुरु से विरोध करने की प्रतिज्ञा की और पीछे अलग एक स्वतन्त्र सम्प्रदाय का प्रवर्तन किया। माधवदेव अन्य धर्म सुधारकों की भाँति पक्के शाकाहारी थे।

इस सम्प्रदाय के सिद्धान्त

महापुरुषिया तथा बमुनिया सम्प्रदाय में अन्तर यह है कि पहले वाले शूद्र को भी अपना धार्मिक गुरु मान लेते हैं, कृष्ण को छोड़कर किसी दूसरे की पूजा नहीं करते, तथा मूर्ति पूजा के कट्टर विरोधी हैं। परन्तु बमुनिया सम्प्रदाय वाले ब्राह्मण ही को अपना गोसाईं मानते हैं, कृष्ण के अतिरिक्त शिव, काली तथा अन्य देवताओं की भी पूजा करते हैं तथा देवताओं के प्रसन्नार्थ बलिदान करना धर्म का अंग मानते हैं।

सहज भजन नाम का एक अन्य सम्प्रदाय भी आसाम में पाया जाता है। इस सम्प्रदाय वाले मुक्ति के लिये किसी स्त्री को अपना धार्मिक गुरु मान कर प्रयत्न करते हैं। कहा जाता है कि इनमें आचरण के नियमों की कुछ शिथिलता है।

सत्र

आसाम में वैष्णव धर्म की प्रधान वस्तु सत्र है। वहाँ सत्रों का बड़ा महत्व है। प्रधान सत्र चार हैं। दक्षिणपार, आउनिआटी, गडमुर, कुरुवाबाँडी। ये सत्र मध्यकालीन यूरोप के मठों (मोनेस्टरी) के समान होते हैं। इन सत्रों को आजकल का मठ कहें तो अधिक उचित होगा। इन सत्रों में वैष्णव धर्म के पुरोहित या गुसाईं रहा करते हैं। सत्रों में रहते हुए प्रायः ब्रह्मचर्य का पालन करना आवश्यक समझा जाता है। इनमें एक नामघर (नामप्रसंग) अर्थात् एक बहुत बड़ा विशाल भवन होता है जहाँ पर सब लोग पूजा करने के लिये एकत्रित होते हैं। इस भवन के एक कोने में प्रायः एक छोटा सा मन्दिर भी बना रहता है जिसमें विष्णु की मूर्ति स्थापित रहती है। इस भवन के चारों ओर भक्तों के रहने के निवास स्थान बने रहते हैं। जो सत्र बड़े हैं वे आदर की दृष्टि से देखे जाते हैं।

शंकरदेव ने ६४ सत्रों की स्थापना की है।

इस्लाम

सन् १९०१ की गणना में १५,८१,३१७ आदमी अर्थात् समस्त प्रान्त की आबादी के एक चौथाई

आदमी मुसलमान थे। इसमें से तीन चौथाई आदमी केवल सिलहट जिले में थे। यह स्थान चौदहवीं सदी के अन्त में सिकन्दर गाजी नामक मुसलमान के द्वारा जीता गया था। शाह जलाल नामक मुसलमान फकीर ने इस कार्य में सिकन्दर गाजी को बड़ी सहायता पहुँचाई थी। मुसलमान कचार में अधिक संख्या में पाये जाते हैं और गोआलपारा जिले में इनकी संख्या एक चौथाई से भी अधिक है। पहाड़ी प्रान्तों में मुसलमानों की संख्या तीन प्रतिशत से भी कम है। सन् १९०१ की गणना के अनुसार केवल २,७२४ आदमी शिया थे तथा शेष सब सुन्नी थे। मोरिया भी मुसलमान ही हैं जो कि कुछ नीच माने जाते हैं। हाजो में इनकी एक बहुत बड़ी मसजिद है। कहा जाता है कि इसे लतफुल्ला शिरगी ने सन् १६५० ई० में जब कि वह हाजो का थानेदार था, बनवाया था।

भूतादि के पूजक

सन् १९०१ ई० की गणना के अनुसार १०,६८,२३४ आदमी अर्थात् प्रान्त की आबादी के १७ प्रतिशत आदमी भूतादि की पूजा करने वाले थे। सूरमा की घाटी में रहने वाले ऐसे आदमियों की संख्या बड़ी थोड़ी है परन्तु ब्रह्मपुत्र की घाटी के नीचे के जिलों में इनकी संख्या नवगाँव में ३१ प्रतिशत से लेकर कामरूप में २१ प्रतिशत तक है। शिवसागर जिले में इन लोगों की संख्या ७ प्रतिशत तथा लखीमपुर में ५ प्रतिशत है। परन्तु पहाड़ी जिलों में इनकी संख्या बड़ी अधिक है और यह समस्त जन-संख्या में ८५ प्रतिशत तक पहुँच गई है। इनको अपने धर्म पर कोई विशेष आग्रह नहीं है। नीचे के मैदान में आने पर ये हिन्दू धर्म को स्वीकार कर लेते हैं तथा पहाड़ों पर इसाई धर्म को स्वीकार करते जा रहे हैं।

बौद्ध तथा अन्य मत

आसाम में बौद्धों की संख्या कुछ अधिक नहीं है। इस प्रान्त में बौद्ध या तो भाटिया व्यापारी हैं अथवा नेपाली मजदूर हैं। आसाम प्रान्त में केवल एक ही बौद्ध भोटिया लोगों का गाँव है और वह है देवनगिरि। सन् १९०१ ई० को गणना के अनुसार बौद्धों की संख्या केवल ८,९११ थी। ये बौद्ध अधिकतर लखीमपुर और शिवसागर के जिले में पाये जाते हैं। जैनियों की संख्या सन् १९०१ में १,५९७ थी। ये प्रायः राजपूताना के रहने वाले मारवाड़ी बनिये हैं जिन्होंने व्यापार करने के लिये आसाम में अपना डेरा जमा लिया है।

इसाई धर्म

सन् १६०१ की गणना के अनुसार आसाम में इसाइयों की संख्या इस प्रकार थी :—

यूरोपियन तथा मिश्रित जातियाँ	२,०९९
यूरेशियन	२७५
नेटिव क्रिश्चियन	३३,५९५

१८९१ से लेकर १६०१ ई० तक नेटिव क्रिश्चियनों का संख्या १२८ प्रतिशत के हिसाब से बढ़ी है। आसाम प्रान्त में इसाई धर्म का प्रचार करने वाली सब से बड़ी मिशनरी संस्था वेल्स प्रेसबेटेरियन मिशन है जिसका प्रधान स्थान खासी तथा जयन्तिया की पहाड़ियों में है। यह मिशन सन् १८४१ ई० में स्थापित किया गया था और सन् १९०३ में इसकी ओर ३६ मिशनरी काम कर रहे थे जिनमें १३ सूरमा की घाटी में और २ लुसाई की पहाड़ियों में काम कर रहे थे। खासी लोगों में जाति पांत का कुछ विचार नहीं है अतः वे लोग बहुत जल्दी इसाई धर्म को स्वीकार कर लेते हैं। बैप्टिस्ट मिशन भी अच्छा कार्य कर रहा है। सन् १९०१ में इस सम्प्रदाय के मानने वालों की संख्या १०,०४५ थी। इस मिशन की स्थापना सर्वप्रथम लखीमपुर जिले के सदिया नामक स्थान में सन् १८२६ में हुई थी। सन् १९०३ में इसकी ओर से २१ मिशनरी काम कर रहे थे। इन लोगों का प्रधान स्थान गैरो पहाड़ी, गोआलपारा, कामरूप तथा शिवसागर जिले में है। सन् १६०१ के अनुसार प्रान्त के भिन्न धर्मानुयायियों की संख्या इस प्रकार है :—

हिन्दू		३२,५८,५२२
भूतादि पूजक		९,६५,०२१
मुसलमान		१५,७०,९३४
क्रिश्चियन	नेटिव	३३,५८७
	दूसरे	२,३३७
बौद्ध		८,७६६
दूसरे धर्मानुयायी		२,७०५

आसाम में मिशन का प्रचार

दि अमेरिकन बैप्टिस्ट मिशन १८३७

सन् १८२६ ई० में आसाम अँग्रेजों के हाथ में आया। इसके केवल ग्यारह वर्ष बाद ही अर्थात् सन् १८३७ ई० में अमेरिकन बेप्टिस्ट मिशन ने आसाम में अपना अड्डा जमा लिया और सदिया को अपना प्रधान स्थान बनाया। सब से पहिले मिशनरी जो आसाम में आये उनका रेवेरेण्ड एन० ब्राउन और ओ० टी० कटर है। ये यहाँ आने के पहिले बर्मा में प्रचार का कार्य करते थे। आसाम का सर्व प्रथम प्रेस सदिया में इन्हीं मिशनरियों के द्वारा स्थापित किया गया। रेवेरेण्ड एन० ब्राउन ने बर्मा छोड़ने के पहिले शान भाषा का अच्छा अध्ययन कर लिया था और उन्होंने इस भाषा के ३,००० शब्दों का संग्रह भी किया था। पहिले इन लोगों का विचार शान जाति में धर्म प्रचार करने का था परन्तु सदिया में इस बात की सुविधा न देख कर इन्होंने आसामी लोगों में प्रचार कार्य का निश्चय किया और सदिया से अपना प्रधान स्थान बदल कर जयपुर और शिवसागर में कर लिया। तब से यह मिशन आज तक वहां काम कर रहा है।

इन्होंने अपने प्रेस (जो कि बहुत दिनों तक आसाम का केवल एक मात्र था) के द्वारा आसामी भाषा में अनेक स्कूली किताबों, छोटी पुस्तिकाओं प्रार्थना-किताबों का प्रकाशन कर प्रचार किया। ये एक मासिक पत्रिका भी निकालते थे जिसका नाम "अरुणोदय" था। सन् १८४५ ई० में ब्राउन साहब ने नयी बाइबिल (New Testament) का हिब्रू भाषा से आसामी भाषा में अनुवाद किया और सन् १८५० में इसका तीसरा संस्करण प्रकाशित हुआ। अस्वस्थता के कारण ब्राउन के चले जाने के बाद भी बाइबिल के अनुवाद का काम जारी रहा। रेवेरेंड हिटिङ्ग डावार्ड और ए० के गुरनी ने मिलकर समस्त बाइबिल का अनुवाद किया। "अरुणोदय" पत्रिका बहुत दिनों तक निकलती रही परन्तु १८८० ई० में इसका प्रकाशन बन्द होगया। दो वर्ष के बाद प्रेस भी 'आसाम टी कम्पनी' को बेंच दिया गया।

अमेरिकन बैप्टिस्ट मिशन ने पर्वतीय जातियों के लड़के और लड़कियों की शिक्षा के लिये अनेक स्कूल खोले। अनेक वर्षों तक यूरेशियन लड़कों के लिये श्रीमती वार्ड की अध्यक्षता में एक बोर्डिङ्ग स्कूल चलता रहा। इस मिशन की नागा की पहाड़ियों में दो शाखायें हैं, पहिली मोलोङ्ग में और दूसरी कोहिमा में। इन असभ्य पहाड़ी जातियों में धर्म प्रचार करना कोई खेल नहीं है परन्तु ऐसे खतरनाक स्थान में भी ई० एम० क्लार्क ने अनेक वर्षों तक धर्म का प्रचार किया। ये मिशनरी स्थानीय जातियों को इसाई बनाकर उनकी सहायता से इसाई धर्म का प्रचार कर रहे हैं।

प्रत्येक पहाड़ियों में मिशनरियों की ओर से स्कूल खुले हुये हैं जहाँ पर शिवसागर गिरिजाघर से संबंध रखने वाले आसामी मिशनरी शिक्षा देने का कार्य करते हैं। नागा पहाड़ी के लड़कियों के एक स्कूल में एक नागा लड़की ही अध्ययन का कार्य करती है। इन स्कूलों को सरकार की ओर से ५२०) सहायता के रूप में मिलता है।

अमेरिकन बैप्टिस्ट मिशन का प्रचारकार्य नवगांव के लिये सन् १८४१ ई० में रेवेरेंड एम० ब्रान्सन के द्वारा प्रारम्भ किया गया था। इन्हों ने बहुत दिनों तक यहां धर्म प्रचार किया। इनके पश्चात् स्टोडर्ड और स्काट साहब ने इस कार्य को करना प्रारम्भ किया। मिस ओ० कीलर ने स्थानीय स्त्रियों में शिक्षा और इसाई धर्म के प्रचार में बड़ी सहायता पहुँचाई है। बहुत वर्षों तक नवगांव में लड़कों के लिये नार्मल स्कूल और लड़कियों के लिये एक दूसरा स्कूल था। इस जिले में मिशनरियों का प्रधानकार्य मिकिर और कचारी नवयुवकों में शिक्षा का प्रचार करना था। सन् १८८४ ई० में इस गिरिजाघर के ११० सदस्य थे। स्कूली लड़कों की संख्या २३९ थी और सरकार इन संस्थाओं को १५००) सहायता प्रदान करती थी।

एस० पी० जी० सोसाइटी मिशन

इस मिशन का प्रधान स्थान तेजपुर था और इसका सर्वप्रथम मिशनरी केसेलमेयर था। इसका उत्तराधिकारी रेवेरेंड एन्डल हुआ। इस मिशन ने अपना प्रचार कार्य कचारी जाति में किया। कचारी

नवयुवकों की शिक्षा के लिये इसने तेजपूर में एक नार्मल स्कूल खोला और अन्य स्कूलों की भी स्थापना की। सन् १८८४ ई० में सरकार इन स्कूलों को १८००) की सहायता देती थी। तेजपूर के गिरजाघर और स्कूलों के अतिरिक्त कचारी गांवों में भी गिरिजाघर हैं।

गौहाटी में कलकत्ते के प्रधान इसाई (Bishop) के द्वारा नियुक्त एक पुरोहित (Chaplain) रहता है जो गौहाटी और शिलाङ्ग इन दोनों स्थानों में इसाई धर्म का प्रचार करता है। शिवसागर और डिब्रूगढ़ में भी इसी प्रकार के पुरोहित हैं जो चाय बगान के कुलियों को ईसा के शान्ति का उपदेश सुनाते हैं। अमेरिकन वैप्टिस्ट मिशन की भी शाखा गौहाटी में तीस वर्षों से भी अधिक समय से काम कर रही है। रेवेरेंड बारकर के द्वारा यहां पर मिशन का कार्य प्रारम्भ किया था। तब से यह कार्य अविछिन्न से चल रहा है।

वेल्श काल्विनिस्टिक सोसाइटी मिशन

आसाम प्रान्त में इसाई धर्म के प्रचार में यदि किसी मिशन ने सब से अधिक सफलता प्राप्त की है तो इसी मिशन ने की है। इस मिशन के प्रधान कार्यकर्ता रेवेरेंड डब्लू० जे० लिविस हैं और यह मिशन लगभग १८५० ई० से काम कर रहा है। इसका क्षेत्र खसिया हैं। इनमें जात पांत का विचार नहीं है अतः इनके बीच इसाई धर्म का प्रचार करना सरल कार्य है। खसिया की पहाड़ियों में इस मिशन का कार्य जाल की तरह बिछा हुआ है। मोकाङ्ग स्थान में औषधालय खोला गया है और चेरा में एक नार्मल स्कूल है। सन् १८८४ ई० में इस मिशन के अन्तर्गत ६६ गिरजाघर थे जिसके २००० सदस्य थे और समस्त इसाई धर्मावलम्बियों की संख्या ३,००० से भी अधिक थी। आजकल तो इनकी संख्या बहुत ही अधिक हो गई होगी।

गैरो पहाड़ियों में प्रचार

रेवेरेंड आई० जे० स्टोडर्ड और टी० जे० कीथ ने अपना सारा समय और परिश्रम गारो जातियों में धर्म प्रचार में लगाया। स्टोडर्ड साहब ने गैरो की पहाड़ियों में अनेक स्कूल खोले। गारो भाषा को सीखा और बहुत सी पुस्तिकाओं को प्रकाशित किया। कीथ ने गारोबंगाली-अँग्रेजी कोश रचा और एक व्याकरण लिखा। रेवेरेंड फिलिप और मेसन ने समस्त बाइबिल का अनुवाद इस भाषा में किया और 'गारोफ्रेंड' नामक एक पत्र भी निकाला। सन् १८८४ में गारो पहाड़ियों में ९ गिरजाघर थे जिसके ८०० सदस्य थे। तुरा में लड़कियों के लिये एक स्कूल और लड़कों के लिये एक नार्मल स्कूल था। इन संस्थाओं को २०००) सरकारी सहायता मिलती है[१]।

१ श्रीमती एस० आर० वार्ड—च० गिल्स आफ आसाम पृ० २१७।

सामाजिक अवस्था

आसाम प्रान्त की सामाजिक अवस्था का वर्णन बड़ा मनोरंजक है। जिस प्रकार भाषाशास्त्री के लिये आसाम में भाषाओं की भिन्नता के कारण अध्ययन का अधिक मसाला मिलता है उसी प्रकार समाज-शास्त्री के लिये जातियों की भिन्नता के हेतु अध्ययन की कुछ कम सामग्री प्रस्तुत नहीं है। इस प्रान्त में आसामियों के अतिरिक्त इसके सीमान्त पर नागे, अबर, मिश्मी, खामती आदि अनेक पर्वतीय जातियाँ निवास करती हैं जिनकी भाषा और रहन-सहन एक दूसरे से बिल्कुल भिन्न है। इन जातियों में ऐसी विचित्र विचित्र प्रथायें प्रचलित हैं जिनका भारत के अन्य भाग में मिलना कठिन है। इन जातियों के अतिरिक्त यहाँ के चाय बगानों में यू० पी० के पूर्वी जिलों तथा बिहार के दक्षिणी जिलों और सन्थाल परगना के अनेक कुली काम करते हैं जो यहाँ आकर बस गये हैं। इन लोगों ने अपनी भाषा के साथ ही साथ अपने समाज को भी इस प्रान्त में प्रविष्ट करा दिया है। इस प्रकार हम देखते हैं कि इस प्रान्त में आसामियों, सीमान्त जातियों तथा अपनी उदरदरी की पूर्ति के लिये सुदूर प्रान्तों से आये हुए इन कुलियों की सामाजिक दशा एक दूसरे से बिल्कुल भिन्न है। अतः इस प्रान्त को भिन्न भिन्न सामाजिक दशाओं, रीति-रस्मों के कारण यदि हम 'म्युजियम आफ सोसायटी' कहें तो किसी को विशेष आपत्ति नहीं होनी चाहिये।

वर्ण व्यवस्था

भारत के अन्य प्रान्तों की भांति आसाम में भी चातुर्वर्ण-व्यवस्था है। यहाँ का समाज भी ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र—इन विभागों में विभक्त है। आसामी ब्राह्मण पूजा पाठ करते और संस्कृत विद्या का अध्ययन अपना प्रधान कर्तव्य समझते हैं। वैश्य लोग व्यापार आदि से अपना जीविकोपार्जन करते हैं और शूद्र समाज की सेवा में लगे रहते हैं। हरिजनों की इस प्रान्त में कमी नहीं है। चाय बगान में काम करने वाले कुलियों में इनकी संख्या अधिक है।

संस्कार

हिन्दुओं के जो मुख्य मुख्य संस्कार हैं वे यहाँ भी इसी प्रकार सम्पादित किये जाते हैं जिस प्रकार अन्य प्रान्तों में। जन्म, विवाह और मृत्यु के संस्कार तो प्रायः सब करते ही हैं। यज्ञोपवीत आदि संस्कार भी उच्च श्रेणी के लोग करते हैं। यहाँ के विवाह संस्कार में बहुत कुछ विचित्रता रहती है। यहाँ के ब्राह्मण शास्त्रोक्त संस्कारों को व्यवहार में लाते हैं और दूसरों के लिये आदर्श उपस्थित करते हैं।

सामाजिक बन्धन

यहाँ का सामाजिक बन्धन भी बड़ा कठोर है। जाति-व्यवस्था के कारण कोई भी सामाजिक बन्धन का उल्लंघन नहीं कर सकता। वैसा करने पर उसे जाति-च्युत कर दिया जाता है। सीमान्त जातियों में तो यह बन्धन और भी कठोर है। यहाँ एक पूरी जाति एक विशाल परन्तु संगठित परिवार समझी जाती है। अतः इस बन्धन के कारण लोग अनेक बुराइयों में प्रवृत्त होने से डरते हैं।

विवाह

आसाम प्रान्त में विवाह की प्रथा भिन्न भिन्न जातियों में भिन्न भिन्न प्रकार से पाई जाती है।

यहाँ के निम्न श्रेणी के लोगों में युवती और युवक ही अपना साथी चुन लेते हैं। उच्च श्रेणी के लोगों की अपेक्षा इनको इस कार्य में अधिक स्वतन्त्रता होती है। आसाम में तीन प्रधान जातीय त्योहार होते हैं जिनको 'विहू' कहते हैं। (अ) कार्तिक विहू, (ब) माघ विहू और (स) वैसाख विहू। इन त्योहारों के अवसर पर बड़ा आनन्द मनाया जाता है। प्रायः प्रत्येक आसामी गाँव में इस उत्सव को मनाने के लिये एक स्थान निश्चित रहता है जो गाँव के पास ही होता है। इन स्थानों (घरों) को भी 'विहूतलि' कहते हैं। इन्हीं विहुओं में आसामी युवक-युवतियाँ अपना जोड़ा चुनती हैं। वैसाख विहू के अवसर पर इनमें बड़ा उत्सव मनाया जाता है। आसपास के गाँवों के समस्त अविवाहित युवक और युवतियाँ इस 'विहू' में आते हैं और एक दूसरे के साथ खूब नाचते और गाते हैं। इन 'विहू' उत्सवों में कोई भी विवाहित स्त्री-पुरुष सम्मिलित नहीं हो सकता। नाच, गान के उपरान्त एक युवक अपनी मनचाही युवती को (बिना उसके पिता के आज्ञा के) लेकर भाग जाता है और कुछ दिनों तक बाहर रहने के पश्चात् घर लौटता है। घर आने पर लड़की-लड़के के माता-पिता उन दोनों का व्याह कर देते हैं। विवाह के उपरान्त सब जाति वालों को भोज दिया जाता है। इस विवाह की विशेषता यह है कि इस प्रकार से विहू के उत्सव पर अपनी लड़की का भगाया जाना पिता जरा भी बुरा नहीं समझता है। दूसरी विशेषता यह है कि इस अवसर पर युवक ही युवतियों को भगाते हैं बच्चे बच्चियों को नहीं। अतः इस समाज में बाल विवाह की प्रथा बिल्कुल नहीं है। यदि कहें तो कह सकते हैं कि गान्धर्व विवाह आसामियों की विशेषता है। सर्व साधारण आसामी जनता तथा साधारण शिष्ट समाज में भी इसी प्रथा का प्रचार है परन्तु अधिक शिक्षित घरों में यह प्रथा नहीं है। वहाँ माता-पिता ही विवाह के निर्णायक होते हैं। विवाह के अवसर पर एक जलूस निकलता है जिसमें वर हाथी पर बैठ कर पीली पगड़ी बाँधे रहता है। इस प्रकार वर वधू के घर जाकर विवाह करता है। इन विवाहों में सुपारी भेज कर निमन्त्रण दिया जाता है और बारात में नाच और बाजे का बड़ा प्रबन्ध रहता है। विवाह के बाद जब बधू पति के घर पहुँचती है तब दीपक के सामने चावल से भरे एक घड़े को रखती है। अन्य स्त्रियाँ वर-बधू के ऊपर अक्षत छीटती हैं। पति एक अँगूठी किसी बर्तन में छिपाता है जिसे स्त्री ढूँढ़ती है। पति जब स्त्री के लिये दाम नहीं चुकाता, तब अपने ससुर के साथ मिहनत का काम करता है।

आसाम में बाल तथा बहु विवाह की प्रथा बहुत कम है। कछारी जाति में लड़कियों के लिये उसका पिता ६०) से १५०) तक कीमत के रूप में लेता है। अन्य जातियों में भी लड़कियाँ बेची जाती हैं। शिव सागर और लखीमपुर के जिलों में लड़कियों को बेचने की प्रथा अब तक जारी है। उच्च जाति के लोग लड़कियों के लिये ५००) तक लेते हैं। जंगली जातियों में असुर विवाह की प्रथा अब तक जारी है। शिव सागर में इस प्रकार के विवाह का प्रथा अधिक है।

उत्सव

आसामी लोगों के यहाँ मनोरंजन के अनेक साधन हैं और यहां उत्सवों की भी कुछ कमी नहीं है। यहां तीन सर्व प्रधान राष्ट्रीय उत्सव हैं जो 'विहू' के नाम से प्रसिद्ध हैं। ये 'विहू' साल में तीन बार होते हैं। (अ) कार्तिक विहू—यह क्वार मास के अन्तिम दिनों में होता है। इस समय साधारण उत्सव मनाया जाता है। ईश्वर की स्तुति की जाती है और गुड़ तथा केले का प्रसाद बांटा जाता है। (ब) माघ विहू—यह पूस मास के अन्तिम दिनों में गल्ला कट दिया जाता है। लोग सबेरे स्नान कर के आग तापते हैं। यह उत्सव साधारण तथा बालकों के लिये है जो नाचते, गाते और नवनिर्मित झोपड़ों में खाते हैं। (स) वैसाख विहू—यह चैत्र के अन्तिम दिनों में लगता है और साल का सब से प्रसिद्ध उत्सव समझा जाता है। नये साल के आरम्भ में होने से इसकी विशेषता बढ़ जाती है। इस समय युवक, युवतियां 'विहुओं' में जा कर आनन्द पूर्वक नाच गान करते हैं और इस उत्सव के समय युवक अपनी अभिलाषित युवती को विवाह के लिये लेकर भाग जाता है। देहाती लोग अपने मित्रों के घर जा कर उन्हें नये कपड़े देते हैं। धान के खेतों में भैंसों की लड़ाई भी होती है। चूँकि

ब्रह्मपुत्र नदी में एक मुसाफिरी अगिन बोट

आसाम का एक दृश्य

आसाम में ब्रह्मपुत्र के किनारे पाण्डुघाट का एक दृश्य

आसामी लोग अपना गन्धर्व विवाह प्रायः इन्हीं दिनों में करते हैं अतः इस उत्सव में बड़ी चहलपहल रहती है। इसके अतिरिक्त शङ्कर देव और माधव देव की श्राद्ध तिथि भी राष्ट्रीय त्यौहार समझी जाती है। शङ्कर देव की श्राद्ध तिथि अगस्त—सितम्बर के महीने में और माधव देव की कृष्ण जन्माष्टमी के तीन दिन पहिले पड़ती है। इन श्राद्ध तिथियों में सब लोग अपना काम-काज बन्द कर देते हैं और नाचते, गाते तथा आनन्द मनाते हैं। इसके अतिरिक्त कृष्ण जन्माष्टमी, शिवरात्री और दुर्गापूजा के अवसर पर भी काफी उत्सव मनाया जाता है।

देहातियों के लिये भोज, गायक पार्टियों में गान करना और नाटक खेलना प्रधान मनोरंजन के साधन हैं। आसामी गाँवों में प्रायः प्रत्येक घर में एक 'नाम-घर' होता है जहाँ सब प्रकार के लोग हरिभजन किया करते हैं। इन 'नामघरों' में जाने से बड़ी आध्यात्मिक उन्नति होती है और चित्त बड़ा प्रसन्न हो जाता है। फरवरी या मार्च के महीने में डोलयात्रा बड़े उत्साह से मनायी जाती है। यहां भतेली एक प्रकार का खेल होता है जिसमें दण्डे का प्रदर्शन किया जाता है और लोग दौड़ते हैं।

अन्त्येष्टि

आसामी लोगों में भी भारत के अन्य प्रान्तों की तरह शव को जला देने की प्रथा है परन्तु कछारी जाति में शव को कभी कभी गाड़ भी दिया जाता है। कभी कभी शव जंगल में भी फेंक दिया जाता है। अन्त्येष्टि के पश्चात् एक बहुत बड़ा भोज किया जाता है जिसमें जाति के सब लोगों को खिलाया जाता है। इस प्रकार अन्त्येष्टि कर्म बड़ा खर्चीला पड़ जाता है।

परदा

आसाम में परदा नहीं है। आसामी स्त्री-पुरुष बड़ी स्वतन्त्रता के साथ एक दूसरे से मिलते जुलते हैं। आगन्तुक के सामने भी आसामी स्त्रियाँ परदा नहीं करतीं। शिलौंग आदि स्थानों के बाजारों में स्त्रियाँ सामान बेचते पाई जाती हैं। घर में भी वे बड़ों के सामने शील का अवश्य पालन करती हैं परन्तु परदा बिल्कुल नहीं करतीं। चाय के बगानों में स्त्रियाँ सदा काम किया करती हैं। साधारण गृहस्थ के घर में भी स्त्रियाँ खेत पर जाती और बहुत काम किया करती हैं। यही कारण है कि उनका स्वास्थ्य बहुत ही अच्छा रहता है। सीमान्त तथा पर्वतीय जातियों में तो परदे का नामोनिशान तक नहीं है। यहाँ के मेलों, बाजारों और सामाजिक उत्सवों पर स्त्रियों की काफी संख्या दिखाई पड़ती है।

भोजन

यहाँ के लोगों का प्रधान भोजन दाल-भात, मसाला, मछली और रसादार तरकारी है। धनी लोग कबूतर या बत्तक को मछली के स्थान पर खाते हैं। इस प्रान्त में मछली खाने का प्रचार है। यह घी के स्थान में प्रयुक्त की जाती है। बकरे का मांस शाक्त लोग खाते हैं। मुर्गों को भी खाने की प्रथा है। चाय को तो यहाँ का राष्ट्रीय पेय पदार्थ समझना चाहिये। आसाम में चावल अधिकता से पैदा होता है अतः यहाँ का प्रधान भोजन होना इसके लिये स्वाभाविक ही है।

वेश-भूषा

इस प्रान्त का सर्व प्रचलित वेश सूत की धोती और चद्दर है। कभी कभी लोग सूती कोट या वेस्टकोट भी पहिन लेते हैं। स्त्रियाँ प्रायः चोली और पेटीकोट पहिनती हैं। शाल ओढ़ने के काम में आता है। कपड़े सब स्वदेशी होते हैं। जाड़े के दिनों में ऊनी कम्बल ओढ़े जाते हैं। उत्तरी आसाम में रेशमी कपड़े पहिनने की अधिक चाल है। यहां पर सिर को ढकने के लिये बाँस की एक टोपी बनाई जाती है जिसे 'झापी' कहते हैं। इसे यदि हम यहाँ का राष्ट्रीय 'हैट' कहें तो कुछ भी अत्युक्ति न हो। शिवसागर जिले में स्त्रियाँ गहना अधिक पहिनती हैं। जोरहाट के पास जवाहिरात के गहने अच्छे बनते हैं। यहां के लोग इन गहनों को बड़े चाव से पहिनते हैं।

गृह-रचना

आसामी लोगों के घर बड़े सुन्दर बने रहते हैं। घर की दीवाल नरकट या बाँस की बनी रहती है जिसके ऊपर से मिट्टी चढ़ा दी जाती है। ऊपर छाजन रहती है जो बांस के सहारे टिकी रहती है। घर का नीचे का हिस्सा मिट्टी का होता है। घर आँगन के तीन तरफ बने रहते हैं जिसमें तीन चार घर होते हैं। कामरूप जिले के मकानों में घर में जाने के पहिले एक ऐसी कोठरी होती है जिसे 'अतिथिगृह' कहते हैं और उसमें अतिथि ठहरा करते हैं। ये घर प्रायः

छोटे होते हैं और बुरी तरह से बने होते हैं। फूस और बाँस आदि से बनाने के कारण इन घरों के निर्माण में विशेष खर्चा नहीं पड़ता। घर के सामान में कांसे के भोजन के बर्तन, कुछ बाकस, स्टूल, टाकरी, बोतल और चरखा आदि होते हैं। किसान लोग साधारणतया बांस के मचान या चट्टाई पर सोया करते हैं।

शिवसागर के जिले में घर कुछ बड़े बनाये जाते हैं। आँगन में प्रायः तीन चार घर होते हैं और एक दो खुले बरामदे। चरखा कातने के लिये एक घर अलग रहता है और गाय बाँधने के लिये अलग। घर का सारा अहाता बाँस की टट्टियों, केला तथा नारियल आदि के वृक्षों से घेर दिया जाता है। इन वृक्षों से घर का दृश्य बड़ा सुहावना बन जाता है। घर के पीछे साधारणतया एक बगीचा होता है जिसमें तरकारी, तम्बाकू और फल लगाये जाते हैं। मध्यम श्रेणी के लोगों की गृह-रचना ऐसी ही समझनी चाहिये परन्तु धनी लोगों के घर पक्के होते हैं।

रूढ़ियाँ

अपने खाने के लिये मछली सब लोग पकाते हैं परन्तु उन्हें डोम और नमशूद्र ही बेचते हैं। ब्राह्मणगण और कायस्थ रेशम के कीड़े की खेती नहीं करते। द्वितीया, एकादशी और पूर्णिमा के दिन हिन्दू लोग हल नहीं छूते। सप्ताह के कुछ दिन बुरे समझे जाते हैं। कुछ विशेष दिनों में हल जोतना, मालगुजारी देना या धान काटना बुरा समझा जाता है। इस प्रकार से सारा समाज अनेक रूढ़ियों से जकड़ा हुआ है।

अफीम खाने की बुरी प्रथा

आसाम में अफीम खाने की बहुत बुरी प्रथा थी। प्राचीन समय में आसामी लोग अफीम बहुत ही अधिक मात्रा में खाया करते थे। ये इसकी खेती भी करते थे और सस्ता होने के कारण प्रयोग में अधिक लाते थे। सन् १८२६ ई० से लेकर १८६० तक ब्रिटिश सरकार ने अफीम की खपत कम करने का कुछ विशेष प्रबन्ध नहीं किया। सन् १८५० ई० में नवगाँव के केवल जिले में २५०० एकड़ जमीन में पोस्ता बोया गया था और आसाम घाटी के छः जिलों में मिलकर १२,५०० एकड़ जमीन में पोस्ते की खेती होती थी। सन् १८६० ई० में सरकार ने सर्व साधारण के लिये पोस्ता की खेती बिलकुल रोक दी और अफीम खजाने से दिया जाने लगा और सज्जन पुरुषों को इसके बेचने का लाइसेन्स मिलता था। सन् १८७३-७४ ई० में अफीम की ५०७० दूकानें थीं और कुल ११५६ मन ३२ सेर अफीम की खेती हुई। सन् १८७७ में महाल प्रथा (mahal system) चलाई गई। सन् १९२१ ई० की नई जागृति से युवक आसाम ने अपनी बुराइयों पर ध्यान दिया और अफीम खाने की बुरी प्रथा को उसने इतनी जल्दी छोड़ा जिससे देख कर आश्चर्य होता है। अफीम की खपत कम करने में सरकार ने बड़ी सहायता पहुँचाई है। दस वर्ष की स्कीम को निकाल कर इसने अफीम खाने की प्रथा को बिलकुल बन्द कर देने का निश्चय किया है। नीचे जो आंकड़े दिये जाते हैं उससे स्पष्ट पता चलता है कि आसामी लोगों ने इस बुरी आदत को कितनी जल्दी दूर भगा दिया है[1]।

साल	दूकानें	अफीम की खपत	
१८७३-७४	५०७०	१८५६	३२
१८९२-९३	८६६	१३२३	२९
१९१२-१३	४०२	१५२७	८
१९३२-३३	२९७	[illegible]५५	२४

आर्थिक दशा

साधारण किसानों की आर्थिक दशा विशेष अच्छी नहीं है। जनता ऋण ग्रस्त है और धनी सेठ साहूकारों के चंगुल में फंसी रहती है। ये साहूकार सीधे सादे किसानों को बहुत ज्यादा सूद पर रुपया कर्ज देते हैं और इस प्रकार उनको सदा के लिये अपना गुलाम बना लेते हैं। सूद की दर कहीं कहीं १०) से लेकर ७५) प्रति सैकड़ा तक है। चाय बगान के कुलियों की हालत तो और भी बुरी है। ये सदा कर्ज में पड़े रहते हैं।

स्वभाव, चरित्र और उदारता

आसामी लोग बड़े अच्छे स्वभाव के होते हैं। इनका चरित्र शुद्ध होता है और ये उदारता की मूर्ति होते हैं। ये लोग छली और कपटी नहीं होते हैं। ये चरित्र के बड़े पक्के होते हैं, शत्रु से पीठ दिखाना नहीं जानते। अतिथि का सत्कार खूब करते हैं। व्यभिचार बहुत कम हो गया है। देहाती आसामी सादगी और सज्जनता की मूर्ति समझा जाता है।

[1] आपियम इभिल इन आसाम—माडर्न रिव्यू फरवरी १९३६ पृ० १८१-३।

आसामी भाषा

इण्डो-आर्यन भाषाओं में आसामी का स्थान

संसार की भाषाओं को अनेक विभागों में विभक्त किया गया है। इन विभागों में इण्डो-आर्यन विभाग अपना एक विशेष महत्व रखता है। आसामी भाषा इसी इण्डो-आर्यन भाषा परिवार (The Family of Indo-Aryan Languages) के अन्तर्गत है। इस इंडो आर्यन परिवार में बङ्गाली भाषा की भांति आसामी भाषा के पूर्वी विभाग (Eastern group) से संबंध रखती है और यह इस पूर्वी विभाग की सब से पूर्वी भाषा है। आसाम के पश्चिमी भाग को छोड़ कर जहां यह बङ्गाली में मिल जाती है—आसामी भाषा अन्य परिवार की भाषाओं से सब ओर से घिरी हुई है। इन अन्य परिवार की भाषाओं में से तिब्बतो-बर्मन और खासी प्रसिद्ध हैं। इस प्रकार से आसामी भाषा इंडो आर्यन भाषा परिवार के अन्तर्गत है और इसके पूर्वी विभाग (Eastern group) की भाषाओं में सब से पूर्वी भाषा है।

भाषा का नामकरण

यह भाषा चूँकि आसाम प्रान्त में बोली जाती है अतएव इसका नाम आसामी पड़ गया है। जिस प्रकार बंगाल में बोली जाने वाली भाषा बंगाली के नाम से पुकारी जाती है उसी प्रकार आसाम में बोली जाने वाली भाषा का नाम आसामी पड़ना स्वाभाविक है। अंग्रेजी में इस भाषा को आसामीज़ कहते हैं। आसाम शब्द की आहोम व्युत्पत्ति होने के कारण इस भाषा का स्थानीय नाम असमीया होना चाहिये परन्तु यह असमीया लिखा जाता है और इसका उच्चारण 'आसामिया किया जाता है।

कहाँ बोली जाती है ?

आसामी भाषा आसाम की घाटी में लखीमपुर और गोलपारा जिलों के बीच में और इनके आसपास बोली जाती है। गोलपारा के जिले में—जहाँ इस जिले के पश्चिम भाग में और पास के रंगपुर जिले में बङ्गाली बोली जाती है—यह बंगाली से बिल्कुल मिल गई है। जिन जिलों में यह भाषा बोली जाती है उन जिलों में केवल यही एक मात्र बोलचाल की भाषा नहीं है बल्कि इसके साथ ही साथ अनेक अनार्य भाषायें भी बोली जाती हैं। प्रधानतया यह केवल घाटी की भाषा है। जिन जिन स्थानों में यह भाषा बोल चाल की भाषा है वे सब स्थान उत्तर तथा दक्षिण दिशा में पर्वत मालाओं से घिरे हुये हैं और ब्रह्मपुत्र का पश्चिमी मार्ग इन्हीं स्थानों में पड़ता है। इन स्थानों के अतिरिक्त सिलहट, कचार और मणिपूर में आसामी भाषा भाषियों के छोटे छोटे उपनिवेश हैं जो आज भी अपने पूर्वजों की भाषा को असंस्कृत रूप में व्यवहार में ला रहे हैं।

आसामी भाषा है अथवा बोली ? इस विषय में विवाद

यह प्रश्न भाषा—विज्ञान वेत्ताओं के लिये चिर-काल से विवाद का विषय रहा है कि आसामी भाषा बंगाली भाषा की केवल एक बोली (Dialect) है अथवा बिल्कुल स्वतन्त्र भाषा (Language) है। आधुनिक काल में इस भाषा के बोलने वालों ने आसामी भाषा पर बंगाली के प्रभुत्व को मानने से स्पष्ट अस्वीकार कर दिया है और अनेक विद्वानों ने इस बात को मान भी लिया है।

इस विवादास्पद प्रश्न के उत्तर में श्री निकाल (Nicholl) साहब ने स्पष्ट कहा है "जैसा कि प्रायः

लोग समझा करते हैं आसामी भाषा बंगाली भाषा की एक बोली नहीं है बल्कि यह एक बिलकुल स्वतन्त्र भाषा है। बंगाली और आसामी के प्रचलित शब्द एक ही स्थान से लिये गये हैं। इसकी (आसामी की) संस्कृति बंगाल से नहीं आयी है बल्कि भारत के उत्तरी प्रान्तों से आयी है। सूक्ष्म परीक्षा करने वाले इन सब बातों को सरलता से स्वीकार कर लेंगे।"[१]

आसामी बंगाली भाषा की एक बोली (Dialect) मात्र है अथवा स्वतन्त्र भाषा है? इसका शीघ्र निर्णय करना कुछ कठिन कार्य है। यदि हम केवल व्याकरण ही को इसके परखने की एक मात्र कसौटी मानें तब आसामी को बंगाली की एक बोली मानने वालों के मत का खंडन करना असंभव नहीं तो अत्यन्त कठिन अवश्य हो जाता है। चिटागांव में व्यवहार में आनेवाली बोली में (जो कि बंगाली भाषा की सर्व सम्मति से एक बोली (Dialect) मानी जाती है) और कलकत्ते की स्टैण्डर्ड बंगाली के व्याकरण में जितना अधिक अन्तर है उतना आसामी और बंगाली में नहीं है। कहने का आशय यह है कि चिटगाँव की बोली बंगाली भाषा की एक बोली होने पर भी व्याकरण के विषय में स्टैण्डर्ड बंगाली से अधिक अन्तर रखती है। इस प्रकार यदि व्याकरण को ही कसौटी मानकर हम कहें कि आसामी बंगाली से सर्वथा पृथक भाषा है तो यह भी कहना पड़ेगा कि चटगांव की बोली भी एक स्वतन्त्र भाषा है। यदि हम दूसरी कसौटी अर्थात् लिपिबद्ध साहित्य की कसौटी पर विषय को कसें तो हम निस्सन्देह और दृढ़ता पूर्वक कह सकते हैं कि आसामी भाषा को भी एक राष्ट्र की स्वतन्त्र भाषा होने का उतना ही दृढ़ दावा है जितना अन्य भाषाओं को है। आसामी भाषा का साहित्य यदि अधिक नहीं तो उतना ही प्राचीन है जितना बंगाली भाषा का साहित्य है और गत शताब्दी तक इसका साहित्य बड़ा प्रचुर था। आसामी भाषा का साहित्य राष्ट्रीय उपज है (National product) है। इसका साहित्य सर्वदा राष्ट्रीय रहा है और आज भी है। इस प्रकार साहित्य की दृष्टि से भी आसामी भाषा बंगाली भाषा से पृथक् अपनी स्वतन्त्र सत्ता धारण करती है। अतः आसामी भाषा को बंगाली की एक बोली मान लेना बिल्कुल भूल है।[१]

आसामी भाषा की बोलियां

जिस प्रकार हिन्दी और बंगाली भाषा में बोलियां (dialects) प्रचलित हैं उसी प्रकार आसामी भाषा में अनेक बोलियां हैं। यदि बोली की दृष्टि से विचार करें तो हम आसामी भाषा को चार भागों में विभक्त कर सकते हैं। (१) स्टैण्डर्ड आसामी (२) पश्चिमी आसामी Western Assamese) (३) मयाङ्ग (Mayang) (४) झरवा (Jharwa)

स्टैण्डर्ड आसामी

आसामी भाषा की स्टैण्डर्ड बोली (standard dialect) वह बोली जो कि शिवसागर जिले में और उसके आस पास बोली जाती है। आसाम घाटी के ऊपरी भाग की बोली प्रायः एक सी ही है।

जिस प्रकार से व्रज मण्डल के आस-पास के

[१] Assamese is not, as many suppose, a corrupt dialect of Bengali, but a distinct and co-ordinate tongue, having with Bengali a common source of current vocabulary. Its Sanskrit did not come to it from Bengal, but from the upper provinces of India—this all who carefully examine the matter will readily admit'

Nicholl. Assamese grammar page 72.

[१] डाक्टर सर जी० ए० ग्रियर्सन ने आसामी भाषा को एक पृथक स्वतन्त्र भाषा सिद्ध करते हुए लिखा है।

"If, however, we apply another test, that of the possession of a written literature, we can have no hesitation in admitting that Assamese is entitled to claim an independent existence as the speech of a distinct nationality and to have a standard of its own different from that which natives of Calcutta would wish to impose upon it. Assamese literature is as old, if not older, that of Bengali and down to the commencement of the present century, was as copious...Between them they have created a standard literary language which whether its grammar resembles that of Bengali or not has won for itself the right to a separate, independent existence." Linguistic Survey of India Vol. V part I page 394.

प्रदेश की ब्रजभाषा तथा मेरठ के आस-पास की खड़ी बोली स्टैण्डर्ड मानी जाती है उसी प्रकार से शिवसागर जिले की तथा उसके आस पास की बोली स्टैण्डर्ड वाली मानी जाती है। आसामी साहित्य की यही भाषा है।

पश्चिमी आसामी

परन्तु ज्यों ज्यों हम पश्चिम जाते हैं त्यों त्यों भाषा में अन्तर दिखाई पड़ने लगता है तथा कामरूप और पूर्वी गोलपारा जिले में यह अन्तर स्पष्ट प्रतीत होने लगता है। इन दो जिलों में जो बोली बोली जाती है उसे डाक्टर सर ग्रियर्सन पश्चिमी आसामी के नाम से पुकारते हैं। इस पश्चिमी आसामी पर राजवंशी बंगाली का बड़ा प्रभाव पड़ा है जो कि पश्चिमी गोलपारा और रंगपुर के जिले में बोली जाती है। जब आहोम राजाओं ने इस प्रदेश को जीत लिया तब उन्होंने इस स्थान का नाम सरकार ढेकरी या ढेकरी रख दिया। इसी कारण से इस पश्चिमी आसामी को ढेकरी भी कहते हैं।

मयाङ्ग

मनीपुर का राज्य एक ऐसा प्रदेश है जहाँ पर अनेक भाषायें बोली जाती हैं। यहाँ की प्रधान भाषा मेइ या मणिपुरी है परन्तु इसके अतिरिक्त तिब्बती-बर्मी बोलियाँ भी बोली जाती हैं। यहाँ पर की एक जाति का नाम मयाङ्ग है जो कि एक ऐसी बोली बोलते हैं जिसका नाम भी मयाङ्ग है। यह बोली एक प्रकार की मिश्रित आसामी है। मनीपुर में इसके बोलने वालों की संख्या १,००० है, कचार और सिलहट में २२,५०० है। अपनी भाषा को छोड़ कर मयाङ्ग लोग मनीपुरी लोगों से किसी भी प्रकार से भिन्न नहीं मालूम पड़ते हैं।

जैसा कि पहिले कहा गया है मयाङ्ग मिश्रित आसामी का एक रूप है। परन्तु यदि हम इसे पूर्वी बंगाली का एक रूप मानें तो यह अधिक उचित होगा। इस बोली में इन दोनों भाषाओं की विशेषतायें विद्यमान हैं परन्तु यह दोनों से भिन्न भी कुछ कम नहीं है। यह शब्द भण्डार तथा व्याकरण में मनीपुर स्टेट में बोली जाने वाली तिब्बती बर्मन बोलियों से अधिक प्रभावित हुई है।

झरवा

गारो पहाड़ियों की तलहटी के चारों ओर एक प्रकार की असंस्कृत आसामी बोली जाती है। इस बोली का स्थानीय नाम झरवा है। इस बोली को उजड्ड (असभ्य) जातियाँ बोलती हैं तथा यह उनके व्यापार की भाषा है। यह बोली बंगाली, गारो तथा आसामी भाषा का मिश्रण कही जाती है और यह इन भाषाओं में से किसी एक की बोली कहलाने योग्य नहीं है। इसके बोलने वालों की संख्या केवल ५,००० है। इस बोली के उदाहरण भी मिलने कठिन हैं।

भिन्न भिन्न बोलियाँ बोलने वालों के कुछ आँकड़े

(१) स्टैण्डर्ड आसामी निम्नांकित मनुष्यों द्वारा बोलचाल की भाषा (Vernacular) के रूप में व्यवहृत की जाती है।*

ज़िले का नाम	बोलने वालों की संख्या
डिब्रूगढ़	१,८५,४००
नवागाँव	२,२९,५००
शिवसागर	३,२१,६००
लखीमपुर	१,७७,४५०
जोड़	८,९९,९५०

(२) पश्चिमी आसामी बोलने वालों की संख्या निम्नांकित है :—

ज़िले का नाम	बोलने वालों की संख्या
गोलपारा	२७,६००
कामरूप	५,१५,९००
जोड़	५,४३,५००

(३) मयाङ्ग बोलने वालों की संख्या :—

नाम	बोलने वालों की संख्या
मनीपुर	१,०००
सिलहट और कचार	२२,५००
जोड़	२३,५००

* ये सब आँकड़े १८९१ की जन संख्या गणना की रिपोर्ट से लिये गये हैं।

(४) झरवा बोलने वालों की संख्या :—

स्थान नाम	बोलने वालों की संख्या
गैरो पहाड़ी की तलहटी	९,०००

जो लोग आसामी भाषा को बोलचाल (वर्नाक्युलर) के रूप में व्यवहार करते हैं उनकी जनसंख्या इस प्रकार है :—

बोलियां	बोलने वालों की संख्या
स्टैण्डर्ड आसामी	८,५९,९५०
पश्चिमी आसामी	५,४३,५००
मयाङ्ग	२३,५००
झरवा	६,०००
जोड़	१४,३५,९५०

आसाम में जहाँ पर आसामी भाषा बोलचाल के रूप में (वर्नाक्युलर) के रूप में व्यवहृत नहीं होती उन जिलों में आसामी भाषा बोलने वालों की संख्या :—

ज़िले का नाम	बोलने वालों की संख्या
कचार मैदान	१,६५५
सिलहट	१,८०६
उत्तरी कचार	१५
नागा पहाड़ियां	१,७८१
खासी और जयन्तिया पहाड़ियां	१,०५६
गारो पहाड़ियां	४, ६८
लुशाई पहाड़ियां	१००
जोड़	१०,५११

आसाम के निवासी प्रायः घर पर ही रहना पसन्द करते हैं। आसाम के बाहर इस भाषा के बोलने वालों की संख्या बहुत ही कम है। इन लोगों में से प्रायः अधिक बंगाल में पाये जाते हैं। निम्नांकित संख्या उन लोगों की है जो आसाम प्रान्त के बाहर भारत के अन्य प्रान्तों में रहते हुए आसामी भाषा को बोलते हैं।

प्रान्त का नाम	बोलने वालों की संख्या
१—बंगाल तथा इसमें के देशी राज्य	६७३
२—बरार	कुछ नहीं
३—बम्बई तथा देशी राज्य	५
४—बरमा	१
५—सी० पी०	कुछ नहीं
६—मद्रास	...
७—यू० पी० तथा देशी राज्य	१६
८—पंजाब	१
९—निजाम का राज्य	कुछ नहीं
१०—बड़ौदा	...
११—मैसूर	...
१२—राजपूताना	६०
१३—सेन्ट्रल इण्डिया	२५
१४—अजमेर मेरवार	कुछ नहीं
१५—कुर्ग	...
१६—काश्मीर	...
जोड़	७९१

अतएव समस्त भारत में आसामी भाषा भाषियों की सम्पूर्ण जनसंख्या निम्नांकित है :—

घर में आसामी बोलने वालों की संख्या	१४,३५,९५०
आसाम में अन्यत्र स्थान में	१०,८११
आसाम के बाहर भारत में	७९१
कुल जोड़	१४,४७,५५२

अतएव भारत भर में आसामी भाषा बोलने वालों की सम्पूर्ण संख्या १४,४७,५५२ है।

आसामी लिपि तथा वर्णमाला

आसामी भाषा की कोई स्वतन्त्र लिपि नहीं है। इसकी लिपि वही है जो बँगला भाषा है। अतः आसामी भाषा बँगला लिपि ही में लिखी जाती है। जिस प्रकार से मराठी भाषा की कोई स्वतन्त्र लिपि नहीं है तथा वह कुछ परिवर्तन के साथ देवनागरी लिपि में ही लिखी जाती है उसी प्रकार से आसामी भाषा भी कुछ छोटे मोटे परिवर्तन के साथ बँगला लिपि में ही लिखी जाती है। बँगला लिपि में व अक्षर दो भिन्न भिन्न अक्षरों के संयोग से ( )

लिखा जाता है परन्तु आसामी में व अक्षर को लिखने के लिये एक अलग चिन्ह ( ) का प्रयोग किया जाता है।

आसामी वर्णमाला

अब यहाँ आसामी वर्णमाला दी जाती है।

स्वर

अ	অ	आ	আ
इ	ই	ई	ঈ
उ	উ	ऊ	ঊ
ऋ	ঋ	ॠ	ৠ
ऌ	ঌ	ॡ	ৡ
ए	এ	ऐ	ঐ
ओ	ও	औ	ঔ
अं	অং	अः	অঃ

मात्रायें

া	आ
ি	इ
ী	ई
ু	उ
ূ	ऊ
ে	ए
ৈ	ऐ
ো	ओ
ৌ	औ
ং	अं
ঃ	:

व्यञ्जन

										स्थान
क	ক	ख	খ	ग	গ	घ	ঘ	ङ	ঙ	कंठ
च(स)	চ	छ	ছ	ज(ज़)	জ	झ	ঝ	ञ	ঞ	तालु
ट	ট	ठ	ঠ	ड	ড	ढ	ঢ	ण	ণ	मूर्धा
त	ত	थ	থ	द	দ	ध	ধ	न	ন	दन्त्य
प	প	फ	ফ	ब	ব	भ	ভ	म	ম	ओष्ठ
य	য়	य	য	र	ৰ	ल	ল	व	ৱ	
स	স	ष	ষ	श	শ	ह	হ			

स्वरों का उच्चारण

'अ' अक्षर का उच्चारण दो प्रकार से होता है। इसका प्रथम उच्चारण ह्रस्व है तथा दूसरा दीर्घ है। साधारणतया इस स्वर का उच्चारण 'अ' अक्षर से दर्शाया जाता है परन्तु जहाँ इस स्वर के द्वारा दीर्घ उच्चारण अपेक्षित होता है वहाँ पर इसे অ संकेत से दर्शाते हैं। जब आगे की अक्षर में इ स्वर मिला रहता है तब नियम पूर्वक उसके पहिले आने वाले 'अ' स्वर का दीर्घ उच्चारण किया जाता है। उदाहरणार्थ कारि (कर लिया) अगले अक्षर में उ होने पर भी अ का दीर्घ उच्चारण होता है। जैसे-गारु (गाय) रानुआ (सिपाही) कभी कभी किसी शब्द का अर्थ इस स्वर के ठीक उच्चारण पर अवलम्बित रहता है। जैसे काला (काला) कला (केला) 'आ' स्वर का उच्चारण दीर्घ किया जाता है। इ तथा ई का प्रयोग ह्रस्व तथा दीर्घ उच्चारण दिखलाने के लिये बिना विचार पूर्वक किया जाता है। इसी प्रकार से उ तथा ऊ का भी प्रयोग किया जाता है। ए का सर्वदा ह्रस्व उच्चारण किया जाता है। ऐ का उच्चारण ओइ के रूप में किया जाता है। औ का उच्चारण कभी उ तथा कभी ओ के रूप में होता है।

व्यञ्जनों का उच्चारण

च, छ, ज, तथा झ इन अक्षरों का जिनका उच्चारण हिन्दी में च, छ, ज तथा झ है इस प्रकार से नहीं होता है। च तथा छ का उच्चारण स के समान होता है। इन दोनों अक्षरों में भेद दिखलाने के लिये च तथा छ को देवनागरी में अनुवाद स तथा श से किया जाता है। इसी प्रकार ज तथा झ का उच्चारण ज़ तथा झ के मिश्रित उच्चारण के साथ किया जाता है। य का उच्चारण य के समान होता है तथा बिन्दी रहित इसी अक्षर (य) का उच्चारण ज के समान होता है। बंगला लिपि में व (व) अक्षर नहीं होता है। वहां ब अक्षर से ही ब का काम ले लिया जाता है। बंगला भाषा ब की भांति आसामी व का जब कि वह किसी समसित व्यञ्जन में प्रयुक्त होता है। उच्चारण भी कठिनता से सुनाई पड़ता है। इसी प्रकार से स, ष, श का उच्चारण कभी ख तथा स, ष, श के रूप में किया जाता है।

आसामी भाषा का संक्षिप्त व्याकरण

आसामी भाषा में निम्नांकित केवल छः ही कारक होते हैं :—कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, सम्बन्ध तथा अधिकरण। इस भाषा में अपादान कारक बिलकुल नहीं होता है। अतः केवल इन्हीं कारकों में संज्ञा शब्दों के रूप उपलब्ध होते हैं। यहाँ पर संज्ञा शब्दों के कुछ रूप इन कारकों में दिये जाते हैं।

संज्ञा

	मनुष्य	पुत्र	शरीर
कर्ता	मानुह मानुहे	पुत्र	गा
कर्म	मानुहक	पुत्रक पुत्रके	गाई
करण	मानुहेरे	पुत्रेरे	गारे
सम्प्रदान	मानुहलै	पुत्रलै पुत्रलैके	गालै गालैके
सम्बन्ध	मानुहर	पुत्रर पुत्रेरे	गार
अधिकरण	मानुहत	पुत्रत	गात

ऊपर जो रूप दिया गया है वह एक बचन का है। एक बचन से बहु बचन बनाने के लिये आसामी भाषा में बिलाक, बोर तथा हैत प्रत्यय जोड़े जाते हैं। जैसे मानुह (मनुष्य) से मानुह-बिलाक, मानुह-बोर और मानुह-हैत। बिलाक प्रत्यय अन्य दोनों प्रत्ययों से अधिक आदर सूचक समझा जाता है। जहाँ पर किसी प्रकार का सम्बन्ध प्रकट करना होता है वहाँ पर चार प्रकार के रूप प्रयोग किये जाते हैं क्योंकि यह सम्बन्ध चार प्रकार का हो सकता है।

	मेरा	तुम्हारा (अ.सू.)	तुम्हारा (आ.सू.)	उसका
पिता	बापाई	बापेर	बापेरा	बापेक
माता	आई	मार	मारा	माक
पुत्र	पो	पुतेर	पुतेरा	पुतेक
लड़की		जी	जियेर	जियेक

प्रधानतया नियम पूर्वक विशेषण लिङ्ग विशेष के कारण अपना स्वरूप नहीं बदलता है। परन्तु इस नियम के कुछ अपवाद भी हैं। कुछ विशेषण शब्द जिनके अन्त में आ है स्त्रीलिङ्ग में इकारान्त हो जाते हैं। जैसे बुढ़ा, (बुड्ढा), स्त्रीलिङ्ग—बुढ़ी।

सर्वनाम

सर्वनाम शब्दों के कुछ रूप यहाँ दिये जाते हैं।

	मेरा	तुम्हारा (अ. सू.)	तुम्हारा (आ. सू.)	आपका
कर्ता	मय	तय, तये	तुमी, तुमीये	आपनी आपनीये
कर्म	मोक	तोक तोके	तोमाक तोमाके	आपोनाके
करण	मये, मोरे	तये तोरे	तुमीये, तोमारे	आपुनीये
संबंध	मोर, मोरे	तोर, तोरे	तोमार, तोमारे	आपोनार

सम्प्रदान तथा अधिकरण कारक के रूप भी कर्म कारक के आधार पर तैयार किये जाते हैं।

क्रिया

कुछ क्रियाओं के रूप इस प्रकार हैं।

	मैं हूँ (वर्तमान काल)	मैं था (भूतकाल)
उ. पु.	आशों (आछों)	आशिलो
म.पु.(क)(अ.सू.)	आश	आशिली
म.पु.(ख)(आ.सू.)	आशा	आशिला
अ. पु.	आशे	आशिल

प्रधान क्रियायें तीन प्रकार की होती हैं। पहिले विभाग के अन्तर्गत वे सब क्रियायें चली आती हैं जो कि स्वरान्त हैं। जैसे—ह (होना)। प्रथम प्रकार की क्रियाओं से नाम धातु बनाने के लिये क्रिया के अन्त स्वर को निकाल 'आ आ' जोड़ देते हैं। जैसे ह क्रिया (होना) से हो आ (होना) नाम धातु दूसरी प्रकार की क्रियाओं से नाम धातु बनाने के लिये केवल आ जोड़ देते हैं। जैसे बोल (बोलना) क्रिया से बोला (नामधातु)। तीसरी प्रकार की क्रियाओं से नाम धातु बनाने के लिये धातु में आ जोड़ देते हैं। जैसे गुश (रवाना होना) से गुशा (रवानगी)। इसी प्रकार से और रूपों को भी समझना चाहिये।

आसामी भाषा का उदाहरण

पहिले जो कुछ व्याकरण सम्बन्धी बातें लिखी गई हैं उनका प्रयोग के लिये यहाँ पर आसामी भाषा का एक उदाहरण दिया जाता है। यह नमूना लखीमपुर जिले में बोली जाने वाली स्टैण्डर्ड आसामी का है। नीचे का नमूना लखीमपुर जिले के एक अपराधी का वक्तव्य है जिसे उसने कचहरी में दिया था।

"एइ मकर्द्दमा मिचा। मई तार घरत कोनो वस्तु चूर करिबलै योवा नाछिलों। कथा हैछे एइ। मई मोर गाई गरुजनी विचारि नेपाईछिलों; सेइ गरुजनी मई ए बछरर आगे धनीरामर परा किनिछिलों। गरुजनि यदिश्रो मई सावधान कै राखिछिलों, ताई अति सतते आगर गिराहँतर घरलै गै थाकिछिल आरु मई ताईक केइबा वारो गै आनीब लगिया हैछिल। धनीरामें जी दीनर कथा कईछे सेई दिना गरुजनी तार घरलै गैछिल, बुली मई चावले गैछिलों। सेई कथा बेलोमार जोवार पाचत। गरुजनी तार-बाड़ीत अनाइ बनाइ फुराछे बुली चावलै मई आन खपार दरे तार बाड़ीर मागैई गैछिलों। एने पटिल जे सेई समयते तार अठारह बछर वयसीया मालती बोला गाभरू भनियेक जानी हातत पानीर साज एटा लय बाड़ालै आहे। तेतिया प्राय एन्धार हैछिल। सेई ताइलै मन करा नाछिलों किन्तु ताई आचम्बिते मोंक ताईब फाललै जोबा देखो भूत जेनो भावी। भय खाले आरू चिँयर मारि दिले। मई चोवाली जानीक देखा करीबलै गैछिलों बुली धनीराम के लै तार घरर सकलो मानुहे आहि मोंक धरि लेहि। धनीरामें पुलिसर आगत कोबा वृत्तान्तश्रो एये आछिल। किन्तु भनीयेकर लाज ढाकिबलै एतिया सी अदालतत प्रकाश करिछे जे मई तार आम चूर करिछिलों आरु मालतीए पोनेई मोंक गछर ओपरत देखिछिल।

नमूने का स्वतन्त्र अनुवाद

यह मुकद्दमा झूठा है। मैं उसके घर में कोई वस्तु चुराने के लिये नहीं गया था। बात ऐसी है। मैंने अपनी गाय को—जिसे मैंने एक वर्ष पहिले धनीराम से खरीदा था—खो दिया। यद्यपि मैं गाय को बड़ी सावधानी से रखता था तो भी वह अपने पहिले मालिक के पास प्रायः चली जाती थी और मुझे अनेक बार उसे पुनः लाने के लिये वहाँ जाना पड़ता था। धनीराम के द्वारा निर्दिष्ट दिन को मैं उसके घर, यह देखने के लिये कि मेरी गाय वहाँ गई है अथवा नहीं, गया था। यह घटना सूर्यास्त के बाद को है। पहिले की भांति मैं उसके घर के हाते में इसलिये गया कि मेरी गाय ठहरी है अथवा नहीं? ऐसी घटना घटी कि उसी समय में उसकी १८ वर्षीया युवती बहिन हाथ में पानी का घड़ा लेकर उस हाते में आई। उस समय तक करीब करीब अँधेरा हो गया था। उसने अचानक देखा कि मैं उसकी ओर जा रहा हूँ यद्यपि मैंने उसे बिल्कुल नहीं देखा। वह यह समझ करके कि मैं भूत हूँ डर गई और जोर जोर से चिल्लाने लगी। धनीराम के सहित घर के लोगों ने मुझे पकड़ लिया और कहने लगे कि मैं लड़की को बुरी निगाह से देखने के लिये वहाँ आया था। अपनी बहिन की लज्जा को छिपाने के लिये इसी किस्से का धनीराम ने पुलिस से कहा। उसका कहना है कि मैं उसका आम चुरा रहा था और सर्वप्रथम मालती ने मुझे पेड़ पर देखा।

आसामी भाषा के कुछ शब्द तथा वाक्य

हिन्दी के पाठकों को आसामी भाषा के कुछ शब्द-भण्डार तथा वाक्यावली से परिचित करा देना कुछ अनुचित न होगा। भाषा विज्ञान की दृष्टि से इससे बड़ा लाभ होगा। हिन्दी भाषा भाषी इससे स्पष्ट समझ सकते हैं कि उनकी भाषा और आसामी भाषा के शब्दों में कितना साम्य है। स्थानाभाव के कारण यह सम्भव नहीं है कि आसामी भाषा की प्रत्येक बोलियों के रूपान्तरित शब्द यहां दिये जायँ। अतः यहाँ नीचे जो शब्दावली दी जाती है वह स्टैण्डर्ड आसामी की है जो प्रधानतया शिवसागर जिले में बोली जाती है। आसामी भाषा का शब्द तथा इसका हिन्दी अनुवाद साथ साथ दिया जाता है।

आसामी	हिन्दी	आसामी	हिन्दी
१—एक	एक	१४—मय	मैं
२—दुइ	दो	१५—मोर	मेरा
३—तिनि	तीन	१६—आमि	हम लोग
४—सारि	चार	१७—आमार	हम लोगों का
५—पाँस	पांच	१८—तुमि	तू
६—शय	छः	१९—तोमालोक	तुम
७—सात	सात	२०—सो	वह
८—आठ	आठ	२१—तार	उसका
९—न	नव	२२—सीहत	वे
१०—दह	दस	२३—सींहतर	उन लोगों का
११—कुरि	बीस	२४—हात	हाथ
१२—पंसास	पचास	२५—भारि	पैर
१३—स	एक सौ	२६—नाक	नाक

आसामी	हिन्दी	आसामी	हिन्दी
२७—साकु	आंख	६५—उट	ऊँट
२८—मुख	मुख	६६—सराइ	चिड़िया
२९—दांत	दांत	६७—जवा	जाना
३०— कान	कान	६८—खोवा	खाओ
३१—सुलि	बाल	६९—बहा	बैठे
३२—मुर	सिर	७०—आहा	आओ
३३—जिवा जिभा	जिह्वा	७१—मारा	मारो
३४—पेट	पेट	७२—थिया होवा	खड़े हो
३५—पिठि	पीठ		जाओ
३६—लो	लोहा	७३—मरा	मरना
३७—सोन	सोना	७४—दिया	दो
३८—रूप	चांदी	७५—लर मरा	दौड़ो
३९—पिता, बोपाइ	पिता	७६—ओपर लाइ	उपर
४०—आइ	माता	७७—ओसरत	नज़दीक
४१—भाइ, ककाइ	भाई	७८—ताखत तलाइ	नीचे
४२—बाइ, भनो	बहन	७९—दूर	दूर
४३—मनुह	मनुष्य	८०—पूवे	आगे
४४—माइकि मानुह तिरोता स्त्री		८१—पाशत	पीछे
४५—घैनी	धर्मपत्नी	८२—जेइ, कोन	कौन
४६—लरा, सोवालो	लड़का	८३—जि, कि	क्या
४७—पो	पुत्र	८४—किया	क्यों
४८—जी	पुत्री	८५—आरु	और
४९—चेटी बन्दी	गुलाम	८६—किन्तु	लेकिन
५०—खेतियक	खेतिहर	८७—जादि	यदि
५१—भेरि-रखिया	भेड़िहार	८८—हरा, हय	हाँ
५२—ईश्वर	ईश्वर	८९—ओहो, नहय	नहीं
५३—पिसास	पिशाच	९०—देहि अउ	हाय
५४—सूर्य बेलि	सूर्य	९१—भाल	अच्छा
५५—जुइ	आग	९२—ओखा	उँचा
५६—पानी	पानी	९३—इमरा	बैल
५७—घर	घर	९४—कुकुर इजानो	कुतिया
५८—घोड़ा	घोड़ा	९५—शागल	बकरा
५९—गाइ-गारु	गाय	९६—पाह	मृग
६०—कुकुर	कुत्ता	९७—खेनि	भाग
६१—मेकुरिबिड़ालि	बिल्ली	९८—ढांखिलां	व्यभिचार
६२—मता कुकुरा	मुर्गा	९९—गोटाइ	पूर्ण
६३—पाति हांह	बत्तक	१००—डाङार	बड़ा
६४—गाधा	गदहा	१०१—पथार	खेत

आसामी	हिन्दी	आसामी	हिन्दी
१०२—बरा	सुअर	१०७—काशक	समीप
१०३—सुकि	भूसा	१०८—अपकर्म	पाप
१०४—चाकार	नौकर	१०९—ओचरक	समीप
१०५—दरमाहा	मजूरी	११०—खङ०	क्रोध
१०६—चुमा	चुम्बन		

आसामी वाक्यावली

आसामी	हिन्दी
१—तोमार नाम की ?	तुम्हारा नाम क्या है ?
२—घोड़ा-टो किमान बयसियाल	यह घोड़ा कितना बड़ा है ?
३—तोमार बापेरर घरत किमान पुतेक आशे	तुम्हारे पिता के घर में कितने पुत्र हैं ?
४—आज़ि मय बहुत बाट खोज़ काढ़ि फुरिला	आज मैं बहुत चला
५—मोर ददइर पुतेकेरे तेओर भानिएकर बियाहल	मेरे चचा का लड़का उसकी बहन से ब्याहा गया है।
६—तार दाम दु टका आट आना	उसका दाम ढाई रुपया है।
७—एइ रूप टका टाक दे	यह रुपया उसको दे दो।
८—ताक भाल-काइ मार, आरु ज़ारिरे बाध।	उसको अच्छी तरह से मारो तथा रस्सी से बांध दो।
९—नादर परा पानी आन	कुयें से पानी लाओ।
१०—मोर आगे आगे खोज़ कारह	मेरे आगे चलो।
११—तोमार पाशे कार लरा आहे ?	किसका लड़का तुम्हारे पीछे आ रहा है ?
१२—शिटो कार परा किनिला।	किससे तुमने उसे खरीदा।
१३—गांवर दोकानी इटारपरा	गांव के एक बनिये से।
१४—तार पीठत ज़िन-खान थ	उसकी पीठ पर चार जामा रक्खो।
१५—तार पितेकक मय बहुत बेतेर खोबालो	मैंने उसके लड़के को बेंत से बहुत मारा है।

आसामी साहित्य

इतिहास-साहित्य की प्रधानता

आसामी भाषा का भी उतना ही स्वतन्त्र और विस्तृत साहित्य है जितना भारत की अन्य प्रान्तीय भाषाओं का है। १८०० ई० के पहिले तो आसामी साहित्य बंगला साहित्य से भी अधिक विस्तृत था। आसामी साहित्य की सब से बड़ी विशेषता—जो किसी भी भारतीय साहित्य की नहीं है—यह है कि यह साहित्य इतिहास-प्रधान है। जितने ऐतिहासिक

ग्रन्थ आसामी साहित्य में विद्यमान हैं उतने अन्य साहित्य में नहीं। आसामी लोगों को अपने इतिहास की रक्षा का बड़ा ध्यान रहता था। यही कारण है कि प्रतापशाली राजा अपने समय समस्त ऐतिहासिक घटनाओं का संग्रह ऐतिहासिक ग्रन्थों—जिन्हें आसामी भाषा में 'बुरञ्जी' कहते हैं—करवा देते थे। अतः ये बुरञ्जियाँ आसामी साहित्य की प्रधान सम्पत्ति हैं। इन बुरञ्जियों में से कई एक का अनुवाद अंग्रेजी में हो चुका है। सन् १८२९ ई० में हरिराम ढेकियाल फूकन ने बुरञ्जियों का संग्रह बँगला भाषा में प्रकाशित किया था। सन् १८४४ ई० में राधानाथ बर बरुआ और काशीनाथ तामुली फूकन ने आसामी भाषा में आसाम का इतिहास अमेरिकन बैप्टिस्ट मिशन प्रेस से छपवाया था। परन्तु इससे यह न समझना चाहिये आसामी साहित्य में बुरञ्जियों को छोड़ कर और कुछ है ही नहीं। आसामी साहित्य बहुत सुन्दर नाटक तथा काव्यग्रन्थ मौजूद हैं। इसके अतिरिक्त अनेक भक्ति ग्रन्थ, वैद्यक, गणित, कोष आदि के ऊपर भी पुस्तकें विद्यमान हैं।

शंकरदेव और माधवदेव

आसामी भाषा में शंकरदेव और माधवदेव नाम के दो अलौकिक प्रतिभा सम्पन्न महात्मा और कवि हो गये हैं जिन्होंने अपनी दिव्य वाणी से आसामी साहित्य में काव्य की वह रसमयी सरिता बहाई जिसका स्रोत कभी सूखने नहीं पाया। ये दोनों महापुरुष उच्चकोटि के महात्मा होने के अतिरिक्त वाक्सिद्ध कवि थे। इन्होंने अपनी नवनवोन्मेषिणी प्रतिभा के बल से अनेक काव्य ग्रन्थों तथा भक्ति सम्बन्धी पुस्तकों का प्रणयन कर आसामी साहित्य वास्तव में भरपूर कर दिया है। हिन्दी भाषा और साहित्य गोस्वामी तुलसीदास जी लोकरंजन तथा लोक मंगल कारिणी वाणी के लिये जितना ऋणी है उतना ही ऋणी आसामी साहित्य महात्मा शंकरदेव की अमृत वाणी के लिये हैं। तुलसीदास जी ने अपनी रामायण के द्वारा जनता का जो उपकार किया है वही उपकार शंकरदेव ने अपने महाभारत, गीता, रामायण तथा श्रीमद्भागवत के अनुवाद द्वारा किया है। कहने का तात्पर्य केवल इतना ही है कि हिन्दी साहित्य में जो स्थान गोस्वामी तुलसीदास को प्राप्त है आसामी साहित्य में वही स्थान महापुरुष शंकरदेव को और कुछ अंशों में माधवदेव को भी प्राप्त है।

शंकरदेव राजा नर नारायण के राज्य में हुए थे। ये आसामी भाषा के सब से पुराने लेखक तथा सब से अधिक ग्रन्थों के प्रणयन कर्ता हैं। इनका सब से प्रसिद्ध ग्रन्थ श्रीमद्भागवत का अनुवाद है। शंकरदेव के अन्य ग्रन्थों का ऊपर उल्लेख किया जा चुका है। माधव देव ने 'भक्ति रत्नावली', 'रत्नाकर टीका' तथा अनेक अन्य ग्रन्थों का भी प्रणयन किया है। शंकरदेव और माधव देव के लिखे हुए ४२ नाटक ग्रन्थों का अब तक पता लगा है। इसके अतिरिक्त इन महात्माओं ने अनेक काव्य ग्रन्थ लिखे हैं जो आसामी साहित्य की अमूल्य सम्पत्ति समझे जाते हैं। इस प्रकार इन दोनों महात्माओं को आसामी भाषा का सर्व प्रधान कवि समझना चाहिये।

गणित, कोष, वैद्यक आदि ग्रन्थ

आसामी साहित्य में ऐतिहासिक और काव्य ग्रन्थों के अतिरिक्त गणित तथा कोष आदि के ऊपर भी पुस्तकों का कुछ अभाव नहीं है। बकुल कैष्ठ ने गणित के ऊपर अनेक पद्यात्मक ग्रन्थ लिखा है और लीलावती का भाषान्तर किया है। आसामी भाषा में यदुराम का कोष सुप्रसिद्ध है। वैद्यक के ऊपर भी अनेक ग्रन्थ लिखे गये हैं।

राम सरस्वती उपनाम अनन्तकन्दाली ने—जो शंकरदेव के समकालीन थे—महाभारत और रामायण का अनुवाद आसामी भाषा में किया है। धर्म सम्बन्धी अनेक ग्रन्थ केवल संस्कृत से अनूदित ही नहीं हैं बल्कि अनेक की स्वतन्त्र रचना भी हुई है।

आसामी साहित्य का भविष्य

आसामी साहित्य का भविष्य नितान्त उज्वल है। कलकत्ता विश्व विद्यालय ने इसे एम० ए० की परीक्षा में स्थान देकर इसके गौरव को स्वीकार किया है। आजकल अनेक विद्वान सुन्दर बुरञ्जियों का अंग्रेजी में अनुवाद कर उसे विद्वत् समाज के सामने ला रहे हैं। कामरूप अनुशीलन समिति ने आसामी साहित्य का बड़ा उपकार किया है। नित नये उदीयमान लेखक और कवि आसामी साहित्य को भरने में तत्पर हैं। यदि इस साहित्य की प्रगति यों ही उत्तरोत्तर बढ़ती गई तो कुछ ही दिनों में यह भारत के उन्नतशील साहित्यों से टक्कर लेने लगेगा।

शिक्षा

आसाम प्रान्त भारत के अन्य प्रान्तों से भी अधिक शिक्षा में पिछड़ा हुआ है। सारे प्रान्त भर में बहुत थोड़े से लोग लिख पढ़ सकते हैं। स्त्री-शिक्षा की तो और भी कमी है। पर्वतीय प्रदेशों में शिक्षा का प्रचार नहीं के बराबर है। यद्यपि कुछ उत्साही मिशनरियों ने इन पिछड़ी हुई जातियों में शिक्षा के प्रचार के लिये अनेक स्कूल खोल रक्खे हैं परन्तु वे अत्यन्त अपर्याप्त हैं।

शिक्षा-विभाग के पदाधिकारी

अन्य प्रान्तों की भांति आसाम में भी एक शिक्षा-सदस्य (एजुकेशन-मेम्बर) होता है जो शिक्षा सम्बन्धी मामलों में सब से बड़ा अधिकारी है। इसके नीचे शिक्षा-विभाग का डाइरेक्टर है जो शिक्षा सम्बन्धी समस्त मामलों की स्वयं देखभाल करता है। इसके पश्चात् इन्स्पेक्टर, सब-इन्स्पेक्टर, डिपुटी-इन्स्पेक्टर और सब-डिपुटी इन्स्पेक्टर हुआ करते हैं जिनका काम सरकारी तथा गैर-सरकारी शिक्षालयों का देखभाल करना है।[1]

वर्तमान काल के पहले शिक्षा की अवस्था

गत शताब्दी में आसाम में बड़ा ही कम शिक्षा का प्रचार था। सन् १८४१ ई० में स्कूल जाने योग्य १२,६२,००० बालकों की बृहत् संख्या में से केवल १३,३०० बालक ही स्कूल में पढ़ते थे। सन् १८५६ ई० में गौहाटी तथा सिलहट में अंग्रेजी पढ़ाने के लिये स्कूलों की स्थापना की गई तथा सिलहट में सात एँग्लो-वर्नाक्युलर स्कूल भी खोले गये परन्तु दुर्भाग्य से दूसरे ही साल सब बन्द हो गये। सन् १८६८ ई० तक ब्रह्मपुत्र की घाटी में केवल ४,००० तथा सूरमा की घाटी में केवल १,५०० बालक शिक्षा पाते थे। पहिले जब कालेज शिक्षा का कुछ प्रबन्ध नहीं था उस समय उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिये अन्यत्र जाने के लिये विद्यार्थियों को दो साल के लिये दस से लेकर पचीस रुपये तक की छात्रवृत्ति मिलती थी। सन् १६०० ३० तक सूरमा घाटी में ६८, ब्रह्मपुत्र घाटी में २९ तथा पहाड़ी प्रान्तों में केवल २ आदमियों ने बी० ए० की परीक्षा पास की थी और एम० ए० पास करने वालों की संख्या केवल २१ थी।

सन् १९०३-४ इ० में १० सरकारी हाईस्कूल, ५ सहायता प्राप्त (एडेड) तथा ७ बिना सहायता प्राप्त स्कूल थे। इसी साल में ७५ मिडिल इंग्लिश तथा ४२ मिडिल वर्नाक्युलर स्कूल थे। उस साल स्कूल में जाने लायक आदमियों की संख्या का केवल ३ प्रतिशत माध्यमिक शिक्षा प्राप्त कर रहा था। अपर प्राइमरी में पढ़ने वाले लड़कों की संख्या ५ प्रतिशत से भी कम थी। सन् ११०३-४ में लड़कियों के लिये १५० शिक्षालय थे जिनमें १००० पीछे १५ लड़कियाँ पढ़ती थीं।[1]

१—इस अध्याय का सारा वर्णन तथा आँकड़े आसाम सरकार के द्वारा प्रकाशित "जेनरल रिपोर्ट आन पब्लिक इन्स्ट्रक्शन इन आसाम फार दि इयर १९३४-३५" से लिये गये हैं। इस विषय की अधिक जानकारी के लिये यह रिपोर्ट अवश्य पढ़नी चाहिये।

१—इम्पीरियल गजेटियर आफ इण्डिया, भाग ६, पृ० १०१-१०४।

विश्वविद्यालय

आसाम प्रान्त भर में एक भी विश्वविद्यालय नहीं है। अतः कालेज तथा स्कूल की समस्त परीक्षायें कलकत्ता विश्वविद्यालय के द्वारा ली जाती हैं। कलकत्ता विश्वविद्यालय ही इन शिक्षा-संस्थाओं के लिये कोर्स भी नियत करता है। इस विश्वविद्यालय के द्वारा निरीक्षक (इन्स्पेक्टर) नियुक्त किये जाते हैं जो आसाम में जाकर कालेज तथा स्कूलों की पढ़ाई की जाँच किया करते हैं। इस प्रकार से प्रान्त की समस्त शिक्षा-संस्थायें कलकत्ता विश्वविद्यालय से सम्बद्ध हैं।

कालेज

प्रान्त भर में दो सेकंड ग्रेड सरकारी आर्ट्स कालेज हैं और तीन प्राइवेट कालेज हैं। दो गवर्नमेंट्स आर्ट कालेजों में पहिले का नाम काटन कालेज है तथा यह गौहाटी में है और दूसरे का नाम मुरारीचन्द कालेज है जो सिलहट में है। इन कालेजों में बी० ए० तक की पढ़ाई होती है। इनके अतिरिक्त तीन कालेज क्रमशः जोरहाट, सिलचर और हबीगंज में है जहाँ पर इण्टरमीडियेट तक पढ़ाई होती है। इस प्रकार से प्रान्त भर में कालेजों की संख्या बड़ी थोड़ी है।

इण्टर कालेज

जोरहाट, सिलचर और हबीगंज में प्रत्येक में एक कालेज है जिसमें इण्टरमीडियेट तक शिक्षा दी जाती है। ये तीनों कालेज प्राइवेट हैं। धनाभाव होने पर भी ये अपना कार्य सुचारु से चला रहे हैं।

माध्यमिक शिक्षा (सेकेण्डरी एजुकेशन)

प्रान्त में माध्यमिक शिक्षा का साधारण और अच्छा प्रबन्ध है। इस कार्य के सम्पादन के लिये सरकार तथा जनता ने अनेक हाईस्कूल, मिडिल इङ्गलिश स्कूल और मिडिल वर्नाक्युलर स्कूल खोल रक्खे हैं। इन स्कूलों में से कुछ तो सरकारी, कुछ सरकार के द्वारा स्वीकृत और सहायता प्राप्त और कुछ अस्वीकृत (अनरिकागनाइज्ड) हैं। हाइ तथा मिडिल इङ्गलिश स्कूलों में पढ़ने वालों लड़कों की संख्या सन १९३४-३५ में ४२,२६१ थी और इसके पहिले साल में इनकी संख्या ३९,१९३ थी। इस प्रकार से एक ही वर्ष में ३,०७२ लड़के अधिक बढ़ गये। सूरमा घाटी में सरकार के द्वारा अस्वीकृत एग्लो वर्नाक्युलर स्कूलों की संख्या जोरों से बढ़ रही है।

हाई स्कूल

इस वर्ष ब्रह्मपुत्र की घाटी में हाई स्कूलों की संख्या ३८ और सूरमा की घाटी में भी ३८ ही थी। गत वर्ष में इन हाईस्कूलों की संख्या क्रमशः ३६ और ३२ थी। सूरमा-घाटी में लड़कियों के हाई स्कूल में एक की वृद्धि हुई। इस प्रकार से पर्वतीय जिलों को छोड़कर केवल इन दोनों घाटियों में ७६ हाई स्कूल हैं। इस वर्ष गवर्नमेन्ट हाई स्कूलों में कुल विद्यार्थी ९,२८६ थे। इन समस्त हाई स्कूलों में पढ़ने वाले छात्रों और छात्राओं की संख्या २६,५८० थी और गतसाल यही संख्या २४,२४८ थी सब प्रकार का खर्चा इस साल ११९५५७२ रुपया था और गत साल ११,०८,३५७ रु० था।

मिडिल इङ्गलिश स्कूल

इस वर्ष बालक और बालिकाओं के लिये मिडिल इङ्गलिश स्कूलों की संख्या २५९ थी और गत वर्ष २४५ थी। स्कूलों में पढ़ने वाले छात्रों और छात्राओं की संख्या इस वर्ष २३,१५३ और गतवर्ष २१६५० थी। सारा खर्चा ४,५०,८०६ रुपया हुआ। हाई और मिडिल स्कूलों में कुल खर्चा १३,५१,१३१ रु० हुआ।

मिडिल वर्नाक्यूलर स्कूल

लड़कों तथा लड़कियों के लिये मिडिल वर्नाक्यूलर स्कूलों की कुल संख्या इस वर्ष २२७ थी और गत वर्ष २२० थी। इन स्कूलों में पढ़ने वालों की संख्या क्रमशः ३१,६१० और २९,७१८ थी। इस शिक्षा में इस वर्ष कुल खर्चा २,९६,७०८ रुपया और गत वर्ष २,८१,७७८ रुपया था। इन स्कूलों में आसामी भाषा का अध्यापन किया जाता है और इनमें बड़ी अच्छी पढ़ाई होती है। ब्रह्मपुत्र की घाटी में इन स्कूलों में वैकल्पिक विषयों में अँग्रेजी भी पढ़ाई जाती है।

अध्यापन का ढंग

नीचे के दर्जों में अँग्रेजी स्कूलों में 'डाइरेक्ट

मेथड' से शिक्षा दी जाती है। इसके अतिरिक्त 'जोरहाट मेथड' और 'डालटन प्लान' से भी शिक्षा दी जाती है।

प्रारम्भिक शिक्षा

इस प्रान्त में प्रारम्भिक शिक्षा की अधिक उन्नति हो रही है। इस साल बालक और बालिकाओं की प्राइमरी स्कूलों की संख्या क्रमशः ५,४४६ और ७०३ थी और गत वर्ष यही संख्या क्रमशः ५,३३७ और ६७९ थी। इन प्राइमरी स्कूलों में बालकों की संख्या इस साल २,६०,५३१ और गत वर्ष २,४९,८६२ थी। बालिकाओं की संख्या इसी क्रम से २५,९३४ और २४,८७८ थी। लड़कों के लिये प्राइमरी स्कूलों में कुल खर्चा इस वर्ष १२,०९,९५९ रुपया और गत वर्ष ११,८०,८७४ रुपया हुआ।

रात्रि पाठशालायें

कुछ ऐसी प्राइमरी पाठशालायें हैं जिनमें रात्रि में पढ़ाई होती है। सूरमा घाटी में ऐसे स्कूलों की संख्या इस साल ६६ और गतवर्ष ५२ थी और पढ़ने वाले बालकों की संख्या क्रमशः १,७५१ और १,३०२ थी। आसाम घाटी में इन स्कूलों की संख्या ५ थी। प्राइमरी स्कूलों में हाथ से काम करना और बागवानी भी सिखलाई जाती है।

ट्रेनिङ्ग कालेज

प्रान्त में शिक्षकों की ट्रेनिङ्ग के लिये एक भी ट्रेनिङ्ग कालेज नहीं है। अतः अध्यापकों को ट्रेंड होने के लिये अन्य प्रान्तों की शरण लेनी पड़ती है। कलकत्ते में दो ट्रेनिङ्ग कालेज हैं परन्तु वे दूसरे स्थान के अध्यापकों को अपने कालेज में भरती नहीं करते हैं। ढाका में केवल एक ट्रेनिङ्ग कालेज है। इसी ट्रेनिङ्ग कालेज में आसाम के अध्यापकों के लिये कुछ प्रतिशत स्थान सुरक्षित रहता है और वे यहीं आकर ट्रेनिंग की शिक्षा पाते हैं। इसी कारण से प्रान्त में ट्रेन्ड टीचरों की संख्या कम है। इस वर्ष पुरुष और स्त्री सब अध्यापकों की संख्या ११,५६१ थी। इनमें से केवल ३,६५७ ही ट्रेंड थे। अर्थात् ट्रेंड अध्यापकों की संख्या केवल ३१.६ प्रतिशत थी। काटन और मुरारीचन्द कालेज में दो ट्रेनिंग क्लास खोलने का विचार हो रहा है। परन्तु इसमें अभी अनेक कठिनाइयां हैं। सिलचर और जोरहाट में दो नार्मल स्कूल हैं जिनमें क्रमशः ७४ और १०५ विद्यार्थी हैं। स्त्री अध्यापकों की ट्रेनिंग के लिये सिलचर और नवगांव में दो मिशनरी स्कूल हैं। इन्हें सरकारी सहायता की आवश्यकता है।

ला कालेज

प्रान्त में एक कानून का कालेज भी है जिसे 'अर्ल ला कालेज' कहते हैं। इसमें कानून की शिक्षा दी जाती है। इसमें छात्रों की संख्या इस वर्ष ७६ और गतवर्ष ७२ थी। इस कालेज का परीक्षा फल सदा अच्छा होता है।

गवर्नमेण्ट व्यवसायिक स्कूल

सरकार ने कुटीर शिल्प को प्रोत्साहन देने के लिये अनेक ऐसे स्कूल खोल रक्खे हैं जिनमें हस्त कौशल की शिक्षा दी जाती है। ऐसे स्कूलों में गवर्नमेंट वीविङ्ग इन्स्टीट्यूट, गौहाटी, फुलर टेक्निकल स्कूल, कोहिमा, दि सूरमा वेली टेक्निकल स्कूल, सिलहट और दि प्रान्त आफ वेलस टेक्निकल स्कूल, जोरहाट आदि प्रसिद्ध हैं। इन स्कूलों के द्वारा कुटीर शिल्प की बड़ी उन्नति हो रही है।[1]

प्राइवेट शिक्षालय

सरकार ने कुटीर शिल्प की उन्नति के लिये ऐसे स्कूलों को खोला है जिनमें कताई बुनाई आदि की शिक्षा वैज्ञानिक पद्धति से दी जाती है। सरकारी व्यवसायिक स्कूलों का वर्णन पहिले किया गया है। इसके अतिरिक्त अनेक प्राइवेट व्यवसायिक स्कूल हैं जिनमें यह शिक्षा दी जाती है। ऐसे स्कूलों की संख्या इस प्रकार है।

१—डोन बास्को इन्डस्ट्रियल स्कूल, शिलांग।
२— ,, ,, ,, ,, गौहाटी।
३—टेक्निकल एण्ड इन्डस्ट्रियल स्कूल, सिलघाट।
४—शक्तिआश्रम टेक्निकल एण्ड वीविंग स्कूल, गोआलपाड़ा।
५—सप्तग्राम मिडिल इंगलिश एण्ड टेक्निकल स्कूल, गोआलपाड़ा।

१—रिपोर्ट आफ दि डिपार्टमेण्ट आफ इन्डस्ट्रीज आसाम फार दि इयर १९३४-३५ पृ० १-२४।

७—नवकिशोर दीनानाथ इन्डस्ट्रियल गर्ल्स स्कूल, सिलचर।

८—सुपताल वीभिंग स्कूल, सिलहट।

९—मेवा वीविंग स्कूल, सिलहट।

१०—श्रीनाथपूर वीभींग स्कूल, सिलहट।

११—हिन्दू अनाथ आश्रम वीभींग सेक्शन, शिलांग।

इसके अतिरिक्त सरकार अनेक सुयोग्य विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति देकर अन्य प्रान्तों में विशेष शिक्षा प्राप्त करने के लिये भेजती है। एक विद्यार्थी "फिरोज इन्स्टिट्यूट कालीकट मद्रास" भेजा गया और दूसरा साबुन बनाना सीखने के लिये "इन्डस्ट्रियल रिसर्च लेबोरेटरी, कलकत्ता" भेजा गया। बुनाई का काम सीखने के लिये एक छात्र "गवर्नमेन्ट सेन्ट्रल वीभींग इन्स्टीट्यूट" काशी भी भेजा गया है। इस प्रकार प्रान्त में व्यवसायिक शिक्षा का प्रबन्ध अच्छा है।

संस्कृत शिक्षा

सरकार ने संस्कृत शिक्षा के प्रचार के भी कुछ प्रयत्न किया है। प्रान्त में 'आसाम संस्कृत एसोसियेशन और बोर्ड' नामक एक संस्था है जो कि प्रान्त में संस्कृत परीक्षाओं को लेती है और इसके लिये सारा प्रबन्ध करती है। सम्भवतः एसोसियेशन परीक्षा लेता है और बोर्ड पाठ्य पुस्तकों को निर्धारित करता है। ये संस्थायें सरकारी हैं। फलस्वरूप बोर्ड को १९,७१० रु० सरकारी सहायता मिलती है। एसोसियेशन के द्वारा प्रतिवर्ष संस्कृत की तीन परीक्षायें ली जाती हैं (१) आदि (२) मध्य और (३) उपाधि परीक्षा। इस वर्ष इन परीक्षाओं में उत्तीर्ण विद्यार्थियों की संख्या क्रमशः २,३२,१२,७५४ थी। इससे स्पष्ट पता चलता है कि आसाम में संस्कृत की दशा दयनीय है।

गवर्नमेण्ट संस्कृत कालेज सिलहट

यह पूर्णतया गवर्नमेंट कालेज है और इसमें संस्कृत की उच्च शिक्षा दी जाती है। इस वर्ष इस कालेज में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की संख्या २६ और गत वर्ष २७ थी। कालेज के लिये सरकारी खर्च क्रमशः १४,१८५ रु० और १३,६०७ रु० था। इस कालेज में न्याय, व्याकरण, साहित्य और दर्शन आदि सब विषयों की शिक्षा दी जाती है परन्तु विद्यार्थियों की संख्या शोचनीय है।

पाठशालायें (टोल)

इस संस्कृत कालेज के अतिरिक्त अनेक प्राइवेट पाठशालायें—जिन्हें यहां टोल कहते हैं—भी हैं जहां पर संस्कृत की शिक्षा दी जाती है। इस साल ऐसी पाठशालाओं की संख्या आसाम घाटी में ८४ और सूरमा घाटी में ७७ थी।

कामरूप संस्कृत सञ्जीवनी-सभा

यह सभा संस्कृत प्रचार के लिये प्रशंसनीय कार्य कर रही है। इसके पास १०० हस्तलिखित पुस्तकों का संग्रह है और इस प्रकार संग्रह में लगी हुई है। इस प्रकार इसने अनेक प्राचीन पुस्तकों का उद्धार किया है।

इस्लामी शिक्षा

इस्लामी शिक्षा देने के लिये भी सरकार ने मदरास और मकतब खोल रक्खे हैं। इस साल इन मकतबों की संख्या ५४३ थी। इस शिक्षा की जांच के लिये एक अफसर भी नियुक्त है। प्रतिवर्ष मदरसा फाइनल परीक्षा होती है।

स्त्री-शिक्षा

इस वर्ष सब प्रकार के स्कूलों में लड़कियों की संख्या ७४,४५८ और गतवर्ष ६९,२८२ थी। इससे ज्ञात होता है कि उनकी संख्या प्रतिदिन बढ़ रही है। परन्तु लड़कियों के लिये अधिक स्कूल खोलने की अभी बड़ी आवश्यकता है। बालिकाओं की शिक्षा संस्थाओं के निरीक्षण के लिये एक स्त्री-निरीक्षक नियुक्त की गई है। लड़कियों की ट्रेनिंग के लिये भी प्रबन्ध है। सिलचर मिशन स्कूल और नवगाँव मिशन स्कूल में लड़कियों को ट्रेनिंग दी जाती है। लड़कियों की शिक्षा के लिये तेजपूर, जोरहाट और मोलवी बाजार में हाईस्कूल खोले गये हैं।

यूरोपियनों और एँग्लो-इण्डियनों की शिक्षा

इन लोगों की शिक्षा के लिये अनेक स्कूल खुले हैं जिनमें कुछ सरकारी और कुछ मिशनरियों के हैं। इस साल इन स्कूलों में यूरोपियन और एंग्लो-इंडियन विद्यार्थियों की संख्या ४३४ और गत वर्ष ३९२ थी। इस शिक्षा में समस्त सरकारी खर्चा ३२९४११) हुआ।

पिन माउण्ट स्कूल

योरोपियन और एँग्लो इंडियन बालकों की शिक्षा के लिये एक मात्र शिक्षालय शिलांग का गवर्नमेंट पिनमाउन्ट स्कूल है। इसमें विद्यार्थियों की संख्या ८७ है। इसके अतिरिक्त लोरेटो कानवेन्ट स्कूल, हल्फाङ्ग और सेन्ट एडमण्डस कालेज शिलाङ्ग हैं। इस कालेज में १८२ विद्यार्थी है। इन स्कूलों के विद्यार्थी केम्ब्रिज और आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय की परीक्षा देते हैं।

पर्वतीय जातियों की शिक्षा

आसाम की पहाड़ियों में भी अनेक स्कूल हैं जिनमें प्राथमिक तथा माध्यमिक शिक्षा दी जाती है। इन पहाड़ियों में प्रारम्भिक पाठशाला में छात्रों की संख्या इस प्रकार हैं।

खासी और जयन्तिया की पहाड़ी १४,४२५ नागा पहाड़ी ४,२६१, लुशाई पहाड़ी ५,५४९ और गारो पहाड़ी ५,७८५ इससे पता चलता है कि छात्रों की उपस्थिति इन पहाड़ी स्थानों में भी काफी है।

चाय बगान के स्कूल

कुलियों के लड़कों को सहज में शिक्षा में मिल जाय इस लिये चाय बगानों के पास अनेक स्कूल खोले गये हैं। इस वर्ष ऐसे स्कूलों की संख्या ९६ और विद्यार्थियों की संख्या ३०१० थी। डिगबोई की आसाम आयल कम्पनी की ओर लड़का और लड़कियों के लिये एक स्कूल खोला गया है।

हरिजन स्कूल

साधारण स्कूलों में हरिजन बालकों के प्रवेश के लिये कोई निषेध नहीं है फिर भी अनेक प्रधान स्थानों पर इनके लिये पृथक स्कूल है। आसाम घाटी और सिलहट जिले के प्रायः प्रत्येक तहसील में हरिजन बालकों के लिये स्कूल खोले गये हैं।

विकृतों की शिक्षा

गूंगे और बहिरों की शिक्षा का प्रबन्ध कलकत्ते के 'डेफ एण्ड डम्ब स्कूल' में किया गया है। इस वर्ष १५ लड़कों को १८) मासिक छात्रवृत्ति इस स्कूल में पढ़ने के लिये दी गई। अन्धों के लिये 'कलकत्ता ब्लाइण्ड स्कूल' में इन्तजाम है। इस साल छः लड़कों को १५) मासिक छात्रवृत्ति दी गई।

उपर शिक्षा का जो विवरण प्रस्तुत किया है उससे स्पष्ट पता चलता है कि आसाम प्रान्त शिक्षा में कितना पिछड़ा हुआ है परन्तु यह संतोष का विषय है कि सरकार शिक्षा के प्रचार के लिये बड़ा प्रबन्ध कर रही है।

समस्त शिक्षा संस्थाओं की तालिका

प्रान्त भर के शिक्षालयों की संख्या और पढने वाले विद्यार्थियों की संख्या यहां दी जाती है।

जनसंख्या		आबादी के औसत से समस्त विद्यार्थियों का प्रतिशत	
पुरुष	४५,३७,२०६	पुरुष	६·७
स्त्री	४०,८५,७४५	स्त्री	१·६
टोटल	८६,२२,२५१		

	शिक्षालयों की संख्या		पढ़ने वालों की संख्या	
	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री
आर्टस कालेज	५	...	१,७५८	...
प्रोफेशनल कालेज	१	...	७६	...
हाई स्कूल	७६	१३	२३,५३९	३,०४१
मिडिल स्कूल	४३३	५३	४८,०९९	६,६६४
प्राइमरी स्कूल	५,४४६	७०३	२,६०,५३१	२५,९३४
स्पेशल स्कूल	१५३	३	४,३९६	१२६
जोड़	६,११४	७७२	३,३८,३९९	३५७६५

शिक्षा विभाग का सारा खर्चा इस प्रकार है।

शिक्षालय पर खर्चा

	पुरुष		स्त्री
आर्टस कालेज	३,८४,२१९ रु०	...	... रु०
प्रोफेशनल कालेज	१६,०४०	...	...
हाई स्कूल	१०,३०,८२६		१,६४,७४६
मिडिल स्कूल	६,२१,६९३		१,२५,०२१
प्राइमरी	१२,०९,९५९		१,२०,०२१
स्पेशल	२,०१,१४६		३,३५१
जोड़	३४,६३,८८३		४,१३ १३९
अन्य खर्चा	११,७२८३८		
कुल खर्च	५०,५०,८६० रु०		

इस प्रकार शिक्षा में कुल खर्चा साढ़े पचास लाख के लगभग है।

महापुरुष

शंकरदेव

आसाम के इतिहास में शंकरदेव का एक प्रधान स्थान है। इसके धार्मिक इतिहास में तो आपने युगान्तर सा उपस्थित कर दिया है। ईसा की पन्द्रहवीं शताब्दी में भक्ति रस में सराबोर इन महात्मा ने श्रीकृष्ण की लीला का इतना प्रचार किया कि घर घर में भक्ति चर्चा सुनाई पड़ने लगी। गृहस्थ होने पर भी इन वीतराग महात्मा ने असार संसार को तृणवत् समझ कर छोड़ दिया तथा लँगोटी लगा कर भागवत धर्म के प्रचार में जुट गये। यदि हम शंकरदेव को आसाम का महाप्रभु चैतन्य मान लें तो इसमें कुछ भी अनुचित न होगा। शक्ति पूजा के कारण बलिदान देते देते जिनका हृदय कठोर हो गया था और जो कर्मकाण्ड में फँसे हुए थे, उन्हें भक्ति काण्ड का पाठ पढ़ाना शंकरदेव ही का काम था। आपने स्वयं ही प्रचार कर विश्राम ग्रहण नहीं कि बल्कि अपने शिष्यों द्वारा इस प्रचार को सदा जारी रक्खा। सचमुच आसाम में आप जैसा महापुरुष दूसरा कोई नहीं है।

शंकरदेव का जन्म सन् १४४९ ई० में आसाम प्रान्त में एक साधारण कायस्थ जाति में हुआ था। आपके पूर्वज को चण्डी वर था। इनके पूर्वज शाक्त थे। शंकरदेव अपने लड़कपन ही में माता-पिता से रहित हो गये थे। पढ़ने में इनकी बुद्धि बड़ी तीव्र थी। आपने शीघ्र ही सकल शास्त्रों में पाण्डित्य प्राप्त कर लिया। आपके अध्यापक आप से सदा प्रसन्न रहते थे और उन्होंने आपकी विद्वत्ता पर मुग्ध होकर आपको 'देका गिरि' की उपाधि दे रक्खी थी। अध्ययन समाप्त करने के बाद आपने योगशास्त्र का अभ्यास किया। इस प्रकार से योग तथा अन्य शास्त्रों में अलौकिक पाण्डित्य के कारण समाज में इनका प्रभाव बढ़ने लगा।

इसी समय आपकी दादी का देहान्त हो गया। इस मृत्यु से आपके हृदय को बड़ी चोट पहुँची और आप संसार से विमुख होने लगे। कुछ ही दिनों के बाद आपकी स्त्री की भी मृत्यु हो गई। अब क्या था? आपने संसार को बिल्कुल छोड़ कर संन्यास ग्रहण कर लिया। अब आपने धार्मिक क्षेत्रों की यात्रा करने का निश्चय किया और नवद्वीप, पुरी, गया, काशी, प्रयाग, वृन्दावन तथा हरिद्वार की यात्रा की। इस यात्रा में आपने बारह वर्ष व्यतीत किये। घर लौटने पर गीता तथा श्रीमद्भागवत की कथा सुनाने और लोगों को उपदेश देने लगे। आपके पास अनेक पंडित धार्मिक विषयों पर शास्त्रार्थ करने आये और आप से हार कर चले गये। आपकी प्रतिभा के सभी कायल थे।

शंकरदेव का बढ़ता हुआ प्रभुत्व देख कर कुछ लोगों के हृदय में द्वेष बुद्धि जगी और उन्होंने तत्कालीन आहोम राजा के कान भरने शुरू कर दिये। कोच राजा नर नारायण भी इन्हीं लोगों की दुष्टता के कारण शंकरदेव के विरुद्ध हो गया। राजा के छोटे भाई शिल राय की दया से किसी प्रकार शंकर की जान बची। इनके दो प्रधान शिष्यों—नारायण दास तथा गोकुलचन्द को इन्हीं के कारण फाँसी की सजा मिली, परन्तु शंकरदेव के अलौकिक प्रभाव से उनकी भी जान बची। शंकरदेव बहुत दिनों तक राजा के डर से छिपते फिरे, परन्तु अन्त में वे नर नारायण के पास गये। राजा इनकी अलौकिक प्रतिभा को देख बड़ा आश्चर्यित हुआ और अन्त में इनके वश में हो गया। कचारी राजा भी इनके वशीभूत होकर वैष्णव धर्म को स्वीकार कर लिया। नर नारायण इनकी बड़ी इज्जत करने लगा और इन्हें एक बहुत बड़ा पद प्रदान किया।

शंकरदेव ने भागवत धर्म के प्रचार के लिये कोई प्रयत्न उठा नहीं रक्खा। आपने साधारण जनता तक इस धर्म का सन्देश पहुँचाने के लिये अनेक छोटे छोटे धार्मिक ग्रन्थों का निर्माण किया और अनेक लोगों से संस्कृत ग्रन्थों का स्थानीय भाषाओं में अनुवाद कराया। आप जीवन भर पुस्तकें लिखते रहे। इनके पुस्तकों में जीवन तथा शक्ति होती थी[१]। इस प्रकार वैष्णव धर्म का बड़ा प्रचार हुआ।

शंकरदेव के द्वारा चलाये गये धर्म को महाधर्म, या महापुरुष धर्म अथवा महापुरुषिया धर्म कहते हैं। इस धर्म में आने को 'शरण' कहते हैं और दीक्षित व्यक्ति को 'शरणिया' कहते हैं। ये मन्त्र दे कर सब को इस धर्म में दीक्षित करते थे तथा यह मन्त्र "शरणं मे जगन्नाथ श्री कृष्ण पुरुषोत्तम" है। शङ्कर ने सब को निष्काम भक्ति की शिक्षा दी। ये कृष्ण को पूर्ण ब्रह्म के समान पूजते और कृष्ण की पूजा को छोड़ कर दूसरे की पूजा का निषेध करते थे। शङ्करदेव का प्रभाव दिन पर दिन बढ़ता ही गया। वैष्णव धर्म के अधिक प्रचार से शाक्त धर्म का प्रभाव घटने लगा।

माधव

आप शङ्कर देव के सब से प्रधान शिष्य थे। वास्तव में आप ही महापुरुषिया सम्प्रदाय के संस्थापक माने जाते हैं। आप गोबिन्दगिरि के पुत्र और बान्दुका स्थान के निवासी थे। आपके पिता शाक्त थे और आप भी पहिले शाक्त ही थे। एक बार आपकी माता बीमार पड़ी और आपने उनके चंगा हो जाने पर बलिदान की इच्छा प्रकट की। कुछ दिनों के बाद आपकी माता चंगी हो गई। आपने बलि चढ़ाना निश्चय कर लिया। इतने ही में आपको शङ्कर देव के पास जाने के लिये आप के एक मित्र ने प्रेरित किया। आप शङ्करदेव के पास गये। शङ्करदेव वैष्णव थे और माधव शाक्त। दोनों ने खूब शास्त्रार्थ किया। शङ्कर माधव की विद्वत्ता से बड़े प्रसन्न हुए। परन्तु शङ्कर की अलौकिक प्रतिभा के आगे माधव अवाक् रह गये। माधव शास्त्रार्थ में परास्त हुए और उन्होंने बलिदान देना छोड़ दिया। यद्यपि इस समाचार से शाक्त बहुत बिगड़े परन्तु माधव अपने विचार से विचलित नहीं हुए। अन्त में इन्होंने शङ्कर की शिष्यता स्वीकार की और वैष्णव धर्म के पक्के समर्थक हो गये। माधव ने भी वैष्णवधर्म के प्रचार के लिये बड़ा उद्योग किया। आपने शङ्कर देव के कार्य को पूरा किया और इस प्रकार से असली गुरु दक्षिणा चुकाई। अन्त में सन् १५६८ ई० में इनकी मृत्यु हुई[१]।

दामोदर

आप जाति के ब्राह्मण थे। विद्वत्ता में आप माधव से किसी प्रकार भी कम नहीं थे। ये गृहस्थ थे और बहुत बड़े भक्त थे। आपने एक पृथक सम्प्रदाय की स्थापना की जिसका नाम 'दामोदरिया' है। इस धर्म के सिद्धान्त आदि का वर्णन अन्यन्त्र किया जा चुका है।

अनिरुद्ध भुइया

आप आदि भुइया के वंशज थे। आप के पिता का नाम पोन्डा भुइया था और आपने शङ्करदेव से शरण मन्त्र लिया। आप भी शास्त्रीय विद्वान थे। शंकर देव के शिष्य होने पर भी अनेक सम्प्रदाय से संतुष्ट नहीं थे अतः आपने 'मोआमेरिया' नामक एक पृथक सम्प्रदाय की स्थापना की। इस सम्प्रदाय के अनुयायिनों ने एक बार बड़ा विद्रोह मचाया था जिसका वर्णन अन्यत्र हो चुका है।

हरिदेव

आप के पिता का नाम अजनाभ था और आप का गोत्र काश्यप था। आप सन् १४९१ ई० में नारायणपुर में पैदा हुये थे। आपने भी एक पृथक सम्प्रदाय की स्थापना की जिसे बामुनिया सम्प्रदाय कहते हैं। आपने शंकर के पास आकर उपदेश ग्रहण किया और उनके अनन्य भक्त हो गये। आप सदा हरि का ध्यान किया करते थे और संकीर्तन में आप को ब्रह्मानन्द की प्राप्ति हुआ करती थी। शंकर ने अनेक वैष्णव धर्म के प्रचार का आज्ञा दी और अपने जनता को कदाचार हटाकर सदाचार सिख लाया। आपके सम्प्रदाय को वैष्णवधर्म ही का एक अंग समझना चाहिये। अन्त में आपकी मृत्यु होगई।

१—नगेन्द्रनाथ वसु—सोशल हिस्ट्री आफ कामरूप, भाग २, पृष्ठ ६६।

१ शङ्करदेव और माधव के विस्तृत जीवन-चरित के लिये पाठक देखें।

नगेन्द्रनाथ बसु—दि सोशल हिस्ट्री आफ कामरूप जिल्द २ पृ० ७६-११८।

शासन व्यवस्था

आसाम प्रान्त का शासन प्रबन्ध भी उसी भांति होता है जिस प्रकार भारतवर्ष के अन्य प्रान्तों का। सन् १९१९ के एक्ट के अनुसार समस्त प्रान्तों को एक ही श्रेणी में रख दिया है और पहिले के चीफ कमिश्नरशिप, लेफ्टिनेन्ट गवर्नर शिप और प्रेसीडेंसी गवर्नर शिप के कृषि विभाग तोड़ दिये गये हैं। अब आसाम प्रान्त का दर्जा भी भारत के अन्य प्रान्तों के समान ही हो गया है और जिस प्रकार इस देश के दूसरे प्रान्तों के एक लेजिस्लेटिव कौंसिल और गवर्नर होता है उसी प्रकार का सारा प्रबन्ध यहां ही है। सुभीते के लिये हम आसाम प्रान्त की शासन व्यवस्था को मुख्य तीन भागों में बांट सकते हैं :—

१—एक्जिक्युटिव प्रबन्धकारिणी
२—लेजिस्लेटिव व्यवस्थापक सभा
३—जुडिशल न्याय सम्बन्धी

यहां पर क्रमशः इन्हीं तीनों विभागों का संक्षेप में वर्णन किया जाता है।

१—एक्जिक्युटिव

एक्जिक्युटिव विभाग का सब से बड़ा आफिसर इस प्रान्त का गवर्नर है जो अपनी एक्जिक्युटिव कौंसिल की सहायता से सारे प्रान्त का शासन करता है। इस कौंसिल से मन्त्रियों की सहायता के लिये अनेक सिक्रेटरी और असिस्टेन्ट सेक्रेटरी होते हैं। सेक्रेटरी जहां काम करते हैं उसे 'सेक्रेटरियट' कहते हैं।

गवर्नर

सन् १८७४ के फरवरी मास में जब यह प्रान्त बंगाल के प्रान्त से स्वतन्त्र बना दिया गया उसी समय इसका शासन विधान एक चीफ कमिश्नर के हाथों में सौंप दिया गया। उस समय यह प्रान्त "चीफ कमिश्नरर्स प्राविन्स' कहलाता था। उस समय चीफ कमिश्नर ही इस प्रान्त का सर्वे सर्वा था। एक्जिक्यूटिव विभाग में वह सर्व प्रधान था ही न्याय विभाग की भी अनेक बातें उसके हाथ में थी। वह जो चाहे कर सकता था। गवर्नर जनरल की अनुमति लेकर वह ब्रिटिश भारत में प्रयुक्त किसी भी कानून को अपने प्रान्त में लागू कर सकता था। सन् १९०९ के मिन्टो मार्ले रिफार्म के अनुसार उसका नाम चीफ कमिश्नर बदल कर लेफ्टिनेण्ट गवर्नर कर दिया परन्तु अधिकार में कुछ विशेष कमी नहीं हुई। सन् १९१९ से लेफ्टिनेन्ट गवर्नर का नाम हटा कर गवर्नर का नाम उसे दिया गया। इसी समय से आसाम में लेजिस्लेटिव कौंसिल के बन जाने के कारण से उसके कानून विधान सम्बन्धी अनेक अधिकार जाते रहे।

इक्जिक्युटिव कौंसिल

गवर्नर की सहायता के लिये पहिले इक्जिक्युटिव कौंसिल रहा करती थी। ये मेम्बर गवर्नर को सदा शासन विधान में सहायता पहुँचाया करते थे। सन् १९१९ ई० से जब प्रान्तों में डायर्की (द्विचक्र शासन) की प्रथा चली तब 'ट्रान्सफर्ड सबजेक्ट' में भारतीय भी मेम्बर होने लगे। आसाम का शासन विधान अब तक इसी नियम के अनुसार चल रहा था।

वर्तमान शासन प्रणाली और गवर्नमेण्ट आफ इण्डिया एक्ट १९३५

सन् १९३५ ई० में ब्रिटिश पार्ल्यामेन्ट ने जो गवर्नमेन्ट आफ इण्डिया एक्ट बनाया है उसके कारण से समस्त भारत के शासन-विधान में परिवर्तन हो गया है। इस सुधार के अनुसार प्रान्तों में "प्राविन्शियल एटानोमी" (प्रान्तीय स्वतन्त्रता) की स्थापना की गई है। अतः सब प्रान्तों की भांति आसाम में भी परिवर्तन हुआ है।

गवर्नर और कौंसिल आफ मिनिस्टर्स

सन् १९३५ की धारा के अनुसार गवर्नर ही आसाम का एक्जिक्युटिव विभाग का सर्वप्रधान आफिसर है। उसकी सहायता के लिये मन्त्रियों की

एक समिति है जिसे 'कौंसिल आफ मिनिस्टर्स' कहते हैं। ये मेम्बर धारा सभा से चुने जाते हैं। मन्त्रियों में जो प्रधान होता है उसे चीफ मिनिस्टर कहते हैं। इन मन्त्रियों में प्रत्येक कानून, शिक्षा, पुलिस, खेती, व्यवसाय आदि में से किसी एक या दो विषय का इञ्चार्ज होता है। आजकल आसाम प्रान्त में चार या पांच मन्त्री हैं जो भिन्न भिन्न विषयों का शासन प्रबन्ध कर रहे हैं। इन मन्त्रियों को सहायता देने के लिये अनेक सेक्रेटरी, असिस्टेन्ट या डिपुटी सेक्रेटरी नियुक्त है। सन् १९३७ की पहली अप्रैल से और प्रान्तों की भांति आसाम प्रान्त को भी 'प्रान्तीय स्वतन्त्रता' मिल गई है और इस समय इसका संचालन इसी उपर्युक्त विधि से हो रहा है।

कमिश्नर

अन्य प्रान्तों की भांति आसाम भी कमिश्नरियों और जिलों में बँटा हुआ है। आसाम प्रान्त में तीन कमिश्नर होते हैं (१—ब्रह्मपुत्र घाटी के लिये, २—सूरमा घाटी के लिये, ३—पहाड़ी जिलों के लिये) जो डिपुटी कमिश्नरों के कार्य का निरीक्षण करते और अपनी कमिश्नरी में शान्ति-स्थापना की चेष्टा में लगे रहते हैं।

डिपुटी कमिश्नर

इस प्रान्त में जिले का जो सब से प्रधान इक्जि-क्युटिव आफिसर होता है उसे डिपुटी कमिश्नर कहते हैं। यही वह आफिसर होता है जो बिहार और यू० पी० के जिलों में कलक्टर या डिस्ट्रिक्ट आफिसर के नाम से प्रसिद्ध है। पहिले इन डिपुटी कमिश्नरों के अधिकार बहुत ही अधिक थे। ये एक्जिक्युटिव आफिसर होने के अतिरिक्त सबार्डिनेट जज का भी काम किया करते थे परन्तु अब न्याय विभाग इक्जिक्युटिव से अलग हो जाने के कारण इन से ये अधिकार छीन लिये गये।

असिस्टेन्ट डिपुटी कमिश्नर

इन डिपुटी कमिश्नरों की सहायता के लिये असिस्टेन्ट और एक्स्ट्रा असिस्टेन्ट कमिश्नर भी रक्खे जाते हैं जो यू० पी० के डिपुटी कलक्टरों की की श्रेणी के होते हैं। इनके नीचे तहसीलदार होते हैं जो तहसीलों के छोटे मोटे मुकदमे देखा करते हैं।

२—लेजिस्लेटिव

आसाम में जितने कानून प्रयोग में आते हैं यदि उन पर विचार करें तो स्पष्ट प्रतीत होता है कि ये कानून तीन प्रकार से निर्माण किये गये है। पहिले प्रकार के कानून ऐसे हैं जो सपरिषद वायसराय द्वारा बनाये गये हैं जो सारे ब्रिटिश भारत पर लागू हैं। दूसरी प्रकार के कानून ऐसे हैं जिन्हें गवर्नर ने वायसराय की अनुमति लेकर स्वयं बनाया है तथा इस प्रान्त में लागू कर दिया है। जब इस प्रान्त में लेजिस्लेटिव कौन्सिल नहीं थी तब चीफ कमिश्नर स्वयं ही इस प्रान्त के लिये कानून बनाया करता था। तीसरे प्रकार के कानून वे हैं जो लेजिस्लेटिव कौन्सिल के द्वारा बनाये गये है। कुछ कानून बंगाल से भी लिये गये हैं।

लेजिस्लेटिव कौन्सिल या एसेम्बली

आजकल आसाम प्रान्त में जो कानून बनते हैं, वे सब इसी कौन्सिल के द्वारा बनाये जाते हैं। इस कौन्सिल में जनता के चुने हुये प्रतिनिधि रहा करते हैं जो किसी प्रस्ताव को अपना वोट देकर बहुमत से पास करते हैं और यही प्रस्ताव पास होने पर कानून बन जाते हैं। यद्यपि गवर्नर वर्तमान समय में स्वयं कानून नहीं बना सकता परन्तु वह विशेष अवस्थाओं में किसी भी बिल को 'सर्टीफाई' कर उसे पास करने के लिये मेम्बरों को बाधित कर सकता है। सन् १९३५ ई० के गवर्नमेण्ट आफ इण्डिया एक्ट के अनुसार गवर्नर छः मास के लिये आर्डिनेन्स भी जारी कर सकता है और वह अपनी इच्छा से लेजिस्लेटिव कौन्सिल या एसेम्बली को तोड़ भी सकता है। परन्तु साधारण स्थिति में लेजिस्लेटिव कौन्सिल या एसेम्बली ही के द्वारा कानून बनाये जाते हैं।

३—जुडिशियल

हाईकोर्ट

भारत के अन्य प्रान्तों में न्याय करने की सबसे बड़ी संस्था हाईकोर्ट है। परन्तु आसाम में हाईकोर्ट नहीं है, अतः यहाँ के सारे मुकदमों की अपील कलकत्ते के फोर्ट विलियम नामक हाईकोर्ट में हुआ करती है।

सेशन कोर्ट

आसाम में पहिले सेशन कोर्टों की बड़ी कमी थी। पहिले ब्रह्मपुत्र की समस्त घाटी के लिये केवल एक ही डिस्ट्रिक्ट जज रहा करता था, परन्तु अब इनकी संख्या कुछ अधिक हो गई है। बहुत पहिले आसाम में न्याय विधान के लिये न तो सेशन कोर्ट था और न सबार्डिनेट कोर्ट ही। जिला धीश डिपुटी कमिश्नर ही सबार्डिनेट जज का काम किया करता था। परन्तु जब से डिपुटी कमिश्नर से न्याय विधान का कार्य हटा लिया गया है तब से अनेक सबार्डिनेट और सेशन जजों की नियुक्ति हुई है और अब ये ही न्याय विधान चला रहे हैं। इन आफिसरों के अतिरिक्त अनेक मुन्सिफ और आनरेरी मजिस्ट्रेट होते हैं जो न्याय विधान में सहायता पहुँचाते हैं।

पर्वतीय प्रदेशों में न्याय विधान

पहाड़ी तथा सीमान्त प्रदेशों में न्याय विधान का कुछ विशेष प्रबन्ध नहीं है। वहाँ के जिलाधीश (जो प्रायः सुपरिन्टेन्डेन्ट कहलाता है) उसके पास न्याय तथा शासन संबंधी सभी अधिकार होते हैं और वह अपनी इच्छा से उन लोगों पर शासन करता है। परन्तु धीरे धीरे वहां भी इसका प्रचार किया जा रहा है।

पुलिस और सेना

आसाम प्रान्त में पुलिस और सेना का बड़ा ही जबरदस्त प्रबन्ध है। सीमान्त तथा पर्वतीय जातियों की भयंकरता के कारण सरकार को सदा सावधान रहना पड़ता है। इस प्रान्त के पुलिस विभाग के सब से बड़े आफिसर को 'इन्सपेक्टर जेनरल आफ पुलिस' कहते हैं। प्रान्त की समस्त पुलिस इसी के आधीन होती है और इसी की आज्ञानुसार सारा काम किया जाता है। इन्सपेक्टर जेनरल के आधीन दो तरह की पुलिस रहती है (अ) सिविल पुलिस (ब) मिलिटरी पुलिस। सिविल पुलिस प्रान्त में शान्ति उत्पन्न करने तथा अपराधों का पता लगाने और दबाने में लगी रहती है। मिलिटरी पुलिस सीमान्त प्रदेशों में सीमान्त जातियों से मुकाबिला के लिये रक्खी जाती हैं। प्रत्येक जिले में एक पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट तथा असिस्टेण्ट पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट होता है जिसके अधीन जिले की सारी सिविल पुलिस होती है और वह उसकी सहायता से शान्ति स्थापित करता है। देहातों में 'रूरल पुलिस' होती है और देहाती चौकीदार होते हैं जो अपराधों का पता लगाया करते हैं।

आसाम में जितनी सेना है उसे पाँच बैटेलियन में बांट दिया गया है। (१) लखीमपुर बैटेलियन (२) सिलचर बैटेलियन (३) नागा हिल्स बैटेलियन (४) गारो हिल्स बैटेलियन (५) लुशाई हिल्स बैटेलियन। डिब्रूगढ़, सिलचर, कोहिमा, एजल, शिलाङ्ग और सदिया प्रधान मिलिटरी स्टेशन हैं सन् १९०१ ई० में आसाम की सिविल और हथियारबन्द सिविल पुलिस में २,७४८ आफिसर और आदमी थे और मिलिटरी पुलिस में ३०८७ अफसर और आदमी थे।

जेल

आसाम में जेलों का शासन करने वाला सब से बड़ा अफिसर "इन्सपेक्टर जेनरल आफ प्रिजन्स" कहा जाता है। इसी के हाथ में सारे प्रान्त के जेलों का प्रबन्ध होता है। इसके नीचे जेल सुपरिन्टेन्डेन्ट हुआ करते हैं। जिनके आधीन प्रायः डिस्ट्रिक्ट जेल हुआ करता हैं। आसाम प्रान्त में दो प्रकार के जेल होते हैं (१) डिस्ट्रिक्ट जेल (२) सबसिडियरी (अप्रधान) जेल। सन् १९०३ ई० में सात डिस्ट्रिक्ट जेल थे और सत्रह सबसिडियरी डिस्ट्रिक्ट जेल प्रायः बड़े बड़े जिलों में हुआ करते हैं तथा सबसिडियरी जेल तहसीलों में होते हैं। सिलहट, तेजपूर, गौहाटी और डिब्रूगढ़ में आसाम प्रान्त के सब से बड़े जेल हैं इन्हें यदि सेन्ट्रल जेल कहें तो अधिक उचित होगा। यूरोपियन लोग केवल इन्हीं सेन्ट्रल जेलों में कैद किये जा सकते हैं। आसाम के जेलों में कैदियों की मृत्यु संख्या का औसत बहुत अधिक है। पेचिश, डायरिया तथा ज्वर आदि रोग अक्सर कैदियों के हुआ करते हैं। जेलों में बेंत की कुर्सी, टोकरी तथा टेबुल कुर्सी, आदि बनवाये जाते हैं। कैदी लोग धान कूटने, तेल पेरते, कपड़ा बिनते और बागवानी करते हैं।

रजिस्ट्रेशन

इस विभाग का सबसे बड़ा आफिसर 'इन्सपेक्टर जेनरल आफ रजिस्ट्रेशन' कहलाता है। यह ज्वायन्ट स्टाक कम्पनी के रजिस्ट्रेशन के साथ ही साथ जन्म

मृत्यु तथा विवाह की रजिस्ट्री का भी प्रबन्ध करता है। इसके अफिसर के नीचे अनेक सब रजिस्ट्रार भी होते हैं। कछार आदि जिलों में कुछ रुरल सब रजिस्ट्रार भी रक्खे गये हैं जिनका कर्मक्षेत्र उन जिलों के देहाती गांव हैं।

म्युनिसिपल और डिस्ट्रिक्ट बोर्डस

अन्य प्रान्तों की भांति आसाम में भी अनेक म्युनिसिपल और डिस्ट्रिक्ट बोर्ड्स हैं जो शहर और जिले का प्रबन्ध किया करते हैं। सन् १८७९ ई० के पहिले आसाम में लोकल बोर्ड्स नहीं थे। इसी साल एक छोटी सी कमेटी सड़क बनाने तथा शिक्षा का प्रबन्ध करने को बनाई गई। सन् १८८२ ई० में इन कमेटियों को उठाकर लोकल बोर्डों की स्थापना की गई। इन बोर्डों का चेयरमैन डिपुटी कमिश्नर ही हुआ करता था जो इसके अतिरिक्त जिलाधीश भी था। तहसील बोर्डों में सब डिविजनल आफिसर चेयरमैन हुआ करता था। सन् १९०३-४ में आसाम में १९ लोकल बोर्डस थे। अधिकारी वर्गों के हाथ से निकल जाने के कारण और म्युनिसिपल तथा डिस्ट्रिक्ट बोर्ड अच्छी तरह से काम कर रहे हैं। अब इनका चेयरमैन जनता के चुने हुये प्रतिनिधि ही होते हैं। तथा इन बोर्डों की देख रेख 'लोकल सेल्फ गवर्नमेन्ट विभाग का इन्चार्य मन्त्री होता है। आसाम के डिस्ट्रिक्ट बोर्डों ने कुछ बड़ी ही सुन्दर सड़कें बनवाई हैं जिसमें गौरीपुर राधारोड, सिलहट मुक्तापुर घाट रोड, सुनीमगंज रोड प्रसिद्ध हैं।

पोस्ट और टेलीग्राफ़

आसाम में पोस्ट और टेलीग्राफ का भी बहुत अच्छा प्रबन्ध है। इस विभाग का सबसे बड़ा अफिसर 'पोस्ट मास्टर जेनरल' कहलाता है जो सीधे डाइरेक्टर जेनरल के आधीन होता है। आसाम के गांवों में भी पोस्ट आफिस दिखाई पड़ते हैं। यहां सबसे विशेषता यह है कि ऊँचे पहाड़ी स्थानों पर पार्सल आदि भेजने के लिये तार के खम्भे गड़े होते हैं। इन्हीं तारों में लटका कर पार्सल एक स्थान से दूसरे स्थान को भेजा जाता है। इस प्रबन्ध से जनता को बड़ी सुविधा होती है।

पब्लिक हेल्थ डिपार्टमेन्ट

दातव्य औषधालय

सन् १९०४ ई० में आसाम में १३५ औषधालय थे जिनमें ३५ औषधालयों में रोगियों को रखने का प्रबन्ध था। उस समय में सब से बड़े अस्पताल धुब्री तेजपूर तथा नवगांव में थे। परन्तु सन् १९३४ ई० में अस्पतालों की संख्या बढ़कर २५८थी। और यह संख्या सन् १९३५ में २६० तक पहुँच गई। सरकारी पब्लिक, लोकल तथा प्रायवेट एडेड इन सब प्रकार के अस्पतालों में कुल मिलाकर सन् १९३५ में २१,२४,५७३ रोगियों की चिकित्सा हुई। सन् १९३३ में यह संखया २२,४६,३१५ थी। सन् १९३४ में १६,८४८ आदमियों की चिकित्सा अस्पताल के भीतर रख कर हुई। जब कि गत साल यह संख्या १६,७७७ थी। मृत्यु का औसत इस वर्ष ५.८१ तथा गत वर्ष ५.४२ था। अस्पतालों पर सब खर्चा इस साल ८,०२,६७३ रु० था तथा गत साल ७,७४,७२२ रु० था।

आसाम में कोढ़ियों के लिये पांच अस्पताल बने हुये हैं जो सिलहट, कोहिमा, धुब्री, तुरा और गौहाटी में स्थित हैं। इन संस्थाओं में १८४ रोगी गत वर्ष के थे और २३२ नये भर्ती किये गये जोरहाट के कोढ़ियों के उपनिवेश में भी अच्छा काम हुआ जिसमें ५३ रोगी थे। मेडिकल और पब्लिक हेल्थ डिपार्टमेन्ट के द्वारा कुल ५०२७ कोढ़ियों की दवा हुई तेजपूर में 'मस्तिष्क का औषधालय' (मेण्टल हास्पिटल है जहां पागलों की चिकित्सा की जाती है। इसमें १९३५ में ६८५ रोगी थे तथा गत साल ६७७ था। १६४ रोगी नये भर्ती किये गये। इसमें साल भर में १,९७,००० रु० खर्च हुआ।

पब्लिक हेल्थ डिपार्टमेन्ट की ओर ज्वर को दबाने के लिये कुनैन के ७,९१५ पार्सल बांटे गये। कालाजार तथा हैजा आदि बिमारियों को रोकने के लिये अनेक यत्न किये गये तो भी १९३३ में हैजा से ५,५०८ आदमी मरे। डिस्ट्रिक्ट बोर्डों ने जनता के स्वास्थ्य सुधार के लिये १,४१,२७८ रु० खर्च किया।

पब्लिक वर्क्स डिपार्टमेन्ट

इस विभाग का सबसे बड़ा आफिसर चीफ इंजिनियर होता है जिसके नीचे और भी इंजिनियर रहते हैं। इस विभाग का काम यह है कि जनता को उपयोगी वस्तुओं जैसे कुआं, पुल, सड़क तथा इमारत आदि का निर्माण करें। इस विभाग ने आसाम में

कुछ सुन्दर काम किये हैं। सन् १८९० ई० के पहिले इस विभाग ने ये काम किये। साउथ ट्रन्क रोड़--धुब्री से सदिया तक—१८७७ ई०, नार्थ ट्रन्क रोड़, गौहाटी से शिलाङ्ग तक पक्की सड़क, सिलहट से काचार तक सड़क, जोरहाट स्टेट रेलवे आदि। सन् १८९० ई० के बाद भी अनेक विशाल सड़क आदि बनीं। निचुगाई-मनीपूर सड़क के बनवाने में २८३ लाख रुपया खर्च हुआ। इस सड़क के किनारे बांध बांधने में १,४१,००० रुपये तथा पुल बांधने में १,३७००० रु० खर्च हुआ। कृष्णाई और सिङ्गरा नदियों के ऊपर इस विभाग ने बहुत बड़े २ पुल बँधवाये हैं। कुछ इमारतें भी इस विभाग ने बनवायी है जिनका खर्चा इस प्रकार है:—सेक्रेटरियट प्रेस १,२७,००० रु० गवर्नमेन्ट हाउस, शिलांग, १,९१,००० सिलहट कलक्टरेट १,६८,००० रुपया तथा सिलहट जेल १,८६,००० रुपया।

सन् १९३४-३५ में इस विभाग ने ४५,३३,३७८ रुपया खर्च किया जिसमें ७,२४,८८३ रुपया नयी वस्तुओं के बनवाने में तथा २८,०६,३४० रुपया पुरानी चीजों की मरम्मत में खर्च किया गया[१]। गत वर्ष इसने बहुत रुपया बाढ़ के कारण टूटी सड़कें तथा पुल बनवाने में खर्च किया। यह विभाग जनता की सुविधा के लिये बहुत ही अच्छा काम कर रहा है।

आबकारी विभाग

अन्य प्रान्तों की भांति आसाम में भी आबकारी विभाग 'गवर्नमेन्ट रेवन्यू' का एक प्रधान अंग समझा जाता है। परन्तु आसामी लोग धीरे धीरे अफीम खाना और गांजा पीना छोड़ते जा रहे हैं। अतः इस विभाग से सरकारी आमदनी अब कम हो चली है। इस विभाग में प्रधानतया देशी शराब, गांजा और अफीम की बिक्री से आमदनी होती है। सन् १९३४-३५ में इस विभाग से सरकार को ३२,२९,८६६ रुपये की आमदनी हुई तथा १९३३-३४ में यह आमदनी ३५,३२,२६१ रुपये थी।

देशी शराब

सन् १९३४ में १,३४,४७१ गैलन देशी शराब बिक्री। शराब की बिक्री में कुछ कमी हो रही है। सारे प्रान्त में २५७ दूकाने थीं। इस शराब पर प्रति गैलन ४ रु० ६ आना सरकारी कर देना पड़ता है।

गाँजा और अफीम

सन् १९३४ में २३४ मन १९ सेर गांजा की खपत हुई जब कि यह खपत गत वर्ष २२० मन ३५ सेर थी। परन्तु इससे यह नहीं समझना चाहिये कि गांजे की खपत बढ़ रही है। गांजे पर सरकारी टैक्स २४ रु० प्रति सेर तक है।

आसाम में पहिले अफीम की खपत बहुत ही अधिक थी। परन्तु आसामी लोगों ने अब इस बुरी लत को छोड़ दिया है। सन् १९३४ में अफीम की खपत २९३ मन ३३ सेर थी तथा गत वर्ष ३१७ मन १४ सेर थी[१]। इससे स्पष्ट पता चलता है कि अफीम की खपत धीरे धीरे कम हो रही है। सरकार की दस वर्षीय योजना के कारण अफीम का प्रचार बहुत कुछ रुक गया है।

लगान

इस प्रान्त में लगान वसूली के लिये एक 'बोर्ड आफ रेवेन्यू' स्थापित किया गया है। इस बोर्ड के द्वारा ही लगान वसूली के सब झगड़े तय किये जाते है और अन्य प्रबन्ध किये जाते हैं। इसके अतिरिक्त कमिश्नर और डिपुटी कमिश्नर तथा प्रत्येक सब डिवीजन में एक सब-डिपुटी कलक्टर हैं जिनका प्रधान काम लगान वसूली की देख रेख करना ही है। पहाड़ियों के गाँवों से लगान वसूल करने के लिये मौजदारों से सहायता ली जाती है। पार्वत्य जिलों में मालगुजारी की जगह पर घर पर टैक्स लगाया जाता है।

मजूरी के नियम

मिलों तथा चाय बगानों में काम करने वाले मजदूरों की स्वत्व-रक्षा के लिये अनेक कानून बने हैं। इन कानूनों के पालन की देख रेख 'व्यवसाय तथा मजूरी' विभाग के मन्त्री किया करते हैं। इन कानूनों के होते हुए भी चाय बगानों के कुलियों की दशा अत्यन्त दयनीय है फिर भी इनसे उन्हें लाभ तो पहुँचता ही है।

१—रिपोर्ट औन दि एडमिनिस्ट्रेशन आफ आसाम फार दि ईयर १९३४-३५, पृ० ३६।

१—रिपोर्ट औन दि एडमिनिस्ट्रेशन आफ आसाम १९३४-३५ पृष्ठ ३६।

उपसंहार

आसाम पहिले अवहेलना तथा उपेक्षा की दृष्टि से देखा जाता था परन्तु गत पृष्ठों में इसके प्राचीन इतिहास, धार्मिक संस्था, सामाजिक प्रथाओं तथा इसकी भाषा और साहित्य का जो विवरण प्रस्तुत किया गया है उससे स्पष्ट प्रतीत होता है कि आसाम कोई उपेक्षा को वस्तु नहीं है। आसाम प्रान्त भारतवर्ष में अपना एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इसका इतिहास भारतवर्ष के अन्य प्रान्तों से कुछ कम पुराना नहीं है। यदि अवध साम्राज्य के प्रवर्तक इक्ष्वाकु नरेश थे, यदि विशाल मगध साम्राज्य को अपने शैशुनाग वंशी राजाओं के द्वारा संस्थापित होने का गर्व है तो आसाम को भी साक्षात विष्णु भगवान के पुत्र नरक को अपने प्राचीन राज्य के रूप में रखने का गौरव प्राप्त है। जब मगध साम्राज्य राजनीति का क्रीड़ा स्थल नहीं था उस समय के सुदूर पूर्व से ही आसाम के राजा (भगदत्त) भारतीय राजनीति में हाथ बँटा रहे थे। भगदत्त ने स्वयं महाभारत में भाग लिया था। समुद्रगुप्त के समय में कामरूप के प्रतापी राजा ने अपनी कुटिल राजनीति तथा अद्भुत साहस से इस 'भारतीय नेपोलियन' के चंगुल से अपने देश को बचाये रक्खा तथा राष्ट्र की स्वतन्त्रता का कभी भी हरण नहीं होने दिया। कुमार भास्कर वर्मन् के समय में इस राज्य की कुछ अजीब ही शान थी। कुमार ने हर्षवर्धन से मैत्री कर गौड़ाधिप शशाङ्क से उसके कर्ण-सुवर्ण छीन लिया। आसाम के इतिहास की सब से बड़ी विशेषता यह है कि यह मुसलमान राजाओं के चंगुल में कभी भी नहीं फँस सका। जब कि सारा भारतवर्ष इस्लाम के झण्डे के नीचे हो रहा था, जब कि उत्साही मलिक काफूर ने देवगिरी के राजा को परास्त कर, दक्षिण की मथुरा में अपनी सत्ता जमा, कन्याकुमारी तक धावा बोल दिया था तथा जिस समय 'काशी की कला' जा रही थी और 'मथुरा मजीद' हो रही थी, ठीक उसी समय आसाम अपने पराक्रमी शासकों के बाहुबल के भरोसे चैन की बंशी बजाता था और सुख की नींद सो रहा था। मुसलमानों ने आसाम पर अनेक बार चढ़ाइयाँ की परन्तु कभी भी उनके पाँव वहाँ नहीं जमे। यही आसाम के इतिहास की सब से बड़ी विशेषता है।

धर्म, सभ्यता और संस्कृति

आसाम की सभ्यता और संस्कृति अति प्राचीन है। यहाँ के लोगों की विशेषता यह है कि उनकी नस नस में शुद्ध आर्य रक्त संचार कर रहा है। यह प्रान्त मुसलमानी सभ्यता से प्रभावित होने से सदा वंचित रहा। किसी भी प्रकार का मुसलमानी प्रभाव यहाँ नहीं पड़ने पाया। अतः यदि किसी प्रान्त को शुद्ध आर्य-सभ्यताभिमानी होने का अधिक दावा है तो वह इसी प्रान्त को है। आसाम की आर्य सभ्यता इतनी सुदृढ़ और शुद्ध थी कि इसने अनेक अनार्य जातियों को आर्य धर्म में दीक्षित कर लिया तथा उस जाति को अपने में बिलकुल पचा लिया। अथवा यदि यह कहें कि अनार्य विदेशी जातियों ने यहाँ के धर्म और संस्कृति पर मुग्ध होकर इसे अपना लिया तो इसमें कुछ भी अत्युक्ति नहीं होगी। पहिले के आहोम राजा हिन्दू नहीं थे परन्तु बाद में वे यहाँ के धर्म और संस्कृति से इतने मन्त्रमुग्ध हो गये कि

हिन्दू धर्म को उन्होंने राज-धर्म स्वीकार कर लिया। अतः अनार्यों को भी आर्य धर्म की दीक्षा देकर उन्हें अपने रंग में रंग लेना आसामीय संस्कृति की दूसरी विशेषता है।

आसाम की सभ्यता के विषय में नगेन्द्रनाथ बसु ने लिखा है कि मुझे एक बार "आसाम प्राचीन सभ्यता की अनेक धाराओं का संगम था" ऐसा मालूम हुआ। मुझे इस प्रान्त में पुराने ढंग के आर्य लोग मिले जो मृगचर्म का जनेऊ पहिने वैदिक ऋचाओं से अपने कर्म कर रहे थे"।[१] आप फिर कहते हैं कि "आसाम प्राचीन तथा अर्वाचीन, पुरानी खूसट और अप-टु-डेट वस्तुओं का फेडरेशन हाल है।"[२] आसाम की सभ्यता और संस्कृति की इससे अधिक क्या प्रशंसा की जा सकती है।

यदि आसाम को शक्तिपूजा का केन्द्र कहें तो इसमें कुछ भी अत्युक्ति नहीं। यह प्रान्त समस्त भारत में शक्ति-पूजा का घर होने के लिये विख्यात है। आसाम के असंख्य मन्दिर तथा नामघर इसकी उत्कट धार्मिक भावना के ज्वलन्त उदाहरण हैं। इसी स्थान में शक्ति-पूजा का लालन-पालन तथा परिवर्धन हुआ। वैष्णवधर्म की दूसरी क्रीड़ा स्थली इसी प्रान्त को समझना चाहिये। इसी पुण्य क्षेत्र में शंकरदेव ने कृष्णभक्ति की सरिता बहाई और समय समय पर उनके शिष्य यादव आदि ने इसमें बाढ़ सी ला दी। बमुनिया तथा दामोदरिया आदि वैष्णव सम्प्रदायों की जननी होने का सौभाग्य इसी प्रान्त को प्राप्त है। अतः धार्मिक दृष्टि से भी इसकी महत्ता कुछ कम नहीं है।

भाषा और साहित्य

आसामी साहित्य की सब से बड़ी विशेषता यह है कि इसमें ऐतिहासिक साहित्य की प्रचुरता है। यदि भारत की किसी वर्नाक्युलर भाषा को ऐतिहासिक साहित्य रखने का गौरव प्राप्त है तो वह मराठी भाषा को छोड़ कर केवल आसामी भाषा ही को है। आसाम राजाओं को अपने राज्य घटनाओं के संकलन का बड़ा शौक था। अतः उन्होंने ऐतिहासिक ग्रन्थों की रचना कराई। यह हमारे लिये बड़े सौभाग्य की बात है कि आसामी साहित्य के कर्णधारों ने इन ग्रन्थों की रचना कर विदेशियों को उत्तर देने का हमें काफी मसाला दे दिया है। भारतीय भाषाओं के प्रमाणभूत सर जी० ए० ग्रियर्सन ने लिखा है कि "आसामी लोगों को अपने साहित्य के लिये गर्व करना उचित ही है।"[१]

प्राकृतिक शोभा

आसाम प्राकृतिक शोभा का घर है। यदि इसे प्रकृति देवी की गोद में बसा हुआ कहें तो कुछ अनुचित न होगा। इसके उत्तर में हिमालय पर्वत विराजमान है और विशाल ब्रह्मपुत्र इसका सदा पैर प्रक्षालन किया करता है। चोटियाँ बर्फ से लदी हुई

---

१ " Assam seemed to me to have been once the meeting place of the various forces of ancient civilization. I found in the country typical old Aryans, still performing the Vedic rites..... with sacred threads made of deer skin and reciting mantras, which bear a strange resemblence to the ancient Riks."

नगेन्द्रनाथ बसु—सोशल हिस्ट्री आफ कामरूप, भाग १, पृष्ठ १ (भूमिका)।

२ " I do not remember to have ever been to a place which can by greater claims to being looked upon as a federation-hall where the most ancient and the mostmodern, the most antiquated and the most up-to-date are found to meet to-gether upon terms of perfect cordiality."

नगेन्द्रनाथ बसु—सोशल हिस्ट्री आफ कामरूप, भाग १, पृ० २।

१ The Assamese are justly proud of their national literature. In no department have they been more successful than in a branch of study in which india is as a rule curiously deficient. Remnants of historical works that treat of the time of Bhagdatta....are still in existance. The chain of historical events, for the last six hundred years, has been carefully preserved, and their authenticity can be relied upon.

Linguistic Survey of India जिल्द ५, भाग १, पृ० ३९६।

दिखाई पड़ती हैं। यहाँ के सदा हरे भरे जंगलों का दृश्य अलौकिक है। कलकल रव करती हुई नदियाँ तथा द्रुत गति से चलने वाले झरने यात्रियों के मन को मुग्ध कर लेते हैं। मालूम होता है कि प्रकृति देवी ने प्रसन्न होकर इस देश को सदा हरा बनाये रखने के लिये इतनी अधिक नदियों का निर्माण कर दिया है[१]। यहाँ की स्वास्थ्यप्रद जलवायु मनोरम पर्वतीय दृश्य और हरी भरी उपजाऊ जमीन भारत के अन्य भागों में उपलब्ध कहां ?[२] सचमुच यहां पर प्रकृति देवी की असीम कृपा है।

नयी जागृति

आसाम में इस समय नयी जागृति हो गई है। युवक आसाम अपनी प्राचीन सभ्यता और नष्ट गौरव को अब समझने लगा है। उसने अपनी सभ्यता और संस्कृति की रक्षा के लिये अब कमर कस लिया है। गौहाटी में 'कामरूप-अनुसन्धान समिति, स्थापित की गई है जो आसाम की प्राचीन शोध के लिये प्रशंसनीय कार्य कर रही है। आसाम के प्राचीन बुरञ्जियों का प्रकाशन तथा नवीन ऐतिहासिक खोज जारी है। आसामी विद्वान अपने प्राचीन ऐतिहास के ऊपर पुस्तकें लिख कर उसे प्रकाश में ला रहे हैं। के० एल० बरुआ ने 'आर्ली हिस्ट्री आफ कामरूप' लिखकर इधर प्रशंसनीय प्रयत्न किया है। आसामी लोगों ने राष्ट्रीयता को भी अपनाया है। नवयुवक आसाम अपनी बुराइयों को भी कम कर रहा हैं। यहाँ के लोगों ने अफीम खाना प्रायः अब छोड़ ही दिया है। अन्य सामाजिक बुराइयाँ भी अब धीरे धीरे दूर हो रही हैं। आसामी समाज सुधारक इस विषय पर काफी ध्यान दे रहे हैं। आसाम के प्रत्येक अंग में जीवन का संचार हो गया है।

आवश्यकतायें

आसाम की सर्वाङ्गीण उन्नति होने में अनेक वस्तुओं का अभाव बाधक हो रहा है। इनमें सब से प्रथम प्रान्तीय विश्वविद्यालय का न होना है। आसाम में इस समय एक भी विश्वविद्यालय नहीं है। अतः इसकी भाषा की उन्नति में बड़ी बाधा पड़ रही है। यदि आसाम का एक स्वतन्त्र विश्वविद्यालय हो जाय तो इससे बड़ा लाभ होगा। आसामी भाषा को इससे बड़ा प्रोत्साहन मिलेगा और इससे शिक्षा के विस्तार में भी बड़ी सहायता मिलेगी। दूसरी आवश्यकता एक हाईकोर्ट की है। आसाम में हाई कोर्ट न होने के कारण से इस प्रान्त के होनहार वकीलों को कलकत्ता की शरण लेनी पड़ती है। उनकी वकालत इस प्रान्त में चमकने नहीं पाती। सुदूर कलकत्ते जाने में इस प्रान्त के लोगों की रुपया भी अधिक खर्च होता है और अनेक प्रकार की कठिनाइयाँ भी उठानी पड़ती है। विश्वविद्यालय और हाईकोर्ट के न होने से आसाम प्रान्त का कई लाख रुपया प्रतिवर्ष बङ्गाल को चला जाता है। प्रान्तीय स्वतन्त्रता के इस युग में यह बात कभी भी क्षम्य नहीं हैं। आसाम में व्यापार करने वाले कम्पनियाँ प्रायः अधिक बाहर की हैं और मजदूरों का काम करने वाले प्रायः सब लोग अन्य प्रान्तों के हैं। इस प्रकार से आसाम प्रान्त का धन दूसरे प्रान्त वालों के हाथ में चला जा रहा है। अब इस बात की आवश्यकता है कुछ ऐसा प्रबन्ध हो जाय जिससे अन्य प्रान्त के लोग इस प्रकार से इस प्रान्त का धन अपहरण न कर सकें। आसाम को यदि एक पृथक राष्ट्र बनना है तो उसे चाहिये कि इन दोनों आवश्यकताओं की शीघ्र पूर्ति कर लें।

कुछ सम्मतियां

आसाम के प्रत्येक जिले में 'कामरूप अनुसन्धान समिति' के ढंग पर अनुशीलन समितियाँ खोलनी चाहिये जो प्राचीन शोध का कार्य करें। इन समितियों को चाहिये की आसाम के प्राचीन स्थानों का निश्चय

---

१ "This country exceeds every other in the universe of similer extent in the numbers of its rivers."

डा० जे० पी० वाडे—एन एकाउण्ट आफ आसाम, पृ० १४।

२ " But the fertility of the soil, the salubrity of the climate, the number of rivers and streams, and in grandeur of hill scenery, we venture to say, Assam has scarcely a rival in any part of India."

श्रीमती एस० आर० वार्ड—ए ग्लिम्प्स आफ आसाम, पृ० २-३।

(Identification) करें उन प्राचीन पुस्तकों और बुरञ्जियों का जो अभीतक अप्रकाशित पड़ी हों प्रकाशन करें। नये सिक्के और शिलालेखों का संचय करें और अजायब घर बनाकर इन प्राचीन वस्तुओं को प्रदर्शन के लिये रक्खें। आसाम के विद्वानों से मेरी विनम्र प्रार्थना है कि वे प्रान्त की सीमान्त और पर्वतीय जातियों की भाषाओं का भाषाविज्ञान की दृष्टि से अध्ययन करें और अपने खोज को प्रकाश में लावें। आसाम के कला कौशल (Fine Arts) के अध्ययन की भी आवश्यकता है।

राष्ट्रभाषा का प्रचार

आसामी लोगों से मेरी 'अपील' है कि वे राष्ट्र-भाषा हिन्दी को अपनावें, अपने हाई स्कूलों में इसे स्थान दें और इसे अपने घरों में भी बोल चाल की भाषा बनायें। इससे हिन्दी का प्रचार होगा और उनकी भाषा की भी उन्नति होगी। हिन्दी वालों का यह कर्तव्य है कि उत्तम कोटि के आसामी ग्रन्थों का हिन्दी में अनुवाद करें जिससे आसामी भाषा की निहित निधि का राष्ट्र भाषा के द्वारा सारे भारत में प्रचार हो। आसामी लोगों को भी चाहिये कि हिन्दी के अच्छे अच्छे ग्रन्थों का अनुवाद कर अपनी भाषा को सुशोभित करें। हिन्दी भाषा को अपनाने से उन्हें सदैव लाभ होगा और इस साहित्यिक आदान प्रदान से दोनों भाषाओं की उन्नति होगी। हिन्दी वालों का यह परम कर्तव्य है कि राष्ट्र भाषा के प्रचार का सन्देश आसाम की प्रत्येक झोपड़ी में पहुँचादें और इस प्रान्त की सीमान्त में स्थित पिछड़ी हुई जातियों को आर्य सभ्यता और संस्कृति में दीक्षित कर उन्हें भी राष्ट्र भाषा में बोलना सिखलादें जिससे विशाल भारत के इस सुदूर कोनों से भी यही एक मात्र गगनभेदी आवाज़ उठे कि :—

"हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा, लिपि हमारी नागरी"

पठनीय सामग्री (Bibliography)

(क) सामान्य ग्रन्थ

१—*एन एकाउराट आफ दि प्राविन्स आफ आसाम एराड इट्स एडमिनिस्ट्रेशन, शिलाङ्ग १६०३ पृ० १-१२६।

२—*इम्पिरियल गजेटियर आफ इरिडया भाग ६ पृ० १४-१२१ आक्सफोर्ड १६०८।

३—इन्साइक्लो-पीडिया ब्रिटेनिका भाग १ पृ० ४३३ (१३वाँ संस्करण) सन् १६२६।

४—वही······भाग २ पृ० ७७०-७७४।

५—हिन्दी-विश्वकोष भाग २ पृ० ७४४-७४६ तथा ७६०-७६२ कलकत्ता।

६—महाराष्ट्रीय ज्ञान कोष भाग ८ पृ० ३३६-३२४ तथा ३८६-३८७ पूना १६२४।

७—सर चार्ल्स लायल—आसाम।

८—मोटाफ मिल्स—रिपोर्ट औन दि प्राविन्स आफ आसाम; कलकत्ता १८५४।

९—श्रीमती एस० आर० वार्ड०—ए[२] ग्लिम्प्स आफ आसाम।

१०—प्लेयर[१]—बंगाल, आसाम, बिहार और उड़ीसा।

११—मोनोग्राफ औन दि काटन फेब्रिक्स आफ आसाम कलकत्ता १८६७।

१२—रिपोर्ट औन दि प्रोग्रेस आफ हिस्टारिकल रिसर्च इन आसाम, शिलाङ्ग १८८७।

१३—कालीदास—रघुवंश चतुर्थ सर्ग (रघु-दिग्विजय)

(ख) भूगोल

१४—राम नारायण मिश्र—भारतवर्ष का भूगोल पृ० १७६-१८४ प्रयाग १६३५।

१५—एल० डडले स्टाम्प—दि इरिडयन इम्पायर भाग ४ पृ० १३६-११६, लांगमैन्स ग्रोन एराड को १६३३।

१६—मारिसन—ए जूनियर ज्योग्रफी आफ इरिडया।

१७—सोहन लाल—माडर्न ज्योग्रफी पृ० २५६।

१—ये दोनों पुस्तकें गजेटियर हैं अतः इनमें आसाम संबंधी, इतिहास, भूगोल, व्यापार, शिक्षा, शासन व्यवस्था, धर्म तथा रीति रिवाज आदि जितनी ज्ञातव्य बातें हो सकती हैं वे सब मौजूद हैं। जिज्ञासुओं को ये दोनों पुस्तकें अवश्य पढ़नी चाहिये।

२—बड़ी सुन्दर तथा मनोरंजक सामाजिक अवस्था का वर्णन बड़ा सुन्दर।

१८—डा० जान पिटर वाडे—एन एकाउराट आफ आसाम पृ १-३४ शिवसागर १६२७।

१९—डब्लू राबिन्सन—डिस्क्रिप्टिभ एकाउराट आफ आसाम इट्स लोकल ज्योग्रफी कलकत्ता १८४१।

२०—मैककॉश—टोपोग्राफी आफ आसाम कलकत्ता १८३७।

२१—सरकार द्वारा संकलित—आसाम सेन्सस रिपोर्ट १६३१।

२२—पी० एन० बोस—जिओलाजिकल सर्वे आफ इरिडया। मेम्वायर्स आफ दि जिओलजिकल सर्वे आफ इरिडया।

(ग) इतिहास

२३—ई० ए० गेट—ए हिस्ट्री आफ आसाम, कलकत्ता १६०६।

२४—ई० ए० गेट—दि कोच किंग्स आफ कामरूप जे० ए० एस० बी० भाग ६२ १८६३ पृ० २६८।

२५—ई०ए०गेट—सम नोट्स औन जयन्तिया हिस्ट्री।

२६—विश्वेश्वर—आसाम-बुरञ्जी।

२७—राय गुणाभिराम बरुआ—आसाम बुरञ्जी।

२८—के० एल० बरुआ—अरली हिस्ट्री आफ कामरूप शिलाङ्ग १६३३।

२९—डा० आर० जी० बसाक—दि हिस्ट्री आफ नार्थ-इस्टर्न इरिडया पृ० २१०-२३६ कलकत्ता १६३४।

३०—पद्मनाथ भट्टाचार्य—कामरूप-शासनावली।

३१—पद्मनाथ भट्टाचार्य—शिलहट्टेर इतिहास।

३२—डा० जान पिटर वाडे—एन एकाउराट आफ आसाम पृ० १-३१० शिवसागर, १६२७।

(घ) आसामी भाषा और साहित्य

३३—सर जी० ए० ग्रियर्सन—लिंग्विस्टिक सर्वे आफ इरिडया जिल्द ५—भाग १ पृ० ३६३-४३७ कलकत्ता १६०३।

३४—सर जी० ए० ग्रियर्सन—नोट्स औन आहोम (जेड०डी०एम०जी०) जिल्द ५६ (१६०२) पृ० १ और आगे।

३५—सर जी० ए० ग्रियर्सन—एन आहोम कास्मोगोनी, विद ए ट्रान्सलेशन एराड ए वाके बुलरी आफ आहोम लैंगवेज जे० आर० ए० एस० १६०४ पृ० १८१।

३६—एन० ब्राउन—कम्पेरिज़न आफ इराडो चाईनीज लैंगवेज़ेज (जे० ए० एस० बी०) १८३७ पृ० १०२४।

३७—एन० ब्राउन—ग्रेमेटिकल नोट्स औन आसामीज लैंग्वेज़, शिवसागर १८४८।

३८—यदुराम देका बरुआ—ए बेङ्गाली एण्ड आसामीज़ डिक्शनरी १८३६।

३९—डब्लू राबिन्सन—ग्रामर आफ दि आसामीज़ लैंग्वेज सेरामपुर १८३६।

४०—श्रीमती एस० आर० वार्ड—वाकेबुलरी इन इङ्गलिश एण्ड आसामीज़ शिवसागर १८६४।

४१—एम० ब्रान्सन—डिक्शनरी इन आसामीज़ एण्ड इङ्गलिश, शिवसागर १८६७।

४२—श्रीमती कटर—फ्रेज़ेज़ इन इङ्गलिश एण्ड आसामीज़ शिवसागर, १८७७।

४३—एनन—ग्लासरी आफ वर्नाक्यूलर टर्म्स शिलाङ्ग १८७६।

४४—हेम चन्द्र बरुआ—आसामीज़ ग्रामर कलकत्ता १८८६।

४५—हेम चन्द्र बरुआ—हेम-कोश, शिलाँग १९००

४६—पी० एच० मूर—ग्रेमेटिकल नोट्स औन आसामीज़ लैंग्वेज नवगांव (आसाम) १८९३।

४७—जय चन्द्र चक्रवर्ती—व्याकरण-मञ्जरी कलकत्ता १८९४।

४८—जी० एफ० निकाल—मैनुअल आफ बेङ्गाली लैंग्वेज लण्डन १८९४।

४९—जगेश्वर—हजारिका—ए प्राईमरी ग्रामर इन आसामीज़ कलकत्ता १९००।

५०—आनन्द राम ढेकिआल फूकन—ए फ्यू रिमार्कस दि आसामीज़ लैंग्वेज़ शिवसागर १८५५।

५१—जे० बीम्स—प्राउट लाइन्स आफ इण्डियन फाइलालोज़ी कलकत्ता। १८६७।

५२—आर० एन० कष्ट—ए० स्केच आफ दि माडर्न लैंग्वेजेज़ आफ इस्ट इण्डीज; लण्डन १८७८।

५३—जे० डी० एण्डरसन—आसामीज एण्ड बेङ्गाली कलकत्ता १८९६।

५४—पी० गुर्डन—सम आसामीज प्रावर्म्स; शिलांग १८९६।

५५—गोपाल चन्द्र दास—ए कलेक्शन आफ आसामीज़ प्रावर्म्स; डिब्रूगढ़ १९००।

५६—सर ग्रियर्सन—आसामीज़ लिटरेचर (इण्डियन एन्टीक्वेरी) जिल्द २५, १८९६ पृ० ५७ और आगे।

५७—गोस्वामी—आसामीज़ सेलेक्शन कलकत्ता।

(ङ) समाज और धर्म

५८—नगेन्द्रनाथ बसु—दि सोशल हिस्ट्री आफ कामरूप जिल्द १ और २ कलकत्ता १९२२।

५९—श्रीमती एस० आर० वार्ड—ए ग्लिम्प्स आफ आसाम पृ० २६-२६ कलकत्ता १८८४।

६०—मन्मथ नाथ घोष—ए ब्रीफ स्केच आफ दि रिलिजस बीलीफ्स आफ दि आसामीज़ पीपुल; कलकत्ता १८९६।

६१—भारतवर्ष का धार्मिक इतिहास।

(च) गज़ेटियर और सरकारी रिपोर्टें[1]

६२—आसाम डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स—(श्री बी० सी० एलेन द्वारा सम्पादित) कामरूप, गोआलपाड़ा, डैरेङ्ग, नवगांव, शिवसागर, लखीमपुर, सिलहट, काचार, मणिपूर, दि खासी एण्ड जयन्तिया हिल्स, दि गारो हिल्स एण्ड लुशाई हिल्स।

६३—रिपोर्ट औन दि एडमिनिस्ट्रेशन आफ आसाम फार दि ईयर १९३४-३५।

६४—जेनरल रिपोर्ट औन पब्लिक इन्स्ट्रक्शन इन आसाम फार दि ईयर १९३४-३५।

६५—रिपोर्ट आफ दि डिपार्टमेण्ट आफ इन्डस्ट्रीज़ आसाम फार दि ईयर १९३४-३५।

६६—रिपोर्ट आन दी-कल्चर इन आसाम फार दि ईयर १९३४।

(छ) पत्रिकायें

६७—आर्क्योलाजिकल सर्वे आफ इण्डिया रिपोर्ट वर्ष—(१९०२-३) गौहाटी रिमेन्स (१९०६-७) तेजपूर रिमेन्स (१९०६-७)।

६८—जरनल आफ दि एशियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल।

६९-७०—मार्डर-रिव्यू तथा कामरूप अनुसन्धान समिति-पत्रिका।

१—इनके अतिरिक्त सरकार ने कई रिपोर्टें तथा पहाड़ी जातियों की भाषाओं पर पुस्तकें प्रकाशित किया है जिनका वर्णन 'कैटलाग आफ बुक्स एण्ड पब्लिकेशन्स आफ दि आसाम गवर्नमेण्ट (१९३५)' में मिल सकता है। समस्त सरकारी रिपोर्टें और पुस्तकें "एस० एच० खां एम० ए०, आफिसर-इन-चार्ज, आसाम गवर्नमेण्ट बुकडिपो; शिलाँग (आसाम)" के पते से प्राप्त हो सकती हैं।
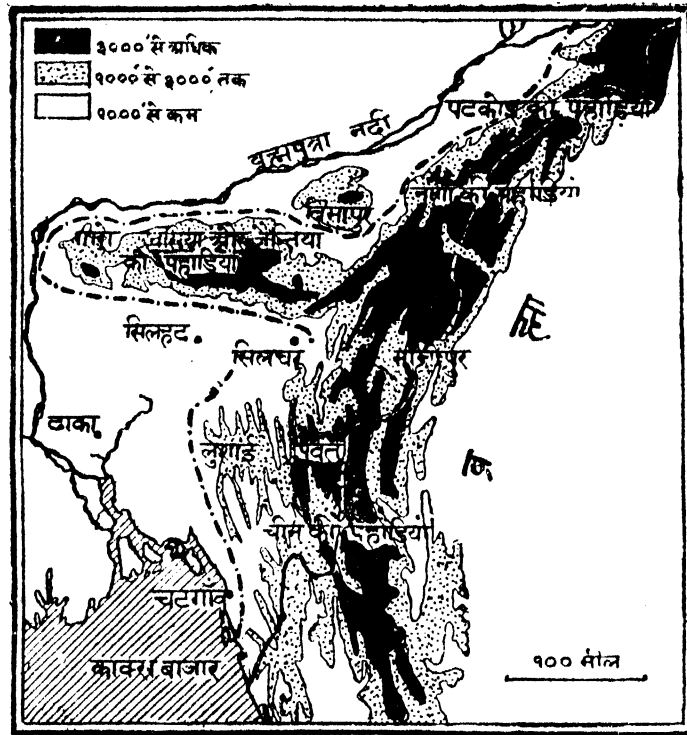
आसाम—प्राकृतिक विभाग

ब्रह्मपुत्र की घाटी